

हिन्दी सूफी काव्य में पौराणिक आख्यान

कहेयालाल मुन्शी हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ क तत्त्वावधान में आगरा
विश्वविद्यालय की पी एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबंध
'मध्ययुगीन हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्य में पौराणिक आख्यान
का मुद्रांग

हिंदी अक्षर
कल्प
म
परमिता
अक्षर

डॉ. उमापतिराय चन्देल

अभिनव प्रकाशन

© डा० उमापति राय चन्देल

हिन्दी-विभाग पत्राचार पाठ्यक्रम एवं अनुवर्ती गिना विद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

प्रकाशक

अभिनव प्रकाशन

२१-ए, दरियागज दिल्ली ६



प्रथम संस्करण १९७६



मुद्रक

सतीश कपोजिंग एजेंसी द्वारा

नवप्रभात प्रिंटिंग प्रेस

शाहदरा दिल्ली ३२

मूल्य

पचपन रुपये

५५ ००

HINDI SUFI KAVYA MEN PAURANIK AKHYAN

By

Dr UMAPATI RAI CHANDEL

First Ed 1976

Price Rs 55 00

Published by R S CHAUHAN

जीवन - सगिनी

उपा

को

प्राक्कथन

मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में सूफ़ी काव्य धारा का एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान है। सूफ़ी कवियों ने हिन्दू जनता में बहुप्रचलित लोककथाओं और पौराणिक आख्यानों को लेकर लोकभाषा में सरस वाक्यांशों की रचना की। उनकी एक विशेष परम्परा ही हिन्दी साहित्य में स्थापित हो गयी। यद्यपि उनके प्रेम-स्थान भारत में दीर्घकाल से चली आ रही प्रेम-स्थान-परम्परा की ही एक कड़ी के रूप में विकसित हुए तथापि उनके कथ्य और शली में निजी विशिष्टता थी। सूफ़ी सन्तों और सूफ़ी कवियों के दृष्टिकोण की यह विशेषता रही कि उन्होंने स्थानीय तत्त्वों की अवहेलना नहीं की। यह सत्य है कि उन्होंने अपने साम्प्रदायिक जीवन-दर्शन के प्रचार और प्रसार को दृष्टि में रखकर इन प्रेमगाथाओं की रचना की किन्तु भारतीय लोकजीवन के साम्प्रदायिक तत्त्वों को अपनाने के कारण उन्होंने देश की सांस्कृतिक और भावात्मक एकता के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान किया। वे भारतीय जीवन की साम्प्रदायिक अन्तर्धारा से कितने घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध थे इसका एक ज्वलन्त प्रमाण है उनके द्वारा अपने काव्यों में हिन्दू पौराणिक आख्यानों का प्रयोग।

अब तब हिन्दी शोध और आलोचना के क्षेत्र में अनेक विद्वानों द्वारा सूफ़ी कवियों की साहित्यिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक उपलब्धियों तथा देन का भूल्याकन और विवेचन प्रस्तुत किया जा चुका है।

इसमें से कुछ समीक्षकों ने अपने इतिहास ग्रन्थों में सूफ़ी कवियों के कृत्विक्त्व और व्यक्तित्व पर आलोचनात्मक तथा परिचयात्मक प्रकाश डाला है। इस समीक्षकों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल^१ डॉ० रामकुमार वर्मा^२ और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी^३ के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल^४ डॉ० वासुदेव-

१ हिन्दी साहित्य का इतिहास

२ हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास

३ (क) हिन्दी साहित्य की भूमिका -

(ख) हिन्दी साहित्य उसका उदभव और विकास

४ जायसी ग्रन्थावली

शरण अग्रवाल^१, डॉ० माताप्रसाद मुस्त^२ और डॉ० मुशीराम शर्मा^३ आदि न कतिपय सूफी कवियों के प्रयोगों का वातावरण सम्पादन एवं व्याख्या की है तथा अपनी भूमि काओ के अंतर्गत सूफी प्रमाख्यानों के साहित्यिक और दार्शनिक पक्षों का तत्त्वपूर्ण विवेचन किया है। आचार्य चन्द्रकान्त पांडेय^४ डॉ० रामपूजन तिवारी^५ डॉ० विमलकुमार जैन^६ आदि न सूफी दर्शन तत्त्व का सम्यक् उद्घाटन किया है। आचार्य परमुराम चतुर्वेदी^७ डॉ० कमल कुन्धर^८, डॉ० जयदेव^९, डॉ० सरना शुक्ल^{१०} डॉ० "शाम मनोहर पाण्डेय"^{११} आदि के आलोचनात्मक एवं शोधपूर्ण प्रवक्तृत्व प्रमाख्यानों की साहित्यिक और दार्शनिक प्रवृत्तियों का मूल्यांकन दृष्टा है। डॉ० उदमीधर^{१२} ने सातहवीं शताब्दी की अवधि के सत्त्व में पदमावत की भाषा का भाषाशास्त्रिक अध्ययन किया है। डॉ० निरजनलाल शर्मा ने सूफी प्रमाख्यानों के काव्य में नायिका की परिवर्तना पर विचार किया है।^{१३}

डॉ० सत्येंद्र^{१४} ने मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य के सांस्कृतिक स्वरूप पर विचार करत हुए कतिपय सूफी प्रमाख्यानों के अभिप्रायों तथा पक्षों और लक्षणों से सम्बद्ध उनकी अर्थ प्रवृत्तियों की सम्यक् विवेचना की है। कुछ अन्य विद्वानों ने भी सूफी कवियों पर समीक्षात्मक ग्रंथ और स्फुट निबंध लिखे हैं जिनका उल्लेख प्रस्तुत प्रवक्तृत्व में यथास्थान कर दिया गया है।

किन्तु हम ममस्त अध्ययन विवेचन और समीक्षण में हिन्दी सूफी कवियों द्वारा पौराणिक आख्यानों के विविध प्रयोगों के स्वरूप का अनुशीलन अधूरा ही रहा।

जायसी-प्रयावली^१ की भूमिका में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस बात का और सक्त किया था कि जायसी ने भारतीय पौराणिक आख्यानों एवं प्रसंगों को उदारतापूर्वक ग्रहण किया है। जायसी ने राम तथा रावण के प्रकरणों का स्थान स्थान

- १ पदमावत मूल और सजीवनी व्याख्या
- २ जायसी प्रयावली मधुमानती लोरकहा चाँदायन
- ३ पदमावत की टीका
- ४ तमबुफ अथवा सूफीमत अनुराग-बाँसुरी, भूमिका
- ५ सूफीमत साधना और साहित्य सूफी काव्य की भूमिका जायसी
- ६ सूफीमत और हिन्दी साहित्य
- ७ सूफी काव्य सग्रह भूमिका भारतीय प्रमाख्यानों की परम्परा मध्यकालीन प्रेम साधना हिन्दी काव्य धारा में प्रेम प्रवाह हिन्दी के सूफी प्रमाख्यान
- ८ हिन्दी प्रमाख्यानों काव्य
- ९ सूफी महाकवि जायसी
- १० जायसी के परवर्ती सूफी कवि और काव्य
- ११ मध्ययुगीन प्रमाख्यान सूफी काव्य विमल
- १२ पदमावत की दि लिथिस्टिक स्टडी आर्क दि सिक्सटी-थ सेन्चुरी हिन्दी (अवधि)
- १३ हिन्दी सूफी महाकाव्यों में नायिका की परिवर्तना (शोधप्रबंध अप्रकाशित)
- १४ मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन

पर उपयोग किया है परंतु उद्देश्य वहीं नहीं है। इनका उपयोग ठीक उसी अर्थ और भावना से नहीं किया जो सामान्यतः हिन्दी रामकथा में मिलती है। इसने यह प्रश्न प्रस्तुत किया कि आखिर जायसी ने पौराणिक आख्यानों को कितना और किस रूप में ग्रहण किया है और वह क्या केवल जायसी का निजी प्रयत्न रहा है या सूफ़ी प्रेमाख्यानों में इसकी कोई परम्परा भी रही है। इसी जिज्ञासा ने मुझे इस शोध में प्रवृत्त किया। आगरा विश्वविद्यालय के 'कहेयालाल मुशी हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विश्यापीठ' आगरा के तत्त्वावधान में मध्ययुगीन हिन्दी सूफ़ी काव्य में पौराणिक आख्यान विषय पर विश्व शोध-कार्य पर मुझे १९६६ में पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई।

मध्ययुगीन हिन्दी सूफ़ी कवियों की रचनाओं का अध्ययन करने पर मुझे पता चला कि इन कवियों ने अपनी भावात्मक अभिव्यक्ति और अपने दार्शनिक तत्त्व-निष्पन्न के निमित्त हिन्दी पौराणिक आख्यानों का प्रतीक, अलंकार दृष्टांत, उल्लेख एवं कथानक-रूढियों के रूप में प्रचुर प्रयोग किया है।

इस प्रकार का यह अध्ययन सूफ़ी काव्य धारा के अध्ययन के क्षेत्र में तो अपने दम का प्रथम प्रयास है ही जहाँ तक मुझे पता है अथवा काव्य धाराओं की लेकर भी इस प्रकार का विवेचन अभी तक नहीं हुआ है। प्रस्तुत प्रबंध में १४ वीं से १८ वीं शताब्दी तक की सूफ़ी काव्य धारा के १२ कवियों के ३५ काव्यों को आधार बनाकर पौराणिक आख्यानों के विविध प्रयोगों का अध्ययन किया गया है। आशा है मेरा यह प्रबंध, हिन्दी सूफ़ी प्रेमाख्यानों के काव्यों का अध्ययन की दिशा में एक मौलिक और वित्तम प्रयास समझा जाएगा।

इसमें सूफ़ी कवियों द्वारा रचित ऐसे प्रेमाख्यानों के काव्यों का तो लिया ही गया है जिनमें सूफ़ी दर्शन-तत्त्व का निष्पन्न मिलता है, परंतु उनके द्वारा लिखित कुछ ऐसे काव्यों को भी इसमें समाविष्ट कर लिया गया है जो मात्र शुद्ध प्रेमाख्यान हैं। जायसी रचित चित्ररेखा और जान कवि द्वारा रचित कई प्रेमाख्यान इसी श्रेणी में आते हैं। इस प्रकार मगर यह प्रयास हिन्दी के सूफ़ी कवियों के काव्यों का एक विनिष्ट दृष्टिकोण से किया हुआ पूर्ण अध्ययन बन गया है। मैंने अपने का उत्तरों भारत के सूफ़ी कवियों द्वारा रचित प्रेमाख्यानों तक ही सीमित रखा है तथा दक्खिनी हिन्दी के प्रेमाख्यानों को नहीं लिया है। जम्हारीय परम्परा से विशेष प्रभावित हान के कारण दक्खिनी हिन्दी के सूफ़ी कवि भारतीय पौराणिक आख्यानों के प्रयोग की ओर से उदासीन भी रहते हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इस कथन की कि इन परम्परा में मुसलमान कवि ही हुए हैं स्वीकार नहीं किया जा सकता। मूरत्स लखनवी हिन्दू थे किन्तु उनका प्रेमाख्यान नल दमन सूफ़ी काव्य परम्परा में परिगणित होने योग्य है। जान का कवि विद्वान सूफ़ी कवि नहीं मानते, परंतु उनके कुछ काव्यों के आधार पर मैं उन्हें सूफ़ी माना है। इसी तरह शेष आलम के प्रथम माधवानल कामकदला

को कई लोग शुद्ध प्रेमाख्यान मानते हैं किन्तु उसके प्रेम निरूपण के स्वरूप को देखकर मैंने उसे सूफी काव्य माना है। अतः मैंने शैल आलम जान कवि और सूरदास लखनवी की रचनाओं को अपने इस अध्ययन का अंग बनाया है।

अपने शोध काय में निर्देशक डा० मत्स्येन्द्र के सुझाव पर मैंने मध्ययुगीन (१४वीं से १८वीं शताब्दी ईस्वी) हिन्दी सूफी कवियों के प्रेमाख्यानक काव्यों में आगत पौराणिक आख्याना के प्रयोग के स्वरूप पर विचार करने के साथ-साथ उनके श्रमिक विकास का समाधान भी किया, जो अपने आपमें एक बड़ा काम रहा। इससे शोध प्रबंध का कलेवर बल गया। प्रबंध के प्रकाशन के माग में उसका स्थूल कलेवर बाधक बनता रहा। अतः मुझे पौराणिक आख्याना के विकास इतिहास सम्बन्धी अर्थ को कुछ परिवर्तन-परिवर्द्धन के साथ एक स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित कराने का निणय करना पड़ा। वह ग्रन्थ पौराणिक आख्यानों का विकासार्थक अध्ययन शीपक से कोणाक प्रकाशन, ६१ एफ कमलानगर दिल्ली ७ द्वारा १९७५ ई० में प्रकाशित किया जा चुका है। शोध प्रबंध का मुख्य में शिल्प अर्थ हिन्दी सूफी काव्य में पौराणिक आख्याना शीपक से आपके हाथ में है।

इस अध्ययन का सारा श्रेय गुल्वर डॉ० मत्स्येन्द्र को है जिनकी प्रेरणा और माग दर्शन के बिना यह काय सम्भव न हो पाता। उनकी सतत प्राप्त अनुकम्पा और स्नेह के प्रति आभार प्रकट करने में मेरी वाणी अशक्त है। कन्हैयालाल मुशी हिन्दी तथा भाषा विद्या विद्यापीठ आगरा के तत्कालीन निर्देशक स्वर्गीय डा० माता-प्रसाद गुप्त से भी मुझे समय-समय पर प्रोत्साहन प्राप्त होता रहा था। विद्यापीठ के पाण्डुलिपि विभाग के अध्यक्ष श्री उदयशंकर शास्त्री ने अपने निजी पुस्तकालय से कई हस्तलिखित ग्रन्थ तथा अन्य सामग्री प्रदानकर और मरी कई जिनासाओ का समाधान कर मरी बहुत सहायता की है। बघुवर डा० कलासचन्द्र भाटिया तथा अनुज-तुल्य डा० श्याममनोहर पांडेय के परामर्शों से भी मैं लाभान्वित हुआ है। इन सभी विद्वानों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ। प्रबंध लखन में प्राप्त अनकश सहायता के लिए मैं अपने पूरे पितृव्य स्वर्गीय गौरीशंकर सिंह चण्डल श्री राम-लक्ष्मण गुप्त डॉ० श्रीकृष्ण वाण्येय और आयुष्मान अवधेश कुमार का भी आभारी हूँ। जिन विद्वानों की कृतियों और जिन सस्याओं (विशेषतः हिन्दुस्तानी एकडमी इलाहाबाद और नागरी प्रचारिणी मभा काशी) के प्रधानारों से मैं लाभ उठाया है उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता पापन करता हूँ।

बुद्ध जयन्ती

२०३३ वि०

—उमरफति राय कदेल

हिन्दी विभाग

पत्राचार पाठयत्रम एक अनुवर्ती शिक्षा विद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली ११०००७

अनुक्रम

	पृष्ठ
प्रेमाख्यान काव्य-परम्परा	१७—२५
प्राचीन साहित्य में प्रेमाख्यान—हिंदी की प्रेमाख्यान-परम्परा— हिंदी प्रेमाख्यानों का वर्गीकरण ।	
हिंदी सूफ़ी कवियों के प्रेमाख्यानक काव्य	२६—६१
(क) सूफ़ी कवियों के प्रेमाख्यानों का परिचय चदायन—मगावती—पदमावत—चित्ररेखा—मधुमालती— माधवानल—कामकदला—चित्रावली—पानदीप—कथा कौलावती—कथा कलावती—कथा कनकावती—कथा कौतूहली—कथा कामलता—कथा सतवती—कथा सील वती—कथा पुट्टप बरिपा—कथा रूपमजरी—ग्रथ बुधि सागर या मधुकर मालती—कथा रतनावती—ग्रथ ललै मजनू—कथा कामरानी-पीतमदास—कथा चन्द्रसेन सील- निधान—कथा मोहिनी—कथा पिजरखी साहिबजाद व देवल दे—कथा कलदर की—द्विसागर—कथा नल- दमयनी—कथा सुभटराइ—नन-दमन—रस जवाहिर— इद्रावती—अनुराग बाँसुरी—यूसुफ जुलखा ।	
(ख) सूफ़ी प्रेमाख्यानों का वष्य विषय	
(ग) सूफ़ी प्रेमाख्यानों की विगिष्ट गली	
३ पुराण-साहित्य और पौराणिक आख्यान	६२—१०४
पुराण-साहित्य एक संक्षिप्त परिचय	
(क) पुराण की प्राचीनता (ख) पुराणों के 'वचनभण', (ग) अठारह महापुराण (घ) अठारह उपपुराण (ङ) भक्त और बौद्ध पुराण, (च) कथा आख्या यिका आख्यान पौराणिक आख्यान, (छ) पौरा णिक आख्यानों का अर्थ ।	

- ४ हिन्दी सूफी कवियों के प्रेमाख्यान और पौराणिक आख्यान १०५—१०८
- पौराणिक आख्याना के उपयोग की दृष्टि से प्रेमाख्याना का वर्गीकरण (१) पूण आख्यानक काव्य (२) पौराणिक आख्यानों या पात्रों का प्रतीकात्मक प्रयोग करनेवाले काव्य (३) पौराणिक आख्याना या पात्रों का आलंकारिक प्रयोग करनेवाले काव्य (४) पौराणिक आख्यानों या पात्रों का दार्ष्टान्तिक प्रयोग करनेवाले काव्य (५) पौराणिक पात्रों या स्थानों का उल्लेख मात्र करनेवाले काव्य (६) पौराणिक आख्यानों के भाष्यमय सूसूफी दर्शन तत्त्व का निरूपण करनेवाले काव्य (७) पौराणिक श्रोतों की कथानक रूढ़ियों (मोटिफ़्स) का प्रयोग करनेवाले काव्य ।
- ५ हिन्दी सूफी कवियों के पूण आख्यानक काव्य १०९—१५०
- (क) 'नल दमन और कथा नल दमयती के आख्यान का मूल श्रोत — महाभारत में वर्णित नलोपाख्यान — महाभारत के परवर्ती नलाख्यानाधारित संस्कृत काव्य— नलोदयम काव्यमय महाभारत के नलोपाख्यान से भिन्नता— कथा सरित्सागर में नलोपाख्यान से भिन्नताएँ— 'नपथीय चरितम में नलोपाख्यान से अंतर— नल दमन और 'नलोपाख्यान में भिन्नता के स्थल— कथा नल दमयती और नलोपाख्यान' में कथांतर ।
- (ख) यूसुफ जुलखा काव्य की परम्परा— ओल्ड टेस्टामेंट में यह कथा का रूप— कुरान में यूसुफ जुलखा की कथा— ओल्ड टेस्टामेंट और कुरान' की कथा में अंतर— शेष निसारदूत 'यूसुफ जुलखा की कथा— कुरान और जामी तथा निसार की कृतियों में कथांतर ।
- ६ सूफी प्रेमाख्यानों में आगत पौराणिक आख्यान १५१—२०१
- अगस्त्य ऋषि द्वारा समुद्र शोषण—अभिमानु का चक्र-यूह में जड़ना— अजुन द्वारा मत्स्यवध कर द्रौपदी स्वयंवर की शर्त पूरा करना—अजुन का विश्व भ्रमण—अजुन का अहिब्रन (अजगर) की चपट में आना—अजुन द्वारा कौरव दल का संगर— इंद्र का परनारी को छलना (अहल्या के माथे पर चार— गौतम ऋषि द्वारा शाप— इंद्र का सहस्र भय होना)— इंद्र का अपने त्रिशूल (वज्र) में सुमेरु आदि पर्वतों को पलकाटना— सुमेरु का आकाश तक ऊँचा उठना— उषा अनिरुद्ध

प्रेमाख्यान—कच का मुक्तापाप क पात सजीवनी विद्या माधन
जाना—कच-दशमानी प्रम—कच का वीरवा द्वारा पालित
होना—कण का कचप इन्द्र द्वारा दहनपूर्वक मर्णा जाना—
कच की दानशीलता—कर्म का पराक्रमी होना—वासिदेव का
शरजात हाना—कृष्ण का नन्द द्वारा पालित होना—कृष्ण द्वारा
वाल्मीकि का म ही कई समत्वार्णव और वीरतापूर्ण सीताएँ
करना तथा द्रजवामिर्षों पर आद्य सप्तक की टालना—कृष्ण का
वासिदेवनाग की नायना—कृष्ण को अकूर द्वारा ममुरा न
जाना—कृष्ण द्वारा कसासुर का वध—कृष्ण द्वारा कंस का वध
(कंस का नाश तपस्विर्षों के शाप से)—कृष्ण से राधा का
मिलना—कृष्ण पर सालह सी गोपियों का अनुरक्त होना—
कृष्ण की गोपिका से मिलाना उद्वेग द्वारा—कृष्ण द्वारा कृष्ण
का कबड ठीक कर लिया जाना—कृष्ण द्वारा साँदीपनि मृग ह
सोय (मृत) पुत्र का शोज निवासना—कृष्ण द्वारा मृग का
दारिद्र्य दूर किया जाना—कृष्ण से गोहिया (बह्मि) का
प्रतिशोध लना—गधर्वों का सुन्दरी कथाओं पर मृग ह
गरुड का अपन पत्नी से अमल शाहना—चंद्रमा का क
कणी हाना—चंद्रमा और राहु की शत्रुता—चंद्रमा का क
का राहु द्वारा प्रसा जाना—चंद्रमा का कलकी द्वारा—चंद्रमा
से रोहिणी का विवाह—जलमदक (जनमजय) का क
काय करक पछताना—जलमदक (जनमजय ?) द्वारा क
सर्पों का विनाश करना—जलमधर (जनमजय) का क
द्वारा कुएँ से उबारा जाना—दुर्घोषन का क
करना—द्रीपनी का भाण्डार अस्तुत होना—दुर्घोषन का क
द्वारा सताया जाना (चीर हरण का प्रयास—दुर्घोषन का क
का चीर बढ़ाया जाना)—नल-दमयती का क
पाताल नाक म पास—नारद मोह का कथा—दुर्घोषन का क
मे जलाया जाना पर उसका न जलना, न क
विष्णु द्वारा त्रिष्यकश्यपु का वध—परशुराम का क
तथा अन्य क्षत्रियों का सर्वांत कर दना—दुर्घोषन का क
दानव द्वारा हरा जाना भीम द्वारा बचाया क
वदीगृह (लाभागृह) में डाला जाना—पाण्डव का क
विजय एक मिद्ध योगी की सहायता म—दुर्घोषन का क
कम फल भोगना—बलि का तीन पग पृष्ठा का क

जाना अरुना सखस्य दान कर र्ना विष्णु द्वारा बलि का दत्ता
 जाना—बलि द्वारा समुद्र मथन करना—भगीरथ द्वारा गंगा को
 पृथ्वी पर लाकर अपन पिनरा को तारना—बालि द्वारा परम्त्री
 हरण और उमक कुपरिणाम—भीम द्वारा कीचक-वध—भीम
 का कुम्भरुण की खापटी म डूबना—भीम का अधिक भोजन
 करना—नीम द्वारा दुःशासन की भुजा उखाडना—भीम द्वारा
 दुर्योधन का वध—महाभारत-युद्ध कीरवों और पाण्डवों क मध्य,
 पाण्डवों की कीरवों पर विजय—राक्षसों की दिशा दक्षिण म
 हाना—सीता का जनक द्वारा पालित हाना—सीता-स्वयवर म
 राम द्वारा शिव धनुष को ठाडना—राम और सीता का आदेश
 लम्बतय प्रेम सीता का सतीत्व—राम का राज्याभिषेक—राम
 बिना अयोध्या सूनी (राम वन-गमन)—दशरथ का मुक्त विद्याग
 म प्राण दना—राम का सीता क हठ क कारण वन म ल
 जाना—वन म सीता द्वारा जोगी-वशधारी रावण को भिगा
 दना—रावण द्वारा सीता का हरण, राम सीता क विद्याग म
 आकुल—सीता से वियोग हो जान पर राम का विलाप करना—
 सीता द्वारा अशोक वध क नीचे बठी रहकर राम का विरह दुःख
 सहना—सीता को पास रखन हुए भा रावण द्वारा उनका भोग
 न कर पाना—सुग्रीव का बालि को बांधना बालि द्वारा
 परम्त्रीहरण, इससे उसका नाश—हनुमान का राम के आन्ध
 पर सीता का पता लगान के लिए लका जाना सीता को सुध
 लाकर राम को देना हनुमान की सहायता से राम-सीता का
 पुनर्मिलन सम्भव हाना—विभीषण का लका को छाडकर राम
 की शरण म आना—राम द्वारा नल और नील की सहायता से
 समुद्र पर मनु बांधा जाना—अगद का रावण की सभा म पाँव
 रापना—लक्ष्मण का शक्ति-बाण लगना हनुमान द्वारा सजीवनी
 बूटी लाकर उनके प्राण बचाना—राम रावण का युद्ध, राम
 द्वारा लका का विनाश करना सीता को रावणके वधन से छुटा
 कर लाना, वनवास से लौटकर राम का कीसल्या म मिलना—
 राम और परी की कथा—राहु के शरीर क दा टूक करना—
 विष्णु का मत्स्यावतार शंखासुर का लील जाना और वेणो का
 उद्धार करना—शत्रुन्ता का दुप्यत से वियोग और पुन
 मयोग—श्रवणकुमार की मान पित भक्ति दशरथ द्वारा अनजान
 म श्रवणकुमार की हत्या—अघतापस का शाप—शिव के ललाट

पर द्वितीया का चद्रमा हाना—शिव का कामदेव के सामने हार जाना—शिव के कंधे पर दो हत्याएँ होना—शिव के द्वारा अधकामुर कथकामुर का वध—शिव का त्रिनेत्र और योगीश्वर हाना - शिव द्वारा त्रिपुर-संहार—शिव द्वारा दक्ष प्रजापति को मारना (उनका यज्ञ विध्वंस करना)—शिव का पावती के कहने से कलास छोड़ देना—शुकदेव का दो घड़ी से अधिक कहीं न ठहरना—सती का सीता व वेश म राम को छलन की चेष्टा, शिव द्वारा सती का परित्याग—सती का दश यज्ञ-कुण्ड म कूद कर अपन को भस्म कर देना—समुद्र का मयन विष्णु के सहयोग से—सहदेव का पण्डित होत हुए भी चूक जाना—सूय का राहु द्वारा ग्रस्त होना—हनुमान द्वारा महिरावणपुरी (पाताल) म जाकर जमकातर तोडना और महिरावण को मारकर उसके बंधन से राम लक्ष्मण को छुडा लाना—हनुमान का आकाश म चडना—हनुमान द्वारा ऋषि राशस (कालभूमि) का वध करना—हनुमान द्वारा लका की रखवाली करना, छह महीन तक एक पवत पर सात रहकर छठे महीन जागना और जोर से हाँक लगाना—हनुमान का अर्जुन की ध्वजा पर जा बठना, जिससे अर्जुन की जीत होना—हरिश्चन्द्र राजा का नीच क घर जल भरना (चाण्डाल का दास बनना) ।

- ७ सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो मे पौराणिक आख्याना का प्रतीकात्मक प्रयोग २०२—२१३
 सूफी कविया के प्रतीक—भारतीय पौराणिक आख्यान—भारतीय पौराणिक पात्र, घटना तथा स्थान—हिन्दी के मध्यकालीन काव्य म आख्यानक प्रतीक-परम्परा ।
- ८ सूफी प्रेमाख्यानक काव्या मे पौराणिक आख्याना का आलंकारिक प्रयोग २१४—२४६
 रामायण-श्रौत क आख्याना के आलंकारिक प्रयोग—महाभारत स्नात के आख्याना के आलंकारिक प्रयोग—पौराणिक-स्नात क आख्याना के आलंकारिक प्रयोग ।
- ९ हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो मे आख्यानक दृष्टात २४७—२५८
- १० हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो मे पौराणिक आख्याना का उल्लेखात्मक प्रयोग २५९—२६५

- ११ प्रयुक्त पौराणिक आख्याना में सूफी दर्शन-तत्त्व सूफी दर्शन के आधुनिक तत्त्व—सूफी दर्शन तत्त्व निरूपण के लिए पौराणिक आख्यानादि का प्रयोग—सौन्दर्य चित्रण—अहंकार का नाश—मृत्यु से अभीतता— प्रमत्त की विकटता—विरह की उत्कटता—नायिका की प्राप्ति करने में नायक का उद्योग और प्रेम के प्रति उसकी निष्ठा—नायक के प्रमत्त के सहायक समार के प्रति वराम्य । २६६—२७१
- १२ सूफी प्रेमाख्यानक काव्या की पौराणिक कथानक रूढ़ियाँ कथा प्रकार—कथानक रूढ़ि कथा प्रकारों और अभिप्रायों में अन्तर—सूफी प्रेमाख्यान का कथा प्रकार—सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो में प्रयुक्त कुछ प्रमुख कथानक रूढ़ियाँ—सूफी प्रेमाख्यान की कथानक रूढ़ियों का अध्ययन सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो की कथानक रूढ़ियों का वैज्ञानिक वर्गीकरण सूफी प्रेमाख्यानक काव्या की पौराणिक कथानक रूढ़ियों का काश अवर्गीकृत कथानक रूढ़ियाँ—निष्कर्ष । २७२—३१०
- परिशिष्ट १
भारतीय पौराणिक पात्रादि के विविध प्रयोग ३११—३४१
- परिशिष्ट २
भारतीय निजधरी आख्याना और पात्रा आदि के प्रयोग ३४२—३५१
- परिशिष्ट ३
लोकप्रिय प्रेमाख्यानक के नायक नायिकाओं के प्रयोग ३५२—३५६
- परिशिष्ट ४
शामी पौराणिक और निजधरी आख्याना तथा पात्रों आदि के प्रयोग । ५७—३६७
- परिशिष्ट ५
सहायक पुस्तक एवं पत्र पत्रिका-सूची ३६८—३७६

प्रेमाख्यानक काव्य-परम्परा

हिंदी के आख्यान-काव्यो का दाय बर्दिक साहित्य 'रामायण', 'महाभारत', राणा सस्कृत के कथा-काव्यों, प्राकृत और अपभ्रंश के जनचरित-काव्यों, जनुराणो बौद्ध जातक कथाओं तथा अवदानों आदि से प्राप्त हुआ। लोक परम्परा से प्राप्त दाय भी नगण्य नहीं है। इस विपुल आख्यानक साहित्य में प्रेमाख्यानों की संख्या बहुत अधिक है। हिंदी के इस दाय पर एक विहंगम दृष्टि डाल लेना अनुचित न होगा।

प्राचीन साहित्य में प्रेमाख्यान

बर्दिक साहित्य में ही कई प्रेमाख्यान जैसे पुरुरवस और उवशी^१, यम यमी^२ तथा न्यायाश्व और रथवीति^३ की कथा के प्रेमाख्यान बीजरूप में वर्णित हैं। इनमें से पुरुरवस और उवशी का प्रेमख्यान पौराणिक साहित्य तथा उत्तरकालीन सस्कृत साहित्य में बहुत लोकप्रिय हुआ। कालिदास के विभ्रमोवशीयम् और 'कथा-सरित्सागर' में आगत राम आख्यान की विच्छिन्न कड़ी को आधुनिक युग में हिंदी के कवि दिनकर ने अपने 'उवशी' काव्य द्वारा फिर से जोड़ दिया है। महाभारत के नलोपाख्यान^४ में वर्णित नल नमयती की दाम्पत्य प्रेम कथा भी परवर्ती साहित्य में कवियों तथा नाटककारों के लिए प्रिय विषय बनी। महाभारत का ही एक दूसरा उपाख्यान— 'शकुंतलोपाख्यान' जिसमें दुष्यंत शकुंतला की प्रेम-कथा वर्णित है सस्कृत और इतर भारतीय साहित्य में अनेक काव्यों की वस्तु बना। कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का दश और विदश नामों की प्रसिद्धि हुई उससे इस प्रेमाख्यान पर आधुनिक युग में भी रचनाएँ हुईं। पौराणिक ज्ञान के प्रेमाख्यानों में उपा-अनिरुद्ध, रुक्मिणी-कृष्ण, प्रद्युम्न मायावती, अजुन सुभद्रा आदि के प्रेमाख्यान भी भारतीय साहित्य में बहुत लोकप्रिय हुए।

१ ऋग्वेद १०।६५, शतपथ ब्राह्मण ११।५।१।१ १६

२ ऋग्वेद १।१०

३ बहो ५।५२ ६१

४ महाभारत वन पर्व अ० ५२ ७६

बोध जानना। जन घम कथाया मुष्णान् की वृष्णय क उत्ताधिवारी म्थ प्रन्थया मजरा और कथा मन्मिमाग्न म ही वन्त म प्रम कवत् मित्ती हैं जिनका मून रूप तत्कालीन नाक साहित्य म रत्न हागा। जातकी प्रमाख्यानो म वट्टट्टारि जातक की राजा प्रन्तत्त जीव उमकी तन्तहारिन प्रमिना ना कथा एव धरी गाया म आगत गुभा का कथा जिमम गुभा भिवमुष्णी अपन ऊपर आगत युवन को अपना मुदर जीर्णे तिकाल कर दता है। मुत्तर प्रमाख्यान है। जन घम-कथाया म मयम प्राचीन तरगवता की कथा है जिसक आधार पर प्राकृत म पाल्लिप्त मूरि न तरगवर्ष कहा लिपी जिमका रचना-आय पाँचवी शती है और जा प्राकृत का सब प्रथम प्रेमाख्यान काव्य माना जाता है। प्राकृत म ही काउहल लिखित लीलावई कटा एक जय प्रसिद्ध प्रमाख्यानक काव्य है जो आठवा शती की रचना है। उनके अति रिवन भी प्राकृत म कुद्ध प्रमाख्यान काव्य मित्त हैं जिनम मनय मुत्तरी कथा मुत्तरी चरित्र सिरिसिरिवान कहा तथा रयण महर कहा प्रमुय है।

प्राकृत क प्रमाख्यानो म मस्वृत क प्रमाख्यानो की तुतना म एव विाप वात यह दिताई त्ती है कि उनके नायक राजकुमार ही न्ती हान अप्तिु मामाय तन भी हान है। अधिकतर य वणिक गग क हान म। दूसरी त्रिापता यह है कि जन कविया द्वारा लिखित तान क कारण इनका उन्मय साम्प्रदायिक हा गया है। य प्रचारात्मक प्रमाख्यान जन घम की महना मिद्ध करन क उद् य म निम गाए है।

अपभ्रंश म भा जन घम द्वारा प्रभावित रई प्रमाख्यानन काव्य तिध गए। घनपान त्रिगच्छिन्त भविष्यत्त कथा (भविष्यत्त कथा) पृष्णत्त कृत णायकुमार चरिउ (तामकुमार चरित) ^१ नयनती कृत मुत्तगण चरिन् (मुत्तान चरित) ^२ वरकड्डु चरिउ ^३ घात्ति कृत पउम गिरी चरिउ (पद्यथी चरित) आत्ति अपभ्रंश क र्सा श्रेणी क प्रमृष प्रमाख्यान है। तन जन चरित्त्का या की मुख्य विापता नायक नायिका द्वारा त्रत म सामारिक भोग म विरयन त्तरु तन घम म दीतिन हा जाना है। तन्निग वनका उम अथ म प्रमाख्यान त्ती कहा जा सकता जिम अथ म पदमावत या माघवानन कामरुदना को। मूफ़ा पमाख्यानो म ता प्रम ही मवम्ब है परन्तु जन चरित काया म प्रम का नायक नायिका क जीवन म यह महत्व नही प्राप्त है।

हिन्दी की प्रेमाख्यान-परम्परा

हिन्दी म प्रेमाख्यान साहित्य-रम्ब की ता अनुसधान ति,उन वर्षो म हुए है, उनस ति दश म एस साहित्य की तमभग एक महत्स वर्षीय प्रोचान परम्परा का पता

१ वरयोगया ३६६ ६६

२ रचना काय १ वा मत्रा

३ वदी ११० ई

४ वदी १ ६५ ई०

चना है। इस दिशा में हुए पाठों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के आचार्य काय का महत्व असादिग्य है। 'हिंदी साहित्य का इतिहास और जायसी-प्रभावती' की भूमिका में उन्होंने प्रेमाख्यानों का परिचय तब हुए उनका आलाचोत्सव मूल्यांकन भी किया था। डॉ० रामशुमार वमा अपन हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास में प्रेम-काव्यों के सम्बन्ध में विस्तृत विचार किया है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भी हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी साहित्य उसका उद्भव और विकास' और हिन्दी साहित्य का आन्ध्राल में प्रेमाख्यातक काव्या का स्वरूप पर प्रसंगत प्रकाश डाला है। इसी प्रकार डा० गत्यन्द्र न अपन ग्रंथ मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन में प्रेमाख्यानों का लोकतात्विक स्वरूप को स्पष्ट किया है। डॉ० वामुन्मशरण अग्रवाल ने पदमावत की मजीवनी व्याख्या और डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'वीरमलदेव रास तथा मधुमालती' आदि की भूमिकाओं में इस साहित्य के महत्त्व का सुष्ठु प्रयास किया है। डॉ० इयाममनाहर पाण्डेय का मध्ययुगीन प्रेमाख्यान सूफी और असूफी प्रेमाख्यानों के तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी है। डॉ० सरला शुक्ल ने 'जायसी के परवर्ती सूफी कवि और काव्य' में कई नवप्राप्त सूफी प्रेमाख्यानों का आलाचोत्सव परिचय दिया है। परन्तु भारतीय प्रेमाख्यातक साहित्य की परम्परा को विशद रूप से सामने लाने में आचार्य परशुराम चतुर्वेदी का भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा' और डा० हरिकांत श्रीवास्तव का भारतीय प्रेमाख्यान काव्य का योगदान अविस्मरणीय है। इन ग्रंथों में पौराणिक, लोकगायात्मक तथा अन्य प्रकार के प्रेमाख्यानों का विस्तृत परिचय मिल जाता है। यहाँ उस सामग्री का विष्ट-पेपण अनावश्यक है। बस इस काव्य-परम्परा का एक सामान्य परिचय ही यहाँ दिया जा रहा है।

अपभ्रंश का दाय का स्वरूप हिन्दी का आदिवात में जो प्रेमाख्यातक साहित्य लिखा गया उसका आरम्भ रासों प्रकाश माना जा सकता है। 'वीरमलदेव रास' तो शुद्ध प्रेमाख्यातक काव्य है ही उसे तो भ्रमवश वीरगाथा काव्यों के अंतर्गत गिना जाता है परन्तु पृथ्वीराज रासों में सभी यन्त्रि मुद्र और शौर प्रदशन का अल निकाल दिए जाय तो वह एक प्रेमाख्यान काव्य ही बच रहगा। उनमें पद्मावती हमावती तथा उद्रावती आदि रासिया की जो विवाह-वधाएँ हैं वे प्रमाणान ही तो हैं। प्रेमाख्यान की सभी विशेषताएँ उनमें हैं। फिर भी, रासों को प्रेमाख्यातक काव्य की श्रेणी में नहीं गिना जाता क्योंकि उनमें प्रेम प्रसंग होत हुए भी, प्रेम प्रसंग ही प्रधान नहीं है। नायक की वीरता उसका शुद्ध-वैजल्य और विभिन्न राजाओं के साथ उगत होनेवाले युद्धों को रासों काव्यों में इतनी प्रमुखता मिल गई है कि उनमें वे प्रेमाख्यान दख गए हैं।

१ भारतीय प्रेमाख्यान काव्य डॉ० हरिकांत श्रीवास्तव पृ० २० और हिन्दी की काव्य शक्तियों का विकास डॉ० हरिवंश शर्मा पृ० १३५

हिन्दी में साक्ययानिक प्रमाख्यानों की एक स्पष्ट परम्परा मिलती है। गजस्थानी में विहित दाना मास रा दूहा (म० १०००-१६१८)^१ बाणरा और मारवणी की प्रम कथा पर आधारित है। क आधार पर कई काव्य विन का प्र 'तारा मारवणी दहा दाल मास रा दूहा ताला मारवणी रा दूहा ताला मास रा दाना मास' चउपद तथा बाणरा दानान मारवणी से एव मास तारा वृद्ध आति।^२

तारा-मारवणी की कथा क नमान ही एक दूसरी प्रम-कथा साहित्य चला जी। तारिक मनावनी मछादुग म बतून ताकप्रिय दूह। इमी कथा क आधार पर मुन्ना दाऊत न अपना चलापन दिखा जा मूक्री प्रमाख्यान-परम्परा का प्रथम काव्य मना जाता है। मापन का मनामन^३ भी मी कथा पर विहित अय काव्य है। चला में प्रेमिका का ओर मना या मदनावना म मत्वनी पत्नी का मर निम्नारण की चला है^३।

पद्मावता की कथा भी एक एमा लोक कथा ह विनका प्रचार मध्ययुग म बतत था। मम्मव है मूक्री मकवि जायमान 'तारा पद्मावत म इसा कथा का तारा बनाया हा। परन्तु एक उपपुराण कल्कि पुराण म भी पद्मावता जी क कल्कि जा का कथा आती है^४ जिसम मिहूत रण की रात्रक म पद्मावता क तारा वर दून का बाण उठाकर मवन नामक एक मुग्गा जम्मव निवासा कल्कि जी क पाप आता है जीर पद्मावती का मीत्य-वगत कर उनक मन का उनक प्रति अनुकय कर दन है। मिहूत आकर बहु पद्मावता क मन म कल्कि ता क प्रति अनुराग उत्पन करता है और पुन जम्मव ताकर कल्कि जा का पथ प्रदान करता हुआ उनका मिहूत र आता है। एक मरावर क तट पर कल्कि जा (जा विष्णु क अवतार है) और पद्मावती मिलन है फिर दाना का विवाह हा जाता है। मर भा मम्मव है कि ताक म पुगण म गनीत यह कथा कुट म्प-परिवृतन क साथ पद्मावत क पूवाद का कथा ज्ञान बने था।^५ पद्मावत का रचना क वाण उमका कथा-म्प हिन्दी क जीर अनक कथा-काया क लिए प्रेरणा-स्रात बने गया। हमरतन का पछिना चणइ (१६४५ वि०) ब्रह्मलका गोरा-वत्तन गोदात (१६८० ८६ वि०) ताराव्य (ताराचला) का पछिनी वरिद्र (१७०७ वि०) विमान-किमी म्प म जायमी क पद्मावत म प्रभावित है।

भारतीय प्रमाख्यान काव्य समिधा।

भारतीय प्रमाख्यान का परम्परा साधाय परतराम चतुर्वेदी प० २६

हॉ मातामण मूल न इमका रचनाकाल स १६२४ (१२६७ ई०) क पूर माना है। दशिय 'दुस्तामी जलाई निदम्बर १६२६ ई म प्रकाशित उनका म्प— हकायक हिन्दी ओर मनावत'।

कल्कि पुगण प्रवर्माश स ४-७ ओर त्रिपास स १३

हॉ दशरथ शर्मा का साहित्य पद्मावती शीपक म्प 'साहित्य स' म्प निदम्बर १६२१

पृ० २४६ २०

दामोदर लक्ष्मसेन पदमावती' (१४५६ ई०) हिन्दी के प्राचीनतम प्रेमाख्याना म से है पर वह हम पद्यावती कथा की शृङ्खला म नहीं आता ।

पदमावती कथा के समान ही एक अरु प्रेम कथा मध्यकाल मे हिन्दी-कवियों की प्रिय बनी, वह है—माधवानल-कामकन्दला कथा । इस कथा का मूलस्रोत आनन्दधर के संस्कृत-मुनराती मिश्रित नाटक 'कामकन्दला (१३०० ई०) से यताया जाता है ।' इस प्रेमाख्यान पर हिन्दी म कई काव्यों की रचना हुई । गणपति न १५८४ वि० म अपना माधवानल-कामकन्दला प्रबंध लिखा । माधव शर्मा ने १६०० वि० म ब्रजभाषा म माधवानल-कामकन्दला रस विलास' लिखा ।^१ मुशलनाभ कृत माधवानल-कामकन्दला चउपई' (स० १६१६ वि०) भी लोकप्रिय रचना रही । इस म माधवानल क माध जयन्ती नामक अप्सरा का प्रेम प्रसंग वर्णित है । और यह भी कि कामकन्दला पूर्व काम म जयती ही थी जो इन्द्र क शापवश गणिका के रूप म जमी थी । आनन्द कवि ने माधवानल कामकन्दला प्रेमाख्यान काव्य स० १६४० वि० (१५८३ ई०) म अवधी म लिखा । इस ग्रंथ की दो प्रकार की हस्तलिखित प्रतियाँ मिलती हैं — एक बड़ी और दूसरी छोटी । बड़ी प्रति म जयती अप्सरा का प्रसंग है, परन्तु छोटी प्रति म नहीं है । जयन्ती अप्सरा का प्रसंग हम कथा की अद्व-पौराणिक भी बना देता है ।

नल दमयती की पौराणिक कथा पर भी मध्यकाल म कई हिन्दी काव्य लिखे गये । मुरारिस लखनवी म अपना नल दमन' १६५७ ई० म लिखना आरम्भ किया । जान कवि न कथा नल-दमयती' की रचना १६६१ ई० मे की । नरपति व्यास ने भी एक नल दमयती कथा' लिखी ।^२ प्रेमाख्याना की इस परम्परा म ही नन्ददास कृत रूपमजरी (१६२५ वि० क आसपाम), पृथ्वीराज राठोड कृत 'वैलिप्रिसन क्वमिणी री (१६४७ वि०) पुहवर कृत 'रसरत्न' (स० १६७५ वि०) दुखहरनदास कृत 'पृहुपा वती (१७२६ वि०) जीवनलाल कृत उपा-हरण' (स० १८८६ वि०) रामदास कृत उपा की कथा (१८६४ वि०) और रघुराज सिंह जू देव कृत क्विमिणी परिणय (१८०७ वि०) आदि प्रेम-कथा-काव्य भी आते हैं ।^३

प्रेमाख्यानों की परम्परा म ही हमारे आलोच्य सूफी कविया द्वारा लिखित वे ३५ प्रेमाख्यान भी हैं जिनका परिचय आगामी अध्याय मे दिया जायगा । सूफी प्रेमाख्यानों म 'चदायन 'महावती पदमावत 'मधुमालती 'चित्रावली', पानदीप, नन दमन हस जवाहिर, इन्द्रावती और मूसुफ जुलेखा' महत्त्वपूर्ण है । हिन्दी सूफी

१ भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा प० ७८

२ इनकी एक खण्डित प्रति हिन्दी साहित्य सम्मेलन सप्रहालय प्रयाग में सुरक्षित है ।

३ रचना-काल अज्ञात, प्रतिलिपि काल स १९८२ वि । इनकी एक खण्डित प्रति प्रयाग के सप्रहालय म सुरक्षित है ।

४ इन का यो के सहित डॉ हरिकान्त श्रीवास्तव ने अपने भारतीय प्रेमाख्यान काव्य में १०० वि० से १९१२ वि० तक रचित ३१ प्रेमाख्यानों का मध्ययन प्रस्तुत किया है ।

प्रमाणों का वारं वार प्रयोग १३७० २० म १७६० २० तक की कालावधि में
विस्तीर्ण रहा ।

हिन्दी प्रमाणांतों का वर्गीकरण

एक एक मूल्य वर्गों में रचित हिन्दी प्रमाणांत काव्य का वर्गीकृत करने का
विशेष प्रयास विद्वानों ने किया है । आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने एक विशेष आध्यात्मिक
उत्थाय का गिद्धि-विण विविध आख्यात्मक प्रमाणांत काव्य का जन्म प्रमा
माया काव्य और अन्य विधाओं को प्रमाणांतों में आकर बताने का प्रयास किया है।
उत्थान प्रयोग का आधार प्रचारित विषय साधक साहित्य को वर्गीकृत करने का प्रयास
प्रयोग किया गया । शुक्ल ने एक नए प्रमाणांत काव्य का जन्म रामचंद्र शुक्ल का
उत्थायन द्वारा उभय मूल्यक अध्ययन के प्रयास विज्ञानों में प्रमाणांत-काव्य का
कृत्रिम वर्गीकरण भी किया । मनीषी वर्गीकरण का उल्लेख आवश्यक है । मनेषी
प्रयोग में मात्र मनेषी जातीय परंपुराम अनुर्वेणी द्वारा किया गया वर्गीकरण का है।
उत्थान प्रमाणांतों का वर्गीकरण का प्रयास मनेषी का जा मूखी प्रमाणांत काव्य को
परम्परा का आरम्भ मानने का एक प्रयोग किमी-१ किमी प्रकार का मनेषी प्रयोग हुए
विशेष रूप में । इस काव्य का अनुर्वेणी जी ने पांच वर्गों में विभाजन किया है ।

प्रथम वर्ग उन कथाओं का वर्गीकरण मान पौराणिक है जिनमें आत्म-वृष्ण
वृष्ण रक्षिणी जन्म प्रविष्ट नव-नमस्त्री और दुष्कृत-वृष्णता जाति की
कथाएँ हैं । दूसरा वर्ग उन कथाओं और लोकगाथाओं से सम्बन्धित है जो भौतिक
रूप में किसी अनाथ समझ में आती हैं । तीसरा वर्ग उन कथाओं की
प्रेम-कथाओं का जो दोनो मान्यता में सम्पादित हैं । इन वर्गों में अनाथता आती
है । तीसरे वर्ग में रचित हैं वे पौराणिक जाण्योक्त कथाएँ हैं जिनमें प्रेम का वर्णन
वस्तु-वृद्ध मीमांसा है और जिनका मुख्य उद्देश्य धार्मिक है । चौथा वर्ग
वीरगाथा कथा की उन प्रेमगाथाओं का है जिनमें प्रेम और मनेषी घटनाओं का भी
समावेश होता है और जो अतिरिक्त वृद्ध न कृत्रिम विचारमय जाण्योक्त भी रहती हैं ।
दूसरे वर्गों में अनाथ कथाएँ आती हैं । पांचवाँ वर्ग
कहानी का आधार पर विषय पर उन प्रमाणांतों का है जिनमें विचारमय और चमत्कार
का प्रभाव है । इन पांचों प्रकार का प्रमाणांतों में से अधिकतर को परम्परा आज
सूख रहा गया है ।

अनुर्वेणी जी ने मूखी प्रमाणांतों का वर्णन मनेषी का वर्णन में मानकर 'उनमें
मनेषी वर्गों का विभाजन का आधिक समावेश माना जाता है और उनका कथा रूपक
प्रणाली का वर्णन मनामत के प्रमाणों में विद्वानों के प्रचार की शक्ति है उनकी

निजी एव मौलिक विशेषता स्वीकार किया है।^१ परन्तु ऐसा लगता है कि चतुर्वेदी जी को अपना उपयुक्त वर्गीकरण कुछ अधिक वैज्ञानिक नहीं जान पड़ा इसलिए उन्होंने भारतीय प्रेमाख्यानक काव्यों को तीन अर्थ वर्गों में विभाजित किया। वे वर्ग हैं— (१) इतिवृत्तात्मक (२) मनोरजनात्मक और (३) प्रचारात्मक।^२ प्रथम वर्ग में उन्होंने बौद्ध पौराणिक तथा ऐतिहासिक आख्यानो वाली रचनाओं की गणना की है। द्वितीय वर्ग में उन कहानियों को रिया है जिनको जन समाज ने मनोरजनाथ लिखा गया है। तृतीय वर्ग में उन्होंने उन रचनाओं को रखा है जिनका लक्ष्य कोण मनोरजन न होकर किमी धर्म या मिद्धात का प्रचार करना है, जस बौद्धा जनियो, सूफिया जयवा भक्ता द्वारा लिखी रचनाएँ।

चतुर्वेदी जी ने एक तीसरा वर्गीकरण और प्रस्तुत किया है जो प्रेम के विभिन्न स्वरूपा की अभिव्यक्ति के अनुसार है (१) दाम्पत्य प्रेमपरक काव्य (२) विशुद्ध भावपरक प्रेम काव्य (३) कामासक्तिपरक काव्य (४) पातिव्रतपरक प्रेम-काव्य तथा (५) अद्यतमपरक प्रेम-काव्य। प्रथम वर्ग के अंतर्गत उन्होंने तल अर्थती से सम्बन्धित प्रेमाख्याना का द्वितीय वर्ग में उपा-अनिरुद्ध की कथा को तृतीय वर्ग में 'कट्टुहारि जानन वाली कथा को चतुर्थ वर्ग में अता पञ्चविंशति की धर्म-त और मदनमेता वाली कथा को और षष्ठम वर्ग में जन कविया की उपमिति कथाओं को रखा है।^३ षष्ठे वर्ग में ही सूफी प्रेम काव्यों का भी समावेश हो सकता है।

चतुर्वेदी जी द्वारा नियम उपयुक्त तीन वर्गीकरणों में से प्रथम दो वर्गीकरण तो वस्तु परक^४ और अंतिम भाव परक। अंतिम दो वर्गीकरणों का आधार ही अधिक वैज्ञानिक जान पड़ता है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी प्रेमाख्याना का तीन वर्गों में विभाजित किया है—

- (१) आध्यात्मिक मिद्धाता के प्रचार के लिए लिखे गये काव्य,
- (२) विशुद्ध लौकिक प्रेम-काव्य
- (३) उच्च ऐतिहासिक प्रमगाथाएँ।

द्विवेदी जी ने प्रथम वर्ग में सूफियों के प्रेमाख्यानों को रखा है। तृतीय वर्ग में उन्होंने उन काव्यों को रखा है जिनका आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने सत या भक्त कविया द्वारा लिखे जान के कारण एक अलग वर्ग में रखा है। विवेचन की दृष्टि से आचार्य द्विवेदी ने अथाप-शिव काव्यों का (क) सूफिया, (ख) भक्त कवियों द्वारा लिखित—का उपवर्गों में विभक्त कर रिया है। विशुद्ध लौकिक प्रेम-काव्यों के

१ सूफी काव्य संग्रह पृ० ६०

२ भारतीय प्रेमाख्यान का परम्परा पृ० १४६

३ हिन्दी क सूफी प्रेमाख्यान आचार्य परशुराम चतुर्वेदी प्र० पृ० २१

४ १ शैशाहिय उमरु उल्लव और विकास डॉ हजारीप्रसाद द्विवेदी पृ० २६३

अन्तर्गत उद्देशों भारतीय परम्परा के अनुसार लिखे गये प्रेम-काव्या और अद्भुत एतिहासिक प्रेम-काव्या जग - बीमनन्द राम आदि का रमा है।

डा० हरिवान श्रीवास्तव ने भारतीय परम्परा के अनुसार लिखे गये प्रेम-काव्या का तीन वर्गों में विभाजित किया है—(१) शब्द प्रमाख्यान (२) अन्धकार दानिक और (३) नाति प्रधान काव्य।^१

डा० श्याममनोहर पाण्डेय ने मध्ययुगान प्रमाख्यान (१४००-१७०० ई०) में डा० हरिवान श्रीवास्तव के उक्त वर्गीकरण का विषयवस्तुगत बताने का प्रेम-काव्या का प्रस्तुत वर्गीकरण किया है। उन्होंने हिन्दी के भारतीय परम्परा के प्रेम-काव्या का चार वर्ग बनाये हैं (१) शब्दपरक प्रमाख्यान (२) कामपरक प्रमाख्यान (३) गनपरक प्रमाख्यान और (४) अध्यात्मपरक प्रमाख्यान।^२ डा० पाण्डेय ने प्रथम वर्ग में श्याममनोहर पाण्डेय की रमा तथा लखमन पद्मावती जैसे प्रमाख्याना को रखा है। दूसरे वर्ग में आनन्द कृत माधवानन्द काम कदना प्रथम चतुर्भुजनाम काव्यस्य कृत मधुमानता पुष्कर कवि कृत रम रतन तथा मध्यम मावलिगा आदि प्रमाख्याना की गणना की है। तामर वर्ग में नारायणनाम कृत 'दिनाई-नार्ता तथा माघनन्द मनामन आदि का रखा है। चौथे वर्ग में नन्दनाम कृत रूपमजरा पृथ्वीराज राठी कृत वेनि विमन रकमिणी गी बाबा धरणीनाम कृत प्रेम परगाम तथा गत दुःखहरन दास कृत पुष्पावती की गिनती की है। इन असूफी प्रमाख्याना के अतिरिक्त सूफी प्रमाख्याना का भी एक वर्ग है जिन अध्यात्मपरक प्रमाख्याना की श्रेणी में गिना जा सकता है। डा० पाण्डेय के काम दर्शिकरण का आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने कुछ हद पर के साथ अपने तृतीय वर्गीकरण में स्वीकार कर लिया है। अन्तर कवन इतना है कि चतुर्वेदी जी ने विगुण भावपरक प्रमाख्याना की अलग श्रेणी मानी है और डा० पाण्डेय ने उमका अन्तर्भाव अपने प्रथम वर्ग में कर लिया है।

उपरोक्त सभी वर्गीकरण पर विचार करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इन सभी विद्वानों ने प्रमाख्याना के दो स्पष्ट वर्ग स्वीकार किये हैं (१) के प्रमाख्यान जिनका उद्देश्य शब्द मनोरजन है और जिनमें प्रेम के लौकिक स्वरूप की अभिव्यक्ति हुई है और (२) के प्रमाख्यान जिनका उद्देश्य मनोरजन प्रदान करने के साथ साथ मत प्रचार करना भी है और जिनमें प्रेम के आध्यात्मिक स्वरूप पर विशेष बल दिया गया है दूसरे शब्दों में जिनका पयवसान आत्मा-परमात्मा का चिर मिलन दिखाने में हुआ है।

अतः हम हिन्दी प्रमाख्यानक काव्यों को दो ही स्पष्ट वर्गों के अन्तर्गत रखना उचित समझते हैं—

१ भारतीय प्रमाख्यान काव्य भूमिका।

२ मध्ययुगीन प्रमाख्यान डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय पृ० १५ और १५

(१) लौकिक प्रेम प्रधान काव्य

(२) आध्यात्मिक प्रेम प्रधान काव्य ।

दूसरे वर्ग के दो उपवर्ग होंगे

(क) सूफी मत का प्रचार करा वाले काव्य,

(ख) सत्त मत या अन्य किसी भारतीय धर्म का प्रचार करने वाले काव्य ।

प्रथम वर्ग में ही दाम्पत्यपरक सत्तपरक, विशुद्ध भावपूर्ण और अद्वैत ऐतिहासिक प्रेम गायकों का सरलता से अंतर्भाव किया जा सकता है । बात यह है कि दाम्पत्य-प्रेम और सत्तपरक प्रेम में कोई विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती । जहाँ तक दाम्पत्य प्रेम और स्वच्छन्द प्रेम का प्रश्न है उनमें भी प्रेम का स्वरूप में ऐसा कोई विशेष अंतर नहीं लक्षित होता, जिसके कारण उनकी दो भेदियाँ निर्धारित की जायें । उनका एक ही वर्ग में रखा जा सकता है । परंतु प्रेम के लौकिक और आध्यात्मिक निरूपण में इतनी स्वरूपगत भिन्नता है कि दोनों का अलग वर्ग में रखना अपरिहार्य हो जाता है । आध्यात्मिक प्रेम प्रधान काव्यों में सूफी कवियों का काव्य चूँकि वस्तुगत और शरीरगत दृष्टि से निजी वशिष्ठ्य रखता है इसलिए उसका एक अलग उपवर्ग बनाया जा सकता है । सत्तमत जन मत तथा धार्मिक प्रचार के उद्देश्य से लिखे गए अन्य प्रेमानुमानों का दूसरे उपवर्ग में रखा जा सकता है ।

की। मुल्ता या मौलाना द्वाऊद के विषय में इतना ही पता चला है कि यह डलमऊ के निवासी थे। डलमऊ रायबरेली से ४४ मील और बानपुर से ६१ मील दूर स्थित है। इन्होंने दिल्ली के सुल्तान फीरोज़ शाह तुग़लक़ के मंत्री जूनाशाह के प्रीत्यय 'चदायन' की रचना की थी। इनके गुरु शेरख़ जनुद्दीन सूफ़ी मन के चिन्तिया सम्प्रदाय के अनुयायी थे। (विशेष द्रष्टव्य चदायन सपादक - परमेश्वरीलाल गुप्त पृ० ८२ पाद-टिप्पणी)।

कथा—गोबरगढ़ के अहीर राजा मन्नेव (राय महर) की पट्टमहिषी फल-रानी के मन से एक बच्चा का जन्म हुआ जिसका नाम चदा (चन्द्र) रखा गया। चार वर्ष का ही अस्थायी मन्मत्ता विवाह बावन नामक व्यक्ति से हा गया। विवाह को बरफ़ बरफ़ बीत गए। चदा वात्रिका से युवती हो गई। बावन की रुचि व्यायाम और शस्त्राभ्यास में अधिन थी विषय भोग की जोर नहीं। अतएव काम चला अपने पति और अपनी माम से अमत्तुष्ट होकर अपने भके चली आई। एक दिन वह शृंगार किय अपने धीराहर पर मनी थी, कि एक वात्रिक (वज्रयानी साधु) गाना भीख माँगता उधर से आ निकला। बात्रिक उसके रूप को देखते ही मूर्च्छित हो गया।

वह घूमता फिरता राजापुर के राव रूपचन्द के पास गया। उससे उसने चदा के नय शिखर सौ देय का वना चढाकर वपन किया। रूपचन्द चदा पर आसक्त हो गया। उसने एक बड़ी सेना लेकर गोबरगढ़ पर चढाई कर दी। सहदेव महर का उसके साथ भला क्या मुकाबला था। सहदेव की हार पर हार हो लगी। लोगो क कहने से उसने गोबर व वीर लोरिक को बुलाया। लोरिक और उसके लडाके साथियों के युद्ध शैल में पहुँचते ही पास पलट गया। रूपचन्द की सेना के पाव उम्बड गये।

सहदेव महर ने लोरिक को सम्मानित करने के लिए उसका जुलूस निकाला। चदा ने लोरिक की कीर्ति ता सुनी थी पर उसको देखा नहीं था। जुलूस को देखने के लिए वह अपनी सखी विरस्पत के साथ धीराहर पर खड़ी हा गई। हाथी पर घड़े सुदर-सजोने लोरिक को उसने जो देखा तो ज्वेन हो गई। सुध ध्यान पर उसने विरस्पत से कहा कि बस भी मुझे लोरिक से मिलाओ। विरस्पत की सलाह से उसने अपने पिता से कहकर विजय व उपलक्ष्य में एक ज्योनार का ज योजन किया। लोरिक भी उसमें आया। वह जब लान के लिए पगत में बठा तब चदा शृंगार करने धीरा-हर पर आ खी हुई। लोरिक उसे दग्धन रागा भूल गया मूर्च्छित हा गया। घर

तबराशय—सपा० मौलवा सम्मद पती विरतिधोषाफिना इन्डिका गिराज १८६८ ई० भाग १ प २५० धीर ब्राज लम० ए रिकड कृत हमने धपेजी धनशाह जो हमी निरीज में भाग १ प० ३३३ प० १८१७ ई० में इसी शीषक से प्रकाशित है का हवाना किया है जिसके धनमार संपादन का रचनाकाल ७७२ हिजरी (१७५६ ई०) के वात्रिकी समय होना चाहिए। बीदादेर बात प्रति जिसका संपादन राबन धारस्वत्र कर रहे हैं के धनसार इसका रचनाकाल ७८१ हिजरी है। मसूद ७७२ हि से ७८१ हि के मध्य हमनी रचना मानना ठान है।

१ मेव धन ने ही पयि सावा। धरम पय जिहँ पाव गवावा।। —मुल्ता दाउद

गोत्र ही उमा का एक पद ही । गयोत न निगत किंवा हि इन प्रम रोग लग गया है । विरम्यत न तारिख म भेंट कर उा गुप्ताया कि वह नगर क बाहर मन्दिर म जाया बाहर बठ जाय । ती चला म उमरा मितन होग ।

तारिख मारगतर म जायी की यत भूया धारण कर मन्दिर म जा बटा । एक यत तय उमा तपस्या का पर चला म भेंट न हुई । रावाता का रात का चला अपनी मगिया क साथ मन्दिर म प्राण । उाका गत ही तारिख मुच्छित हो गया । चला म पन्नात न पाई । का पता पता ता पदपायी । उमर अपन प्रम क विद्व स्वल्प पान मिगर्द कर विरम्यत का तारिख क पाग भजा । तारिख न जाया का पन उतार टाता । यत चला म मितन क तिम विरम्यत हा उठा । यात्रार म पन्मन गारर उमा एक रग्गा (बग्गा) बसाया । रात की एक घार अधरा रात म यत उम रम्म क मन्दार चला क घोराहर पर चढ़ गया । रात गी प्रीया म बीत गयी । मन्दार हात पर चदा न उग अपन पत्रग क नीच दित्ता किया । रात हा गयी तो तारिख अपन धर गया । उमकी पती मना न उग पर स कह किया । परन्तु तारिख का मा सावन (गाइवन) न दाना म समझोता करा किया ।

चला क उार दिन पर तारिख उम भगा गया । उमन अपन गोना हापा म तानवार न रगी थी और चला न धनुष बाण । तारिख और चला हरदी की ओर चल । चला न पति बाटा का जब म घरना का पता चला तय उमने उनका पीछा किया और गगा पार जाकर उह पकड़ लिया । परन्तु चदा न उमकी बनीवाता क तिम उस भोगया । वह अपना मा मुह सार प्रीय भाया ।

तारिख और चला आम बर । एक ब्राह्मण क घर म उहाने विश्राम किया । वहाँ घग्गा पर बिछे फूताकी मुग प स आवृष्ट होकर एक गाँव न चला का डेम किया । चदा बहाण प्री गयी । तारिख मात शिवा ता विलाप करता रहा । एक गाइडी (मात्रोप चारी) ने झाड़ फूट करक चदा का विप उतार डाला । तारिख और चदा फिर हरदी पाटन की ओर चल पड । परन्तु रात को जब वे एक पाण्ड क पड के नीच सोय, तब एक गाँव न चदा को पुन डेम किया । विप क प्रभाव स बहु मतप्राय हो गयी । तारिख उमक साथ चिता म जवन को तयार हो गया । तभी कहीं से एक गाइनी आया और उमन मत्र प्रयोग करक चदा का जिना दिया । गाइडी ने तारिख स कहा कि हरदी पाटन मत जाना और जाना ही पड तो दाहिन रासन को अपनाता ।

तारिख चदा के साथ आग बडा । चार दिन बाद वे एक नगर म पहुँचे । चदा का नगर के बाहर एक मन्दिर म टहराकर तारिख नगर क बाजार म गया । इसी बीच एक टूटा योगी आया उसन अपनी सिंगी बजायी सिंगी-नाद स मोहित हो चदा उसक पीछे हो ली । तारिख न लीटन पर जब चदा को मन्दिर म न पाया तब वह बहुत धबराया । डडन डैनन एक अय नगर म उसन टूटा योगी को जा घरा । पचा ने बीच बचाव करके टूटा स चदा उस दिना दी । अनेक कष्ट भलते हुए गोना हरनी पहुँचे । वहाँ के राजा भतम न उनकी बनी आवभगत की ।

उधर गोबरगढ़ म मना लारिक के वियोग म रो रोकर दिन काट रही थी । मिर्जन नामक ब्राह्मण अपना टाड (व्यापारियों का दल) लेकर हरदीपाटन जा रहा था । उसन गोबरगढ़ म पडाव किया । मना न अपनी बिरह ब्यथा उसे कह मुनायी । मिर्जन मना का बिरह स'दश लेकर हरदीपाटन चल दिया । लोरिक को योजरर वह उससे मिला । मना का स'दश उसे मुनाया । लोरिक को बहुत अनुताप हुआ । उसन गोबरगढ़ लौट चलने का निश्चय किया । अनमन भाव से चदा भी उसक साथ चली । हरमी क राजा न लोरिक का सनिक अस्त्र शस्त्र अश्व तथा धन दकर प्रेम-पूर्वक बिदा किया ।

दबहा (घाघरा) नगी पार कर लारिक जैसे ही गोबर के निकट पहुँचा यह समाचार फन गया कि किमी राजा न पुन आश्रमण किया है । लारिक न मना क सतीत्व की परीक्षा लेने के लिए नगर के घर घर म फून बेटवाये । परंतु मना न फूल लेने स इन्कार कर दिया । वह दूध धवन के बहान लोरिक के शिविर म पहुँची । वहा चदा स उमकी नौक सोक हुई । सहदय महर न लोरिक के साथ चदा के रहने पर अब कोई आपत्ति नहीं की । मना और चदा दोनों पतियों क साथ लोरिक सुखपूर्वक रहने लगा ।

मृगावती

कृति और कवि—मगावती के रचयिता कुतुबन है । इसका सपादन डा० शिवगापाल मिश्र १ किया है और प्रकाशन हिंदी माहिस्य सम्मेलन पयाग न शक स० १९८५ म । इसम चौपाई दोहा तथा मारठा छंदों का प्रयोग हुआ है । मुद्रित प्रति म ३६० छंद हैं । अनूप संस्कृत लाइब्ररी, बीजानर म भी इसकी एक हस्त-लिखित प्रति है जिसम ४५७ छंद बताय जाते हैं । मृगावती का रचनाकाल स० १५६० वि० या १५०३ ई० या ६०६ हिजरी ई^१ । डॉ० शिवगापाल मिश्र की सूचना क अनुसार हरिद्वर पुस्तकालय चौखम्बा वाली प्रति म ६०६ हि० मे माहरम क महीन म दस माह दस दिन म ग्रंथ की रचना ज्ञान का स्पष्ट उल्लेख है ।^२

कुतुबन तीनपुर के सुल्तान हुसेनशाह शर्की क आश्रित थे । जब हुसनशाह न दिल्ली के बादशाह बहलोल लोदी के डर स जोनपुर छोड दिया और गौड़ (बंगाल) के शासक अनाउददीन हुमेन या हुसनशाह के यहा शरण ली, तब कुतुबन भी उनके साथ ही बंगाल चल गये । अभी तक यह बिवादग्रस्त है कि 'मृगावती म कुतुबन न जिस शाहबकत हुसेनशाह की प्रशंसा की है वह हुसनशाह शर्की का, या

१ जहिया होते पद स साठी । तहिया ए रे चौपाई गीठी ॥
छंद भाषा माहलि एहि गीठी । पदित बिन बजत होइ सौं ॥
पहिते पाख भादो छंठि धडा । सिध रासि सिपनी राबो ॥

चार दून निराना जोर चीर पानकर उर गयी। वह गगना गाहनी थी कि राजकुवर को उससे सच्चा प्रेम है या नहीं। सच्चा प्रेम हागा तो वह उमका खोजत हुए उसके नगर तक आग्या। जान जात मगावती ने धाय को बतना दिया कि मैं कचनपुर की राजकुमारी हूँ जोर भेरे पिता का नाम रूपुरारी है।

राजकुमार लौटा, तो मगावती का न पाकर उसका बुरा हाल हो गया। वह जागी का वेश धारण कर उसकी खान में निकल पडा। समुद्र पार कर वह एक शम राई में पहुँचा। वहाँ एक महल बना था जिसमें एक राजकुमारी का एक रागस न बंदी बना रखा था। राजकुमारी का नाम रकमिन (रविमणी) था। राजकुमार ने रागम का मार डाला। कृतज्ञतावश रकमिन के पिता ने उसके साथ अपनी कन्या का विवाह कर दिया। दहेज में जाग्य राजपाट द दिया।

परन्तु राजकुवर को मगावती के बिना चन नहीं था। एक दिन वह जोगी का वेश धारण कर चुपके से वहाँ से निकल गया। घोर वन में उसे एक गडरिया मिला, जो असल में मनुष्यभभी था। उसने राजकुवर को ले जाकर एक गुफा में बंद कर दिया। गडरिया जब गो गया तब राजकुवर ने एक गरम सलाख से उसकी दानो आँखें फोड़ दी। एक बड़ी-सी बकरी को मार कर उसकी खाल खींच ली और उसे ओढ़कर वह युक्तिपूर्वक उम गुफा से बाहर आ गया।

उपर मगावती के पिता का स्वगधाम हा गया। मत्रियों ने सलाह करके मगावती का ही राज्य भार सौंप दिया। मगावती ने एक धर्मशाला बनवा दी, जहाँ योगी-भक्ति ठहर गके।

राजकुंवर मगावती की योग में बराबर भटक रहा था। एक रात जिस वन के नीचे वह सो रहा था, उसकी एक डात पर बठ दो पक्षिया को उमने उस प्रकार बात बरत सुना। एक पक्षी दूसरे से कह रहा था—

एक कुवर मगावती का प्यार करता है। अब तक उसने इताग बुल भेला जिसका वगन नहीं। अब कुछ ही दिन में उसके सुख के दिन आन वाले है। राजकुवर ने यह सुना तो बडा प्रसन्न हुआ। पक्षी जिस दिशा में उडे उसी दिशा में वह चन दिया। आग जाकर उस एक सुंदर सा नगर मिला। वह अपनी किगरी पर वियोग के गीत बजाना नगर में घूमने लगा। उसकी चचा राजमहल तक पहुँची। मगावती ने उसे पहचान लिया और अपने पास बुला लिया।

राजकुवर का जोगी वेश उतारा गया। फिर मगावती ने कहा—

चतहूँ सेज पर बठहूँ, तू रे पुरुष हों नारि।

एक रात का मगावती अपनी एक सत्री के घर गयी हुई थी। राजकुवर ने उरमुकनाग एक बंद कांठग खाल दी। उसमें एक कठधरा था जिसमें एक राक्षस बंद था। राजकुवर ने दयादर हाकर उस मुकन कर लिया। उसमें म राक्षस मगावती

पर आसकन था। वह राजकुंवर का कंधे पर बठाकर आशाम में उड़ चला और ममुत्त में लजा पटना। मगावती ने राजकुंवर का सम्भोग करने में पाकर उसका उद्धार किया। राजकुंवर बारह वर्ष तक कचनपुर में राजपाट करता रहा। उसका पुत्र भी हुए। उधर चन्द्रागिरि के राजा गनपतिदेव (राजकुंवर के पिता) अपने पुत्र के लिए चिंतित थे ही। उन्होंने दूनभ नामक पुराहित का कुंवर का पता लगाने के लिए भेजा। दूनभ को माग में अयोध्या पड़ी जहाँ उस स्वामिन मिनी। कचनपुर आकर उसने राजकुंवर से स्वामिन का विग्रह मदन कहा। राजकुंवर को स्वामिन और अपने बड़े पिता की याद सतान लगी। मगावती को साथ लेकर वहाँ चले गये। रास्ते में उसने स्वामिन को भी ले लिया। राजा गनपतिदेव अपने विद्युत् पुत्र से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। राजकुंवर राजकाज देखने लगा। एक दिन वह शिकार खेलने गया। एक सिंह ने उसको मार डाला। मगावती और स्वामिन उसका शव के साथ चिता में जल गये।

कुतुबन ने कहा है— यह कथा पहले हिन्दुओं में प्रचलित थी। हिन्दुओं में तुर्कों में गयी। मैं इस कथा का रहस्य समझाया है। इसमें योग के अतिरिक्त शृंगार तथा वीर रसा का समावेश है—

पहिले हिन्दुइ कथा अहइ । फिन रे गान तुरकइ ले गहइ ॥

फिन हम खोन शरय सब कहा । जोग सिंगार वीर रस ग्रहा ॥

पदमावत

कृति तथा कवि—सूफी प्रामाण्य-परम्परा का तीसरा काव्य पदमावत मलिक मुहम्मद जायसी की रचना है। इसमें उन्होंने ६४७ हिजरा (१२६७ वि० या १२४० ई०) में रचा था। आलाउद्दौला रामचन्द्र गुक्त ने जायसी ग्रन्थावली^२ के द्वितीय संस्करण में ६२७ हिजरी (१२२१ ई०) को पदमावत का रचना-काल माना है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने ६४७ हि० का ठीक बताया है।

मलिक मुहम्मद जायसी अवध के जायस नगर के निवासी थे। इनका बाप भी अल कानो थी और बापों का नाम यहूद था।^३ उनकी मृत्यु अमठी में हुई जहाँ इनकी कब्र अब तक मौजूद है। उनके अपने दो गुणों का उल्लेख किया है—(१) पार

१ सन् नी से सवालिस प्रदे। कथा धरम बन कवि कहे।

—जायसी ग्रन्थावली सभा डॉ० माताप्रसाद गुप्त छ० २४

२ जायसी-ग्रन्थावली का संपादन आलाउद्दौला रामचन्द्र गुक्त और डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने संलग्न-संलग्न किया है। पाठ की दृष्टि से डॉ० माताप्रसाद गुप्त द्वारा संपादित प्रति अधिक प्रामाणिक है हमने इस प्रबंध में संलग्न पदमावत मलिक और मजीबुनी व्याख्या (डॉ० वासुदेवशरण धर वान) का उपयोग किया है। अध्याय आ न डॉ० गुप्त की प्रति की धरनी टीका का आशय बनाया है।

यद अशरफ जहाँगीर^१ और शेख मोहिदी या मुहीउद्दीन^२ जायसी ने महदवी सम्प्रदाय के शेख बुरहान का उसी रूप में अपना गुरु माना है जिस रूप में चिश्तिया सम्प्रदाय के सयद अशरफ जहाँगीर को। एसा लगता है कि जायसी सूफ़ियों के इन दोनों सम्प्रदायों से जुड़े हुए थे।

कथा—पदमावत^३ के चौबीसवें छन्द में जायसी ने कथा का संक्षिप्त रूप इस प्रकार दिया है—

सिंहल द्वीप पद्मवती रानी । रतनसेन चित्तउर गढ जानी ॥
अलाउदौं दिल्ली मुलतानू । राघो वीतन कीह बखानू ॥
मुना साहि गढ छँका आई । हिंदू तुरकहि भई लराई ॥
आदि अत जम कथा ग्रहै । लिखि भाषा चौपाई कहे ॥

‘पदमावत की कथा के दो अंश हैं—पूर्वाद्ध और उत्तराद्ध। पूर्वाद्ध में चित्तौड़ के राजा रतनसेन का सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मिनी पर मोहित होना, उसके प्रेम में जोगी बनकर निवृत्तना और अनेक कष्ट पाकर उससे विवाह करके उसे चित्तौड़ लाना वर्णित है। उत्तराद्ध में दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन द्वारा पद्मिनी का हथियाने के लिए चित्तौड़ पर चढ़ाई करके चित्तौड़ दुर्ग पर घेरा डालना, रतनसेन का कद करना, गीरा घादन द्वारा रतनसेन को कद से छुड़ाना, और कुम्भलनर के राजा देवपाल से युद्ध करते हुए रतनसेन के मारे जाना का वर्णन हुआ है।

पद्मावती या पद्मिनी सिंहल द्वीप के राजा गधवसेन की सबगुण-सम्पन्न पुत्री थी। उसने एक तोता पाल रखा था जिसका नाम हीरामन था। ताता बेटे शाश्वत था। एक बार वह बहेलिये के जाल में फँस गया। चित्तौड़ का एक ब्राह्मण उसे खरीदकर चित्तौड़ ल आया। राजा रतनसेन ने तोते के गुणों की प्रशंसा सुनकर एक लाख मुंगों देकर ब्राह्मण से उसे खरीद लिया।

हीरामन तोते ने रतनसेन से पद्मावती के सौन्दर्य की प्रशंसा की। रतनसेन के हृदय में पद्मावती के प्रति प्रेम जागृत हो गया। वह जागी-वेश धारण कर अपने बहुत से साथियों के साथ हीरामन तोते के माग निवेशन में सिंहल द्वीप के लिए चल

१ इच्छा—पदमावत सजीवनी व्याख्या पृ० ३८ जायसी-पद्मावती रामचन्द्र भुवन में पदमावत छन्द १८-१६ अशरफ छन्द २६ माखिरी कलास छन्द ३ चिश्तिया पृ० ७३

२ इच्छा—पदमावत २०।१२ जायसी पद्मावती माताप्रसाद गद्य पृ० ६६० पदमावत स० व्याख्या प्राक्कथन पृ० ३७। हिन्दी मनशीलन धीरे-धीरे बर्मा विजेपाक पृ० १५ पृ० १२ पृ० ३७८ पर प्रकाशित डा० रामचन्द्रनाथन पाण्डेय का जायसी लिपि प्रेम धीरे परम्परा शोधक लेख। डा० रामचन्द्रनाथन पाण्डेय का मत है कि जायसी के गुरु गद्य बुरहान या धीरे या महदवी सम्प्रदाय से संबंधित थे। उन्होंने सयद अशरफ जहाँगीर को जायसी का पुन-गुरु तथा गुरु माना था। इनको दोनों-गुरु बताया है।

पटा। सात समुद्रों को पार कर और माग म अनक कठिनान्या सहन हुए रतनसेन सिंहल द्वीप म पहुँच गया। तोन न उसे शिव मंदिर म ठहरा दिया। उधर उसने पद्मावती को रतनसेन क आन की सूचना दी। पद्मावती के हृदय म रतनसेन क प्रति प्रीति उत्पन्न हो गयी। वह उसम मिलन क लिए शिव मंदिर म आयी परंतु उसके अदभुत सौंदर्य को देखकर रतनसेन मूर्च्छित हो गया। पद्मावती उसकी छाती पर चंदन से कुच्छ निख आयी। सुध आन पर रतनसेन न उस लक्ष को पता और विताप करन लगा। शिवजी न आविर्भूत होकर रतनसेन को मिट्टी गुटिका प्रदान की और सिंहलगत म प्रवेश करने का मुक्त माग बतला दिया।

रतनसेन को राजा गधवसेन क सनिको ने पकड़ लिया। उसको नूरी पर चयान का दण्ड मिला। तभी एक भाट न आकर रतनसेन के कुल शीश का परिचय दिया। हीरामन तोन न भी नाइय दिया। गधवसेन न पद्मावती का विवाह रतनसेन से कर दिया। विवाहोपरांत रतनसेन एक वर्ष तक सिंहल म रहा।

एक दिन वह आसक्त करन बन म गया हुआ था। घक्कर वह एक वन क नीचे विश्राम करने लगा। तभी एक पत्नी न उसे उगकी पूव विवाहिता पत्नी नागमती का विरह सदा बह सुनाया। रतनसेन का चित्तोड की याद हो आयी। गधवसेन म विदा लेकर वह पद्मावती क साथ समुद्र भाग न स्वप्न के निग रवाना हुआ।

समुद्री तूफान म उसका जहाज टूट गया। पद्मावती और वह परम्पर बिबुड गय। समुद्र और उसकी पुत्री नदमी की कृपा से पद्मावती क साथ उसका पुनर्मिलन हुआ। चित्तोड पहुँचकर वह अपनी दानों रानिया क साथ सुसज्जक रहने लगा।

राघवचेतन नामक एक तांत्रिक ब्राह्मण रतनसेन से जसनुष्ट होकर त्रिनी क शाह जलाउद्दीन के दरबार म आया। उमन शाह क सामने पद्मावती क सौंदर्य की वन चनाकर प्रामा की। पद्मावती को प्राप्त करन के लिए अलाउद्दीन न मन्त्र बल चित्तोड पर चलाई कर दी। चित्तोड ग क चारो ओर उमन घरा डाल लिया। रतनसेन न सधि प्रस्ताव किया। अलाउद्दीन को ग क नीतर बुलाकर एक दण म पद्मावती का प्रतिविम्ब दिखा लिया। प्रतिविम्ब देखकर शाह मूर्च्छित हो गया। वह धोषे से रतनसेन को दृग क बाहर तक ल गया और उसको उसने बंदी बना लिया। गौरा बाल न युक्तिपूर्वक रतनसेन को बंदीगह से छुड़ाया। शाही सेना के साथ युद्ध करत हुए गौरा न वीरगति पायी।

रतनसेन क चित्तोड वापस आ जान पर पद्मावती न उससे निश्चयन की कि उसकी अनुपस्थिति म कुम्भलनेर के राजा ददपाव न एक दूता नजरकर उस फुसलान की कृच्छेष्टा की थी। रतनसेन न ददपाव पर चलाई कर दी। दाना म द्वन्द्व-युद्ध हुआ जिसम रतनसेन की मत्यु हो गयी। पद्मावती और नागमती राजा क शव क साथ चित्तोड पर मरी गयी। शाह अलाउद्दीन न चित्तोडग म आकर पद्मावती की केवन राक्ष पायी।

चित्ररखा

कृति और कवि—यह जायसी की बद्धावस्था की एक छोटी-सी रचना है। इसकी कथा 'पदमावत' की तरह दुःखान्त नहीं, बरन् मुखांत है। यह शुद्ध प्रेम कथा है। कथा वहीं पराश सत्ता की ओर इगित है। ममनवी पद्धति पर दोह चौपाई में रचित है। सात अर्द्धालिया के बाद एक दाहे का क्रम निर्वाह हुआ है। इस काव्य के प्रकाशक ह हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी और संपादन है श्री शिवसहाय पाठक।

कथा—अवध भाजपुर जनपद में आज भी प्रचलित चित्रलेखा की कथा नाम से प्रसिद्ध एक लोक-कथा इस का प्रकाश आधार है। कथा इस प्रकार है—चन्द्रपुर के राजा चन्द्रभानु की रूप-गुण-शील-सम्पन्न कथा का नाम था चित्ररखा। उसका विवाह ब्राह्मणों ने सिधल के राजा सिधनदेव के कुबड़े बट से तय कर दिया। परन्तु यह विवाह न हो पाया।

कन्नोज के राजा बलरानसिंह के काई सत्तान न थी। धार तप करने के बाद उसकी रानी में एक पुत्र उत्पन्न हुआ। राजकुमार का नाम प्रीतम कुवर रखा गया। ज्योतिषिया ने बताया कि राजकुमार जल्दापु है—केवल बीस वर्ष तक जीवित रहेगा। मरने के ढाई दिन रह गये, तब प्रीतम कुवर काशी गति पाने के लिए काशी की ओर चल पड़ा।

रास्त में चन्द्रपुर पड़ा। वह धरकर एक बग्न के नीचे सा गया। ऊपर में सिधल के राजा की बारात गुजरी। सिधनदेव ने उससे अनुरोध किया कि कुछ दर के लिए वह उसके कुबड़े बट का स्थान ग्रहण करने और बारात का दूल्हा बन जाय। प्रीतम कुवर ने स्वीकार कर लिया। विवाह धूमधाम से सम्पन्न हुआ परन्तु रात में प्रीतम कुवर चित्ररखा की ओर स पीठ करके सोता रहा। राजकुमारी के सो जाने पर उसका जाचल पर अपना परिचय लिखकर वह काशी की ओर चल पड़ा। जागने पर चित्ररखा ने जाचल पर का लेख पढ़ा। वह सती होने के लिए प्रस्तुत हो गयी। उधर काशी में प्रीतम कुवर साधु सयामिया की दान-पुण्य कर रहा था। व्यास मुनि के मुह से चिरजीव हो आशीर्वाद निकल पड़ा। प्रीतम की आयु बढ़ गयी। प्रीतम घोड़ा दौड़ाना चन्द्रपुर पहुँचा। राजकुमारी चित्ररखा चिता पर चढ़ने ही वाली थी। वह रुक गयी। राजकुमारी और प्रीतम कुवर का पुनर्मिलन हुआ।

मधुमालती

कृति और कवि—'मधुमालती' सूफी प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा की एक

१ मधुमालती के मूल तक दो संस्करण प्रकाशित हुए हैं। पहले संस्करण का संपादन डा० शिव गोप ल मिश्र ने और दूसरे का डा० माताप्रसाद गुप्त ने किया है। इनके प्रकाशक क्रमशः हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी और सिद्ध प्रकाशन इलाहाबाद हैं। इन दोनों में डॉ० गुप्त की पुरतक पाठ शोधन की बगानिक विधि से संपादित होने के कारण अधिक प्रामाणिक है। हमने प्रस्तुत प्रबंध में इसी का उपयोग किया है। —लेखक

मंगलक कृति है। इसका रचना मगान ने ममीन शाह के काल में ६५२ हिजरी^१ अर्थात् १५४५ ई० में की।^२ यह मिर्जापुर जिले के पुनार नामक स्थान के रहने वाला था। इनके गुरु शेख मुहम्मद गौस थे। गौस सूफिया के शास्त्री सम्प्रदाय के थे।^३ मगान का ६० वर्ष का अवस्था में आगरा में देखा हुआ। (विशेष द्रष्टव्य— मधुमानती डॉ० माताप्रसाद गुप्त द्वारा लिखित भूमिका)।

कथा—कागिरि गढ़ के निरतान राजा मूरजभा ने निरतान प्रांत के लिए एक सपत्नी की गथा थी। सपत्नी द्वारा प्रसूत पिण्ड के गिलान से पटरानी की एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। उमका नाम मनाहर रखा गया। ज्यातिपिया ने पटराईयें थप में उमके प्रेम विधागी हान की भविष्यवाणी की। बारहवें थप उमका राजतिलक करा दिया गया।

जब वह चौदह थप ग्यारह मंगल का हुआ तब एक रात अपराध ने उस निरायस्था में उठाकर महारग नगर के राजा चित्रम की कन्या मधुमालती की शय्या पर ला गुत्ताया। मनाहर और मधुमालती के हृदय में एक-दूसरे के लिए प्रेम उत्पन्न हो गया। पुत्र अपराध ने प्रातःकाल हान से पहले मनोहर के उमके महल में पहुँचा दिया।

मनाहर चिरहु स्याकुल हाकर जोगी वश धारणकर मधुमालती के तानाशा में निजल पडा। माग में प्रमा नामक एक राजकुमारी से उसकी भेंट हुई जिस एक राक्षस ने बंद कर रखा था। प्रमा चित्त बिसराउ नगर के राजा चित्रमन की कन्या थी। वह मधुमालती की बान-महली निकली।

मधुमालती की माँ रूपमजरी विधाघरी थी। वह प्रत्येक मास की त्रितीया तिथि के प्रमा की माँ में भिन्न आया करती थी। मनोहर ने प्रमा से राक्षस का मृत्यु का रहस्य जान लिया। रात में के प्राण दक्षिण दिशा में स्थित एक अमल वक्ष में बसते थे। मनोहर ने उम वक्ष को जड़ से काट डाला। राक्षस मर गया। प्रमा का उसने चित्त बिसराउ नगर में उमके माता पिता के पास पहुँचा दिया। द्वितीया तिथि की रूपमजरी मधुमालती को लेकर आयी। प्रमा ने मनोहर और मधुमालती का मिला दिया। रूपमजरी ने मन्नवन से मनोहर को सुप्तावस्था में कागिरि भेज दिया और मधुमालती को लेकर अपने घर आ गयी।

१ मन की सी बावन अब भए सती पुरख कलि परिहरि गए
जब हम जिय जपरी घमिलाधा कथा एक बछल रम भाधा ॥

— मधुमालती तथा माताप्रसाद गुप्त १९१२

२ मगान का जीवन वक्त शीघ्र लेख डॉ० इब्नमनोहर पाण्डेय लिखना जलाई १९५६ सूचना विभाग सचनऊ।

३ डॉ० इब्नमनोहर पाण्डेय का तुलसीदास प्रयोग भाग २ पृष्ठ ३ जलाई सितम्बर १९५६ में प्रकाशित मगान के गुरु शेख मुहम्मद गौस शीघ्र लेख।

मधुमालती जब विरह-व्यथित हाकर रदन करने लगी तब रूपमजरी न उसे पानी का छोटा मारकर पथी बना दिया। मधुमालती पक्षी बनकर उड़ गयी। वह पौनरिपुरी (पञ्चनगर) के राजकुमार ताराचन्द के पाम पहुँची। ताराचन्द उस लेकर महारस नगर म गया। रूपमजरी न पती का पुन नारी बना दिया। उधर मनोहर मधुमालती का खोजता हुआ प्रेमा व पिता के नगर घित बिसराउं म पहुँच गया। प्रेमा न यह समाचार महारस नगर म भेज दिया। विक्रम और रूपमजरी मधुमालती को लेकर आ गए। वही मधुमालती आर मनोहर का विवाह हुआ। प्रेमा का विवाह ताराचन्द से हो गया। दाना अपनी अपनी वधुआ को लेकर अपन अपन देश को लौट गय।

माधवानल-कामकदला

कृति—आलम कृत 'माधवानल कामकदला' की दो प्रकार की प्रतियों के हस्त लेख मिले हैं एक प्रति छोटी है और दूसरी बड़ी। छोटी प्रति म, जो नागरी प्रचारिणी सभा काशी म सुरक्षित है और कुछ पाठ भेद के साथ जिसका एक रूप 'हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद से हिंदी प्रेमगाथा काव्य-संग्रह' मे प्रकाशित हो चुका है जयती अप्सरा' का प्रसंग नहीं है। कुछ विद्वान छोटी प्रति को ही आलम की प्रामाणिक रचना मानत हैं और बड़ी प्रति के अधिक पाठश को प्रक्षिप्त मानते हैं।^१

आलम ने माधवानल कामकदला की रचना ६६१ हिजरी (१६३६ ४० वि०) म की। इस सम्बन्ध म आलम न लिखा है —

सन भी से इक्यावन जबहीं। क्या आरम्भ कीह यह तबहीं ॥

श्री उदयशंकर शास्त्री इक्यावन का पाठ 'इक्यावनुद' होना मानते हैं और इसका रचना काल आचाय रामचन्द्र गुवन के मतानुसार ६६१ हिजरी निर्धारित करत हैं। हम भी ६६१ हिजरी वाली तिथि ही ठीक जान पडती है, क्योंकि यदि हम इसका रचना-काल ६५१ हिजरी मानें तो इसका अर्थ यह होगा कि इस काव्य की रचना के समय अकबर की आयु ३ वष की रही होगी जो शाहेबकत की जगह अकबर की प्रशंसा को देखन हुए असंगत है।

माधवानल कामकदला को हमन सूफी काव्य और आलम को सूफी कवि माना है। इसके कई कारण हैं—(१) काव्य मसनवी पद्धति म लिखा गया है। (२) आलम के गुरु (पीर) सयद मुहम्मद गौस सूफियों के कादरिया सम्प्रदाय के थे। उन आलम का सूफी मतानुयायी होना सिद्ध होता है। (३) यद्यपि आलम का यह काव्य लौकिक प्रेम (इश्क मजाजी) व महारे अलौकिक प्रेम (इश्क हकीकी) की मजिल की ओर स्पष्ट रूप से बन्ता नहीं दिखायी देता, तथापि इसमें प्रेम की उत्कटता और

१ हिंदी धनशीलन घोरेन्द्र वर्मा विशयाक वर्ष १२ अंक १२ में प्रकाशित श्री उदयशंकर शास्त्री का लेख 'माधवानल-कामकदला का रचयिता आलम सूफी था ?'

विरह की व्यापकता का मध्यम चित्रण है। अथ सजी प्रमाण्यानी के नाथर जीर तापिका जय वि प्रम की पीर म मूचिप्रा ही होन शिवाय जान हैं तब एग वाध्य म तापक-नायिका का पारम्परिक प्रम अन यना और त मयता क उम उच्च घगतल पर पहुँच गया है जहाँ एन प बिना दूसरे की स्थिति नी अमम्भव हो जाती है। माधवानल और कामकदना एक दूसरे की मरम्बु का समाचार गुनत ही प्राण-व्याग कर दन है। दम काव्य म प्रेम और विरह की उत्कटता का मार्मिक चित्रण हुआ है।

प्रेम का यणन करत हए कवि कहता है—

नह साग जो बिद्यर कोई । नित दिन रोम रोम दुप होई ॥
 यह जिय जानि नेह नहि कीज । बिद्यर सताप छपनपी लीज ॥
 नेह जसो दाँड की धारा । होउ दित प न छयन को पारा ॥
 जानि नेह पतग, मिलत नन नहि रह सख ।
 देयत हो में अग, छट विरह वियोग त ॥

कामकदना की विरहाकुलता का कवि न सुन्दर चित्रण किया है—

छिन भीतर छिन धाहर आय । छिन माघो माघो गुहराय ।
 विरह सताप छिन सेज न सोय । अहि नित सख टेक क रोय ॥

×

जो दिन होय तो नित रट । जो नित होय तो प्रात ।
 घातर रन जु अधिक दुप विरह सताव गात ॥

×

पतक पाट त रहैं निपारे । नगन भय मनन के तारे ॥
 माघो विरह कदला द्यापी । विरह की ताप सफल तन तापी ॥
 डारे तन मार मन रहै । हिय पार काहु नहि दहई ॥
 छिन चेत छिन चेत न आय । जो बिय लहर देह मे घाय ॥

×

×

×

माधवानल भी कम व्याकुल नहीं है—

विरह समुद्र अगम अति आहो । बूड मर पर पाव न याहो ॥
 बुध बल छल कीउ याह न पाव । जो नर सप्त गगन चढ़ याव ॥
 विरह इतत नर जिय न कोई । जो रे जिय से वावरी होई ॥
 विरह चिनग जिह तन पर जरई । छिन छिन अधिक अगन विसतरई ॥
 सोऊ अगन माघो तन लागी । घन वन फिर विरह धरागी ॥
 हिय हूक भर नन जल विरह अगन तन होम ॥
 अतर जर पिजर जर, स्वास प्रगट नहि धोम ॥

×

×

×

हियरे अतर दाह, पीर न कोऊ बूसई ।

बिरहा अगिन उमाहु, जिह ध्याप सोई सहै ॥

इस काव्य में प्रेम की पीर माधवानल और कामकदला होना ही पशु में परि-
ष्कृत है और उमका रूप निश्चय ही वासना से भिन्न उदात्त प्रेम की विगुद्धता लिय
है ।

इस काव्य में चौपाई की पांच अर्द्धालिया के बाद एक दाहा या सोरठा या
शनों रखन का श्रम रखा गया है ।

कवि—आलम के जीवन-वृत्त के विषय में अधिक कुछ पात नहीं हो सका है ।
शिवसिंह सरोज में इन्हें मनाढय ब्राह्मण और बाद में एक रगरजिन क प्रेम में
पत्नकर मुसलमान होने वाला कहा है । श्री सेंगर न बादशाह औरंगजेब के शाहजादा
मुअज़्ज़म आ बहादुरशाह (१७०७-१२ ई०) के नाम से गद्दी पर बठा की सेवा में
इनकी हीन की बात भी कही है ।^१ आचार्य रामचन्द्र गुक्ल न इनसे भिन्न मत प्रकट
किया है । उनका कथनानुसार— य अक्षर के समय के एक मुसलमान कवि थे जिन्होंने
सन् ६६१ हिजरी अर्थात् मकर १६२६ ई० दि० में 'माधवानल-कामकदला' नाम की
प्रेम-कहानी लिखी ।^२ वस्तुतः आलम अक्षर के समय में ही हुए
थे क्योंकि मसनवी पद्धति पर लिखे अपने उक्त प्रेमाख्यानक काव्य में शाह-वक्ल की
प्रशंसा करन हुए आलम न अक्षर का उल्लेख किया है—

बिलिय पति अक्षर सुलताना । सप्त शीप में जाती घाना ॥

एक अर्थ प्रति में यह सारठा भी मिलता है—

अदली कहे बयान मुजस प्रगट चौह पड म ।

बिद्या अरम निर्धान साहो अक्षर जगन गुह ॥

कवि न अक्षर के साथ उनका माननी टोडरमन का भी नाम लिया है—

घाय नौबी महाबल मत्री । राजदाप टोडरमल पत्री ॥

इसमें यह भी अनुमान किया जा सकता है कि आलम न अपने काव्य की
रचना टोडरमन के आश्रय में रहकर की है ।

अब इस सम्बन्ध में प्रायः विवाद नहीं रह गया है कि 'जायमकनि और
'माधवानल-कामकदला के रचयिता आलम का अपना व्यक्ति थे । रगरजिन क प्रेम
में पठकर मुसलमान बनने वाली किरदती का माधवानल-कामकदला के रचयिता
आलम में कोई सम्बन्ध नहीं है । यह तो जमना मुसलमान थे । उन्होंने अपने गुरु का
नाम सयद मुइनी (मुअम्म) बताया है—

१ शिवसिंह सरोज श्री शिवसिंह सेंगर पृ० ८

२ हिंदी साहित्य का इतिहास पृ० १८२

गोस कुतुब कादरी कहिया । जगमनि सयद मुहदी (मुहम्मद) सहिया ॥

<

<

<

सयद मुहम्मद पीर सौ जो मन साथ कोइ । तीन लोक की सपदा मनवाँछत पस होइ ॥

'मयद मुहम्मद गोस सयद पतह मुहम्मद क पुत्र थ जो मयद अट्टन कादिर गानी लाहोरी क पीत्र थ । य लाग लाहौर क बहुत प्रतिष्ठित घरान के सूफा थ । मयद मुहम्मद अपन पिता की मृत्यु के बाद उनकी गरी पर बट । य अपन पिता के समान प्रख्यात थ और वक्त-न लोग मन प्रिय थे । १००४ खिजरी म नका दहा त हुआ और लाहौर म ही अपन पिता की कब्र क पास य दफनाय गय । अक्बर क एक प्रसिद्ध दरवारी नवाब मुहम्मद उमाँ गान्दरी कब्र पर एक बड़ा गुम्बद बनवा लिया जो अभी तक विश्रमान है ।'

कथा - माधवानल कामकदला की एक हस्तलिखित प्रति बिच लघुप्रति कहन है और जा नागरी प्रचारिणी मभा काशी क आय भाषा पुस्तकालय म सुरक्षित है के आधार पर माधवानल कामकदला का प्रेमाख्यान इस प्रकार है—

राजा गोपाचन्द पुट्टपावती नगरी क राजा थे । व बहुत धर्मात्मा थे । उनक नगर म शंकरदास पुराणित का पुत्र माधवानल विद्या म बहस्पति के समान और रूप म मकरध्वज क समान था । गान और बीणा वादन म निष्णात था । नगर की सारी नारियाँ उसके अप्रतिम सौन्दर्य के कारण उम पर आमकत थी । राजा गोपाचन्द स नागरिका न शिकायत की । माधवानल को देश निकाला दे दिया गया ।

माधवानल कामावती नगरी म आ गया जहाँ का राजा कामसन था । उस नगरी म कामकदला नाम की एक अत्यंत रूपवता और गुणवती कथा थी । एक दिन जब राज मभा म उसका नृत्य और गायन हो रहा था तब माधवानल न मन्म वादक का कला म दोष निकालकर राजा से सम्मान प्राप्त किया । परन्तु माधवानल न काम कदला की नृत्य-कला पर मुग्ध होकर राजा स प्राप्त पुरस्कार को उस पर छोड़ाकर कर लिया । राजा न रुष्ट होकर उस अपने राज्य से बाहर चल जाने का आश दिया ।

किन्तु कामकदला न जो उसक प्रति प्रेमासक्त हो चुकी थी उम जान न दिया और चोरी छिपे अपन भवन म लाकर रख लिया । रति कति म दोनों की रात बीती । प्रात काल होते ही माधवानल वहाँ से चल पड़ा । माधव स विद्युत्कर कामकदला के हृदय म विरह की आग मुलग उठी ।

उधर माधवानल भी उसक वियोग म दुखी रहन लगा । वह उज्जयिनी पहुँचा । महाकान क मंदिर क मठप म उसन अपनी विरह-वदना सूचक एक दोहा

१ श्री उदयकर शास्त्री का लेख 'माधवानल कामकदला का रचयिता प्रालम्ब सूत्री था?'

निक दिया। जब राजा विक्रमादित्य स्वप्न-दर्शन के लिए आये, तब उनकी दृष्टि उमदाह पर पड़ गयी।

विक्रमादित्य ने दोनो वियुक्त प्रेमियों का मिलाने का निश्चय कर कामावती नगरी पर आक्रमण कर दिया। परंतु जब कामावती दम योत्न दूर रह गयी तब उन्होंने दोनो प्रेमियों के प्रेम की परीक्षा लनी चाही। वध बदल कर वह पहल कामकदला के पास गयी और उस वताया कि उसके विरह में माधवानल मर गया है। यह सुनना था कि कामकदला के प्राण पखेरू उड़ गये। लौटकर जब उन्होंने माधवानल को कामकदला की मृत्यु का समाचार सुनाया तब सुनते ही वह भी मर गया। अब ना राजा विक्रम को बड़ा पछतावा हुआ। उन्होंने प्रायश्चित्त करने के लिए चिता में जल मरने का निश्चय किया। जैसे ही वे चितारोहण करने को हुए उनके मित्र बताल ने उनको रोक लिया। पातान जाकर वह अमृत ल आया जो माधवानल के मुह में अमृत की कुछ बूँदें टपकाकर उसे जिला दिया। विक्रमादित्य ने वध का वेश धारण कर उसी अमृत से कामकदला को जिलाया। दोनो प्रेमियों के सूखे प्रेम ने प्रभावित होकर कामावती नगरी के राजा कामसेन ने माधवानल को कामकदला सौंप दी। दोनो को लेकर विक्रमादित्य उज्जयिनी लौट आये।^१

×

×

×

‘माधवानल-कामकदला’ की एक बड़ी प्रति में जो स्व० श्री मायाशंकर याशिक (लगनऊ) के पास थी माधव और कामकदला का पूवजन्म का वृत्तांत भी कथा की भूमिका के रूप में जुड़ा मिलता है। उसमें माधवानल का शंकर का अवतार और कामकदला को इद्रलोक की अप्सरा जयंती का अवतार कहा गया है।

चित्रावली

वृत्ति - चित्रावली की रचना उत्तमान न वाल्शाह जहाँगीर के राजत्व काल १००२ हिजरी अर्थात् सन १६१३ ई० में की थी।^१ पहले पहल नागरी प्रचारिणी सभा काशी को इस ग्रंथ का पता महाराजा बनारस के पुस्तकालय में मिला। पाण्डुलिपि कथी लिपि में स० १८०२ की लिखी हुई है। श्री जगन्मोहन वर्मान ग्रंथ का संपादन किया और नागरी प्रचारिणी सभा ने सन १९१२ में उसका प्रकाशन। बाजार में इसकी प्रति अब अलभ्य है। पुस्तकालयों में भी सुलभ नहीं है।

कवि - उत्तमान गाज़ीपुर के निवासी थे। य वीच भाई थे। इनके पिता का

१ 'सिद्दासन बत्तीमा की इक्कीसवीं पुस्तकी में भी माधवानल की यह कथा कही है। यद्यपि संहृत की सिद्दासन चित्रावली में ऐसी कोई कथा नहीं है। सिद्दासन बत्तीमा के भी सब संस्करणों में यह कथा नहीं पायी जाती। —लेखक

२ सन संहृत बाइस अब ग्रंथ है। तब इस कथन चारि एक कहे ॥ —चित्रावली छंद ३१

नाम से हमें हुसेन था ।^१ उन्होंने भी अपने दो गुह्रा का उल्लेख किया है । उनमें से एक थे नारमीन निवासी जाह्न निजाम जो चिन्तिया संप्रदाय के मफ़ी सत थ और दूसरे थ बादा हाजी । हाजी बन्धाचिन गाजीपुर के भी रहने वाले कोई सन थे ।

कथा —नेपात्र त्श के राजा धरनीधर के पार्श्व मन्त्राने न थी द्यगतिग यह टुम्ही रत्ना था । पुत्र प्राप्ति के लिए उनमें बहुत दानपात्र किया । उमरी परीक्षा नेन के लिए शिव-भावनी तक तपस्विया का व्रत धारण करके आय और राजा से उमका मिर मांगा । धरनीधर अपना मिर काटन का उताप हो गया । शिव ने प्रमत्त हाकर उम पुत्र पान का बरदान दिया और कहा कि वह मरा ही अभावतार हागा । यथा समय राजा धरनीधर की रानी के पुत्र आया । ज्योतिषिणा ने उमकी जन्म-कुण्डली देखकर कहा कि राजकुमार छत्रपति रागा बनगा परन्तु किमा स्त्री के प्रेम में पडकर जोषी बनार धर भी छोडूंगा । राजकुमार का नाम मुजान रखा गया । चौत्थ वय की आयु हीन तान वह मत्र विद्याया और कलाया में पारगण हा गया ।

एक दिन राजकुमार शिकार खेलेने गया । थककर वह एक पर्वत पर मो गया । वत्र त्वा की मन्ती थी । उम रात त्त्व रूपनगर का राजकुमार चित्रावली की एकात्म वपगाँठ का उमव शैखन के लिए जान वान थ । उन्होंने राजकुमार को भी अपने माथ ही ले जाने का निश्चय किया । उमको उन्होंने राजकुमारी को चित्रमारी में मन्ना दिया । राजकुमार की नीड टट्टी तो उमने वहाँ एक मुन्टरी का चित्र देया । उमने अपना भी एक चित्र बनाकर उम मुन्दरा के चित्र की बगल में रख दिया । फिर मो गया । मन्त्रा होन में पन्ड ही दव उसे अपनी मन्टी में उठा ले गए । कवर मुजान ने राजा में कहकर वहाँ एक महल बनवा दिया ।

चित्रावली ने प्रात काल अपने चित्र के पास एक मुन्टर राजकुमार का चित्र देखा । वत्र उम पर मोहित हो गयी । एक कुटीचर के कहन पर चित्रावली की माना हीरा ने राजकुमार का वत्र चित्र पानी में धुनवा दिया । चित्रावली ने कुटीचर का त्श निकारा दे दिया । जिन तायों ने धुनन में पूव राजकुमार का चित्र देखा था उनमें से एक परेवा नामक सक्क था । परेवा ने राजकुमार मुजान को त्श निकारा और उमके मन्त्र में मिद्ध-गुटिका देकर उम अपने माथ उला ल चना । रूपनगर पहुँचकर उमने चित्रावली को सचना दी ।

चित्रावली ने अपने प्रेम के चिह्न स्वरूप एक दपण कुंदर के पास परवा के हाथ भेजा । उमने शिवरात्रि के दिन साधु-मन्ता को अपने महल के नीचे भाजन कराया । जागी के वेश में कुंदर भी उममें सम्मिलित आया । चित्रावला थराणे पर ना

१ गाजीपुर त्तम घस्यारा । त्शेव घस्यार प्राप्ति जग जाना ।
कवि ब्रह्मभान वर्ये नदि पाऊँ । मन्त्र हुसने तन पय नाडू ॥
पाँच भाइ पाँचो बुधि दिने । एक एक भाँति मो पाँचों चिने ॥

खड़ी हुई। उस दखत ही कुवर सुजान मूर्च्छित हो गया। ऐसा भोज रोज दिया जाता रहा और चित्रावली तथा कुवर एक दूसरे को दखत रहे।

जिस कुटीचर को चित्रावली ने दश निकाला दे दिया था, वह भी उम भान म सम्मिन्नित हुआ। उसने कुवर को पहचान लिया। उसने कुवर की आंखों में कोई ऐसी चीज आज दी जिससे वह अंधा हो गया। कुटीचर ने उसे मात समुन्दर पार लाकर एक अंधेरी खोह में डाल दिया।

एक वनमानुष की कृपा से कुवर सुजान की आँखें ठीक हो गयीं। वह जब चित्रावली की खोज में भटक रहा था, तभी एक हाथी ने उसे सड़ में लपेट लिया और उसे मुह में रखन ही वाला था कि एक राजपक्षी अपने विशाल पंजे में हाथी समेत कुवर को दबोचकर सात समुन्दर पार लाकर समुद्र की रेत पर छोड़ गया। चेत होने पर कुवर को न हाथी दिखायी दिया न राजपक्षी। उसे सामने एक नगर दीक्षा। वह सागरगढ़ था।

सागरगढ़ के राजा सागर की पुत्री का नाम कौलावती (कैवलावती या कमलावती) था। कौलावती जोगी वेशधारी कुवर का देखकर मोहित हो गयी। उसने अपने हार की चोरी का लाक्षण लगाकर कुवर को बनीगह में डलवा दिया और चुपके से जाकर चित्रावली के छपान में मग्न कुवर का रूप दर्शन कर आनी रगी।

सोरठ (सौराष्ट्र) के राजा सोहिल ने सागरपति को क या कौलावती में विवाह करन के लिए सागरगढ़ पर चढ़ाई की। कुवर सुजान ने द्वंद्व युद्ध में सोहिल को मार डाला। सागर ने प्रसन्न होकर अपनी पुत्री कौलावती का विवाह कुवर से कर लिया। परन्तु कुवर ने कहा कि जब तक वह चित्रावती का नहीं पा लेगा तब तक वह कौलावती का भोग नहीं करेगा।

तभी गिरनार क मल में चित्रावली के भजे दूता से उसकी भेंट हो गयी। चित्रावली ने परेवा का भेजा। आँखों में लुकाजन लगाकर और अश्रु होकर कुवर सुजान परेवा के साथ रूपनगर में आ गया।

अपने आगमन की सूचना दान के लिए उसने परेवा का चित्रावली के पास भेजा परन्तु रानी हीरा ने एक दामी की चुगनी पर उसे गिरफ्तार करा दिया। परेवा के न लौटने पर कुवर चित्रावली की रट लगाता नगर में धूमन लगा। राजा ने उस पर अपना मनवाला हाथी हूँ दिया। कुवर ने हाथी को मार डाला। परेवा ने उगका वास्तविक परिचय मवको दिया। राजा ने प्रसन्न होकर सुजान में चित्रावती का विवाह कर लिया।

उधर कौलावती कुवर के विरह में कठिनाई से दिन काट रही थी। उमन से मित्र को दूत बनाकर रूपनगर भेजा। हम मित्र ने चतुर्गई से कुवर के हृदय में कौलावती की स्मृति पुन जगा दी।

कुवर सुजान चित्रावली को विना करके वहाँ में कौलावती को लेकर समुद्र-

माग से जगन्नाथपुरी आया। जगन्नाथ मुनि के आदेश में समुद्र का जल कम हा जाने पर उसका जहाज किनारे आ लगा। वहाँ से वह नेपाल पहुँचा जहाँ उसके विरह में माता पिता अंधे हो गये। चित्रावली और कौलावती सगी बहना की भाँति प्रेम पूर्वक रहती हुई जीवन यापन करती रहीं।

इस तरह कवि उसमान ने इस कथा का सुखात बनाया है^१ जबकि अन्य कवियों ने अपने प्रेमास्थानों को दुःखात।

ज्ञानदीप

कवि—'ज्ञानदीप' के रचयिता शैल नबी थे। ये पहले जौनपुर कि तु जब सुल्तानपुर जिला (उत्तर प्रदेश) में दोसपुर थान के अंतर्गत अलदमऊ नामक गाँव के निवासी थे। ज्ञानदीप की रचना १०२६ हिजरी तदनुसार स० १६७६ वि०^२ (१६१६ ई०) में हुई। उस समय दिल्ली के सिंहासन पर जहांगीर विराजमान था।^३ कवि शैल नबी ने जहांगीर की मुक्तकठ से प्रशंसा की है। कवि ने वीर और शृंगार के माध्यम से योग का वर्णन किया है।

कृति—'ज्ञानदीप' की पाण्डुलिपि नागरी प्रचारिणी सभा, काशी में सुरक्षित है। उसी के आधार पर श्री उदयशंकर शास्त्री ने इस ग्रंथ का सम्पादन किया है। सुना है कि ग्रंथ ना० प्र० सभा से मुद्रित हो चुका है किंतु न जाने किस कारण से अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ। ग्रंथ दोहा चौपाई में लिखित है। उसकी भाषा अवधी है। सात चौपाइयों के बाद एक दोहे का क्रम रखा गया है। कुल ४५७ दोहे हैं और ४५७ × ७ = ३१९६ चौपाइयाँ।

ग्रंथारम्भ में ईश-वन्दना है। उसके अनंतर पगम्बर मुहम्मद साहब की प्रशंसा है। नन्पदवात पगम्बर के चार मित्रों अबूबकर जादिल उमर मुतजा अली और आलम जुल्फिकार का गुण वर्णन किया गया है। इसके बाद साहेबत सतीम (जहांगीर) की प्रशंसा की गयी है।

- १ कबित-ह मरन क्या क गार्ई । मोहि मरत हिय लागु छोहाई ॥
 श्री जे प्रेम अमी रम पीया । मर न मारे जग-जुग जाया ॥
 एक जियन एक मरन सगारा मरि मरि जियहि ताहि को मारा ॥
 ज्ञान ध्यान मदिम सब जय तय सजम नेम ।
 मान सो उत्तम जगत-जन जो प्रतिपारै प्रेम ॥

—उसमान-इत चित्रावली पृ. २१७ छं. ६१७

- २ एक हजार सत्र रहे छवोसा । राज सुपही गनु बरीसा ॥
 समत मोरह स छिहतरा । उजित गरत कीन्ह धनतरा ॥
 अल-अमऊ दोसपुर थाना । जाउनपुर सरकार मुजाना ॥
 तहवा मेप नबी कवि कही । सगु अमर गुन फिल मही ॥

—ज्ञानदीप छंद १७

- ३ साहि सताम छत्रपति छाना । दस के चार कवत दस दानी ॥

—वही, छंद १४

कथा—राजा शिरोमणि की राजधानी में नमिपारण्य (नीमसार) के मिषिप (मिसरिख) नामक स्थान में थी। राजा के कोई पुत्र न था। दान पुण्य करने से उस पुत्र प्राप्ति हुई। ज्योतिषियों ने उसका नाम ज्ञानदीप रखा और बताया कि राज-काज सभालने से पूर्व यह याग-साधन करेगा।

दासक जानपीप जब एक दिन आसक्त करने के लिए वन में गया हुआ था, तब उसकी भेंट सिद्धनाथ नामक एक यागी से हुई। उसने उस यागी से याग-दीक्षा ले ली और परकाया प्रवेश आदि योग विद्याएँ जान लीं। सिद्धनाथ के आज्ञा-नुसार वह भ्रमण करता हुआ विद्यानगर में पहुँचा जहाँ का राजा गधव सुखदव था। उससे दरबार की गायिका सुरजानी पतुराधि का नृत्य देखकर ज्ञानदीप मूर्च्छित हो गया। सुरजानी भी उस पर अपने को घोड़ावर कर बठी। लेकिन जब राजकुमारी देवजानी ने योगीवेशधारी कुंवर ज्ञानपीप का देखा, तो वह भी उसके प्रेम में दीवानी हो रही। सुरजानी ने उदारहृदयता का परिचय दिया और कहा कि कुंवर पर पहले देवजानी का अधिकार है बाद में मेरा। दोनों एक ही राग की रोगिणी थी अतः उनमें मेल हो गया।

सुरजानी ने शिवजी को प्रमत्त कर एक मात्र प्राप्त किया जिसका प्रयोग कर वह एक कागज के घोड़े को सजीव बना सकी। उस घोड़े पर बैठकर राजकुंवर देवजानी के पास गया। रातभर उसके पास रहने के बाद वह उसी घाटे से अपनी कुटिया में लौट आया। यही क्रम रोज राज चलता रहा।

दूता ने राजा से शिकायत कर दी। एक रात राजा ने तीर से कागज के जादुई घोड़े को घायल कर दिया। जानदीप घरती पर आ गिरा। उस माँठ की मजूपा में बंद कर राजा ने समुद्र में बहा दिया। उस मजूपा को एक बड़ी मछली निगल गयी। मछली को भानपुर जहाँ का राजा रायभान था के लोगों ने जाल में फँसा लिया। उसका पेट चीरने पर उसमें से जानदीप निकला। राजा के चूँकि कोई पुत्र न था, इसलिए उसने जानदीप को ही अपना दत्तक पुत्र बना लिया।

उधर सुरजानी और देवजानी कुंवर जानदीप के विरह में सतप्त रहने लगीं। मोना पाकर देवजानी शिव मण्डप के समीप पञ्चवर्ति अग्नि कुण्ड में जा कूदी। सुरजानी ने भी ऐसा ही किया। पावती जी ने बपाकर अग्नि का शीतल कर लिया। उधर पता लगात लगात योगी सिद्धनाथ और जानदीप के पिता शिरोमणि राय आकाश मार्ग से उड़कर विद्यानगर में आ गये। वहाँ स्वयंवर में देवजानी ने जान बूझकर अपना अचल गिरा दिया। सुरजानी ने दौड़कर उस सभाला। इस प्रकार उनमें भी जानपीप के साथ भावें न लीं।

गुरु सिद्धनाथ जानपीप के पिता राय शिरोमणि का लखर राजा रायभान के शिविर में गये। जानपीप अपना गुरु के उरुणा में गिर पड़ा। सिद्धनाथ ने रायभान से कहा कि वह जानपीप को उसके असली पिता को सौंप दे। जानपीप से विधुडन की

आगरा में रायभान के प्राण पकड़े उठ गये। जानकीप रायभान के शव का लेकर भानपुर गया। एक वर्ष तक वहीं रहकर जिन राजकाज में भागा।

मिदनाय से मिदगुटिका जापाउन का बजरींग और च्छानुत्सव भोजन दान वांगे पाता प्राप्त कर तथा बनबी में उतारगटाना लेकर मुग्धानी भानपुर गयी। जानकीप उमक माघ चतुर्थिया। विद्यापुर से उमन जिन पिता गुर तथा पत्नी स्वताना का भी ले लिया। राय गिरगमणि ने मिमरिय पढ़ेचन के बात जाननाय का र जा बना दिया। स्वतानी और मुग्धाना के साथ जानकीप के जिन मुखपूवक कटन लग।

जान कवि और उनके द्वारा लिखित प्रेमार्थान

कवि—जान कवि का वास्तविक नाम यामन सा था। जान इनका काय गत उपनाम था। य राजस्थान के नाकर जिन के फ़तहपुर नगर के निवासा थे। य वहाँ के नवाब अलिफ खाँ के दरजे पुत्र थे। जपानिण य गद्दी के अधिकारी नहीं बने। य बरामतानी मुमनमाल। उनके पूवज चौहान राजपूत थे। जान कवि के विषय में जिन जीवन चर्चा नहीं प्राप्त होती। उनके जिन काव्य के अन्त माध्या पर हा निभर करना पड़ता है। य आगु कवि थे और दास्तीन पत्र में लेकर दम बारा दिन में य अपनी कृतिया पूरी कर लन थे। जान कवि जिन अरब फारसी और संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। उनकी भाषा में प्रवाह की महजता है। उनकी भाषा पर ब्रजभाषा का जिन प्रभाव है। इनका कुछ विज्ञान सूफी कवि की मानत परन्तु उनके कुछ काव्या में सूफी ज्ञान तत्त्व का निष्पत्त ज्ञा है। उनकी मन्ना भल ही कम हा परन्तु जिन में भी सूफी तत्त्व निलना हो तो जमा के आधार पर जान के सूफी कवि कहा जा सकता है। उनके जिन में मुख्यत कथा कवनावना कथा कवनावनी जिन बुद्धिमागर या कथा मन्त्र मालती और कथा रतनावनी को सूफी काव्य परम्परा में गिना जा सकता है। इनके अय काव्य ममनगी पद्धति पर लिखित ज्ञान जिन की मुख्यत प्रमान्यायन हा है। इनके कुछ जिन ममनवा पद्धति पर नहा लिख गये हैं जिन—कथा छविमागर कथा निमल द कथा कामरानी पातमजाम आदि। जान कवि के बारह प्रमान्यायन हा एम मिल हैं जिनमें पौराणिक आभ्याना या पात्रो का किमी-न किसी रूप में उपयोग किया गया है। वे प्रेमार्थान निम्नलिखित हैं—

(१) कथा कलावती

() कथा कनकावती

(२) कथा कलावती

(४) कथा कौतूहली

१ जान कवि कलाचित् कवि पहले थे और सूफी उनके जिन तर वह जा सनत थे। इनकी जिन प्रम माधाए सूफी प्रमान्यायन के अन्तगत किसे प्रकार का सनता हैं उनमें कुछ साधारण सनतो के अनिखित और कुछ भी नहीं है। न इनके किसे कथा स्पक का कहा को स्वीकरण सनित होना है अथवा न काइ सूफी उपदेश ज्ञाना है।

—सूफी काव्य-संग्रह सभा आचार्य परमशम चतुर्वेण प्रका हि सा स १ १४२

- | | |
|---------------------|--------------------|
| (५) कथा कौमलता | (१०) कथा छोटा |
| (६) कथा पुष्प बरिपा | (११) कथा मोहिनी |
| (७) कथा रतनमजरी | (१२) कथा नलदमयन्ती |
| (८) कथा रतनावती | (१३) कथा सुभटराई |
| (९) ग्रंथ लले मननू | |

जान कवि ७८ काव्य ग्रंथों का रचयिता हैं। इनके ये सभी ग्रंथ हस्तलिखित रूप में हिन्दुस्तानी एन्डेमी, प्रयाग में सुरक्षित हैं और शीघ्र ही वहाँ से प्रकाशित होने वाले हैं। इन ग्रंथों में से केवल २८ ग्रंथ जिनका उपयोग प्रस्तुत प्रबंध में किया गया है, प्रेमाम्बान हैं। हमने हिन्दुस्तानी एन्डेमी के सौजन्य से इन ग्रंथों का अध्ययन करने का सुअवसर प्राप्त किया था। इनके शेष ग्रंथ रसशास्त्र बद्यक ज्योतिष आदि विविध विषयों पर लिखे मिलते हैं। जान कवि की रचना में विस्तार अधिक है गंभीर कम।

जान कवि ने अपने गुरु के विषय में कुछ काव्यों में उल्लेख किया है। (दखिय कथा कौमलावती कथा बुद्धिसागर कथा पुष्प बरिपा कथा नल दमयन्ती आदि का प्रारम्भिक अंश) जान कवि ने उनका नाम शेख माहम्मद लिखा है, वे सूफियों के चिश्तिया सम्प्रदाय के थे। जान कवि ने लम्बी आयु पाई। इनकी सबसे प्रथम रचना १०२३ हिजरी में लिखित है। कथा नल दमयन्ती की समाप्ति कवि ने १०७२ हिजरी अर्थात् १७१८ वि० या १६६१ ई० में की थी। अपनी अंतिम रचना कवि ने ३ वर्ष बाद की थी। इससे लगता है कि कवि ७० वर्ष से भी अधिक जीवित रहा है। उन्होंने अपने काव्यों में शाहे-बक की जगह जहागीर शाहजहा और औरंगजेब तीनों के शासन का हवाला दिया है। जहाँ कथा कौमलावती में उन्होंने जहागीर का शाहे-बक के रूप में उल्लेख किया है वहाँ कथा नल दमयन्ती में औरंगजेब का। इनका अंतिम प्रेमाम्बान कथा सुभटराई है। (इस सम्बन्ध में विशेष द्रष्टव्य हैं जायसी के परवर्ती सूफी कवि और काव्य डा० सरना गुल ५० ३७४ स ३७६ और डा० रामकिशोर मौर्य का लेख 'जान कवि और उनकी रचनाएँ — हिन्दुस्तानी भाग २४ अंक ४ अक्टूबर दिसम्बर १९६२ पृ० ७४)।

कथा कौमलावती

जान कवि द्वारा रचित यह प्रथम प्रेमाम्बानक काव्य है। इसकी रचना १०२३ हिजरी में हुई थी। इसमें सूफी विचार धारा का प्रतिपादन हुआ है। यह मसनवी पद्धति पर लिखा गया है। दाहा चौपाई सोरठा और सवया छंदों का प्रयोग हुआ है। ६ चौपाइयों के बाद एक दोहे का उद्गार है। कुल २०४ दोहे हैं। ग्रंथ का विस्तार

१ द्वापद दिन में जान कवि की सुमिरि जपनीस।

तवहीं समु यों कहत हैं एक सह्य तेरेष ॥

हस्तचित्रित ६६ पृष्ठा म है।

कथा—मुन्गी नगरी क राजा का नाम रूपराय था। उमक एक हजार गनियो थी। पतरानी का नाम था रुरगा। उमक एक मुन िण मुन्गर पुत्र था— इन्द्रवन्त (गमि)। वह पौराण रिद्याश्रा म निरुग था। जब वह विवाह-याग्य हुआ तब राजा न उमका रिवाह कर दन की इच्छा प्रकट की। कवन न कहा कि अपना मन चाही स्त्री मिलन पर ही मैं रिवाह करूंगा।

राजा न एक मन्त्र म अधिप रूपवता नारिया के विष दूर-दूर म भेगवाय। परन्तु राजकुवर का एग भा विष पमन् न आया।

एग तिन एग ताता इन्द्रवन्त के हाथ पर आ बटा। उमन मन्तपुरा क राजा मन्तराय की मुन्गी कथा कवलावती (कमलावती) की प्रसा का। राजकुवर क हृदय म कवलावती क तिए प्रेम उत्पन्न ा गया। तान की मध्यस्थता स ही इन्द्रवन्त और कवलावती का रिवाह हुआ।

उग तिनो एमा हुआ कि कवलावती क मोदय पर एक श्च राग गया। मन उमका अपहरण कर लिया और एक निजन नाम क एक ऊच धौराहर म उस रग लिया। कवलावती न श्च का अपनी श्च राग नग करन दी।

इधर इन्द्रवन्त कवलावती का इन्त निकता। रास्म म उम मन्त गडो मिन। मन्त न उमम कथा सि गर गारगमनि की जटा म एक जटा छिपाकर रमा है है नू उ मांग ल। इन्द्रवदन न एमा हा किया। जटी पात हा वह कवलावती क पास पहुँच गया। कवलावती न प्रेम का शिवावा करक दव न उमक प्राणों का रहस्य जान लिया। दव क प्राण मागर क बीच खिल कमन क श्च पर मित एक भीर म थ। इन्द्रवन्त न भरे का ममन हाता। उमक मरन हा श्च भी मर गया। कवलावती का लकर इन्द्रवन्त मदनपुरा लेट आया।

वतमागर नामक एक राजा न कवलावती का छीनन की कुवष्टा की। इन्द्र वन्त न उस मार भगाया। पर तु समुद्र पार करत समय उसका बाहित टूट गया। वह कवलावती म बिरुग गया। कवलावती बहता-बहता अपन श्चमुर क नगर म जा लगी। इन्द्रवन्त भी गह-गहड़ी क महायता म अन्न पिता क नगर म आ पाया। वाग म उनका जीवन यून सुखमय बीता।

कथा कलावती

कृति यह ग्रंथ छाटा मा है। रसक रचयिता है जान कवि। इसका विस्तार हस्तचित्रित १६ पृष्ठा म है। मम दाहा चौपाय सबया तथा पत्रम छंटा का प्रयाग है। कुन ३० दाह २६ चौपाय २ सवय तथा १२ पवगम छंटा है। कवि न इसकी रचना ा पहर म पूरी कर ता था। मकी रचना १०२, हि० (१६१४ ई०) म हुई।

कथा—विनामपुर का राजा राय मिघरथ निनतान था। एक राग राता

का स्वप्न म इद्र न दशन देकर पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया। इद्र की कृपा न उत्पन्न हान के कारण पुत्र का नाम पुरन्दर रखा गया।

पुरन्दर जब कुछ बड़ा हुआ तब आखेट खेलने के लिए वन म जाने लगा। वहा उमंग एक पुरुष को एक वक्ष से बंधा पाया। उसको उसने बधन मुक्त कर लिया। इस उपकार के बदले उस व्यक्ति ने पुरन्दर को एक चिन्तामणि दी तथा रूप-परिवर्तन करना सिवाया।

वन स लौटन पर उसने भागपुरी नगरी के राजा सुरनाम की पुत्री कनकावती के सौन्दर्य की प्रशंसा सुनी। वह जागी बेश धारण कर भोगपुरी जा पहुँचा। वहा का राजा उमके वीणा-वादन पर प्रसन्न हुआ। उसने अपनी कन्या उसमे ब्याह दी।

कथा कनकावती

कृति—जान कवि की यह कृति हस्तलिखित २१ पृष्ठा म है। दोहा चौपाई और सारठा छन्दो का प्रयोग किया है। पाँच चौपाइयो के बाद एक दोहा का प्रम है। इसकी रचना ज्ञानेश्वर जगन्गीर के शासन-काल म १६७५ वि० या १६९८ ई० मे हुई थी। रचना म कवि को तीन दिन लगे थे।

कथा—भरथनर के राजा भरथ के कोई सतान न थी। वह दुःखी रहता था। भगवद्रूपा से उमके एक पुन पदा हुआ जिसका नाम ज्योतिषिया न परमरूप रखा। कुवर जय बड़ा हो गया तब एव रात उसने एक स्त्री का स्वप्न म देखा। एक चित्रकार स उसने उम स्त्री का कल्पनिक चित्र बनवाया। एक विप्र न पहचानकर बताया कि वह सिधुपुरी के राजा सिधु की कन्या कनकावती है। विप्र न कनकावती के पास जाकर उसके हृदय म कुवर परमरूप के प्रति प्रेम उत्पन्न किया। राजा भरथ ने राजा सिधु पर चढ़ाई कर दी परंतु हार गया। लज्जावश कुवर अपने घर नहीं गया, एव सायासी के साथ हो लिया। बाद म कनकावती न उसी विप्र को भेजकर परमरूप का पना गवाया। सायासी न मरत समय कुवर को बन्धन मात्र सिखा दिया जिमके वन स अज्ञ होकर विप्र और कुवर कनकावती के पास आय। विप्र ने कनकावती का विवाह कुवर परमरूप से करा दिया। मात्र क प्रभाव से परमरूप कनकावती को अपने नगर म ल आया।

उधर सिधुपुरी म कनकावती की दूल्हा-खाज मची। चरा से पता लगा कि कनकावती भरथनर म है। राजा सिधु क सरशक राजा जगपति न भरथनर पर चढ़ाई की। भरथ हार गया। निराश होकर कुवर और कनकावती नदी म कूट पडे। वहन बहा परस्पर बिभूड गय। मल्लाहो न कुवर का बचाकर राजा जगराज का सोप दिया जो निस्मतान था और कनकावती का राजा जगपति के पास पहुँचा लिया।

१ सोलहवीं पृष्ठ पर जहाँगीर के राज म तीन छोग में जान कहियह साग्यो सब साज ॥ —कथा कनकावती

वह भी मतांगीन था। दोनों राजाओं ने अपना उत्तर साताना का विवाह कर लिया। इस प्रकार एक नई परिस्थिति में बनकावती और परमरूप पुत्र आपस में विवाहित हुए।

कथा कौतूहली

कृति—जान कवि रचित यह काव्य हस्तलिखित ३१ पृष्ठा में है। गीता गोविन्द गवया भुजगी कवित्त और छंद पद्य आदि कई छंदों का प्रयोग हुआ है। पाँच श्लोकों का घाद एक दोष का प्रथम है। कुल ७२ चौपायियाँ ८१ दाह ६० सवय २ कवित्त और ६ गारुड हैं। पुत्र २२८ छंद है।

काव्य के प्रारम्भ में जान कवि ने कौतूहली का पूरा सिखे गये अपने प्रमाणों का रचना प्रथम भी दे लियी है—

पहिले कथा-कथी कथलावति । पाछे कही पुरंदर रावति ॥

भाषी बहुरु घात बनकावति । अर्थाह मुनहु कौतूहलि गावति ॥

कथा कौतूहली की रचना संवत् १६७५ वि० में हुई—

सोलह स पचहत्तर कथा-कथी यह 'जान ।

फूट-टूटे जोरियह जुरते रापह बन ॥

कथा कौतूहली का राजा चंद्रसेन का बन्धु जान पुत्र का घात एक पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम सरवगी रखा गया। एक दिन जब सरवगी आसट खनन गया हुआ था तब उसकी भेंट दो बन्जारा से हुई। उन्होंने छविनर का राजा जगरूप का मुन्तरा राजकुमारा कौतूहल का विषय में बताया। उनका नया शिखर सौंदर्य का वर्णन किया। सरवगी का हृदय में कौतूहल का प्रति प्रीति उत्पन्न हुई। वह छविनर गया। वहाँ वह राजा के माली के पास ठहरा और माली का पुत्र प्रेमिंद्र हो गया। उसका धीन वापस की ख्याति चारा ओर फैल गयी। कौतूहल देन भी मुना। वह उस पर आसक्त हो गया। तभी पश्चिम देश का एक राजा ने कौतूहल से विवाह करने के लिए छविनर पर चढ़ाई कर दी। सरवगी ने युद्ध करके उस राजा का मार डाला। सरवगी का वास्तविक परिचय जान पर राजा चंद्रसेन ने अपनी कथा कौतूहल का विवाह उसमें कर लिया। सरवगी कौतूहल के साथ अपने दश लौट आया। उसके माता पिता बहुत प्रसन्न हुए।

कथा कामलता

कृति जान कवि की यह छोटी सी कथा कृति हिन्दुस्तानी भाग १५ अंक ३ जुलाई सितम्बर १९४५ में प्रकाशित हुआ चुका है। इसमें ३० चौपायियाँ तथा ३२ दोष हैं। इसकी रचना संवत् १६७८ वि० में हुई—

सोलह स अठतरा, कथाकथी कवि जान ।

घोर विपुल भूति जिन अनवन वाचहुं वान ॥

कथा—हमपुरी नगरी के राजा का नाम रसाल था। उसके मंत्री का नाम बुधवत था। वह सचमुच विद्वान था। वह अच्छा चित्रकार भी था। राजा द्वारा स्वप्न में देखी गया एक सुन्दरी का चित्र उसने उसका रूप वर्णन सुनकर ही बना दिया। राजा उस चित्र लिखी नारी पर माहित हो गया। एक पथिक ने पता चला कि वह चित्र सुन्दरपुरी की शामिका कामलता का है। वह पुरुष द्वेषिणी थी क्योंकि उसने एक अग्निकाण्ड में मोर को अपना मोरनी का छोड़कर भाग जाते देखा था, मोरनी आगे में जल मरी थी। तब से ही उमन प्रण कर रहा था कि विवाह न करेगी। मंत्री बुधवत राजा रसाल को लेकर सुन्दरपुरी पहुँचा। उसने कामलता की चित्रकारी का गजान के लिए बहुत से चित्र बनाये। उनमें से एक चित्र में उसने दिखाया था कि नदी की बाढ़ से घिरे मग शावका को मृगी तो छोड़ भागती है, पर मग नहीं भागता और जल में प्रवाह में बह जाता है। इस दृश्य को अपने झरोखे में एक व्यक्ति देख रहा है जो रसाल है। बुधवत ने रसाल के विषय में कामलता को बताया कि जब से उमन इस घटना को देखा है तभी से वह नारियों से घणा करन लगा है। कामलता इस बात से रसाल के प्रति आकृष्ट हुई। बुधवत के प्रयास से दाना का विवाह हो गया।

कथा सतवती

कति—ज्ञान कवि की यह कृति सतपरक प्रेमाख्यानो के अंतर्गत आती है। इसमें ५१ चौपाइया तथा ५१ दाहे हैं। इसका रचना-काल १६७७ वि० या १०३१ हिजरी है।^१

कथा—एक धनी सौभाग्य—मसूर की पत्नी का नाम सतवती था। वह सत की पत्नी थी। सुन्दर भी बहुत थी। जब मसूर व्यापार के सिलसिले में विदेश गया था तब उस नगर के एक दुश्चरित्र धनी व्यक्ति छविमागर ने कुट्टनियाँ को भेजकर सतवती को फुसलाना चाहा पर तु वह उसके हत्ये में चली। फिर वह मसूर का हूब हूब रूप बनाकर उसके पास गया। सतवती भी धोखे में जा गयी, लेकिन उसने तीन दिन की मोहलत ले ली। उसे अपना शरीर स्पष्ट नहीं बनने दिया। इसी बीच जसली मसूर चोट जाया। दोनों सतवती पर अपना अधिकार जतान लगे। झगडा राजा ने सामने पेश हुआ। राजा ने उनके ववाटिक जीवन से सम्बन्धित कुछ बातें पूछी और असली मसूर को सतवती दिला दी। नवनी मसूर (छविमागर) का मित्र बटवा कर उमन किने के फाटक पर टेंगवा दिया। भगवान ने सतवती ने सत की रक्षा की।

कथा मीलवती

कति—यह ज्ञान कवि का एक लघु प्रेमाख्यान है। इसका रचना काल स०

१ मोनह स घटहत्तर सन सहल इकनीम।
सतवती सत ज्ञान कवि दाइयो विहवा बीस ॥'

१६८६ वि० है। प्रथम २४ शोपाइयाँ और २५ दोहे हैं। विस्तार हस्तलिखित ६ पृष्ठों में है।

कथा—एक धनवान जोहरी की सीलवती नामक रूपवती पत्नी थी। उमके विना चर जान पर एक बाजगार की नजर उमकी पत्नी पर पड़ गया। बाजगार ने एक मुनारिज और एक रंगरेडिन को अपनी दूती बनाकर सतवती का मत दिगान के लिए भेजा। सोनवती ने अपने तान का मनापना में अपने शीत की रखा की।

कथा पुद्गल परिषा

कृति—ज्ञान कवि नरम कृति का प्रारम्भ श्रावण कृष्ण ५ मकर १६८५ वि० का किया और उमकी ममाप्ति की १००७ शिबरी (१६८५ वि०) में आ कर दी। प्रथम ५५ हस्तलिखित ५५ पृष्ठ हैं। कुल १७२ शोपाइयाँ और १७४ दोहे हैं। नरम कृति का शीतक नायक था नायिका का नाम पर न हाकर उमके मृत्यु भाव की यजना कर्नवाना है।

कथा—इस काव्य का कथानक मदन कृत मधुमालता में बतल साम्य रचना है। कथा इस प्रकार है—मिरीनगर (श्रानगर) का चौहान राजा भूपाल निम्नतान था। बतल ज्ञान पुत्र करन पर उमके एक पुत्र हुआ जिसका नाम पुष्पोत्तम रखा गया। राजकुमार जब बड़ा हो गया तब एक दिन उमने एक रंग बिरंगी चिटिया पत्रकी। चिटिया में बताया कि वह प्रमपुरा के राजा जगमनि की अप्परा राना रूपनिधि की पुत्री मुक्ता है। अपन पति बनन का कथा उसने इस प्रकार बगन की—

कवनपुरी के राजकुवर मुरपति की राजमभा में रूपवती नारिया का चचा के प्रमग में एक बद्ध ने मर (मुक्ता के) सोन्य की प्रमया कर ली। राजकुवर मुनत की मूर्च्छित हो गया। कथा का बुलाया गया। सबने यही कहा कि इस प्रम राग ही गया है।

राजकुवर अपने अभिन मित्र महानन्द को साथ लेकर मुक्ते (मुक्ता की) दूतन के लिए निकला। मागर में तूफान से टकराकर उनका नौका टूट गयो। मुरपति और महानन्द विष्ट गये। मुरपति एक जगल में चला गया जहाँ एक महान्म उस वए सुन्री माती दुई मिनी। सुन्री ने अपना नाम निरमल दे बताया। यह चतुरपुर के राजा चतुभुज का कथा था। उम एक देव ने बनी बना रखा था। बतल मरा (मुक्ता के) सन्नी थी। मुरपति ने निरमल दे को अपना धर्म बतल बना लिया। देव का मारकर उमका उद्धार किया। मुक्ता निरमल दे को लेकर चतुरपुर आया। महानन्द भी धूमता फिरता कहा जा गया। निरमल ने अपनी माँ ग कहकर

मुझे (सुकशी को) और मेरी माँ का भी बुनवा लिया। एक रात मुझे कुवर के साथ सोन देखकर मेरी माँ ने मुझे तो प्रेमपुरी में और कुवर को उमक नगर कवनपुरी में भेज दिया। मुझे मेरी माँ ने अभिमंत्रित जल छिन्कदार पक्षी बना दिया। तब से ही मैं सुरपति को ढूँढ़ रही हूँ।”

कुवर पुम्पोत्तम सुकशी को पिंजड़े में लेकर प्रेमपुरी की ओर चल पड़ा। सुकशा की माँ ने जल छिड़ककर उस पुत्र अम्भरा बना लिया। उधर सुरपति भी दृढ़ता खोजता चतुरपुर आ गया। निरमल दे से समाचार पाकर सुकेशी के माता पिता पुम्पोत्तम को साथ लेकर चतुरपुर ही आ गए। वही पुम्पोत्तम का विवाह निरमल दे से सुरपति का विवाह सुकेशी से और महानन्द का विवाह परमल दे से हुआ। तीनों मित्र अपनी अपनी पत्नियों के साथ अपन-अपने नगर को विदा हुए। आजीवन उनमें सम्पर्क बना रहा।

कथा रूपमजरी

कवि—इस काव्य की रचना जान कवि ने अगहन सवत १६८५ वि० में की। इसमें ८८ दोहे तथा चौपाइयाँ हैं। कवि ने तीन पहर में इसकी रचना कर दी। काव्य का विस्तार हस्तलिखित १२ पृष्ठों में है। प्रेम की अलौकिकता और गुण की महिमा का यत्र-तत्र वर्णन है।

कथा—हस्तिनापुर नगरी के राजा हस्तिमल को बहुत दान-गुण्य के पश्चात् एक पुत्र की प्राप्ति हुई। उसका नाम चानसिंह रखा गया। उसका एक लँगोटिया यार था चारसिंह। वह बहुत चतुर था। कुवर जब युवा हुआ तब उसने एक रात स्वप्न में एक सुन्दरी को देखा। अगली रात वह फिर स्वप्न में दिखाई दी। कुवर ने उसका नाम पता पूछा। सुन्दरी ने अपने कवन पर हाथ रखकर, कान पर हाथ रखकर खाड़ा टहलकर दण्डन में मुँह निहारकर और हँसकर कुछ गूढ़ संकेत किये जिनका अर्थ चारसिंह ने प्रमत्त यह निकाला कि उमका नगर कवनपुर है घर हथियापौर पर है पिता का नाम कर्णसिंह है माता का नाम हसगवनि (हसगामिनी) है और उसका अपना नाम रूपमजरी है।

दोनों मित्र रूपमजरी से मिलने के लिए चले। कवनपुर पहुँचकर कुवर ने राजा के वाग की मालिन का धन का लालच देकर फुमला लिया। उससे माध्यम से रूपमजरी के साथ उसका मिलन हुआ। वाग में कुछ तपस्वी आय उहाँने चानसिंह और रूपमजरी का विवाह करा दिया। चानसिंह और चारसिंह रूपमजरी को दो भागों में बाँटा। चारसिंह को पता चला कि उसने पीछा किया। परन्तु एक तपस्वी ने उनका रूप परिवर्तन करके उसे छिपा लिया। चारसिंह के वापस लौटने पर वे अपने असली रूप में आ गए। हँसी खुशी अपने देश लौट आये।

कथा रतनमजरी

कवि—जान कवि का यह प्रेमाख्यानक काव्य विस्तार की दृष्टि से उनके सभी

प्रेमाख्याना में बड़ा है। हिंदुस्तानी एकदमी प्रयाग में मगहीत पोथी का प्रारम्भिक ७ पत्र गायब हैं उनमें १० दाहे थे। पात्री में कुल २६८ चौपायियाँ तथा २६८ दाहे रहेंगे। ५ चौपायियों का बाएँ एक दाहे का प्रथम निर्वाह हुआ है। प्रथम की रचना १०४० हिजरी जर्धान सन १६३१ ई० में हुई।

कथा—काव्य का जितना अंश प्राप्त है उसकी कथा यह है चतुपुरी का राजा अजयचन्द का पुत्र मधुसूदन ने स्वप्न में एक मंदिर रानी को देखा जिसमें अपना नाम रूपमजरी बताया। एक चित्रकार से उसने उस स्त्री का काल्पनिक चित्र बनवा लिया। उधर रूपमजरी ने भी उसी समय स्वप्न में मधुसूदन को देखा था। उसने भी उसका चित्र एक चित्रकार से बनवा लिया था।

एक दिन एक राजपक्षी मधुसूदन को छल उड़ा और एक वन में डाल गया। उस वन में एकादशी का दिन रूपमजरी आया करती थी और किसी पुष्प को दल पाने पर मत्स्य दण्ड धती थी। उस दिन एकादशी ही थी। रूपमजरी ने मधुसूदन का पता। पहलें क्रुद्ध हुईं परंतु बाद में अपने पाम रखे चित्र से उसकी पहचान करके प्रसन्न हुईं। कुंवर ने भी अपने पाम रखे चित्र से रूपमजरी का मिलान किया। रूपमजरी ने अपने माता पिता से कहा। उन्होंने दोनों का विवाह कर दिया।

एक दिन रूपमजरी को प्रेम करता था उसने मधुसूदन को बहृत मताया। बार-बार उस बहृत दूर छोड़ आता था। तभी मधुसूदन की भेंट एक सच्च साधु से हो गयी। उसने उसका वाण—अग्निवाण और जलवाण—दिये। उससे उसने स्वका मार डाला। रूपमजरी ने उसका प्रामिलन हो गया।

एक रात स्वप्न में अपने माता पिता को विभ्र देखकर उस घर का दाद हो आयी। वह रूपमजरी को साथ लेकर अपने नगर में वापस आ गया। माता पिता बहुत हर्षित हुए।

ग्रंथ बुद्धिमागर या मधुकर-मालती

कवि हिन्दुस्तानी एकदमी प्रयाग में मगहीत प्रथम प्रथम का नाम ग्रंथ बुद्धिमागर या ग्रंथ मधुकर मालती लिखा है किंतु अक्षर जान का एक अर्थ ग्रंथ बुद्धिमागर चित्र चुका है। पंचतंत्र का अन्तर्गत अनुपात है। धरतू ग्रंथ का कथा मधुकर मालती है। इसका कि इसकी पुष्पिका का इस लक्ष्य से सूचित होता है— इति मधुकर मालती की कथा मधुकर की। कवि जान की जाधी। काव्य की रचना फागुन वृत्ता ४ सवन १६६१ वि० का पूरा हुई। ग्रंथ का प्रिन्तार हस्तनिर्मित २६ पृष्ठा में है। इसमें गद्या चौपाय तथा पद्यम छन्दों का प्रयोग हुआ है।

१ सोरह स इत्यादि है। पात्रन कवि मक।

जान कवि कानी कथा कवि के ग्यान विवक।

कथा — मधुकर अयोध्या नगर के एक सौदागर का पुत्र था और मालती उसी नगर के एक सौदागर की चेरी की पुत्री थी। दोनों एक ही चटसार में पढ़ते थे। तभी से उनमें परस्पर आकर्षण उत्पन्न हुआ। बार में मधुकर मालती को उसके घर भी पढ़ाने जाने लगा। प्रेम बहुरी अधिक सहलहा उठी। मधुकर के पिता को पता चला तो वह उस अपने माय विन्श लता गया।

उही दिनों विलायत में एक बान्शाह का बजीर दासियों की खरीदारी के लिए अवध में आया। मालती के सौंदर्य की प्रशंसा सुनकर उसमें एक महसूस स्वप्न मुद्राएँ देकर उस खरीद लिया। चलते चलते मालती चटसार में अपने गुरु से यह कहती गयी कि मधुकर आ जाय, तो उससे कह दीजियेगा कि मैं आजीवन उसकी ही रहूँगी।

उधर, मधुकर का पिता विदेश में मर गया। वह अयोध्या लौटा। गुरु ने उसमें मालती का सौंदर्य कह दिया। मधुकर उसी देश में गया। जहाँ मालती गयी थी। मालती का सौंदर्य उसके लिए विपत्तिवारी बना हुआ था। बजीर की पाप नष्टि उम्र पर पड़ी परन्तु उसने मुह नहीं लगाया। बादशाह तक का उसने दुस्कार लिया। शाहजादी उम्र अपनी ससुराल ले गयी तो वहाँ उसका शौहर उसका आशिक हा गया। मधुकर हर जगह मालती के साथ जा रहा था। मालती को शाहजादे ने एक सौदागर के हाथ बेच लिया। सौदागर उस गाँव में रखकर ले चला। एक अर्ध दश में वे पहुँचें। वहाँ एक धोकर मित्र की कृपा से मधुकर का एक मछली में पट से दस रत्न प्राप्त हुए। उसने मालती के एवज में पाँच रत्न देकर उस खरीद लिया। दानो अपने नश लौटने लगे तो समुद्र में भँवर में पड़कर उनकी नौका टूट गयी। दोनों पुन बिछुट गये। अतत दोनों वगदाद पहुँचे। वहाँ खलीफा हासै रशीद ने उदारतापूर्वक दानो प्रमियों को परस्पर मिला दिया। दानो का उन्होंने अयोध्या पहुँचाने का भी प्रयत्न कर दिया। मालती मधुकर का प्रेम लोगो के लिए आदर्श बन गया।

कथा रचनावती

कति—जान कवि के इस ग्रंथ में १७५ तोह हैं। ६० चौपाइया के बाद एक दोहे का श्रम रखा गया है। शाहजहाँ की जगह शाहजहाँ की प्रशंसा की गयी है। ग्रंथ की रचना जगहन वदी ७ सवत १६६१ त्रि० या १०६४ हिजरी को सम्पूर्ण हुई। काव्य मृजन में कुल नौ दित लगे।^१

१ सोश्ल से इत्यानुव वरप रतनावलि बाधी में हुरप ।
 भगहन बदि सात वनि जान क्या सपूरन करवी बखान ॥
 कथा पुरातन कीना नई नौ दित में सपूरन भई ।
 सन सहस चार चालीस आन बयानी बिसबा बीस ॥

क्या जान कवि ने इस कथा को शामी मूल का बताया है। उन्होंने नामा का भारतीयकरण कर दिया है।

अमृतपुरी का राजा जगतराज सतानहीन थे। बद्रावस्था में उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम महिमोहन रखा गया। उही तिन राजा के प्रधानमंत्री जगनीवन की पत्नी ने भी एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम उत्तिम रखा गया। दोनों बच्चा का साथ साथ पालन पोषण जान लगा। राजकुंवर जब चौदह वर्ष का हुआ तो चौदहो विद्याओं का पंडित तब राजा ने उसको तथा उत्तिम को मरापा भेंट किया। माहने को उन्होंने नवी मुनमान की दी हुई एक अंगूठी भी दी। राजकुंवर का जामे पर एक सुन्दर लकड़ी का चित्र बना हुआ था। कुंवर उम पर रोय गया और खटपाटी लेकर पड गया। उत्तिम का उसने अपने मन की पया बतला दी। उत्तिम ने राजा का बतला दिया।

राजा ने बताया कि उस यह जामा अप्सराजा ने दिया था और उन्होंने ही कहा था कि इस नाम पर जिस स्त्री की तस्वीर है वह फुलवारी नगरी के राजा सूरज की पटवनी चद्रावती की पुत्री रतनावती है। वह अत्यंत सुन्दर है। चूकि वह सब अप्सराजा से बड़ी है इसलिए उसकी आकाश करना व्यय है।

मोहन और उत्तिम रतनावती की खोज करते करन चीन देश पहुँचे वहाँ में रूप देश की भार चल। समुन्नी यात्रा में उनकी नौका तूफान के शपेटा से फट गयी। काष्ठ फलक पर बैठकर वे अलग अलग तिनानों में बह चले। चालीस दिन बाद मोहन किनारे लगा। वह नरभक्षियों के हाथ पड गया। नरभक्षी राजा की लडकी 'जगिन उस पर रोय गयी। परंतु मोहन ने अपने को पौरुपहीन बतलाकर उससे पीछा छुटायो। एक दिन मौका पाकर मोहन वहाँ से भाग निकला। वह एक जय राज्य में पहुँचा जहाँ का राजा संयोग से उसी के नगर अमृतपुर का निवासा था। राजा ने मोहन को एक नौका में बठाकर स्वदेश रवाना कर दिया। परंतु उसकी नौका एक ऐसे तटीय प्रदेश से जा लगी जहाँ चन्द्रा ही चन्द्र के बंधु थे तिनकी रक्षा कुत्ता के जाकार की चींटियाँ कर रहा थी। वहाँ एक विशालकाय पशु आकर बैठ गया। जब वह पल फलाता था तब कस्तूरी चडती थी और जब पल समेटता था तब हीर भोती आदि गिरत थे। कुंवर ने उस पक्षी के पर पकड लिया। पक्षी उड चला और उसके साथ वह भी। कुंवर ने एक जगह उससे पर छाड दिया। वह प्रदेश भा अप्सराजा का था। अप्सराए उसे अपनी रानी के पास लायी। उसने रतनावती का प्रति उसका एक निष्ठ प्रेम को देखकर उसे छोड दिया। वहाँ से चलकर वह एक निजम प्रदेश में पहुँचा जहाँ एक गगनधुम्वी प्रामाद मिला। प्रामाद में ४० कक्ष थे। सबके कपाट बंद थे। द्वार पर एक सिंह की मूर्ति तथा नगी तलवार रखी थी। कुंवर ने तलवार का वार जम ही सिंह पर किया कपाट खुल गया। कक्ष में भीतर एक बड पलंग पर एक रूपवती नारी सो रही थी। उम नारी ने जागने पर बताया कि वह सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मिनी है। पहली बार पद्मिनी से ही कुंवर को रतनावती का अता पता

मिला । कुवर ने उस देव की मृत्यु का रहस्य जान लिया, जिमने पश्चिमी को बंदी बना रखा था । चार सौ कोस गहरे सागर के तल में एक जडाऊ सद्रूप था उमम एक श्वेत पक्षी था उसी में उस देव के प्राण बसत थे । अगन पिता द्वारा प्रदत्त सुलमान की अँगूठी के बल में कुवर महिमोहन न स दूक का पानी के ऊपर खींच लिया और श्वेत पक्षी को पत्थर पर पटक कर मार दिया । उसका मरना था कि देव भी मर गया । महिमोहन और पश्चिमी मिहल दश पहुँचे । वही मोहन का बाल साथी उत्तिम मिल गया । पश्चिमी ने पत्र लिखकर अम्परा रतनावती का वही बुला लिया । जम्पराओ का रानी रपरम्भा की अनुमति पाकर रतनावती के साथ मोहन न विवाह कर लिया । उत्तिम और पश्चिमी भी एक दूसरे को प्रेम करने लग थे । उन दोनों का भी विवाह हो गया । दोनों मित्र पत्नियों के साथ अमृतपुरी चल गये ।

ग्रंथ लल मजनुं

कति—जान कवि द्वारा रचित इस प्रेमाख्यान काव्य में ललाइया, दोहे, सारठे तथा मवय आदि विभिन्न छन्द हैं । ग्रंथ में शाहेबकन की जगह शाहजहाँ की प्रशंसा की गयी है । इसका रचना-काल सन् १६६१ के माघ मास की मकर संक्राति है । इसकी एक प्रति हिन्दुस्तानी एकेडमी में है और दूसरी बनप सस्कृत सागररी बीकानेर में । एकेडमी वाली प्रति जीण-जजर हो चुकी है । उसमें बीच के आठ पन्ने गायब हैं । प्रारम्भ के १२ पन्ने फट हुए हैं । बीकानेर वाली प्रति गुटकाकार ५७ पन्नों में है । एक पृष्ठ में २१ पक्तियाँ हैं । कुल पद्य-सरथा ६५ है । उस पर शीपक लिखा है—'लला मजनु की बात परतु एकेडमी वाली प्रति पर शीपक है—'ग्रंथ लल मजनु । इमन आध्यात्मिक प्रेम की व्यञ्जना नहीं है पर प्रेम के मन्त्र का गान किया गया है ।

कथा— लला मजनु का प्रेमाख्यान पारसी मसनविया का लोकप्रिय कथानक है । जान कवि ने उसे इसी परम्परा में लिखा है ।

मजन अरब देश के एक नगर के एक धनी जादमी का बेटा था और लला अरब के ही मन्तदगिर के एक धनी व्यापारी की बटी थी । मजनु का रंग गोरा था जबकि लला का रंग काला । दोनों एक ही गुरु की पाठशाला में पढत थे । तभी से उनके हृदय में एक-दूसरे के लिए प्रीति उत्पन्न हो गयी । उनके प्रेम की चर्चा चारा चार फल गयी । लला के पिता ने लला का पाठशाला में हटा लिया । मजनु ने भी पढ़ना छोड़ दिया । वह लला का नाम रतना गलिया में फिरने लगा । कपटे लस्ते की ओर से वह बपरवाह हो गया । उसकी यह दशा देखकर उसका पिता ने लला के पिता

१ साहजहाँ जग-जग बीयो जिह हजरत सौ हेत ।

बोह ईच्छा जीव की सोई करता देत ॥

म प्रस्ताव किया कि लता का विवाह मजन म कर लिया जाय । लता के पिता ने कहा कि इस पावन म मैं अनाथ लक्ष्मी का कम क्या दूँ ? मजनूँ मयक मामन लता क सुत क मन म निरट गया ।

मजनूँ जगन म भाग गया । उमक मरु म आहू भरत ममय आला निरन्तरी थी । लता के द्वार पर एक गिता थी मजनूँ रात का उगी पर आ सटता था । एक दिन कद्रु शरारती लागी न उम गिता पर जाग जलाकर उम सारा लिया । मजनूँ रात म उम पर मग ता उमकी पाठ जच गयी । किमी न पूरा तो उमन कह लिया—

‘मित दाज जरिहै मन मेरी —(छंद १६)

एक बार मजनूँ लता क घर की ओर निरन्त गया । लता क आश्रम मजनूँ क शरीर को उमक से छीना गया ता उम म मन निकला । लता न कहा कि अभी तुम्हारा प्रेम पसरा नहीं हुआ । किन्तु कद्रु दिनी बाप जब उरतरे की हू चोट मे लता लता की धरनि निरन्तरी म लता न कहा कि अब तुम्हारा प्रेम पसरा हो गया ।

लता क पिता न मजनूँ न पाछा छुटान क निर लता का विवाह इन्मनाम नामक एक खमीर स कर लिया । लता उमक विवाह करन क रिच्छ थी परन्तु उमकी ए न लती । उमन इनामनाम का अने गरीर म हाय नग लगान दिया ।

मजनूँ का जगन म एक पथिक क द्वारा लता और इन्मनाम क विवाह की बात जान हई । उमने लता को एक विद्रा किमी कि जिस वध को मैं आमुभा म मीचा था उमका कन दूररा मग रना है एमा क्यों ? लता का जब मजनूँ की बिट्टी मिनी नव वह बल रोपी और मजनूँ को निरन्त भजा—

हम तुम बीच छलय करतार । मेर ती तहीं भरतार ।
तुम बिन जितों पुरय की जात । हँ मेर सब भय्या तात ।’

(छंद ४७ पन्ना २०)

लता की पाती पाकर मजनूँ का छाती टपी हई । मनन का पिता उम निरान गया ता व लता म अर मजनूँ बटाँ रहा मैं तो लता बन गया हँ—

मजनूँ बहुत नल हों हा हाइ गयी हा । जगत क हिन्द पनु उसक मिश्र दन गये ५ ।

उधर लता का प्रेम प्राप्त न कर पाने के कारण इन्मनाम भी दुःसा था । दुःस म धुन धुनकर उमना रना न थी गया । लता विधवा होकर जब अपन पीर लोट रनी था तब उमका उट एक लयन म म गुजरा । यह वही जगन था तहीं मजनूँ रहता था । लता मजनूँ पश्यद मिन रात भर के साथ रन परन्तु मजनूँ न लता क शरार का मग लन नी किया । गुड प्रेम को क धामना त कलकित कस करता ?

उतहीं लहो पमु को मम । जिन राख्यो अपनी सत धम ॥

येक धरो क मुप क काज । कौन लगाध पमहिं लाज ॥

मदरे होने पर चब लला अपने धर चली, तो उसके पर मीचे नहीं पड़त थे मानो उसने मदिरा पी रखी हा ।

एक रात लला ने स्वप्न में देखा कि मजनू मर गया है । उसी समय से वह ज्वर ग्रस्त हो गयी । जब उसका अंतिम समय आया तब उसने अपनी माँ म कहा कि मैं मजनू के विरह में मर रही हूँ उसी को मैं प्यार किया । यदि मेरे मरने के बाद मजनू आव और मेरी कब्र पर लोट, राये पीटे तो कोई उसे दूर न करे । यह कहकर वह मर गयी ।

लला के मरने की खबर मजनू तक एक अर्थ विरहो जद ने पहुँचायी । मजनू रोता-पीटता लला की कब्र पर गया । उसके माथी हिस्स पशु भी गया । मजनू न लला की कब्र पर ही प्राण त्याग दिया । हिस्स पशु एक वर्ष तक जगती लाश की रखवाली करते रहे । मजनू की जब हड्डियाँ बिखर गयी तब लोगो ने उनको एकत्र कर लला की कब्र की बगन में ही गाड़ दिया । इस तरह मरने पर ही मजनू की इच्छा पूरी हो सकी ।

कथा कामरानी व प्रीतमनाम

कति—जान कवि ने इस ग्रंथ की रचना केवल मवा दो पहर में ही कर ली थी । रचना तिथि है—पौष कृष्णा १० बुधवार सवत १६६१ वि० । ग्रंथ का विस्तार हस्तलिखित २० पृष्ठों में है । चौपाई और दोहा छंदा का प्रयोग किया गया है ।

कथा—मुल्तान नगर के राजकुमार का नाम प्रीतमनाम था । उसके चार लँगोटिया यार थे एक मीदानगर पुत्र दूसरा सुरगिया (सुरग खोदने में प्रवीण) तीसरा बर्ड-पुत्र और चौथा काछी पुत्र । पाँचो मित्रो ने निश्चय कर रखा था कि एक जगह से ही विवाह करेंगे ।

पाँच मित्र कामरूप देश की यात्रा पर निकले । वहाँ के राजा राम ने कामरानी नामक एक राजकन्या का अपहरण कर रखा था पर कामरानी उसका मुह नहीं लगाती थी । वह एक अलग महल में रहती थी । प्रीतम के चारो मित्रो ने कामरानी के हृदय में प्रीतम के प्रति प्रेम उत्पन्न करने का निश्चय किया । काछा पुत्र ने एक सु दर माना भेजी बर्ड-पुत्र ने एक सु दर काष्ठ प्रतिमा भेजी । सुरगिया ने राना के महल तक एक सुरग खोद थी । सुरग का मुह महल के सम्भे तक निकाल दिया । बर्ड-पुत्र ने सम्भे में सफाई से एक द्वार काट दिया । उस सुरग के रास्ते कामरानी को महल में निकालकर पाँच मित्र कामरानी के पिता के दश में पहुँचे । राजा ने प्रीतमनाम के साथ कामरानी का विवाह कर दिया और अपने मुल की अर्थ चार लड़कियाँ के साथ प्रीतम के चारो मित्रो का भी । पाँचो मित्र अपनी पतिमा के साथ मुल्तान लौट आये ।

कथा चन्द्रमन-मोचनिधान

कवि—अनन्तर राजा का स्तुति और सम्मान माह्व की प्रणाम का वाक्य कथा का आरम्भ हुआ है। तब कवि ने चन्द्रमन राजा की प्रणाम २ गुणगान सं० १६६१ वि० में का। इसमें राजा १७ शीलादेवी तथा १६ दाह हैं।

कथा—चन्द्रमन राजा चन्द्रमन का शब्दाधीन राजा की पत्नी तथा ही जिनका चरित्र अज्ञात है। साधारणतः राजा का पुत्री जालनिधान एक एमी है नारायण का। पर राजा का उगत विवाह ही उगत पत्नी ही एक सौभाग्य राजा का हाथ पाए मुग्ध ही राजा की कुलापन स्त्रियों का राजा का। श्रीनिधान राजा की विवाहिका पत्नी थी पर तु मुग्ध न हीन के कारण वह चन्द्रमन का मन न भायी। वह उगत माध मुह बात भी न करता था।

राजा का नगर का एक गुणी पंडित न अल्प धानु की एक मूर्ति बनाया जिनमें यह विनयना ही कि वह मन्त्री राजा मुग्ध मोच रक्षणी थी और भूमी बात मुग्धर हस पत्नी थी। राजा न अपनी रानिया का शील ही पराशा सन के लिए उगत मूर्ति का स्त्रीय किया।

पत्नी के ही मोना स्त्रियों पर पत्नी में अनुराग ही अतः उनकी छत्र छत्रपूज मोच मोठी वाता ही मुग्धर मूर्ति हम ही पर तु श्रीनिधान की वाता का मुग्धर वह मोच ही रही। राजा न परीक्षा ही। तीना स्त्रियों कुला प्रमाणित है। अकली जालनिधान ही मन्त्रिण निकली। राजा न तीना स्त्रियों का मन्त्रा डाना और जालनिधान का प्यार करन तथा।

कथा छीना

कवि—जान कवि ने अंग प्रमाणयानक काव्य की रचना काविक गुणवा ६ सं० १६६३ वि० को सम्पूर्ण की थी। उगत समय दिल्ली का सिंहासन पर शाहजहाँ विराजमान था। कवि ने अंग अंग मुह का भी उल्लेख किया है। उनका नाम शस मुग्धर बताया है। अंग म ३७ श्लोक है। १० चापाण्या का वाद एक दोह की योजना की गयी है। इस काव्य में अनाउदीन का चरित्र का जमा उत्कृष्ट प्राप्त हुआ है वसा हिन्दी का किमी अंग का न नही।

- १ सोरठ स ज निराने के क्या कही यदु जान ।
काविक गुण छऽ दूरे छीनाराम बपान ॥
- २ साहिबजीवन ससार अमर अजर रहियो करतार ।
दुनिया मोचि दे विधि शरु यह कुल घसो भयो न काऊ ॥
- ३ सय महमद पीर हमारे अजरु विचारी जग उत्रिचारी ।
हामी में हूँ उनरी विधान ज्यारु विदे सरै मन काम ॥
का कुनुव जिनके भये अजम भयो ये माम ।
तिनकी सक्ति जान कवि कयो न होइ अमिराम ॥ दोहा २ ॥

कथा—दरगिरि जिस दौलतावाद भी कहते हैं व राजा देव के काई न तान न थी। बहुत दान-गुण करने के बाद रानी का गर्भ रहा। उससे एक पुत्रा उत्पन्न हुई। उसका नाम 'छीता' रखा गया। जब वह बड़ी हुई तबउसके सो दय की मुग घ देश-देशांतर म जा पहुँची। पश्चिम दश क राजा राम उसके सौंदर्य पर मोहित हो गय। वे छीता म विवाह करन के लिए दरगिरि आय। छीता न उनको देखा तो वह भी उन पर मुग्ध हो गयी। लेकिन पड़िनो न बताया कि उनका गुप्त विवाह लगन तीन वष बाद बनगा। राजा राम उदास मन में अपने नगर लौट गय।

एक चित्रकार ने मोर के पीछे भागती किशोरी छीता का एक सुन्दर चित्र बनाया। वह चित्र उमने दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन को दिखाया। अलाउद्दीन न छीता को पाने के लिए दरगिरि पर चलाई कर दी। पर तु उसकी गोलावारी स दुग का कुछ न गिगडा। राघवधेतन नामक एक दरवारी के सुझाव पर अलाउद्दीन दुग के भीतर छुप्रवेश म आया। पुनवारी म उमन छीता का प्स लिया। उमन उसकी फुलवारी तक सुरग खुन्वाकर उसे पकड भँगाया। छीता का का लेकर वह दिल्ली आ गया। परतु छीता रानी हो रही। उमने कहा कि मैं राजा राम की भँगेतर हूँ। राम अच्छी बीन बजात हूँ किमा दिन व मुझे ढूँढत हुए दिल्ली भी आ जाएँगे।

एसा ही हुआ। राजा राम जागी का वेश धारणकर दिल्ली आ पहुँच। बीन बजात समय के राम मीता के वियोग के गीत गान फिरते। अलाउद्दीन का भी पता चला। उमने राम को दरबार म बुलाया। जब राम बीन बजा रह थ तब बराले म बठी छीता के आँसू उन पर आ गिरे। सुल्तान न यह देख लिया। सच्चे प्रेम न उसक हृदय का कलुप धो दिया। उमने छाता का अपनी बंटी मान लिया और राम के साथ उमका विवाह कर दिया। राम और छीता के लिए उसन दिल्ली म ही एक महल बनवा लिया जहाँ वे सुखपूर्वक रहने लगे।

कथा मोहिनी

कति—जान कवि न इस प्रेमाख्यान काव्य की रचना मसनवी पद्धति पर की ह। परमात्मा के मोहिना रूप की प्रशंसा करत हुए कवि न कहा है कि उसके इस रूप की चाह ससार के सभी नानियो को रहती है। काव्य म कुल १२२ दोहे ह। इसकी रचना अगहन सुदी ४ म० १६६४ वि० (मन १६३७ ई०) की हुई केवल तीन पहर म। शाहबन का उल्लेख नम नही किया गया है।

कथा—माहिनी जीर माहन की कहानी सबाधो व माध्यम न कही गयी है। राजा जगमण्य की पुत्री मोहिनी अत्यंत रूपवता थी। माहिनी न प्रण कर रखा था कि विवाहेच्छुक प्रत्येक व्यक्ति स वह दस प्रश्न करेगा। उत्तर न देनेवाल को अपन प्राणा स हाथ धोना पडता था। कितन ही लोग अपन प्राण गवा चुके थे।

प्राची देश के एक राजा के पुत्र का नाम था मोहन। वह बहुत रूपवान और

सुद्धिमान था। यह माहिना क नगर में गया। उसने माहिनी क सभी प्रश्नों का समुचित उत्तर दिया। जगत् तिन उमन भी माहिनी में एक प्रश्न पूछा परंतु मोहिनी उसका उत्तर नहीं पायी। तब जान क कारण उमन मात्न में विवाह कर लिया।

कथा पित्र साहिजाद के देवल दे

कवि—जान कवि दूत उस प्रमाख्या का आरम्भ ममनवी पद्धति क अनुसार र्ण व र्णा मुहम्मद साहब उनके चार मित्रों और शाह बदन की प्रशंसा में र्था है। इस काव्य की रचना शाहजहाँ क शासन काल में हुई। प्रथम की समाप्ति पौष सुदी २ म० १६९४ त्रि० का हुई। इसमें कुल ८५ चौपायियाँ और ८५ दाहे हैं। ८ चौपाइ क बाद एक दोहे का अन्त रखा गया है।

कथा—दिल्ली क सुल्तान जलाउद्दीन का सबसे अन्तिम आक्रमण एक मगर तटवर्ती राज्य क राजा करनसिंह पर र्गा। करनसिंह कायर निकला। वह राजधानी छोड़कर भाग गया। उसकी सारा रानियाँ अलाउद्दीन क हस्त में आ गयीं। उन रानियों में जो पटरानी थी क्वला र् रानी वह जलाउद्दीन की विशेष कृपा पात्र बन गयी। क्वला र् की एक बटी थी देवल दे जो बहुत सुंदर थी। वर अपन पिता करनसिंह क नाम ही रख गयी थी। उसकी याद में क्वला र् उदास रहती थी। अलाउद्दीन ने यह साक्षात् कि वह र्बन र् स अपन सबसे लाडल गटे मित्र सा की प्राणी कर र्गा देवल दे को जान क त्रिण एक बनी मना गुजरात की ओर भजी। करनसिंह दस बार भी अत्रगिरि भाग गया। बादशाही सेना देवल दे को ल आया।

हिन्दी आकर दबन दे प्रसन्न र्ण गयो। उस समय देवल की आयु ८ वर्ष और मित्र की आयु १० वर्ष की थी। दबन और मित्र में स्नेह बन्त र्गा। जब क युवावस्था में पहुँच तो दबन का स्नेह प्रेम में बदल गया। परंतु बादशाह ने बाद में अपना विचार बन्त दिया और निश्चय किया कि अपनी बगम की भतीजी स मित्र सा की प्राणी कर दी जाय। उसकी प्रार्थना का भी यह बात पसन्द आ गयी। बगम ने मित्र सा से देवल दे का अलग रखन का दृष्टि स देवल को ऊँजर घर में भेजन की आज्ञा दी। मित्र बन्त रोया। उमन दबन को अपन मिर के कुछ बात नाचकर दे दिय ताकि व स्मृति चिह्न क रूप में उमक पास रह। दबन दे न भी मित्र की चोगुता में अपनी अगूठी पहना दी। दामिया क प्रयत्न स मित्र और दबन दे इसके बात भी मिलत रहे।

अलाउद्दीन का प्रगम ने अब अधिक विलम्ब न कर अपन भाई जिनक सा की बटी स मित्र सा का शादी कर ले। मित्र सा के सामन कुछ न बान सका। या मित्र की यह बातें सुनकर ही वर र्म कुछ कुछ प्यार भी करन लगा। दबन र् का मन यह पना चता तब उमन मित्र का उनाहना दन तुण एन पन निखा। पत्र का पत्र मित्र का धाय फिर हरा हो गया। उसकी शलन त्रिना त्रि मिरन गयी।

पुत्र व गिरते स्वास्थ्य से चिन्तित शायर बामन शवल द का अगके ही महान म रहन का प्रबन्ध कर दिया । अब गिअर खाँ और दयन द पुन प्रस्तान हा गया । नेवल और उगम की भतीजी मोनो प्रहना की तरह प्रम से रहा लगी । गिअर व प्यार की दो धाराएँ दोना को नीचन लगा ।

कथा कलदर की

कति जान कवि के इस छांट-से प्रेमार्थानव काव्य का रचना काल सवत १७०० की शरद ऋतु है । प्रथम का विस्तार हस्तलिखित ५ पृष्ठा म है । चौपाई और दाहा छन्द का व्यवहार किया गया ह । १० चौपाई के बाद एक दाह का प्रम रखा गया है ।

कथा—कलदर एक मसजिद (मसीत) म रहता था । वहाँ सेवा-रहल किया करता था । एक दिन उमन नक्याम बाजार म दामियो को बियत दखा । एक दामी अर्थन सुन्दर थी । उम राजा ने मुन् मांगा मून्य दकर खराद लिया । कलदर बचारे की कथा जिमात थी जा उस खरीद पाता । वह उदास रहन लगा । एक दिन उसन अपन एक फकीर दोस्त म कहा कि जम में मर जाऊँ तव तुम मरा कलजा चीर कर दखना उमम एक जवाहर रग्या हुआ मिलेगा । कलदर का कलेजा फट गया । उसमे एक जवाहर जगमगा रता था । राजा न उन जवाहर का खराद लिया और उस अपनो जंगूठी म जन्वा लिया ।

एक रात जब वह कामामकत हुआ उसन सुन्दरी दामी का बुलवाया । आलि गन के पश्चात उमन कुच पर वह बाथ रखन को ही था कि वह छिटक कर दूर जा खनी हुई । राजा रम भग हान से रफ्ट हा गया । दामी न बताया कि कुच पर पानी का बून् गिर पडी इसी स वह चौक उठा । राजा न दग्या सचमुच वहाँ पानी की एक बून् पडी थी । राजा की दष्टि अपनी जंगूठा पर गयी उमम जवाहर का नग गायब था । वह जवाहर आँसू की बूद बनकर ढनक गया था । दरबारिया न राजा को कलदर व प्रेम के विषय म बताया । राजा एम प्रेमिया के विछुडन का कारण बनन क लिए बहुत पछनाया ।

कथा छविसागर

कति—जान कवि न इस प्रथम का आरम्भ अनख जगोचर की बदना और मुहम्मद साहब की स्तुति करके किया है । प्रथम का विस्तार ८ हस्तलिखित पृष्ठो म ह । प्रथम म १५ चौपायाँ और १५ दाह है । रचना-काल सवत १७०६ वि० (१६४६ ई०) है । शाह-बकन की चर्चा नही है ।

कथा—रामपुरी के राजा की रूपवती कथा छविसागर ने कुछ तत्र मत्र सिद्ध करक नगर म दूर एक ऊँची पहाडी पर एम एमा तिनम्मी गन् बनवाया था जिसक द्वार का पता नही बनता था । गड व जाँगन म कितना ही छोटी बडी लौह मूर्तियाँ

था जिनके हाथ में नगी तलवारें थीं जो किमा भी प्रवेश करने वालों का सिर काट ली थीं। छविसागर ने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि जो व्यक्ति उमक प्रश्नों का उत्तर न देगा उसी में वह विवाह करेगा। उत्तर न देनेवाले का सिर काटकर गन्धर्वगुरु पर टांग दिया जाता था। कितने ही साहसी युवक अपना सिर दे चुके थे। शतेय था—(१) प्रत्याशा का नाम मुनात है, नाम ही उमक का गुण जाना जा सकता है। (२) प्रत्याशी गन्धर्व जाँगल में स्थित महामूर्त्तियाँ का एक द्वार में ही गिरा सकता है। (३) प्रत्याशी गन्धर्व का पौर-द्वार जान सकता है। (४) राजकुमारों के कुछ गुण प्रश्नों का मकत में ही उत्तर दे सकते हैं।

एक अर्थ राजा था जत। उमक पुत्र का नाम था गुनजागर। एक दिन गुनजागर शिकार खेलने गए रामपुरी आ निकला। वहाँ उम छविसागर की शर्तों का पता चला। वह अपने नगर में लौट गया। वहाँ एक तांत्रिक से उमके तन्त्र मन्त्र सीखे। लौटकर आया तो उमने छविमागर की शर्तों को पूरा करने की घोषणा की। उसका नाम न उमका गुण ना प्रकट था ही, उमने कुछ मन्त्र ऐसे पढ़े कि लौह मूर्त्तियाँ एक द्वार में ही गिर पड़ी और गन्धर्वगुरु का गुप्त द्वार प्रकट हो गया। अतः उम राजकुमारों के गुण मन्त्रात्मक प्रश्नों का उत्तर मान लेता था। राजकुमारी छविसागर ने पहले उमक पास एक धनुष और दस बाण भेजे। गुनजागर ने उमक उत्तर में एक बाण भेजा। फिर छविसागर ने कुछ द्वार भेजे गुनजागर ने उनकी रस्मी बन्द कर लौटा दी। राजकुमारी ने एक रत्न भेजा कुंवर ने उत्तर में एक और रत्न भिजाकर भेज दिया। चौथा बार छविमागर ने शतरज भेजी गुनजागर ने उत्तर में चौपड़ पासा भेज दिया। अतः छविमागर ने तीन भेजा और कुंवर के सामने उसे ढरका दिया गया। उत्तर में कुंवर ने करतार भेजा। छविमागर ने अपने पिता से कहा कि मेरे सभी प्रश्नों का उत्तर मिल गया अतः इस राजकुमार के साथ मेरा विवाह हो सकता है। राजा ने जब मन्त्रात्मक प्रश्नों का उत्तर जानना चाहा तब छविमागर ने बताया कि पन्त प्रश्न के द्वारा मैंने क्या था कि मेरी भौह धनुष है और दाना आगे बढ़ा है बाण। उत्तर में राजकुमार ने कहा कि उनका बाण तो मैं पहन ही अपना दात दात चुका हूँ। दूसरे प्रश्न से मेरा तान्पय था कि मैं गुणवान हूँ। उमका उत्तर राजकुमार ने रस्मी बंद कर दिया। तान्पय था कि मैं गुनजागर हूँ। मेरे एक रत्न के बदले एक और रत्न लौटा देने का तान्पय यह था कि एक तुम्हीं रत्न नही हो मैं भी तुम्हारी तरह ही दूसरा रत्न हूँ। मैंने शतरज भेजा जिसका मतलब था कि तुम्हारे ता कई रानियाँ हाथ कुंवर ने इसका उत्तर चौपड़-पासा भेजकर दिया जिसका अर्थ था— मैं तो हाने ही हूँ-तुम सबसे अलग चौपड़ पासा खेला करेंगे। अन्तिम प्रश्न में मैंने तल गिरवाया जिसका तात्पर्य था कि पुरुषों की प्रीति अस्थिर होती है। कुंवर ने उमका उत्तर करतार भेजकर दिया और यह सूचित किया कि ऐसा नहीं होगा करतार मेरे तुम्हारे बीच माफी है।

राजा इन प्रश्नों का रहस्य जानकर बहुत प्रसन्न हुआ। उमने छविसागर

का विवाह गुनआगर से कर दिया। गुनआगर छविसागर के साथ अपने नगर में लौट आया।

कथा नल-दमयन्ती

कृति—जान कवि ने इस प्रेमाख्यान की रचना १०७२ हिजरी अर्थात् १७१८ वि० (१६६१ ई०) में रविवार के दिन पूरी की।^१ तीस दिन कथा को पूरा करने में लगे। शाहेबखान की अगह औरगजेब की प्रशंसा की गयी है।^२ गुरु के स्थान पर हांसी-निवामी शेख मुहम्मद का उल्लेख है।^३ ग्रंथ की रचना भमनवी पद्धति के अनुसार अवश्य की गयी है, परंतु सूफी सिद्धांतों का कोई निरूपण नहीं है। यह शुद्ध प्रेमाख्यानो की कोटि में आता है। ग्रंथ का विस्तार ६० पृष्ठों में है। दोहा, चौपाई और सबया छंदा का प्रयोग हुआ है। कुल १४६ चौपाइयाँ, १४६ दोहे और ५८ सबयें हैं। सात चौपाइयों के बाद एक दोहे का प्रेम रत्ना गया है।

कवि ने कथा का आरम्भ करते हुए कहा है कि मैंने नल-दमयन्ती की कथा का कई ग्रंथों में पढ़ा और सबमें मुझे कुछ भिन्नता मिली। मैंने सब कथाओं से सार-संग्रह किया और अपनी 'नल-दमयन्ती' कथा लिख दी।^४

कथा—देखिए जायसी के परवर्ती हिंदी सूफी कवि और काव्य (डॉ० सरला शुक्ल पृ० ४००-४०१)। विशेष द्रष्टव्य प्रस्तुत प्रबंध का अध्याय ५।

कथा सुभटराई

कवि—जान कवि द्वारा रचित प्रेमाख्यानक काव्यों में इस काव्य को ही अंतिम

- १ सन हबार बहुतरी दिन भादितवार ।
करी जान तीस दिन में जब पाई वार ॥

—कथा नल दमयंती पृ० १०, हस्तलेख

- २ भबहि बयान करी पतिसाहि । सासों भमित दया इनाह ।।
घोरे कटक बहुत दल मारे । भईया हार गद्य सहारे ॥
दास गुजा पत बिचराये । पुनि मुराद खारेर चवाये ॥
दीनदार बर बड भी जूझार । मोरंगजेब साहि मूछार ॥

—वही पृ० २ हस्तलेख

- ३ भब ही करी पीर पयनाम । सेप महमद जाकी नाम ।
हासी में जिनको बिस्राम । सतत भवू हनोक इमाम ॥ —वही छंद २

- ४ नल-दमयन्ती कथा बयानों । कहत जान जसी विधि जानों ॥ — — —
बाँधी मैं बहु प्रथम साहि । येक भाँति प पाई नाहि ॥

- ५ और और भाँति मैं सही । लगा भली बात तो कही ॥
गुरता करि यह भल बिचारि । कधी कनी दोष निवारि ॥
सबहीं को मति चुन चुन लीयो । चतुरन हनु भरपजा कीयो ॥
बहुत मिलीनी मिले सुवास । भलि सुपथ हूँ सेत प्रकास ॥

—वही छंद ५, पृ० २, हस्तलेख

मानना उचित है, क्योंकि सन्त १७२० वि० क बाद लिखा उनका कोई प्रमाख्यान अभी तक नहीं मिला है। कथा सुभटराड का आरम्भ मसनवी पद्धति के अनुसार हुआ है। कत्ता की स्तुति मुम्म साहब का स्मरण और शाहे-बकत औरगजब की प्रशंसा^१—यह श्रम रखा गया है। श्रय का रचना काल १०७४ हिजरी या १७०० विन्नी (१६६३ ई०) है। कातिक मास में यह काव्य सम्पूर्ण हुआ।^२ श्रय का विस्तार १८ हस्तलिखित पृष्ठों में है। दस चौपाइयाँ क बाद एक दाह का श्रम है।

कथा—पूव दिशा में स्थित सूरनगर क राजा का नाम सूरजमल था। वह निस्सतान था। एक सिद्ध न कृपाकर उसका एक सदाफल तथा कुछ अभिमित्रित द्राक्षाएँ दे दीं। सिद्ध ने कहा कि जो रानी सदाफल खाएगी उसके एक पुत्र होगा और द्राक्षा खानवानी रानियाँ स पुत्रियाँ उत्पन्न हंगी। पटरानी न सदाफल खाया, उसका एक पुत्र हुआ जिसका नाम सुभटराड रखा गया।

राजा के चार प्रधान थे। उनमें यहाँ भी उसी दिन एक-एक पुत्र उत्पन्न हुए। सुभटराड का तानन-पालन चारों प्रधान-पुत्राँ क साथ ही हुआ। पाँचा धनिष्ठ मित्र बन गये। सबने प्रतिष्ठा की कि एक ही जगह स विवाह करेग।

पाँचा मित्र र्ना विजय यात्रा पर पहन उनीची दिशा में गये, फिर प्रतीची दिशा में और फिर नश्चत्य दिशा में। प्रत्येक दिशा में राजकुमार न वहाँ के एक नगर की राजकुमारी को विपत्ति स बचाया और उससे विवाह किया। वही उसके चारों मित्रों का भी विवाह हुआ। अपनी पत्नियाँ को व सूरनगर में भेजत चले गये।

अंत में वे दक्षिण दिशा में स्थित अवाची नगर में पहुँचे। वहाँ की राजकुमारी को पचानन नामक एक राक्षस हर ल गया था। राजकुमार न एक सिद्ध स (जिसके द्वारा प्रदत्त सदाफल स उसकी उत्पत्ति हुई थी) एक जड़ी तथा लुकाजन प्राप्त किया। जड़ी को बायें हाथ में बाध सन पर हजार कीस चलन पर भी यकान नहीं होती थी। लुकाजन को आँत्र लेन पर दूसरों स अदृष्ट बना जा सकता था। इन दोनों धीजों का उपयोग कर राजकुमार न राजकुमारी का पता लगा लिया और राक्षस को मार कर उसका उद्धार किया। उसके साथ उसका विवाह हुआ। उसी नगर में चारों प्रधान-पुत्राँ का भी। अपनी अय पत्नियों की याद आने पर वे सभी सूरनगर वापस आ गये।

१ धीरगसाहि महाबता है दलबल उदाम।
कोऊ नाहिन बीतिहै इनसो करि सधाम ॥ —कथा सुभटराड, (आरम्भ में)

२ सन सहस चौहतरै कथा करी यह जान।

सत्रह स धर बास पुनि सबत हुतीजहान ॥

साड रानीदल पकव दो गये कानक की मास।

नल-दमन

कवि— नल दमन प्रेमाख्यान-काव्य के रचयिता सूरदास लखनवी हैं। पहले लोग ने इनको भी अष्टछापी सूरदास ही मान रखा था परंतु अब इस भ्रम का निवारण हो चुका है। 'नल-दमन' म कवि न अपना जो परिचय दिया है उसके अनुसार इनके पिता का नाम गोरधनदास (गावद्धनदास) था। ये कबो गोश्रीय और माडिल जाति के थे। इनके पुरखे पजाब प्रांत के अतगत कलानौर (कनानौर) नामक स्थान से आकर लखनऊ में बस गये थे। सूरदास का जन्म लखनऊ में ही हुआ। इनकी बड़ी लालमा थी कि एक बार अपने पितृस्थान का दशन करते, किन्तु परिस्थितिवश इनका वहाँ जाना न हो सका।

ये अचिन्त पथ के अनुयायी थे इसका उल्लेख इन्होंने किया है—

गुरु अचिन्त को पथ जग, बहुजल तरनी नाव ।

पहुँचनहार जो पार को, सो राखे तहँ पाव ॥ (दीहा २२)

इनकी गुरु परम्परा इस प्रकार है—

अचित्त प्रभु > रंगबिहारी > स्यामदयाल > सूरदास ।

अचिन्त प्रभु एक सिद्ध महोदय थे उनके शिष्य हुए रंगबिहारी उनके शिष्य थे स्यामदयाल और स्यामदयाल के शिष्य थे सूरदास ।

कृति— कुछ समय पूर्व तक यह उत्कृष्ट काव्य अप्रकाशित था। परंतु प्रसन्नता का विषय है कि डॉ० वामुदेवशरण अग्रवाल और श्री दौलतराम जुयाल द्वारा संपादित होकर यह ग्रंथ आगरा विश्वविद्यालय के क० मुशी हिंदी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ से प्रकाशित हो चुका है। संपादकों ने 'नल-दमन' का संपादन दो प्रतिर्यों के आधार पर किया है। उसमें से एक तो प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम, बम्बई में सुरक्षित नल-दमन की फारसी लिपि में लिखित प्रति की देवनागरी में की गयी प्रतिलिपि है जिसकी एक टकित प्रति काशी नागरी प्रचारिणी सभा में सुरक्षित है और दूसरी स्वर्गीय डॉ० मोतीचंद के पास थी। दूसरी प्रति मुनि कात्तिसागर जी द्वारा राजस्थान

- 1 सूरदास निज नाउ बठाऊ । गोरधनदास पिताकर नाऊ ॥
 कबू मोठ माडिल साधू । कलानूर पुरखन कर बाधू ॥
 ताउ हमार उहाँ सों बाबा । पूरब दिसा कोऊ दिन छाबा ।
 नगर लखनऊ बढा सो धानू । बचिर ठौर बहुछ समानू ॥
 मेरो जनम यहै ठाँ प्रथऊ । कलानूर कबहू महि पयऊ ॥
 बछपि हौं कबहू परेसा । प नित प्रति सुमिरीं सो देसा ॥
 जैसे पयो बस सराह । महु विदेस र्हौं जिन्हु नाई ॥
 घादि ठौर बिसरा में नाही । छोई सदा रहै मन माही ॥
 मुमिरन करौं नाम हर स्वासा । महु को बिधि पुरब सो घासा ॥

बिन निज दया दयाल के देस न पहुँचा जाय ।

जब सग छोई बहू महि, तेर न देख पहुँचाय ॥

(छंद २४)

शाहबकन की प्रशंसा, गुरु (पीर) का वषण और आत्म-परिचय आदि देते हैं, उसी प्रकार सूरदास ने भी दिया है। 'नल दमन के प्रारम्भ में इन्होंने वेदांत के आधार पर परमात्मा की स्तुति की है—

सुमिरौं आदि अनादि जो कोई । आदि अत पुनि एक सोई ॥
जाहि न वरन न रूप न रेखा । अविगत गति अभेख बहु भेखा ॥ (१११२)

निज समुझौ तो एकौ सोई । साहब सेवक भेव न कोई ॥
जड चेतन अतर पुनि नाहीं । सब समाइ रहै ता माहीं ॥
ज्यों जल माहि बुदबुदा भएऊ । है जल नाव और होइ गएऊ ॥ (८११-३)

और न भखड जो कुछ सो यह अलख निरजन एक ।
भाति भाति क भेख घरि, एक भयो अनेक ॥ (दोहा ६)

सूफी काव्यों में पगम्बर मुहम्मद साहब की बंदना हाती है। 'पदमावत' में जायसी ने मुहम्मद साहब को परमात्मा द्वारा निमल ज्योति के रूप में उत्पन्न हुआ बताया है—

कीहेसि पुण्य एक निरमरा । नाउ मुहम्मद पुनिउं करा ॥
प्रथम जोति बिधि तेहि कं साजो । औ तेहि प्रीति सिस्टि उपराजो ॥
('पदमावत' १११२)

'नल-दमन' में कवि ने हिन्दू होने के कारण मुहम्मद साहब का ता नहीं, पर निमल ज्योति का वषण किया है—

प्रथम 'निरमल वह जोति उपाई । तिह क प्रीति सब सिष्टि बनाई ॥
रसन एक अस्तुति बहु भेला । लिख सो की नाहिन कछु लेखा ॥
(१२१३४)

और इस प्रकार उस काव्य-रूढ़ि का भी निर्वाह किया है। मुहम्मद साहब के चारों मित्रों की प्रशंसा करके बजाय इस कवि ने उसी निमल ज्योति को 'भीत' मान लिया है—

अथ गुन कयअ भीत कं करौं । जिह कं प्रेम प्रताप निस्तरौं ॥
जब ते प्रघट मोहि निस्तारे । उन एते वेत निस्तारे ॥
(१२११-२)

कवि ने शाहबकन (शाहजहाँ) की भी प्रशंसा की है—

शाहजहाँ सुलतान खस्ता । भानु समान राज एकधस्ता ॥
दिहली उवा सुरज उजियारा । चहूँ और जस किरन पमारा ॥
(१३११२)

और सूफ़ी नायकों की तरह वह भी मामात्रिक सम्बन्ध तथा लोक लाज की उपेक्षा करने को प्रस्तुत है—

डरौ न हास कलक सों, जो पेम रहै मन माहिं ॥

इहि धासू परवाह जल, कित कलक ठहराहि ॥१३२॥

सूफ़ी प्रेम-माधना विरह की तीव्रता और व्यापकता को नी महत्त्व देती है। 'नल-दमन' में नायक और नायिका दोनों के पक्ष में विरह की तीव्रता और प्रचुरता है। इस काव्य के प्रेम-वर्णन में प्रेम की लौकिकता अलौकिकता की ओर जाती हुई दिखाई देती है और अलौकिकता के साथ साथ रहस्यमय सत्ता की ओर संकेत भी मिलता है—

मो सों बिनती पं वन धाव । होइ सो वहे जो पिउ को भाव ॥ (१२३१)

अब सूफ़ी प्रेमाख्यानों में प्रेयमी को परमात्मा का प्रतीक और प्रेमी को आत्मा का प्रतीक माना गया है। नल-दमन काव्य में यह फारसी प्रतीक-पद्धति तो नहीं है परन्तु उमका परिवर्तित रूप है। नल और दमयती इस काव्य में एक दूसरे के लिए परमात्म-रूप हैं। दोनों का एक दूसरे के विरह में समान रूप में व्याकुल दिखाया गया है। 'दमयती' के वर्णन में कवि ने परमात्मा को प्रेम (प्रमामत) के रूप में चित्रित किया है और नल के वर्णन में 'न' रूप में। यह उनके लिंग भेद के कारण है जो स्वाभाविक है। परमात्मतत्त्व दोनों में एक ही है। दोनों शुद्ध सात्त्विक वृत्ति के होने के कारण वह तत्त्व उनमें पूर्ण प्रकाश रूप में भागने लगता है।^१

सूफ़ी काव्या में नायिका को (जो परमात्मा स्वरूप होती है) अतिशय रूपवती चित्रित किया जाता है समार का मारा रूप मो-दय उमके रूप-मो-दर्य की छाया अपवा अनुकृति मात्र हाता है। नल-दमन में चूकि नायक और नायिका दोनों परमात्म स्वरूप हैं अतः दोनों के सौन्दर्य में अतिशयता है—दोनों का पार्थिव सौन्दर्य किसी अपार्थिव अतीन्द्रिय सौन्दर्य की व्यञ्जना करता है। उपाहरणस्वरूप नल के सौन्दर्य का यह वर्णन प्रस्तुत है—

ओ प्रति रूपवत उजियारा । मानो काम तीह भवतारा ॥

जिह मुख रूप कहै तिहि नीवा । नल-मुख रूप रूप मुख फोका ॥

बर न बीउ रूप सरि तात । घट जनु घट लिखि दीह बिघात ॥

सूर शक्ति बरनी मुख ओतो । प मूरह मुख जोति न धोती ॥

ननीह जोति जरै रवि देव । सीतल होहि हेम तब पेख ॥

सूरह देवि सोभाइ न कोई । इह देव सो बरसन होई ॥

श्री गति नैनन की रबि ताक । सो गति छिन ताक मुय धाक ॥

१ 'नल-दमन' कथा ० डॉ० रामेश्वरराय प्रबुखान और श्री दीनदराम बुवाल 'काव्य-कथा' संग्रह पृ० ४२

पुस्य नारि जाके चित परा । फिरि भरि जनमन चित सों टरा ॥
 ब्रह्म रूप जग होय समाना । जिहू देवा सो देखि हिराना ॥
 जे रजवारें अन वर, सुनि सो भा वराग ।
 अनल वरन नल वरन लग, वरन लगे होइ आग ॥२६॥

दमयन्ती का सोदय-वर्णन भी इसी जोड़ ताड़ का है—

पदुमिनि चाहि बाढ़ एक परा । कर अगुरिहि अमर रस भरा ॥
 जो परवार मिरतक मुल घालहि । जो उठि टाड़ होइ तत्कालहि ॥
 जनु रिधि अमा छाप कर डारा । कैं न सक सरि दूसर नारो ॥
 इक पघिनी ओ अमर भरा । घों किहि जोग बई अघतरो ॥
 महाराज मुख जोति निकाई । कहि न जाइ देखत बनि आई ॥
 जन असीज पूर्यो ससि ऊवा । तासों ऊँच श्रांति कर दूवा ॥
 यह अचरज कि वह पदुमिनी । महाराज अगलों नहि सुनी ॥
 पहुँच कैंवल तिहूँ पुर धासा । जग ना भौर भव तिहि आसा ॥
 सुनि सीमा सब जगत लोभाना । घों काक कर चढ निदाना ॥
 जगत मरजिया पेम दधि मुषताहल सो तीय ।
 घों को पाव ल तिर को बूढ दे जीय ॥३४॥

दमयन्ती के सोदय का एक और उदाहरण लीजिए—

रूप देह घर जनु श्रोतरा । रहै न अत रूप क कर ॥
 ताकी छवि कहूँ कौन बखान । ओहि कहूँ जो दरस सो जान ॥
 इहि सरप बारी भई, रूप रूप तिहि रूप ।
 रूप रूप कहूँ उदम घह वा मुख रूप अनुप ॥७६॥

सूफी प्रमाख्याना में परमात्म-तत्त्व का आधार आत्म-तत्त्व का आवृष्ट कराने के लिए गुण की स्थिति भी आवश्यक मानी गयी है। इस दृष्टि से नन-अमन में भाटिन गुरु का ही काम करती है। कहा जा चुका है कि नल का परमात्मा के चान रूप का प्रतीक माना गया है और दमयन्ती का परमात्मा के अमर रूप का। अग्नि और सूर्य को चान का एक प्रभ और चंद्र को अमर का प्रतीक माना जाता है। नन और दमयन्ती के लिए इस काव्य में नन प्रतीका का प्रचुर प्रयोग देखा है।

उपयुक्त विवरण की आवश्यकता यहाँ अमना अनुभव हुई क्योंकि नल दमन का अभाव तक सूफिया से प्रभावित काव्य ही माना जाता रहा है। किन्तु हम इसे सूफी प्रमाख्याना परम्परा का ही एक काव्य मानते हैं यद्यपि है यह एक हिन्दू विरचि। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन भी यहाँ अमाय टट्टरता है कि इस परंपरा (सूफी प्रमाख्याना परम्परा) में केवल मुसलमान कवि ही हुए हैं।^१ मूरटास ने इस

१ हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल सम्पादित एवं परिष्कृत संस्करण

काव्य में सूफ़ी विचार धारा और भारतीय विचार धारा का समन्वय किया है। 'यदि यह कहें कि सूफ़ी खोल में भारतीय आत्मा भरी है, तो अनुचित नहीं होगा। यह काव्य बहुत कुछ तो जायसी ही कर चुके थे पर सूरदास ने रही-सही कमी को पूरा कर दिया।'

'नल-दमन' की कथा के लिए द्रष्टव्य भारतीय प्रेमाख्यान काव्य—डॉ० हरिकान्त श्रीवास्तव पृ० ३६८-४०० और नल-दमन' सपा० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल तथा श्री दीनतराम जुयात भूमिका भाग। कथा विवेचन के लिए प्रस्तुत प्रबंध का अध्याय ५ देखिए।

हस-जवाहिर

कवि और कवि—कासिमशाह दरियावादी ने हस-जवाहिर' प्रेमाख्यान की रचना ११४६ हिजरी तदनुसार सवत् १७६३ वि० (१७३६ ई०) में की थी।^१ उस समय दिल्ली के सिंहासन पर मुहम्मदशाह आसीन थे।^२ मुहम्मदशाह का राज्य-काल सन् १७१६-१७४८ ई० के मध्य पड़ता है। इस प्रकार उनके शासन काल में 'हस-जवाहिर' की रचना होन की संगति बठ जाती है। मिथ-ब-घु विनोद (प० १०३५) में मिथ-ब-घुओं ने हस जवाहिर का रचना काल लगभग स० १६००' बताया है। स्पष्ट ही काव्य में प्रस्तुत अत साक्ष्य के अनुसार यह अनुमान गलत है।

'हस-जवाहिर' मसनवी पद्धति पर रचित पुरानी परिपाटी का निष्ठा से अनुसरण करता हुआ एक सूफ़ी प्रेमाख्यानक काव्य है। इस काव्य की एक विशेषता जिसके कारण इसका स्थान सूफ़ी प्रेमाख्याना में अग्रतम है, यह है कि बल्ल-बुखारा, रुमदेश और चीन को घटना-क्षेत्र चुनकर भी कवि ने इस काव्य में बानावरण भारतीय ही रखा है। व्यक्ति और स्थान जरूर अभासी हैं परन्तु काव्य में भारतीय—सो भी पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोक जीवन का ही प्रतिबिम्ब हम मिलता है।

हस-जवाहिर का अभी तक कोई मुद्रणपादित संस्करण उपलब्ध नहीं है। हम राजा रामकृष्ण प्रेस बुक डिपो, लखनऊ से प्रकाशित सन १९५२ में पाँचवी बार मुद्रित संस्करण से ही काम चलाना पड़ा है। यह संस्करण पाठकों की दृष्टि से पर्याप्त दोषपूर्ण है।

इस काव्य के रचयिता कासिमशाह ने अपना थोड़ा-सा जो परिचय दिया है, उसके आधार पर उनका निवास उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले (जब बाराबंकी जिले)

१ 'नल-दमन सपा० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल और श्री दीनतराम जुयात काव्य-कथा ग्रन्थ, प० १४

२ ग्यारह सौ उषास जो प्रायः। तब यह कथा प्रेम कवि साजः।

—हस-जवाहिर ३११

३ मुहम्मदशाह देहली मुल्तानू। कामी गुन बहु कीन बधानू ॥

छात्रे पाठ धीर सरताजः। नाबहिं शीघ्र अपद के राजः ॥

—बही ११/१२

के दरियावाद नामक स्थान म था । इनके पिता का नाम इमानुल्ला था और य हीन या छोटी जाति के थे ।^१ पीर मुहम्मद के पुत्र पीर अशरफ कामिमशाह के गुद थे ।^२ पीर अशरफ सलान नगर के निवासी थे ।^३

कथा—बल्लु बुवाग क शाह बुरहान के एक हजार रानिया म ने किसी के पुत्र न था । पुत्र के अभाव म शाह दुखी रहता था । हजरत स्वाजा सिद्धपीर के आशीर्वाद से उमकी एक बगम को पुनोत्पत्ति हुई । ज्योतिषियो न उमका भाग्य फल बताया कि यह योगी-ब्रह्म धारण करेगा । पत्नी रूप म कोई आएगा और वही इस योगी बनाकर न जाएगा । कुछ समय बाद बुरहान का देहांत हो गया । हम अभी अल्प वयस्क था, अंत मरन समय शाह ने अपन एक सरदार दौलामीर को उसका सरक्षक एवं अभिभावक नियुक्त कर लिया । शाह के मरने ही देश म अख्यवस्था फली दौलामीर के मन म भी पाप जागा । उसने हम और उसकी माता को नजरबंद कर दिया और राज्य पर अधिकार कर लिया । परंतु अपन एक विन्वासी और स्वामिभक्त सेवक मीरबहादुर की सहायता स वे दौलामीर की बंद म निकल भाग । स्वाजा सिद्ध के परामर्शानुसार व रुमदश क शाह मुहम्मद शाह क पास शरण लने पहुँच । शाह के कोई पुत्र न था अंत उसन हस को अपना बेटा मान लिया और बड़े स्नेह स उसका लासन-पालन करने लगा ।

एक गत हम को स्वप्न म एक मुदरी दिखायी वे । वह उसक विरह म जलन लगा । वह मुदरी चीर देश के राजा आनमशाह की बटी जवाहिर थी । आनमशाह की राजधानी ठाकुरग थी । एक दिन जब जवाहिर अपनी पुनवारी म शीडा कर गयी थी तत्र आकाश स एक परी उतरी और चीर उतार कर मरोवर म स्नान करने लगी । जवाहिर न दीखर उमका चीर उठा लिया । परी उसक बस म ह्यो गयी । परी का नाम श था । उमन आजीवन मखी बनकर जवाहिर क पाम रत्न का वचन दिया ।

१ है सखनऊ मन्थ मत्रियारा । दरियावा नगर उत्रियारा ॥

—हम-जवाहिर १९११

×

×

×

दरियावा मीर मम ठाड । इमानुल्ला पिता कर नाई ॥

तहवी मोहि जनम विधि दीन्हा । कामिम नाब जाति कर होना ॥

ग बोच विधि बीह कमोना । ईब समा ब चित रोना ॥

ऊँचे सग ऊच मय भावा । तब मा ऊच जान बधि-पावा ॥

ऊँचा पव प्रम का हाई । तहिया ऊँच भए सब कोई ॥

—करी १९११ १

२ अशरफ पीर जगत्र उत्रियारा । तेजि कारन पाई मन्वारा ।

भयी ओ पीर जगत्र की दावा । तेजि पय परसो उघर भावा ॥

—करी १९११ २

३ मगर सलान ठान महि केरा । चट्टु निजि जग मा है उत्रियारा ॥

जमे धान जवन चट्टु पाणी । तय धर अशरफ दा जग दादी ॥

—करी १९११ ३

जवाहिर के पिता ने कोऊ नगर के सुनतान भोलाशाह के पुत्र दिनौर के साथ उसका विवाह-सम्बन्ध करना निश्चय किया। परंतु शब्द परी ने पता लगाया कि दिनौर तो कुरूप और लम्पट है। जवाहिर के रूप-गुण के सम्बन्ध वर दूढ़ने के लिए 'शब्द परी पक्षी रूप में उड़ चली।

सप्त द्वीपा में घूमती हुई वह रूपश्रेण पहुँची। वहाँ हम का उसने सब प्रकार से जवाहिर के योग्य वर पाया। हम ने 'शब्द परी को अपना गुण मान लिया। 'शब्द उड़कर जवाहिर के पास गयी और हम के प्रति उसके हृदय में प्रेम उत्पन्न किया।

'शब्द को लौटने में विनम्र हाने लगा, तो हंस का मन निराश हो चला। एक दिन वह मन बहाने के लिए अपने माधिया के साथ शिवार चलने गया। उनमें बिजुकर और धक्कर वह एक शिला पर गी गया। तभी कुछ परियों आयी और कौतुकवश उसे दूल्हे की पोशाक पहनाकर चीन देश ले चली। जवाहिर को क्याहने के लिए दिनौर की बारात द्वाराचार का जा नहीं थी। परियों ने माया से आधी चना दी। उस धुंध में उन्होंने दिनौर को तो लाकर वन में बठा दिया और हम को उसकी जगह हाथी पर बठा दिया। 'शब्द' परी ने हंस को पहचान लिया और जवाहिर को यह सुमवाद सुनाया। वर को सबने सराहा। विवाह सम्पन्न हुआ। दोनों न अगूटिया की बदलीबल की। रान का वे पाम-पाम सा गय। तभी परियों ने हंस का उठाकर वन में शिला पर ला सुलाया और उसकी जगह दिनौर का जवाहिर की बगल में सुना आया।

प्रातः काल उठने पर जवाहिर ने दिनौर को अपने पादुकों में जो दम्बा तो आग-बवूना हा गयी। उसने उसे अपमानित करके निकाल दिया। दिनौर ने बदला लेने की ठान ली।

शब्द परी उठकर हंस के पास पहुँच गयी और उसमें जवाहिर की विरहाकुल दशा का वर्णन किया। हम उसके माग-दशन में जोगी-वेश धारणकर निकल पडा। माग की अनेक कठिनाइया सहन हुए वह चान दश पहुँचा। आनमशाह ने उसकी अगवानी की। हम-जवाहिर का पुनर्मिलन हुआ। एक वर्ष तक समुराल में रहने के बाद हंस जवाहिर तथा शब्द परी आदि का लेकर रूम देश के लिए चल पया।

माग में वे कोऊनगर के पास से गुजरे। दिनौर के बहने से जोगी वीरनाथ ने अपने कुछ चेला की भेजकर जवाहिर को जहाज से उठवा मँगाया। दिनौर वीरनाथ तथा उसके चेला ने जवाहिर पर कुदृष्टि डालनी चाही, तो उस सती स्त्री की एक दृष्टि से वे सब पत्थर बन गये।

उधर हम किगरी बजाता कोऊनगर की गलियों में घूम रहा था और जवाहिर को दूर रहा था। भोलाशाह की बेटी नूरमाह उस पर आसक्त हो गयी। 'शब्द' परी ने जवाहिर का पता लगा लिया। भोलाशाह ने अपनी बेटी नूरमाह का विवाह हम से कर दिया। जवाहिर और नूरमाह को लेकर हम रूम देश पहुँचा।

हस की माता ने एक दिन उमसे कहा कि तुम्हें अपने पिता के राज्य को हस्तगत करने का प्रयत्न करना चाहिए। रुमदश के राजा ने हस के साथ एक बड़ी सेना भेज दी। हस बल्ल बखारा पहुँचा। युद्ध में विश्वासघाती दौलामीर मारा गया। हस ने अपने पिता का राजपाठ सभाला। कुछ समय तक सब कुछ शांति से बीता।

परन्तु दौलामीर की एक रखल के बेटे कमरखान ने एक दिन हस को धोखे से छुरी भेक दी और अपने पिता की हत्या का बत्ला ले लिया। हस की मृत्यु के समाचार से सबत्र कुहराम मच गया। शब्द परी ने अपनी आँसू निकाल डाली। जवाहिर जोर नूरमाह अपन पति के शव के साथ चिता पर सती हो गयी। मत्रियो ने जवाहिर के छोटे-से पुत्र को सिंहासन पर बठा दिया। बड़े होकर हस के बेटे ने अपने पिता की कीर्ति को खूब बढ़ाया।

इन्द्रावती

कवि— इन्द्रावती जोर अनुराग बाँसुरी के रचयिता कवि नूर मुहम्मद सवरहद (शाहगज जिला जीनपुर) के रहने वाले थे।^१ परन्तु जीवन के अन्तिम दिना में भाग्य (फूलपुर जिला आजमगढ़) रहने लग गये। यहीं उनकी समुलाल थी। नूर मुहम्मद फारसा में कामयाब उपनाम से कविता करते थे। उनकी मृत्यु १७८० ई० के आसपास हुई। यह बड़े मुसलमान कुशल कवि और विद्वान थे।

कविता— कवि ने इन्द्रावती की रचना हिजरी सन ११५७ या स० १८०१ (१७४४ ई०) में की थी।^२ यह उनकी आरम्भिक रचना जान पड़ती है जसा कवि ने स्वयं स्वीकार किया है। इस काव्य को लिखते समय कवि अभी तरुण ही था।^३ उस समय दिल्ली में मुहम्मद शाह का शासन था।^४ ऐसा लगता है कि इन्द्रावती पूर्वाञ्च और इन्द्रावती उत्तराञ्च में लिखी गई कविता में कुछ अंतर दिया। पूर्वाञ्च तो ११५७ हि० में लिखा ही गया पर उत्तराञ्च कुछ बाद में लिखा गया। कदाचित् उत्तराञ्च का लिखने समय कवि बढावस्था में पहुँच गया था।

१ कवि प्रस्थान की-ह जटि ठाँऊ। सो वह ठाँऊ सवरहद नाऊ।

—इन्द्रावती (मन्त्रि) प० २

२ अनुराग बाँसुरी सम्पादक आचाय चन्द्रबली पाण्डेय भूमिका भाग प ६७

३ सन् इम्पारह सो रहेउ सत्तावन उपपठह।

कहे लपउ पोधी तव पाय तपी कर बाह ॥

—इन्द्रावती (मन्त्रि) प० ४ दोहा १०

४ है कवि सम नई तरनाई। छूट न घबहा कवि सरिकाई।

बिनवत कविजन कहं कर जारी। है थोरी बुधि पू किय मोरी ॥

हो मैं सरिकाई को चेला। कहीं न पोधी खलहू छला ॥

—वही प० ४ छंद १

५ करी महम्मद शाह बघामू। है सूरज दिल्ली मुलतानू।

सब काहू पर दाया करई। धरम सहित मुलतानी करई ॥

—वही प० ४

अभी तक 'इद्रावती' का पूर्वाद्ध ही प्रकाशित हो सका है। इसका संपादन बाबू श्यामसुंदरदास जी ने किया है और प्रकाशन १९०६ ई० में नागरी प्रचारिणी सभा काशी ने। अब यह प्रति भी किसी किसी पुस्तकालय में ही उपलब्ध है। मुद्रित प्रति के अंत में कवि की यह उक्ति है—

भएउ सपूरन आधो कथा, मानहुँ ज्ञान सिंधु में मया ।
तीन सहस चौपाइय भई । देखु आइ फुलवारिय नई ॥
पुनि आगे जो सुख सों रहऊ । तीन सहस चौपाइय कहऊ ॥
हों अबहों थोरे दिन केरा । बात बहुत दिनकर में हेरा ॥
विद्या ज्ञान बहुत जेहि होई । अय छिपाने बूझ सोई ॥

(पृष्ठ १७६)

इद्रावती का उत्तराद्ध आज तक प्रकाशित नहीं हो पाया, यह बड़े खेद की बात है। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी में उत्तराद्ध भाग की पाण्डुलिपि सुरक्षित है। उस पर पुस्तक का रचना काल स० १७६० वि० लिखा हुआ है, (कवि द्वारा नहीं)। परंतु पूर्वाद्ध यदि १७४४ ई० का लिखा है तो उत्तराद्ध १७६० वि० या १७०३ ई० का लिखा कैसे हो सकता है? अवश्य यहाँ भूल हुई है। यदि यह विक्रमी के बजाय ईस्वी सन होता, तो विश्वसनीय हो सकता था, क्योंकि कवि ने १७६४ ई० (११७८ हिजरी) में 'अनुराग-बासुरी' की रचना की थी। संभव है उसके कुछ ही पंक्त 'इद्रावती' के उत्तराद्ध को उसने समाप्त किया हो। 'इद्रावती' की सफलता से उत्साहित होकर कवि ने दो अन्य काव्य 'नल दमन' और 'अनुराग बासुरी लिखे' जिनमें से 'नल दमन' तो अभी तक अप्राप्त है और 'अनुराग बासुरी' प्रकाशित हो चुकी है।

इद्रावती (उत्तराद्ध) की जो पाण्डुलिपि सभा के पुस्तकालय में सुरक्षित है उसका लिपि-काल १९६० वि० है और लिपिकार हैं मिर्जापुर के श्री कादिरबख्श। 'इद्रावती' के इस खण्ड के अंत में कवि ने इतना ही लिखा है—

भएउ सपूरन पोधी, पूजो मन की आस ।

पड़े सोग मेघावी जब लगि महि आकास ॥

'इद्रावती' की रचना करके नूर मुहम्मद को बड़ा आत्म-तोष प्राप्त हुआ था। एक सफल कृति की समाप्ति के बाद यह आनंद स्वाभाविक था। 'अनुराग बासुरी' में वे लिखते हैं—

भाखत हों प जीध सजाई । इद्रावति सम कहा न जाई ॥

मन के बीच धरय जो रहा । यहै गरय बीच मे कहा ॥

१ आगे हिंदी समुद्र तिराना । भाषा 'इद्रावति' जो जाना ।

पर कहा 'नलदमन' कहानी । कीन यनाव दूसरि बानी ॥

रहेउ न मुक्ता हस्त मसारा । ल सय इन्द्रावति पर झारा ॥
लिण्डु भ्रपार प्रय वह अहे । प्रय काहें का दूसर कहे ॥

×

×

×

वह जो छतिस लड' उठाएउ । कौन कौन नहि चित्र बनाएउ ॥
विद्या बहुत होइ जहि पूत सोइ ।
न सो कहा समूझ, तेहि सय होइ ॥ छंद ५ ॥

'इन्द्रावती' म कवि न पाँच चौपादयो क आल एन पोहा रखन क प्रम का निर्वाह किया है । इन्द्रावती म पात्रो और स्थाना क जो नाम रख गय हैं व आध्यात्मिक अय-परक हैं ।

कथा (पूर्वार्द्ध)—कानिजर क राजा भूपति का एकमात्र मतान थी एक राजकुवर जिनका नाम जाना (गयानी) था । राजकुवर का विवाह मुदर नाम की लडकी म कर लिया गया था । भूनिराय की मृत्यु हान पर जानी राजा बना । यह योग्य शासक था । एक रात उमन स्वप्न म एक दपण देला । दपण निमत था उमन एक मुन्नी नारी का प्रतिबिम्ब दिखायो लिया । दूसरी रात फिर वही सपना आया । अन्तर इनना ही था कि पहले स्वप्न म उस नारी के मुख पर केश की लट्टे नही बितरि थी और दूसर स्वप्न म बिगरी हुई थी । राजकुवर स्वप्न दक्षित उस नारी पर मोहित हो गया । राज काज स उतका मत उचट गया । राजा क मन्त्री बुद्धसेन ने जो मनपुर का रहन वाता था कई चित्रकागो स मुदरी स्थियो क चित्र बनवाय पर उनम स एक भी स्त्री उम स्वप्न मुन्नी क समान न थी । उहीं शिरो राजा की पुत्रवारी म एक तपस्वी का आगमन हुआ । राजा न उनक चरणा पर गिरकर अपनी माग्यया कही । तपस्वी न राजा जानी को बनाया चितरी स्वप्न मुन्नी आगमपुर नगर क रागा जगति की पुत्री रतनजोत इ द्रावती है । इन्द्रावती क जन्म की कथा बतात हुए तपस्वी न कहा— राजा जगति क कोई मतान न थी इससे वे दुःखी रहन थ । उ हनि शिवजी की आराधना की । शिव न कहा कि तरे भाग्य म पुत्र नहा है । राजा न कथा हा मांगी । शिवजी क कहन स राजा न रात को एक रत्न माँ दर म रख दिया । पावती न उसी रतनजोत क रूप म अवतार लिया—रत्न की जगह सबर एक कथा मिसी । पावती न राजा को स्वप्न म

१ 'इन्द्रावती' (पूर्वार्द्ध भा ५) के मे १८ छंद है—जम स्वप्न बोरी काज मानिन कुमवारी बीच कहानी पात्री दर्शन गुवा नहान छंद मणकर, मानिक विरह चरणा कोवर मोठी धोर व्याह छंद ।

उत्तरार्द्ध (पश्चिम) के १८ छंद है—मेखिया रिनु, बाररामा पतीरो हुंवराम रामा कनिशारा वामन वपाह (व्याह) शिभावन सेवम्बर (रवम्बर) गुधरेवम (गुधरेवम) कोहनी वरम वरम कपवरी राव धीर वरम छंद ।

इन प्रकार दोनों भागों म कुल ३६ छंद (प्रवसाध्याय) है ।

काया का नाम इद्रावती रखन को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि समुद्र म एक मोती डाल दो, जो उस मोती को निकाल सकेगा, वही इस काया का धर होगा। राजा न उसका नाम रखनजोत इद्रावती रखा और सागर म एक मोती भी डाल दिया। तपस्वी ने आग बताया कि आगमपुर तक बिना अगुआ के नहीं पहुँचा जा सकता, क्योंकि उसके माग म सात भयवर वन पड़ते हैं और सात ही अथाह समुद्र। यह सुनकर राजा जानी न तपस्वी के चरणों पर फिर माया टेका और कहा कि मेरी पीडा हरिए। तपस्वी ने राजा का दब निश्चय जानकर उसे माया रहित कर दिया। माया रहित होने ही राजा जानी को आगमपुर की वाट दीखन लगी। राजा ने जोगी का वश धारण कर लिया। उसके आठ मित्र भी साथ चले, मंत्री बुद्धसेन भी।

कानिजर स चलकर राजा न पहला पड़ाव दहपुर म किया। उसके बाद रास्ते म सात तरह के सात वन पड़े। उनको पारकर वह दहन्तपुर म आया। बुद्धसेन क अतिरिक्त अय सब साधियों को उसने वही रह जाने दिया। एक बायापति नामक बनजारा भी आगमपुर जाना चाहता था। वह भी कुवर जानी और बुद्धसेन के साथ नौका म चढ़ गया। समुद्र म ऊँची लहरें उठन लगी, परन्तु वेवट ने धय से नौका को खकर किनारे लगा दिया। समुद्र पार करके राजा जानी जीवपुर (जिउपुर) म रहने लगा। वहाँ के बाद राजा जीवतपुर म आया। वहाँ उसे मंत्री बुद्धसेन को भी छोड़ना पड़ा। वहाँ से राजा अकेला ही हृदय म इद्रावती की प्रीति का सम्बल लकर चला। चलते चलते वह आगमपुर के निकट आ गया। वहाँ आकर उसने रानी को मन फुलवारी म डेरा डाला।

इद्रावती के हृदय म भी काम का प्राबल्य होने लगा। न जाने कितने राजकुमार सागर स मोती निकालने आय, परन्तु वे डूब मरे, इसका भी दुःख उसे था। अपनी अंतरंग सखी मर्मा की सलाह पर उसने महादेव जी और पार्वती जी स विनय की—

सबकर फूल चढ़ा पिय पागा। फूल हमार डार है सागा ॥^१

रात को इद्रावती ने दो स्वप्न दखे जिनका अय सखियों न यह सगाया कि चार-पाँच दिन मे ही उसे अपना प्रिय मिलेगा।

सुचेता मालिन स यह जानकर कि एक सुन्दर युवा योगी उसके प्रेम मे पागल हुआ फुलवारी म रुका है इद्रावती अपनी सखिया के साथ फुलवारी मे गयी। राजा जानी इद्रावती क सुन्दर मुख को देखन ही मूर्च्छित हो गया। इद्रावती की सखियों न एक कागज पर यह लिखकर उसके पास रख दिया कि तुम्हारा योग अभी अधूरा है क्योंकि इद्रावती के देखते ही तुम मूर्च्छित हो गये। राजा जानी को जब होश हुआ तब वह बहुत पछताया। संयोग मे उसका मित्र और मंत्री बुद्धसेन उसे दूता हुआ

वही आ गया। मित्र को पाकर राजा को ढाड़म बधा। राजा ने मुचेना मालिन के हाथ इन्द्रावती का प्रेम-यत्र भजा इन्द्रावती ने प्रति स'दश भजा और राजा से सागर से मोती निकालकर प्रण पूरा करने का कहा। राजा ज्ञानी म्न्ह-वृण के तले जा बठा। राजा जगपति ने उम मोती निगानन की आणा दी। राजा ज्ञानी माती निका सन पना, पर माग म ही राजा दुजन ने उम ब'ष बना लिया और उसकी राना मोहिनी उस पर अपना माया-जाल फलान लगी। ज्ञानी ने एक तोन के द्वारा इन्द्रावती के पाम अपन ब'नी हो जा का समाचार भजा। इन्द्रावती ने अपन पिता के एक मित्र कृपाराय की स'पायना सन का पराम'ग दिया। बुद्धमन कृपाराय के पाम गया और उनको महायता करने के लिए तयार किया। कृपाराय ने दुजन पर चढ़ाई की और उस युद्ध में मार डाला। कृपाराय ने ज्ञानी को सागर का वह म्यान भी लिया दिया जहाँ मोती था। परंतु इसी बीच जगपतिराय को उमके क्षत्रियत्व पर म' हो गया और उन्होंने ज्ञानी को अपन कुन शीन का प्रमाण दन तक मोती न निरानने का आदेश लिया। सौभाग्य में उसी समय मुन्नाय गोमाद आ गय, उ'हान जगपति को ज्ञानी का वास्तविक परिचय लिया और मोती निकान पाम का आशीर्वा' भी राजा ज्ञानी को लिया।

इन्द्रावती की सखियाँ उसके विरह-दु:ख को कम करने के लिए उम मधुकर मालती तथा मानिकचन्द्र-हीरा की प्रम-ब'याएँ सुनाती रही किन्तु उन क'याआ को सुनकर इन्द्रावती का विरह और ब' गया।

राजा ज्ञानी मोती निकानन बना ता कई प्राकृतिक बाधाएँ आयी भँवर में नौका तक डूब गयी। मोती की रथिका समुद्र की बटी कमला ने इन्द्रावती का रूप धरकर उमके प्रम की सच्चाई की परीक्षा ली। उम प्रम में द' पाकर उसने मोती पाने का आशीर्वा' दिया। राजा ज्ञानी ने मरजिया बतकर हृदयकी लगाई और माती निकाल लिया। आगमपुर में खुशी की लहर दौड़ गयी। जगपति ने इन्द्रावती का विवाह राजा ज्ञानी से कर लिया। लोना के विरह का अंत हुआ।

(इन्द्रावती' के मद्रित पूर्वाद्ध की क'या यहाँ समाप्त होती है।)

क'या (उत्तराद्ध)—इधर तो राजा ज्ञानी इन्द्रावती के साथ भोग विलास में रत था उधर उमकी पहली रानी मु'दर कालिञ्जर में विरह व्यथा में जल रही थी। राजा के जान के समय वह गभवती थी। उसके एक पुत्र हुआ जिमका नाम पहिलो ने कारनराय रखा। विभिन्न ऋतुओं में राना का विरह ब'ता ही जाता था। सखियाँ तरह-तरह की क'याएँ ब'हकर उसका जी ब'हलाने की चेष्टा करतीं परंतु उसका मन किसी प्रकार न ब'हलता। प्रेम क'याआ का सुनकर अपनी मयोगावस्था की स्मृति उसे हा आती और उमका पीडा और बढ़ जाती। मलिया ने उमको हसरज रूपमती की कहानी भी सुनाया जिममें हमराज और रूपमती के प्रेम का एक तोने और गणिका रम्भा के माध्यम में पनपने दोनो का मिलन तथा विवाह होन हसरज की पहली

परन्तु चंद्रवदन द्वारा सुखदेव मिश्र को दूत बनाकर हसराम के पास अपना विरह-सदेश भेजने एवं हसराम का शर्मती को लेकर आने का वक्तव्य था। (इस प्रासंगिक कथा को इन्द्रावती उत्तराद्ध में अधिक विस्तार मिल गया है।) इस कथा का सुनकर रानी 'सुन्दर' को भी दूत द्वारा अपना विरह-सदेश राजा नानी तक भेजने का ध्यान आया। उसने पवन को अपना दूत बनाकर राजा के पास सन्देश भेजा।

इधर एक और घटना घटी। कात्तिल की एक दुष्टा स्त्री 'लोभ न रानी सुन्दर' के पुत्र कीरतराय पर टाना कर दिया। रानी उस स्त्री को निकाल दिया। उसने जतपुर जाकर वहाँ के राजा कामसेन से 'सुन्दर' के सीस की प्रशंसा की। कामसेन ने मोहिनी नामक मालिन को कुट्टिनी बनाकर सुन्दर के पास भेजा। मोहिनी ने अपने को आगमपुर की रहनेवाली बतलाकर सुन्दर को भ्रमनात्रा चण्डा पर सुन्दर उमके जाने में न फँसी। उसने मार पीटकर जोगिन वेशधारी उस कुट्टिनी को घर से निकलवा दिया। कुपित होकर कामसेन ने कात्तिल पर आक्रमण कर दिया। सुन्दर ने बड़ी वारता से सत्य मग्रह कर कामसेन का सामना किया। युद्ध में कामसेन मारा गया।

उधर, पवन द्वारा 'सुन्दर' का विरह सन्देश पाकर राजा नानी को उमकी याद हो आयी। राजा जगपति से उसने विदा कर देने की हठ की। जगपति ने बहुत धन द्रव्य दास दासी देकर कन्या विना कर दी। समुद्री मार्ग में समुद्र की कन्या कमला ने इन्द्रावती का रूप धरकर नानी के प्रेम की परीक्षा ली और उमम उम दह पाया। राजा नानी इन्द्रावती के साथ कात्तिल लौट आया। सुन्दर अपने पति को पुनः पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुई। राजा अपनी दाना रानियों के साथ सुखपूर्वक रहने लगा। एक दिन राजा आवेट के लिए गया था। एक वध के नाचे विश्राम करते हुए उसने सुजान नामक तोते से वही के राजकुमार वल्लभ और राजकुमारी प्रेमा की प्रेम-कथा सुनी जिसे सुनकर उसे सत्सार से धराग्य हो गया। कुछ समय बाद नानी की मृत्यु हो गई। उसके शव का लेकर उसकी दाना रानियाँ सुन्दर और इन्द्रावती चिता पर सती हो गयीं।

अनुराग-वासुरी

कति—नूर मुहम्मद वृत्त अनुराग वासुरी एक धम-कथा या उपमिति कथा है। इसकी कथा में आध्यात्मिक संकेत पिरोये गये हैं, अतः यह एक प्रकार की 'परोक्षित' या 'गर्भोक्ति' है। अनुराग वासुरी की रचना नूर मुहम्मद ने सन्

११७८ हिजरी अर्थात् मन् १७८४ ई० म की । यह पन्ने कहा जा चुका है कि नूर मुहम्मद कट्टर मुसलमान थे । अपन काव्य के माध्यम म उहान इस्लाम के दीन क प्रचार करना उद्देश्य बनाया था । उनकी धन पवित्रता म यह स्पष्ट है—

मुनत जो यह शब्द मनोहर, होत अचेत कृत्न मुरलीधर ।
यह महम्मदी जन की घोरी जामों कद नयात घोली ॥
बहुत देवता की चित हर बटू मूरति घोषो होइ पर ।
बहुत देवहरा डाहि गिराय सल वाद की रीति मिटाव ॥^१

और—

जानत है वह शिरजतहारा जो किछ है मन मरम हमारा ।
हिंदू मग पर पाँव न राखउ का जो बहुत हिन्दी नाखउ ॥
मन इमलाम मतान क मानउ दीन नैवरी करण ताउ ॥^२

कवि की दृष्टि म काव्य म जान पर नहा इस्लाम पर । है । असम अनुराण-बाँसुरी का निम्नकोच धम-कथा कहा जा जाता है । का माव तावन का अधिक स्थान नहीं मित पाया है किन्तु जितना भी मिला है, उसकी छटा निगाही है । पूर काव्य म श्रृंगार—सो की प्रियम्भ श्रृंगार का निम्नण है । सनी पात्र वियोग की आग म जवन है और मयाग लिए जाताति है ।

अनुराण-बाँसुरी म तीन बीषाया अथवा छ अर्द्धांतिया क बा एक बरव छद्म रगा गया है । इस प्रकार छद्म प्रयाग का दृष्टि स भी अनुराण-बाँसुरी का स्थान मूफ़ी प्रमाख्यानो म निरता । असम ससृष्टनिष्ठ शब्दों का प्रय न किया गया है ।

कथा—मनपुत्रवारी म मुशाभित एक नगर थ—मूरतिपुर । उसका राजा था—जाय । जाय का पुत्र था अत करण । अत करण क सान लगाटिया साधा थ जिनके नाम थ- बुद्धि चित्त और अहकार । तीव क भी दा मित थ—सकल्प और विवल्प । अत करण की मूरता पत्नी का नाम था महा माहिनी । राजकुमार अत करण न विद्यापुर स विद्याध्ययन करन लौट हुए अरण नामक ब्राह्मण क गन म एक मर्णमाता दया ता उस अपन एक सहाठी पात वाद स प्राप्त हुई थी । वात यह थी कि मर्णमाता मन्हनगर क राजा दशनराय की पुत्री सबमगता की थी । सबमगता न वातस्वाद की जिभी राजा क गुण पर प्रसन्न

१ यह शब्द स अहतर । फर मुनाएउ बचन मनोहर ॥

ता मन क अमिनाय बनावा । जामों फर सुवचन मुदावा ।

करत शिवित चित्त ल राग गुनाइ ।

धी अनुराण-बाँसुरी मछर बजाइ ॥ —अनुराण-बाँसुरी २

२ वही छ ७

३ वही छ १

होकर उसे अपनी माला पुरस्कार स्वरूप दे डाली थी। श्रवण को वह माला अच्छी लगी, इसलिए नातस्वाद न उसका दे दिया। श्रवण न नातस्वाद स जसा सुना था, 'सवमगला' के रूप और गुण की प्रशंसा की। अतः करण का मन डोल गया, वह 'सवमगला' की प्रेमार्थिन में जलन लगा। अपनी पत्नी महामाहिनी के प्रति वह उदासीन रहने लगा। जीव' को यह पता चला। 'अतः करण का भेद लेने के लिए उमन वृत्त नामक भेदिय को नियुक्त किया। सबक के रूप में अतः करण के साथ रहकर 'वृत्त' न उसके हृदय का गोपन रहस्य जान लिया और 'जीव' को बतला दिया। जीव ने पुनः को विरत करना चाहा, क्योंकि 'सवमगला' की प्राप्ति टेढ़ी खीर थी। बुद्धि' न ता अतः करण को साहस दिलाया, 'सकल्प' ने उसका उत्साह को ललकारा पर विकल्प न वित्त को भ्रमित करना चाहा। किंतु अतः करण ने उस पर ध्यान नहीं दिया और 'सवमगला' की खोज में निकल पड़ा।

तभी नगर में मनेह गुरु नामक बरागी आ गया। अतः करण ने उनसे 'सवमगला' का पूरा परिचय पालिया और गुरु की शरण में चला गया। गुरु ने अपना उपदेशी सुग्गा उसके साथ कर दिया। वाम माग का छोड़ देदिण माग ग्रहण करता हुआ अतः करण उपस्थी सुग्गा के पथ निर्देशन में चलता रहा। अतः कष्ट सहते सहते वह इन्द्रियपुर आया। वहाँ के राजा मायावी अघट्ट न उस फँसाना चाहा और कामुकी मनभावनी नामक दारा को उस बन्धीभूत करन के लिए भेजा। पर राजकुमार 'अतः करण' पर उसके माह जाल का कोई प्रभाव न पड़ा वह सनेहनगर की ओर चला ही गया। अतः वह सनेहनगर पहुँच ही गया। उपस्थी सुग्गा न उस ध्यान श्ववरा में ठहरा दिया। अतः करण' वहीं रहकर सवमगला का ध्यान करन लगा।

उधर सवमगला ने एक के बाद एक दो स्वप्न देखे। एक में उसने एक भीरु का अपने चारों ओर मडराते देखा और दूसरे में एक योगी को अपनी पूजा करते तथा कृपा-कटाक्ष की याचना करते हुए देखा। सखियों ने इन सपना का फल यह बताया कि कोई पुरुष उसकी याग साधना में लगा है। 'सवमगला' के हृदय में भी प्रेम की पीर जाग उठी। उपयुक्त अवसर देकर उपस्थी सुग्गा सवमगला के पास पहुँचा। उमने अतः करण का रूप गुण और उसके प्रति उसके प्रेम का वणन कर गुनाया। सवमगला ने अपनी सखी चित्रबिनी के हाथ अपना चित्र अतः करण के पास भेजा और उमका चित्र चित्रबिनी के द्वारा खिचवा मँगाया। चित्र दर्शन से पुष्ट हुआ प्रेम पत्र व्यवहार के माध्यम से पल्लवित होने लगा। इसके बाद दानी में प्रत्येक दर्शन की कामना आती। अतः करण' सवमगला के महल की ओर चला। मद्यम से सवमगला ने भी झरोखे से पाकर अपना दीदार लिया। उसका दर्शन करन ही अतः करण मूर्च्छित हो गया। उपदेशी सुग्गा से यह जानकर सि यही 'सका प्रेमी है सवमगला' ने अपने प्रेम की प्रतीक—अपने गले की माला राजकुमार के पाग भिजा दी।

उपर मूरतिपुर में जब जीव को अपने पुत्र अतकरण का बहुत प्यना तक कोई समाचार न मिला तब उसने दशनराय का एक पत्र लिखकर 'सवमगला' के प्रति अतकरण के प्रेम की सूचना दे दी और उस पर वृषा-दृष्टि रखने के लिए भी लिख दिया। सनेहगुप्त भी इस बात तीययात्रा में लौटकर अपने नगर में लौट आए। उन्होंने भी दशनराय से अतकरण का कुन भील बखाना। उपदेशी मुन्ना ने तो पहले से ही भीतर-बाहर रंग जमा रखा था। उसने भी सब बातों की सान्धी भरी। दशनराय ने प्रमत्त हाकर सवमगला का विवाह अतकरण से कर दिया। अतकरण सवमगला का विदा कराकर अपने घर आ गया। उस आया देख सारा मूरतिपुर नगर आनन्द और उत्साह में भर उठा।

यूसुफ-जुलेखा

कवि—यूसुफ-जुलेखा जीपक मूफ़ी प्रेमसाह्यान के रचयिता शख निमार का जन्म सन १७२२ ई० में हुआ था। ये अवध और रुदीना के मध्य में स्थित गाँव शेखपुरा के रहने वाले थे। यह गाँव फत्ताबाद-मन्वन्तु राठ पर फत्ताबाद से १०वें मील दक्षिण में है। आजकल इस गाँव को शखपुरा जाकर कहा जाता है और यह फत्ताबाद जिला में पड़ता है। शखपुरा का मसनवी के रचयिता मौजाना जलालुद्दीन मसी के बशज शख हबीबुल्लाह ने वादाहा अकबर के राज-दरबार में बनाया था। उनके लच्छ का नाम शख मुहम्मद था। शख मुहम्मद के लच्छे शेख गुलाम मुहम्मद थे। यहाँ शख निमार के पिता थे। शख निमार का बाम्बकिव नाम गुलाम अकबर था।

शेख निमार ने अपने को हिन्दी फारसी तुर्की संस्कृत और अरबी भाषाओं

१ अवध शहीदी के मसजिदा। शेखपुरा प्रति मुन्तर गाथा ॥

—मिहूर निवार —देखिए मूफ़ी काव्य सङ्ग्रह पृ १७६

२ शखपुरा प्रति गाँव मुतावा। शख निमार जनम तह यावा ॥

चारिठ धोर सपन भवराई। प्रथम प्रयाह धू निमि छा ॥

शख हवाबस्ताह सोहाए। शखपुरा त्रिन्द घाय बगाए ॥

पातशःह अकबर मुसताना। तहि के रात्रकर जगत बखाना ॥

भवध दैन मूवा हाँ छाए। वास्र वरम लहि रह सोहाए ॥

तहि के शख मुहम्मद बारा। रूपवत भू पर भवारा ॥

ता मुन मुताम महम्मद नाऊ। मो हम निवा सो टाकर गाऊ ॥

×

×

×

बग जजानदीन के शख हबीबुल्लाह।

अ हक प्रमनश जगत मह प्रथम निमम प्रयाह ॥

—यूसुफ-जनका धोर भी देखिए 'जादगी के परवर्ती हिन्दी मूफ़ी कवि धोर काव्य'

को भरना शकल पृ १७७

मे लिये सात ग्रंथों का रचयिता कहा है।^१ अपने समय में कासिमशाह के हस्त जवाहिर' और इशाअल्ला खाँ के ग्रंथों के प्रचलित होने का उल्लेख भी उन्होंने किया है परंतु प्रेम रस की इन काल्पनिक कथाओं की जगह सच्ची कथा वर्णित करने की इच्छा से उन्होंने यूसुफ-जुलखा का प्रणयन किया।^२ उसकी रचना का एक कारण उन्होंने और भी लिखा है। उनकी वद्धावस्था में उनके बाईस वर्षीय प्यारे पुत्र लतीफ का दहात हो गया। उस भर्मांतक चाट का भुलाने के लिए, और यूसुफ के पिता से यूसुफ के विद्युद्घन की घटना में इसका कुछ माम्य देखकर, शोक निवारण न इस कथानक पर काव्य रचना की।

कृति—यूसुफ-जुलखा की रचना कवि ने अपनी वद्धावस्था में की। उस समय उनकी आयु सत्तावन वर्ष की थी। ग्रंथ का रचना काल हिजरी सन १२०५ (विजयी संवत् १८४७ या शक संवत् १७१२ या ई० सन् १७६०) है। इसकी रचना उन्होंने सात दिन में पूरी कर ली थी।^३ ऐसा प्रसिद्ध है कि इस ग्रंथ की रचना निवारण न स० १८४७ क पीप मास की पूर्णिमा को आरम्भ की थी।^४ ग्रंथ रचना के समय दिल्ली के सिंहासन पर शाहजालम और सख्तनऊ क नवाब की मद्दी पर आसफउद्दौला विराजमान थे।^५ यह उनकी अंतिम कृति है। इसका पूर्व विभिन्न भाषाओं में वे सात

१ सत गरष भनूप गृहाए । हिन्दी भी फारसी सोहाए ॥
ससकिरत तुरकी मन भाए । सभ प्रेमरस भरे सोहाए ॥
मेहर निगार के कहेउ कजानो । रस मनोज रस कविन बखानो ॥
धो दीवान मसनवी भाछा । सजादी नरस्त फारसी राखा ॥
ससकिरत मुर्की भी साजी । और फारसी नसरतव जो साजी ॥
—शय निसार कृत मेहर निगार मसनवी

२ हुन-जवाहिर प्रेम कहानी । कहा मसनवी भविष्ठ बानी ।
इहा नहे जहाँ सह भद्र । धी सब कथा जहाँ सह बद्र ॥
मूठ ज्ञान सम तिन मन भाया । भव यह सौच कथा चित लागी ॥
—यूसुफ जलेखा

३ जिरी सन बारह स पाँचा । बरनेउ पेमकथा यह साचा ॥
भट्टारह स सँतालीसा । सवन् विजम सेन भरेसा ॥
सतरह स बारह पुनि साचा । सतरह स नव ईसा वा ॥
सत्तावन ब्रह बीते भाऊ । सब उपजेउ यह कथा केँ वाऊ ॥
सात दिवस मह कौह समागत । दुरमति नाम रहेउ मो सम्मत ॥
—यूसुफ-जलेखा

४ देखिए—सूफी काव्य-संग्रह पृ० १७८
५ शासिमशाह हिंदू मूलताना । देखि के राज यह कथा बखाना ॥
इहली राज करे ऊ नीता । उमशवन तह कौह धनीता ॥
× × ×
बहु तिस अष स-ध सब छावा । भवध देस कह दइव बखावा ॥
येहिमा खान भासफहीला । जामु सहाय रहै नित मोना ॥
—यूसुफ-जुलैखा

द्वय विद्य युक्त म - महर्गनिगार (मगनरी घागरानर काव्य) रम मनाज (शृंगर रम का गति दाय) शारा अगनर जोहर (फारमी मगनरी) मारी (सगीत दाय) तम्भ (फारमी मद्य दाय) तगाव (मद्य-अय) । नरमतिगार प्रत तगनऊ म नरका विद्या एक द्वाय ता फार म प्र य मरतू नदाय भी प्रगतिन हुआ है । उमी ग दना बनता है वि लय विगार शका काव्यगत उपाय का अती नाम सुराम अरुप पा ।

मूफा तुलना का फारमी विधि में विहित एक हस्तविहित प्रति वि तु म्नायी मरुदमा प्रयाग म मुगतिन है । उमी क वृद्ध अर्णो का नागरा विधि म श्री म्नाय प्रयाग स्थिता त विन्नी क वरि जोर काव्य ३ (विन्नी प्रमगाया का मरुद) म प्रव विन विद्या ३ पर तु उम । पाठ मरुदथा दान अनुद्विपी है । मुमुफ तुलना के मर अग म्बल म्नाय ता प० परतुगाम तनुर्गेता न मूफी काव्य मरुद म मरुतिन विद्या है । तनुर्गेता जा न उता पाठ का मुधारत का प्रयाग विद्या है । विन्नु अभी त य पूरा फारम नागरा विधि म म्नाय विन तनी का म म्का है । विन्नुमगा म्नामी का फारमी विषयविन प्रति श्री अनुधिमुआ का म्नाय क भातर है पर गाया का वापा के कारण उमका पूरा उम ग नही उदाय जा म्ना । अत्र नी विन्ना त्वि और काव्य म म्बनित म्का उदता क म्ना ही फारमी विधि म अरुविन म्नाय क विन म्नाय म्नाय काव्य त परिचित हान क एरमात्र म्नाय ३ । श्री गावातम मिह का पाठ हुआ है कि फजाबाद क अनाउन्नाया क पाम हम प्रय की एक प्रति है परतु व भी फारमा विधि म्नाय है ।

निगार हत मुमुफ तुलना की तथा का आधार म्नायामी का प्रमिद फारमी मगनरी काव्य मूफा तुलना । निगार न म्नायी दधातमभव म्नाय वाहादरु म्नाय दानन ता चेपना की है परतु म्नाय के अधिन म्नाय नया हो म्नाय ३ । मूफा तुलना की कथा का मूत्र म्नाय कुरान है और म्नाय म्नाय म्नाय पात्र मुगविन है । यह कथा पुरानी म्नाय (आन् टम्नाय) म्नाय भी म्नाय है । कथा के त्रिण दमिण प्रमूत प्रमूत का अध्याय ५ तथा ता० प० वि म० क० का० पृ० ५१० ५११ तथा हिन्दी प्रमगाया काव्य मरुद पृ० १४२१ ।

सूफी प्रेमाख्यानो का वष्य विषय

सूफी एक प्रम साधन होता है । उसका लक्ष्य है—मानवीय प्रम का ईदरीय प्रेम म परिणत कर दना । परमात्मा क अतीविम मोत्य स अनिमून क दिन आनन् म हका रहता है । समार क सभी प्नाय उसी मोत्य की अभिदविन करत ३ । उमकी साधना क मात मोमान मान जान है अनुताप आत्मसमम वगम्य दग्दिध धय विश्वास और मन्तोप । न सापाना का पार करतने क प्नाय साधन साधना की

चार अवस्थाओं को पाने के लिए चेष्टा करना है। वे अवस्थाएँ हैं—शरीरगत (धम-धम), तरीकत (उपासना), हकीकत (ज्ञान) और मारीफत (मिद्धि)। सूफी साधना में प्रेम का बहुत महत्त्व है। प्रेम ही आत्मा की परमात्मा से मिलने की उकट इच्छा। जब तक आत्मा परमात्मा से मिल नहीं पाती तब तक वह विरह की पीड़ा सहती है परन्तु उस पीड़ा में भी साधक को एक आनन्द की अनुभूति होती है।^१ प्रेम साधना मरल नहीं है, वह कोई हँसी ठूठा नहीं है वरन् आम पवत पर चढन के समान कठिन है।^२ प्रेमी से मिलने की चेष्टा में यदि मरु भी हा जाय तो वह भी वरुण्य है। प्रेम की पीर मद्य दु खो से भारी है उसमें तिल तिलकर अपने को गलाना पड़ता है।^३ मरजिआ वने बिना अपने दिव्य प्रियतम का प्राप्त करना असम्भव है।^४

इसी प्रेम तत्त्व का अभिव्यञ्जना हिन्दी के सूफी कवियों ने लोक प्रचलित प्रेम-कथाओं के माध्यम से की। उनका उद्देश्य अपने मत प्रचार का साधन बनाया। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने केवल भारतीय परम्परा में प्रचलित पौराणिक ऐतिहासिक अथवा पतिहासिक तथा कल्पित आख्याना को ही नहीं चुना वरन् फार्सी या शाभी परम्परा में प्रचलित प्रमाख्याना का भी अपनाया। इन पूर्व प्रचलित प्रेम-कथाओं में उन्होंने अपनी त्रिगुण उद्देश्य मिद्धि के लिए आवश्यक परिवर्तन कर लिया। इसी कारण सूफी कवियों द्वारा प्रस्तुत प्रेमाख्यान शुद्ध प्रेमाख्यान न रहकर उपमिति कथा या कथा रूपक (एलीगरी) बन गये हैं।

इन कथा रूपक का प्रधान उद्देश्य सांसारिक प्रेम (इश्क मजाजी) के द्वारा आध्यात्मिक या अलौकिक प्रेम (इश्क हकीकी) का निरूपण करना रहा है। नायक या नायिका में प्रेम की उत्पत्ति के लिए भारतीय परम्परा में पहले से ही प्रचलित स्वप्न, चित्र या प्रत्यक्ष-दशन अथवा गुण-वर्णन पद्धति का आश्रय लिया गया है। प्रेमाख्य के उपरान्त नायक नायिका के सान्ध्य से आकृष्ट होकर व्याकुल विरही बन जाता है और उसकी प्राप्ति के लिए घर-बार छोड़ जोगी का वेश धारणकर निकल पड़ता है। अनकानेर कठिनाइयों एवं विघ्न बाधाओं को भेदता हुआ वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहता है और उस प्राप्ति पर पुनः अपने दश को लौट जाता है। बाद में भी कुछ कठिनाइयाँ कुछ नायक के जीवन में आती हैं उनका कारण कतिपय सूफी प्रेमाख्यान दुःखान्त हो गये हैं पर अधिकांश प्रेमाख्यान सुखान्त ही

१ प्रमहि मोह विरह श्री रहा। मन के घर मद्य घनित बना ॥ —पदमावत ७१६६

२ कहैति कु वर यह पथ दुहेना। मम जनि जानु हसी और खेला ॥

मगम पहार विषम ग घाटी। पधि न जाइ कइ नहि पाटी ॥

—विद्यावली १२११२

३ पम दुख सब दुख घड भारी। तिल तिल सहम मरन देवारी ॥

—मद्यमावत ५ ५६

४ मर सो जान होइ तन सूना। —पदमावत २५५३

श्रीर—

मन भवरा मोहि कबल बनेरी। हाइ मरजिआन घानहि हेरी। —वही ४०१७

है। नायक व इस प्रेमाभियान में कोई गुरु या पीर उमकी महायता करता है अथवा नायिका की कोई सखी या परी प्रेम घटक का काम करती है। शतान के द्वारा साधक का प्रेम-मय स विचलित करने की चपटा की जाती है। मधुमालती में राक्षस, पदमावत में अलाउद्दीन तथा राघवचतन नानदीप में कूटीचर आदि पान शतान के प्रतीक हैं। नायक के माग में आनवाली विघ्न बाधाएँ वस्तुन साधना माग में आने वाली कठिनाइयाँ हैं और उनका दूर करने में सफलता पाकर अपनी प्रियसी स उसका मिलन ईश्वर प्राप्ति का सूचक है। इन कथा रूपका का रहस्योद्घाटन कभी-कभी कवि अपने प्रेमाख्यान के अंत में कर देता है परंतु कोई भी सूफी प्रेमाख्यान अपने आध्यात्मिक सवता की कसौटी पर बाधन धरा नहीं उतरता। न वह पूणत अपोक्ति धन पाता है न पूणत समासाक्ति। इनक छिटफुट प्रयोग ही मिलत है।

इन प्रेमाख्याना में खुदा क नूर (ईश्वराय सादय) का प्रतिमान न री सौदय को मान लिया गया है और अधिकांश सूफी प्रेमाख्याना में नायिका ही ईश्वरीय सौन्दर्य का प्रतीक है। एक यूसुफ जुलेखा अपवाद है जिममें जुलता नहीं यूसुफ ईश्वरीय सौन्दर्य का प्रतीक बना है। इन प्रेमाख्याना क नायक भी मुदर होत हैं और उनका सौन्दर्य नायिकाओ का जाकृष्ट करने का कारण बनता है। यह लक्षित करता है कि इश्वर भी साधक क आत्मिक सौन्दर्य क पति जाकृष्ट हुए बिना नहा रहता।

सूफी प्रेमाख्याना क नायक नायिका सामारिक एवं पारिवारिक सम्बन्ध की मयादा का उल्लंघन करने पाय जान है—कम स कम उनक प्रति उदासीनता तो उनम निश्चय ही मिलनी है। नायक म जब प्रेम का पीर आगत हो जाती है तब वह माता पिता या निकट सम्बन्धियों के परामर्श का अवहन कर सबसे तणवत नाता तोड़कर चल देता है। उसकी पूव पत्नी का प्रेम और सौन्दर्य भी उन बाधकर नहीं रख पाता। रूपक की दृष्टि से देखा जाय तो यह सूचित करता है कि इशक हकीकी क सामने इशक मजाजी तुच्छ और उपमणाय है।

इन प्रेमाख्यानों की एक दूसरी प्रमुख विशेषता है विरह भाव की प्रधानता। सूफी प्रेमाख्याना म चित्रित विरह का प्रभाव व्यापक होता है और उसम तडपन तथा उत्कटता विशेष होती है—सारी सृष्टि उसस प्रभावित दिखाया देती है।^१ विरह भाव का यह प्रधानता सूफी दर्शन की नियोजना क कारण मिल सकी है। सूफी कविया का विरह वषण हिन्दू मस्वृति और भारतीय काव्य-मस्वृति क अनुकूल नहीं है।

सूफी कवि कथा क लिए कथा नहीं वहत वरन आध्यात्मिक तरव निरूपण क लिए कथा का मनचाहा उपयोग करत है फिर भी इनका वस्तु विधान सुगठित

१ जय मह कटिन रूप क धारा। तहि त मस्वृति विरह क धारा ॥ —पदमावत १५ १५
सिद्धि मस विरहा जग दावा। प दिन एव पुनि का दावा ॥ —मधुमालती १० ११

श्रीर सुव्यवस्थित है। हिंदू-जीवन के वषण की पूरी चेष्टा करत हुए भी इनसे कहीं-कहीं छूक हा गयी है। हिंदू देवी देवताओं तथा मूर्तिपूजा की इनम वन्नी-कही अवमानना भिनती है। अलौकिक प्रेम (इश्क हकीकी) के प्रतिपादन की ओर सूफी कवियों का विशेष ध्यान हाने के कारण वे चरित्र चित्रण मे स्वाभाविकता नहीं ला सके हैं, इसीलिए इनके पात्रा मे मानवीय चरित्र की स्वाभाविकता नहीं। गुण-दोष एव मानव-दृश्य का महज स्पन्दन कम भिनता है विशेषत नायका तथा नायिकाआ म। वस्तु-वषण म नवीनता न हान स प्राय सभी सूफी प्रेमाख्यान एकरूप यात्रिक और दृष्टि-बद्ध म लगने हैं। यदि पात्रा और स्थानो क नाम हटा दिये जायें, तो अधिकाश सूफी प्रेमाख्याना का घटना विकास एक-जमा दिव्यायी देगा। रोमाचक और अतिमानवी तत्त्वा की योजना के कारण कहीं-कहीं य काव्य मानव मन के लिए महज सवेध नहीं हो पान, परन्तु उनकी रोचकता म कार्द कमी नहीं आ पाती। कुछ भी हा इन प्रेमाख्यानो का साहित्यिक दृष्टि से बहुत महत्त्व है क्योंकि हिंदी साहित्य म जो इने गिने सफ्त चरित काव्य हैं उनकी परम्परा को पुष्ट करने म इन प्रेमाख्यानों का बहुत योगदान रहा है।

सूफी प्रेमाख्यानो की विशिष्ट शैली

हिंदी के सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों म भारतीय और ईरानी काव्य शलिया का मुत्तर समन्वय किया गया है। अधिकाश कथाआ के पात्र हिंदू हैं। कुछ सूफी कवियों न अपन काव्य को दुखात बनाया है और कुछ ने सस्कृत कथा-काव्या एव नाटकों के ळम पर उनको सुखात ही रखा है। भारतीय काव्य गली को अपनात हुए भी कई बातो म इन प्रेमाख्याना म फारसी शली का अनुकरण किया गया है।

भारतीय प्रवच काव्या म कथा का विभाजन सर्गों तथा खण्डो म होता है किंतु फारसी प्रवच काव्यो म कथा प्रवाह क बीज धानवाले विशिष्ट प्रसंगो के आधार पर शीपक दे दिय जाते हैं। इस वषणनात्मक पद्धति को मसनवी शली कहा जाता है। हिंदी के सूफी कविया न अपन प्रेमाख्यानो म इसी शली का अपनाया है। फारसी म बहूत-मी मसनवियाँ लिखी गयी हैं। प्राय एमी धारणा है कि मसनवी काव्य प्रेमाख्यान हा हात है परंतु यह ठीक नहीं। मसनवियो का वृत्त ऐतिहासिक पौराणिक दार्शनिक रहस्यवादी या धार्मिक कुछ भी हो सकता है। मसनवी की दो अर्द्धालियाँ परस्पर तुकान्त होती हैं लम्बाई की कोई सीमा निर्धारित नहीं है और इमम आदि से अन्न तक एक ही छंद रहता है। कवि का स्वनत्रता रहती है कि वह या ता सात छंदा की एक मसनवी लिखे या इसे सात हजार तक बना दे।^१ फारसी क प्रसिद्ध सूफी कवि जामी न कता है— मसनविया काव्य म आख्यान, प्रेम प्रवच वार-काव्य तथा कथापरक होनी हैं। प्रेमाख्यान मात्र को फारसी म मसनवी रचना

१ फारसी साहित्य का इतिहास डॉ० अली अकबर हिकमत १९५७ पृ० १५३

नहीं कहते। ममनबी का विषय प्रेम युद्ध दशन कुछ भी हो सकता है। उसमें एक छंद दूसरे छंद से जुटा होगा है इसलिए जानियान लिखन के लिए इस शैली में कवि को सुविधा रहती है। फारसी मसनवियों में दो अर्द्धालिया के तुलनात हाने के कारण हिन्दी के सूफी कवियों का ध्यान दाहा और चौपाई छन्द की ओर गया। कि तु किनी की यह भ्रम नहीं हाना चाहिए कि सूफिया न ही दाहा चौपाई में प्रयुक्त काव्य लिखन की पद्धति चलायी अथवा कुछ अर्द्धालिया के बाद दाहा रखन की नयी प्रथा आरम्भ की। बस्तुन सरहपाद आर वृष्णपाद जादि महत्त्वयानी मिद्ध कविया के गयो में दा दा चार चार चौपाइया के बाद दाहा लिखन की प्रथा मिलती है। अपभ्रंश काव्या में भी दस दस चारह चारह अर्द्धालिया के बाद घत्ता उल्लाहा आदि अत हुए प्रयुक्त काव्य लिखन का नियम प्रचलित रहा है। सूफी कवियों का दन इतनी ही है कि उहान दोहा चौपाई के प्रयोग का एक निश्चित क्रम स्थिर कर लिया यद्यपि एकदृष्ट्या इसमें भी नहीं मिलता। वस्तुन न पांच अर्द्धालिया के बाद एक दोहा रखा है तो जायसी न मात अर्द्धालिया के बाद एक दोहा। मान न भी पांच अर्द्धालिया के बाद एक दोहा रखन का क्रम विभाया है। उममान और शेख नबी न जायसी की भांति सात अर्द्धालिया के बाद एक दोहा रखा है। चौपाई का प्रयोग दन कवियों न एक अर्द्धाली के समान ही किया है आधे चरण का ही अर्द्धाली पूरा चौपाई मान लिया। इनमें से जान कवि न छंद का विषय प्रशिक्षित किया है। उहान बरब कवित्त चौपाई चौपाई गवया पवमम गति छन्द का प्रयोग किया है। कवि शेख निहार ने बारहगमा वणन के अंतगत कवित्त और मन्वय प्रयुक्त किए हैं।

फारसी प्रमाणिया में कुछ बातें स्पष्ट हो गयी थी हिन्दी के सूफी कवियों में भी उनकी अनीकार कर लिया। ममनबी का आरम्भ अन्वर-बदना से हाना है फिर उसमें पगम्बर मुहम्मद साहब की स्तुति दी जाती है तदनान्तर मुहम्मद साहब के चार मित्रों की जो प्रारम्भिक खलीफा भाषा प्रशंसा मिलती है। इन चारों मित्रों या खलीफाओं के नाम हैं—अबदकर सहदीन आन्नि उमर उममान और अनी। इनके उपरांत तत्कालीन गामक (शाहकन) की प्रशंसा की जाती है। इन सबके बाद कवि अपने गुरु या पीर का और स्वयं अपना परिचय देता है। हिन्दी के सूफी कवियों न अपने प्रेमाख्यानों में ममनबी काव्या की उस रूढ़ि की बनाव रखा है। क्या का आरम्भ नायक-नायिका तथा प्रधान पात्रों के परिचय में होता है। प्रायः नामक अपने माता पिता की स्तुति सतान होता है और उसका जन्म अन्त तपस्या दान पुण्य और किसी मिद्ध पार के आजीर्ण के फलस्वरूप हुआ होता है। उस नायक का अपने माता पिता को दानकर प्रथम पय का पश्चिम दन जाना क्या में प्रेम की तीव्रता का रंग चटकीला बना देता है। कई सूफी कवियों न अपने प्रमाणानों का दुःखान्त बनाव है परन्तु कुछ ने मुक्त भी। एक कविया में ममन उमम न और नूर मुहम्मद गति के नाम उल्लेखनीय हैं। गमभय सभी सूफी प्रेमाख्यानों में अश्लील का प्रयोग हुआ है। जान कवि ने अपने प्रेमाख्यानों में ब्रजभाषा का भी पुट दिया है।

इन कतिपय विषयगत और शैलीगत विशेषताओं के अतिरिक्त सूफी काव्यों में कुछ अन्य बातें भी दिखायी देती हैं। सूफी काव्यों के कवि अधिकांशतः मुसलमान होंगे और भी हिन्दू-मस्जिद और भारतीय जीवन का मजबूत चित्रण करने की चेष्टा करेंगे। पद्य और चारहमासा वगैरह की प्राचीन परम्परा का इन कवियों ने भी अपनाया है और उनके माध्यम से भारत की प्रकृति तथा भारतीय गहनमय जीवन के मार्मिक चित्र उपस्थित किए हैं। सूफी कवियों ने अधिकतर उपमा रूपक उपमा आदि साहित्य मूलक अलंकारों का ही प्रयोग किया है और सौन्दर्य के उपमान भारतीय परम्परा में ग्रहण किए हैं। नूर मुहम्मद ने अवयव आद्य के लिए नरगिस का उपमान प्रयोग किया है जो उनकी शमी परम्परा भक्ति का सूचक है। भारत में 'नरगिसी' का ही कम ही आक्षेपक मानी जाती है। यमक और रूप आदि शब्दालंकारों का इन कवियों ने प्रयोग प्रायः नहीं किया है। भारतीय सामाजिक जीवन में पाए जाने वाले उन्नत व्योहारी रीति रिवाजों का चित्रण इन कवियों ने निष्ठापूर्वक किया है यद्यपि इनमें कुछ भूँसे हो गयी हैं। छठी, नामकरण लग्न विचार पाटी-पूजन मराई विवाह आदि तत्सम्बन्धी लोकचित्रण मृत्यु तथा नायिका के उपनायिका के सती होने का यथावन्त वर्णन किया है। हम-जवाहर जम प्रेमाख्यान तक जिसमें नायक-नायिका और घटना-स्थल सभी अहिन्दू तथा अशरीफ हैं रीति रिवाजों के वर्णन में सामान्य हिन्दू सामाजिक जीवन की विशेषताओं का समावेश किया गया है। मुसलमान होंगे भी इन उदारवैज्ञानिक सूफी कवियों ने हिन्दू जन्मांतरवाद या पुनर्जन्म सिद्धान्त के प्रति अपने नायक-नायिकाओं का विश्वास प्रदर्शित किया है।

पुराण-साहित्य भारतीय सांस्कृतिक एवं धार्मिक चेतना का आधार है और पौराणिक आख्यान भारतीय साहित्य का उपजाऊ है। प्रस्तुत प्रबंध में चूंकि हिंदी के मूल प्रमाणग्रन्थ काठ्या तीर सूफा कविता द्वारा रचित अथ प्रमाणग्रन्थ में पौराणिक आख्याना के प्रयोग के स्वल्प पर विचार किया जाएगा इसलिए पुराण साहित्य तथा पौराणिक आख्यान का प्रकृति का जान लेना आवश्यक है।

पुराण-साहित्य एक संपिन्न परिचय

पुराण की प्राचीनता—

पुराण शब्द का उत्पन्न ब्रह्मि साहित्य में भी मिलता है। 'अथर्ववेद' में ऋषि सामानि छत्तसि पुराण यजुषा मह मत्र मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में भी अथर्वु लागा द्वारा पुराणो का कातन करना लिखा है।^१ बह्मरूपक 'उपनिषद्' में मर्षि यानवन्म मत्रपी को ममापाने इण नहन है कि जिम प्रकार गीले इधन में अग्नि से पृथक् घाँ निकलता है उसी प्रकार ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद (अथर्ववेद) इतिहास पुराण विद्या उपनिषद् शोच मूत्र मात्र विवरण और जयवाद आदि महत्भूत के निरवाम रूप हैं।^२ संस्कृत के आदि वाङ्मय में पुराण शब्द का उत्पन्न से यह पता चलता है कि पुराणो का अस्तित्व प्राचीन काल में ही है। यह बात और है कि वह जिम रूप में आज पाये जाते हैं उसी रूप में प्राचीन काव्य में न रहे होते।

१ वं ब्राह्मण धारव्यक और उपनिषद्—ये शार प्रकार के साहित्य ब्रह्मि साहित्य कहलाते हैं

२ अथर्ववेद ७१।३।२४

३ शतपथ ब्राह्मण १।४।३११२

४ म यथाऽऽद्यानेरभ्याहित्वात्पद्यम । विनिश्चरयेव वा धरेऽरम महो भूतस्य निश्चक्षितमेउष दग्नेने यजनेद सामवेने चर्वाङ्गिरस इतिहास पुराण वि ८२ श्लोका सूत्राभ्यन व्याख्यानानि व्याख्यानामस्यवतानि निश्चक्षितानि । —अध्याय २ ब्राह्मण ४ मत्र १

महर्षि कृष्णद्वैपायन ने जिनको वेदा का वर्गीकरण करने के कारण वेदव्यास कहा गया जिम प्रकार वदिक मन्त्रों का संकलन करके वदिक साहित्या का निर्माण किया उसी प्रकार उन्होंने महाभारत युद्ध तक के आख्यानो, उपाख्यानो आदि का संकलन पुराण-साहित्या में कर दिया ।^१ उसके उपरांत भी पुराणों में बाद की घटनाओं के वृत्तान्त आलंकारिक शैली में जोड़े जाते रहे यहाँ तक कि परवर्ती पुराण-लेखकों ने अपने समय का वृत्तान्त भी वेदव्यास के मुह से इस प्रकार कहलाया माना वे ही भविष्य की बात कह रहे हैं । आगे चलकर तो एक भविष्यत पुराण की ही रचना हो गयी जिसमें पुराण' (प्राचीन) और भविष्यत दो परस्पर विरोधा शब्दों का योग दिखायी देता है । इसमें यह सूचित होता है कि पुराण शब्द का वास्तविक अर्थ कालांतर में भुला दिया गया और यह शब्द एक विशेष प्रकार के साहित्य के लिए रूढ़ हो गया । कुछ पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि कतिपय पुराणों में १६ वीं १७वीं शताब्दी तक अभिवृद्धि की प्रक्रिया चलती रही परंतु जमा कि श्री एम० ए० मकडॉनेल का कथन है गुप्त काल तक आत आत पुराणों का पूरा विकास हो चुका था ।^२

पुराण का शाब्दिक अर्थ तो पुराणा या प्राचीन है परंतु प्राचीन वदिक साहित्य में इस शब्द का प्रयोग सामान्यतया इतिहास' के सम्बन्ध में हुआ है यद्यपि ऊपर 'वह्णारण्यक उपनिषद् का जो उद्धरण दिया गया है उसमें पुराण और इतिहास का अलग अलग उल्लेख किया गया है । इससे यह समझा जा सकता है कि वदिक काल में पुराण और इतिहास शब्द पर्याय न थे । ऐसा लगता है कि मूलतः पुराण शब्द का अर्थ 'प्राचीन आख्यान मात्र रहा होगा और आख्यानो के स्वरूप को भी विशेष महत्त्व न दिया जाता रहा होगा ।^३

यहाँ यह स्वाभाविक जिनासा उठ सकती है कि जिन आख्यानो को पुराण या प्राचीन नाम दिया गया तथा जिस शब्द को वदिक साहित्य भी इसी अर्थ में उल्लिखित करते हैं, उसमें प्राचीनता का यह तत्त्व क्या था ? हमारी समझ में प्राचीनता का यह तत्त्व नाकतत्त्व था जिससे वेदों और पुराणों ने समान रूप से प्रेरणा ली । वेद और पुराण दोनों का उत्स एक था—लाक (वेद विरोधी लोक नहीं बरन साधारण जन का प्रतीक लोक) । वेदों की लोक भूमि ही आगे चलकर पौराणिक स्वरूप ग्रहण कर सकी । पुराणों के समय तक वदिककालीन लोक कितनी ही परिस्थितियों से जटिल होता चला गया था । फलतः लाकवार्त्ता लोक-तत्त्व अथवा

१ भारतीय वाङ्मय के अमर रत्न अथवा विद्वान्कार द्वितीय संस्करण पृ० १

२ द हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ द इण्डियन पीपुल द क्लसिकल एज जिल्ड २ उपान्त भारत० सी० मजूमदार अध्याय १५ में संकलित एम० ए० मकडॉनेल का तर्क— द पुराणाज प २६१

३ वही पृ० २६२

नामों के व्यक्ति की जोर मूमि पर समस्त पुराण साहित्य निमित्त हुआ।^१ आज तक की मनुस्मृत साहित्यिक अभिव्यक्ति का एकमात्र अतिरिक्त आधार यह पुराण-नाता का जो सम्बन्ध था वास्तविक है।^२

पुराणा के पंच लक्षण^३

शास्त्रीय दृष्टि से पुराणा में पाँच विषया का जित् पंचरक्षण^४ कहा गया है यद्यपि हाना चाहेगा। यहाँ पंच लक्षण या विषय हैं—(१) मम या मृष्टि की उन्मत्ति का वर्णन (२) प्रतिमग या प्रत्यय व पञ्चान मृष्टि की पनरचना का वर्णन (३) वर्ण या दस्ता-आदि की वर्णमन्त्रा (गीतिका-लात्री) का अन्वयण (४) मन्त्र-तर या आदि मनु से प्रारम्भ का वाक १४ मनु का वे ममय का वर्णन (५) वर्णानुचरित^५ या मूय और चन्द्र-मन्त्र का उग्र-राज-मन्त्रा का प्रतिहाम। विष्णुपुराण में इन पंच लक्षणों का सबसे अच्छा निर्माण हुआ है। नारद तथा वाग्नि आदि बुद्ध पुराणा में इन लक्षणों का निर्माण अच्छा नहीं हुआ है। पुराणा में सबसे इन पाँच विषयों की ही नहीं, अन्य विषयों की भी चर्चा है और यही सूचित करता है कि इनका निर्माता जोर निर्माण के लिये अतिरिक्त था तथा समय-समय पर इनमें परिवर्द्धन होता रहा।

अठारह महापुराण

महापुराणों की संख्या १८ मानी गयी है। अष्टादश पुराणों में अतिरिक्त प्रायः सभी पुराणों में अठारह पुराणों की नामावलि भी हुई है। विष्णुपुराण^६ के अनुसार १८ महापुराणों में उनका क्रम इस प्रकार है (१) ब्रह्मा पुराण (२) पद्म पुराण (३) विष्णु पुराण (४) शिव पुराण (५) भागवत पुराण (६) नारद पुराण (७) माण्डूक्य पुराण (८) अग्नि पुराण (९) भविष्यत पुराण (१०) ब्रह्मवत्स पुराण (११) विष्णु पुराण (१२) वाराह पुराण, (१३) स्कन्द पुराण (१४) वामन पुराण (१५) वृष्म पुराण (१६) मत्स्य पुराण (१७) गरुड पुराण (१८) ब्रह्माण्ड पुराण। इन पुराणों में प्राचीनतम ब्रह्मपुराण है।^७ किन्तु पाश्चात्य विद्वानों विष्णु पुराण को सबसे प्राचीन मानते हैं।

१ मध्यमगीत हिंदी साहित्य का लक्षणात्मक अध्ययन डा. सत्येन्द्र प्रथम संस्करण पृ० ६२

२ ३

३ वाग्नि प्रतिमगश्च वर्णमन्त्र-तराणि च ।

वर्णानुचरितं च पुराणं पञ्चवर्णमम् ॥

—ब्रह्मवत्स पुराणम् अध्याय १३१ श्लोक ७ मत्स्य पुराणम् अध्याय १३ श्लोक ६५

वाग्नि-तर -

सगश्च प्रतिमगश्च वर्णमन्त्र-तराणि च ।

वर्णानुचरितं च पञ्चवर्णमम् ॥

—विष्णुपुराण पञ्चम अध्याय ८ श्लोक २

४ ३ पुराण अथ अध्याय ६ श्लोक २ २४

मत्स्य पुराण में पुराणों के इसी क्रम को स्वीकार किया गया है और उसके अनुसार उपयुक्त महापुराणों की श्लोक संख्या क्रमशः यह है— तेरह हजार, पचपन हजार, तेईस हजार, चौबीस हजार, अठारह हजार, पच्चीस हजार, तेईस हजार, सोलह हजार, चौदह हजार, पाँच सौ अठारह हजार, ग्यारह हजार, चौबीस हजार, इक्यासी हजार, दस हजार, अठारह हजार, चौदह हजार, अठारह हजार, बारह हजार दो सौ।

अष्टादश पुराण दर्पण में भिन्न भिन्न पुराणों के मत से १८ पुराणों का क्रम एवं श्लोक संख्या दी हुई है।^१ पृथ्वीराज रासो में भी सभी पुराणों की श्लोक संख्या दी है। मत्स्यपुराण में दी हुई पुराण श्लोक संख्या से 'पृथ्वीराज रासो' में दी गयी ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण, अग्नि पुराण, वामन पुराण, कूर्म पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड पुराण और ब्रह्माण्ड पुराण की श्लोक-संख्या कुछ भिन्न है। शेष की श्लोक संख्या 'मत्स्यपुराण' के अनुसार ही है। पृथ्वीराज रासो में उपयुक्त आठ पुराणों की श्लोक-संख्या क्रमशः दस हजार, तत्तीस हजार, चार सौ पंद्रह हजार, ग्यारह हजार, सत्रह हजार, चौबीस हजार, उन्नीस हजार और बारह हजार बतायी गयी है।

शिव पुराण का वायु पुराण भी कहा जाता है, यद्यपि ये दोनों एक ही नहीं हैं। 'भागवत' के स्थान पर शाक्त सम्प्रदाय वाले देवी भागवत की गिनती महापुराणों में करते हैं।

अठारह उपपुराण

अठारह पुराणों में अतिगिन अठारह ही उपपुराण भी माने जाते हैं जिनके नाम ये हैं— भागवत (या देवी भागवत), माहेश्वर, ब्रह्माण्ड, आदित्य, पाराशर, गौर, नारद, केशव, साम्ब, 'कालिका', वारुण, 'औशनस', मानव, वापिन, दुर्वासस, शिवधर्म, बहुधरदीय, नारसिंह, और सनत्कुमार उपपुराण।

गण्ड पुराण के अनुसार^२ उपपुराणों के नाम ये हैं— सनत्कुमार, नारसिंह, स्वान्त, शिवधर्म, आश्विन, नारदीय, 'वापिन', वामन, औशनस, ब्रह्माण्ड, वारुण, कालिका, माहेश्वर, साम्ब, गौर, 'पाराशर', मारीच और भागव' उपपुराण।

देवी भागवत में उपपुराणों में स्वान्त, वामन, ब्रह्माण्ड, मारीच, जीर, भागवत के स्थान में शिव, मानव, आदित्य, 'भागवत' और वाशिष्ठ का उल्लेख है।^३ उपपुराणों में विष्णुधर्मोत्तर, गण्ड धर्म उपपुराण और कल्कि पुराण का

१ अष्टादश पुराण दर्पण संवत् १९६५, पृ. ५१

२ गण्ड पुराण अध्याय ३२३ श्लोक १७, २

३ देवी भागवत अध्याय ३ श्लोक १३, १६

भी उत्तम मितता है। उपपुराण की अथ तात्कार्ण भी प्राप्त हाती हैं जिनका उत्तम करना हम अनावश्यक समझते हैं। इन मूचियों का दान स एव बात स्पष्ट हो जाती है कि जितने भी उपपुराण हैं वे विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के मन मतांतरों का समर्थन करने की दृष्टि से बाद में निर्मित हुए हैं।

पंच पुराण म अठारह महापुराणों का मत रज और तम—तीन गुणों का आधार पर वर्गीकरण किया गया है और उनका किसी न किसी देवता से सम्बंध बननाया गया है। सात्विक पुराणों म विष्णु नारद भागवत' गण्ड पंचम और वाराह पुराणों की गणना की गयी है और इनसे ब्रह्म पुराण कहा गया है। एसा कथन है कि इनका भक्तिभाव से अध्ययन करनेवाले मुक्ति प्राप्त करते हैं। श्रद्धालु ब्रह्मवैवर्त 'माण्डूक्य नवविषय वामन वार ब्रह्म पुराणों का रत्नगुणों और श्रद्धा से सम्बंधित माना गया है तथा यह कहा गया है कि इनकी पठनवाले स्वर्ग का उपाय करते हैं। मध्य सूक्त लिङ्ग 'गिव' या वासुदेव और जमि पुराणों को तमोगुणों तथा वैवर्त माना गया है। यह भी कहा गया है कि इनका अध्ययन करनेवाले भी स्वर्ग का रास्ता लभते हैं।

जन और बौद्ध पुराण

हिन्दू पुराणों की श्रेणी में और उपाय का आधार पर जन और बौद्ध पुराणों की भी रचना हुई जिनकी संख्या क्रमशः २४ और ६ मानी जाती है। उनका पराणों म उनके २४ ताधिकरणों की कथाएँ और माण्डूक्य वर्णित हैं। ये पुराण हिन्दू पुराणों की

१ २४ जन पुराण धार्मिक पुराण अत्रिनाथ पुराण सप्तनाथ पुराण अश्विनाथ पुराण मुनिनाथ पुराण पंचप्रभ पुराण गुरावर्ष पुराण चन्द्रम पुराण पुण्डरीक पुराण शीतलनाथ पुराण श्याम पुराण वासुदेव पुराण विमलनाथ पुराण अनन्तनाथ पुराण अमनाथ पुराण शक्तिनाथ पुराण कुण्डनाथ पुराण धरनाथ पुराण मन्दिनाथ पुराण मनि मुवत पुराण नेमिनाथ पुराण धरिष्णु नेमि पुराण पार्श्वनाथ पुराण सम्मति पुराण।

— हिन्दू देवी रामदास गौड पृ ४१५ १६

धार्मिक पुराणों का ही उत्तरार्द्ध उत्तरपुराणों के नाम से प्रसिद्ध है। जन महापुराणों की विशेष्यकथापुराण भी कहते हैं क्योंकि उनमें ६३ मन्त्राधारों का चरित वर्णित है। २४ तीर्थकर १२ अक्षरों की ६ वासुदेव ६ प्रतिवासुदेव ६ ब्रह्मदेव—इन ६३ महापुरुषों का कलाका पुरुषों के चरित का दान इन पुराणों में है। ये पुराण गिम्बर सम्प्रदाय वालों ने लिखे। श्वेताम्बर सम्प्रदाय वालों ने इनकी तुलना म चरित या चरित् नाम-संघों की प्रवृत्त म रचना का। उनमें अनेक म गुरुओं के स्थान पर एक ही महापुरुष का चरित वर्णित होता था।

उपयुक्त महापुराणों में धार्मिक पुराण पंचप्रभ पुराण धरिष्णुनेमि पुराण (जिसे हरिवंश पुराण भी कहते हैं) और उत्तर पुराण अधिक प्रसिद्ध हैं। इनमें भी धार्मिक पुराण और उत्तर पुराण का अधिक महत्त्व माना जाता है।

६ बौद्धपुराण (१) प्रज्ञापारमिता (२) गण्डव्यूह (३) समाधिपत्र (४) ललावतार (५) लयागत गायत्र (६) सद्धम पुण्डरीक (७) बुद्ध या ललितविस्तर (८) सुबोध प्रभा (९) दशमूसर।

— हिन्दू देवी रामदास गौड पृ ४४५

भाति पचलशयो से युक्त न होकर महापुरुषों की पुरातन कथा के प्रतिपादक ग्रन्थ हैं।

या जन लोग अपने पुराणों का अस्तित्व हिंदू पुराणों से पहले मानते हैं परंतु यह धारणा असंगत है क्योंकि बौद्ध और जैन पुराणों में शिव ब्रह्मा आदि के उल्लेख हुए हैं।^१ सातवीं शती में हिंदू पुराणों का पूर्ण विकास हो चुका था और उनका खूब बान्धवाला था। तभी ऋग्वेद जनों ने भी अपने पुराणों की रचना आरम्भ की।^२ जब हिंदू पुराणों ने साम्प्रदायिक रूप प्राप्त कर लिया और ब्राह्मणों तथा श्रमणों की समान सम्प्रति न रहे तब जना द्वारा अपने पुराणों की रचना सातवीं शताब्दी के उपरांत की गयी जान पड़ती है।^३

‘रामायण’ और ‘महाभारत’

वाल्मीकि ‘रामायण’ और बद्धदेव रचित महाभारत की गणना पुराणों में नहीं होती। ये महाकाव्य हैं। इन दोनों के लिए क्रमशः ‘परिकृति और पुराकल्प’ नाम व्यवहृत हुए हैं जो वस्तुतः इतिहास के दो भेद हैं। काव्य भीमासा में बताया गया है कि जो इतिहास एक नायक के विषय में हो उस परिक्रिया और जिसमें एक से अधिक नायक हों उस पुराकल्प कहते हैं।^४ महाभारत ‘पुराकल्प’ इसलिए है कि उसमें युधिष्ठिर दुर्वासन अज्ञान भीष्म जानि कई पुरुष नायक हैं।

‘रामायण और महाभारत को शास्त्रीय परिभाषा की दृष्टि से भले ही पुराणों के अन्तर्गत न रखा जा सके परंतु चूंकि उनके बहुत से आख्यान पुराणों में गृहीत हैं अतः वे और उन्मत्त विकसित हुए हैं इसलिए पौराणिक आख्यानो की दृष्टि से उनका एक विशिष्ट स्थान है।

कथा आख्यायिका आख्यान पौराणिक आख्यान

प्राचीन भारतीय साहित्य में कथा कहानी के अर्थ द्योतक बहुत से शब्द मिलते हैं। वे परस्पर पर्याय न होकर विविध कथा प्रकारों के परिचायक होते हैं। इनमें से कथा गाथा, आख्यायिका और आख्यान प्रमुख शब्द हैं।

कथा

कथा शब्द कथ (= कहना) धातु से व्युत्पन्न है। एक व्यक्ति जब किसी दूसरे व्यक्ति से कोई रोचक कुतूहलवद्भक्त सरस बात कहता होगा तब उसके

१ मूर और उनका भाहित्य डॉ. हरवशलाब शर्मा संपादित संस्करण पृ० १ ६

२ पुराण-निर्मास लेख श्री रायकृष्णदास वैकटेश्वर समाचार बम्बई दीपावली विशेषांक २२ अक्टूबर १९२४

३ श्री क पौराणिक नाटकों का अध्ययन डॉ० देववि सनाथ्य (शोध प्रबंध—प्राणलिति) अध्याय १ पृ० २२

४ परिक्रिया पुराकल्प इतिहासप्रतिद्विधा।

स्वाध्यायिका पूर्वा द्वितीया बहुनायका।।

कथन का कथा की सत्ता ग्लित्त लगी होगी। आचार्य भामह ने चित्तका समय छठी शताब्दी माना जाता है अपन का-पायकार' में 'कथा गाथा' और आख्यायिका का उल्लेख करता है। कथा की उनकी परिभाषा यह है कि कवि का वह गाभिप्राय कथन जिसका विषय कथा-वृत्त और वियोग आदि होता है कथा कहा जाता है।^१ उनका अनुसार कथा का नायक अपना चरित्र स्वयं अपने मुह में नहीं बताता।

सातवां शती उत्तरार्द्ध में विद्यमान आचार्य दण्डिन ने अपने का-पादना में कथा और आख्यायिका का उल्लेख गद्य-काव्य के रूप में किया है।^२ उनका मतानुसार काल नायक द्वारा वर्णित गद्य का आख्यायिका कहना है पर कथा नायक या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा भी कथित हो सकता है। इस प्रकार कथा और आख्यायिका दोनों एक ही जाति की हैं पर दो भिन्न नामों में पुकारी गया हैं। जय आख्यान जानियाँ (खंड कथा, परिचया आदि) भी इन दो के अंतर्गत ही आ जाती हैं।^३

अग्नि पुराण में कहा गया है कि जंग मुल्ला कथा को लान के लिए जंगल में कथा की मूर्ति की जाती है और जिसमें परिच्छेद नहीं हान अथवा कहा कही समस्त अथ विषय प्रवृत्त में अनुस्यूत रहता है वह कथा नामक गद्य काव्य कहता है।^४

उपरोक्त शास्त्रीय परिभाषाओं से यह ध्वनि निकलती है कि कथा का नायक कह या कोई और उसमें कुछ वृत्तांत और आधिकारिक कथा के साथ प्रासंगिक कथा या कथाओं का ज्ञान आवश्यक है। कथा का कोई उद्देश्य भी होता है और उसमें प्रेम तथा युद्ध का वर्णन भी मिलता है।

जयचाम्य हतांगीप्रमदाद द्विती शतक में—पुराण साहित्य में कथा का व्यवहार स्पष्ट रूप में दो अर्थों में हुआ है। एक तो साधारण कथानी के अर्थ में जो दूसरा आकृत का रूप के अर्थ में। साधारण कथाओं के अर्थ में तो पंचतंत्र की कथाएँ भी कथा हैं महाभारत और पुराणाओं के जाणान भी कथा हैं और सुगाण की वासनाता वाग की काण्ड्यरी गुणाडय का वह तथा आदि भी कथा हैं। परंतु विशिष्ट अर्थ में यह शब्द अचकृत गद्यकाव्य के लिए प्रयुक्त हुआ है। अब मैं इस अर्थ में चलने लगा यह कह सकता हूँ कि कथित है।^५

१ कवेरिप्राय कृत कथाय कश्चिन्विता।

का-पादना मध्यामग्रलम्भायां वता ॥ —का-पायकार १।२७

२ दण्डिन पत्र सनादा मध्यामग्रलम्भायां कथे।

३ न तस्य प्रमदो नै तयोराख्यायिकावित् ॥ —राज्याय १।२३

४ काव्याय १।२८ (द्वितीयां वचनात्)

५ का-पायकार-वनांगम भवेत्तत्र कथातरम्।

परिच्छेदो न यत्र स्यात् भवेत्तत्रम्ब क कवित् ॥१६॥

६ कथा नाम ॥१७॥

७ हिंदी साहित्य का आन्विकाल तृतीय स १८६१ ई पृ० १७

इसने स्पष्ट है कि 'कथा' शब्द का हमारे साहित्य में व्यापक प्रयोग हुआ है। यह शब्द लोक साहित्य में भी उतना ही प्रिय रहा है जितना नागर साहित्य में।

कथा के समानार्थी या उसके उपाग के रूप में या उससे किंचित भिन्नता रखनेवाले कुछ अन्य शब्द भी भारतीय साहित्य में प्रचलित हैं जैसे—परिकथा, दत्तकथा या निज धरीकथा, लोक कथा, धम-कथा, उपमिति कथा अतकथा इत्यादि।

परिकथा उसे कहते हैं जिसमें एक कहानी के भीतर बहुत सी कहानियाँ हो। यह कथानियाँ आपस में सम्बन्ध भी रखती हैं और परस्पर किंचित आकांक्षा भी रखती हैं।

दत्तकथा चिरवान से चनी जाती हुई किसी प्रसिद्ध कथा को कहते हैं। इसमें इतिहास और रचना का मिश्रण पाया जाता है। इन कथाओं की आधार भूमि इतिहास की ठोस घटनाएँ होती हैं परन्तु लोक कथाकार उन पर अपनी कल्पना का आवरण चढ़ा देने है जिससे उनके वास्तविक रूप को पहचानना कठिन हो जाता है।^१ अतकथा को ही 'निज धरी कथा' भी कहते हैं। 'निज धरी कथाएँ महापुरुषों सतो देवताओं या राक्षसों के जीवन और कार्यों से सम्बन्धित होती हैं पर उनमें इतिहास का तत्त्व किसी-न किसी मात्रा और रूप में अवश्य वर्तमान रहता है।'^२

लोक कथा वह है जो लोक में विभिन्न रूपों में प्रचलित रहती है। एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में लोक-कथाओं का सम्बन्ध में यह उल्लेख है—
Popular stories fall into three main categories myths legends and stories which are told primarily to provide entertainments
डा० मयदरन कदाचित् इसी आधार पर लोक-कथा का तीन बड़े वर्गों में बाँटा है (१) धमगाथा (२) लोक गाथा (जबान या बलड) तथा लोक कहानी^३ उनके मत में केवल देवी देवताओं के आन से कोई लोक कहानी धम गाथा नहीं हो सकती। धम गाथा के लिए यही आवश्यक नहीं कि उसमें देवी देवताओं का समावेश हो यह भी आवश्यक नहीं कि देवताओं में आस्था हो (यहाँ आस्था से अभिप्राय है कहानी में कही बात पर विश्वास करना)। किन्तु धम गाथा के लिए आवश्यक है कि उक्त दोनों बातों का साथ उसका धार्मिक माहात्म्य भी हो। उसके कहने-सुनने में किसी धार्मिक लाभ की सम्भावना हो। किन्तु इन सबसे अधिक महत्त्व का तत्त्व यह है कि

१ कारिका ५ अम्बिकादस व्यास ५ ३१ ३०

२ हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास (पोद्दार भाग) सभा और इन भाग के लेखक डॉ० कृष्ण देव उपाध्याय पृ० ११२

३ हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास डॉ० प्रभुनाथसिंह प्रथम संस्करण, पृ० २०

४ धर्म लोक साहित्य का अध्ययन डॉ० सत्येन्द्र त्रिपाथ संस्करण १९४७ पृ० २१

‘धम गाथा में देवी-देवता का समावेश परम्पारित कथा अभिप्राय (माटिफ) के रूप में नहीं होता। धमगाथा किसी न किसी देवी-देवता के वक्त सगुणी रहती है।’

‘धम-गाथा का ही एक उपाग धम कथा है। ‘धम-कथा उन कथाओं को कहते हैं जिनमें परलोक-साधन या मोक्ष की आकांक्षा मुख्य होती है।’ प० चन्द्रबली पाण्डेय ने ‘नूर मुहम्मद की अनुराग वासुरी’ को धम कथा माना है।^१ ‘उपमिति कथा’ भी धम-कथा की समानाधिकार है। जिस रूपक अयोक्ति अथवा अयापनशिक कथा (गलीगरी) कहते हैं वही उपमिति कथा है।

‘अन्तकथा का प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं होता। कवि किसी मूल्य या नीति की अभिव्यक्ति के लिए इसका प्रयोग करता है। उसकी कथावस्तु सभ सामयिक नहीं होती बरन कोई प्राचीन प्रसिद्धि या प्राचीन कथा इसका वण्य विषय होती है। अन्त कथाएँ लोक प्रचलित होती हैं, अतः इनका विस्तार में वर्णन न होकर सूच्यात्मक उल्लेख होता है।’

आख्यायिका

असल में ‘कथा’ और आख्यायिका दोनों का प्रयोग कहानी के अर्थ में हीना रहा है परन्तु दोनों में वण्य वक्त को लेकर अंतर भी किया जाता रहा है। कथा की वस्तु जबकि काल्पनिक या कल्पित होती थी तब आख्यायिका की वस्तु ऐतिहासिक इतिहास पर आधारित। बाबू श्यामसुन्दरनाथ कथा और आख्यायिका का एक दूसरे का पर्याय समझने हुए आख्यायिका को एक निश्चित लक्ष्य या प्रभाव का उत्पन्न लिखा गया नाटकीय आख्यान मानते हैं।^२

डा० सत्यनन्द गुप्त आख्यायिका तथा कहानी को साधारणतः एक ही वस्तु मानते हुए कहते हैं — आख्यायिका शास्त्राय शब्द है और आख्या से बना है। अधिक ससृष्ट भाव के अनुयायी इस शब्द का प्रयोग करने रहते हैं। वस्तुतः गद्यकाव्य की कविता की छोटी कथात्मक रचनाएँ आख्यायिका कही जाएगी।^३

परन्तु डा० सुधीन्द्र के मतानुसार ‘कथा’ काल्पनिक अर्थात् उत्पाद्य वस्तु की

१ मध्ययुगीन हिंदी साहित्य का लोकोत्पत्तिक अध्ययन डॉ. सत्येन्द्र प्रथम स प ६

२ मोक्षकालकृतान्तर्गत चेतसाभिलषिताये।

शुद्धा धमकथामेव सात्त्विकास्ते नरोत्तमाः ॥

— उपमिति भवप्रवृत्ता कथा सिद्धयि (स १, ३ वि) सभा की पीठसन एवं जकोवा प्रकाशक ऐतिहासिक सोसाइटी ब्राफ बंगाल।

३ अनुराग-वासुरी — भूमिका प २५

४ रामचरितमानस का धमकथाप्रो का प्रालोचनात्मक अध्ययन डा. वासीशंकर पाण्डेय का शोध प्रबन्ध धारण विश्वविद्यालय पुस्तकालय में संरक्षित प्रामाण्य प २

५ साहित्यालोचन एकाग्र संस्करण स २ ११ प० १८७

६ समीक्षा के सिद्धान्त डॉ. हरशंकर प्र स प १३२

होती थी ('प्रबन्ध कल्पना कथा') और आख्यायिका' ऐतिहासिक अर्थात् सहज उपलब्ध वस्तु की (आख्यायिकोपलब्धार्था)।^१

आख्यान

आख्यान भी कथा और आख्यायिका' का सजातीय शब्द है। 'आख्या' शब्द का अर्थ है 'कहना'। 'आख्या' में ही आख्यान शब्द निर्मित हुआ जिसका अर्थ है किसी पूर्ववस्तु का कथन। 'विष्णु पुराण' में इस शब्द का प्रयोग कथा प्रकार को सूचित करने के लिए हुआ है। उसमें कहा गया है कि पुराण के अर्थ विशारद व्यास जी ने आख्यान उपाख्यान, गाथा और कल्पसुद्धि सहित पुराण संहिता की रचना की।^२

'आख्यान और 'आख्यानक' शब्दों को समानार्थी माना जा सकता है। श्री एम० आर० काले ने 'आख्यानक' के सम्बन्ध में लिखा है— आख्यानक is a single episode as distinguished from आख्यायिका which is a continued story'^३

प्राचीन साहित्य में सर्वप्रथम ब्राह्मण ग्रंथों में मध्य पद्यमय आख्यातों के उदाहरण मिलते हैं। ऐतरेय ब्राह्मण में गुण शेष तथा 'शतपथ ब्राह्मण' में पुरुरवा उवशी के आख्यान मध्य पद्य मिश्रित हैं। ऐसे आख्याना का प्रारम्भ में गाथा या नाराशशी कहा जाता था और बाद में इन्हीं की इतिहास, पुराण आख्यान नाम दिया गया।^४

ऋग्वेद के लगभग १५ सूक्त ऐसे हैं जिनमें सवात्मात्मक आख्यान हैं। उनमें से यम यमी (१० ११) पुरुरवावशी (१० ६५), अगस्त्य-लोपामुद्रा (१ १७६), इन्द्र जन्ति नामदेव (५ १८) इन्द्र इन्द्राणी वपाकपि (१० ८६), सरमा-पणीस (१० ५१ ३) इन्द्र महन (१ १६५ १००) आदि आख्यान प्रमुख हैं। डॉ० एस० के० ए० ऋग्वेद के इन सवादा सूक्तों में आये आख्यानों को पौराणिक और निजधरी आख्यान मानते हैं।^५ यास्क ने निरुक्त में पुरुरवावशी के वक्त को सवाद और सरमा पणीस के वक्त को आख्यान माना है^६ और ऋग्वेद के व्याख्याताओं को आख्यानविद

१ साहित्य मन्त्र (कहानी प्रश्न) भाग १४ अंक ७ = जनवरी फरवरी १९२३ में प्रकाशित डॉ० मध्यात्र का लेख।

२ आख्यानश्चाप्युपाख्यानर्थाविति बृहस्पतिः ।
पुराणसंहिता चक्रे पुराणाथ विशारद ॥

—विष्णु पुराण तृतीय अंश अ० ६ श्लो० १५

३ Kadambari (Purvabhag) Bana Notes by M R Kale Third revised ed Pub Gopal Narayan & Co Bombay pp 19

४ हिन्दी महाकाव्य का स्वल्प विकास डॉ० शम्भूनाथ मिश्र प्र स १९५६ पृ० =

५ A History of Sanskrit Literature S N Das Gupta and S K De Calcutta 1947 pp 43

६ देवा मुनीन्द्रण प्रहिता पणिभिरसुर समदा इति आख्यानम् । —यास्क इति निरुक्त ११ २५

कहा ह ।^१ इसम यह स्पष्ट है कि वदिव का न म गाया आख्यान इतिहास पुराण और गाया नाराजसा जादि का रूप मिला जुला था और सम्भवन सभी समानार्थी रूप य ।^२ प्राचीन साहित्य म आख्याना का अधिकता पायी जाती है और उनकी परम्परा भी प्राचान है । इन आख्यानों का वस्तु-तत्त्व पौराणिक निज बरी मम सामयिक तथा कथित — उन चार प्रकार क पात्रो घटनाआ और परिस्थितिया को लेकर गन्तिया ह ।^३

एकद जागान शत्रु का प्रयोग मुख्यत वेदो ब्राह्मण ग्रन्थो पुराणो एव मंगलान् (रामायण तथा महाभारत) म आयी कयाआ के निण हा किया जाता है । प्राचीन काल म भी आख्यान से तात्पर्य पौराणिक कथानको सहण करता था जिनन इतिहास और कल्पना का मित्रा जुता रूप पाया जाता था ।^४

उपाख्यान

आख्यान की परिभाषा जान लेन के बाद उपाख्यान की परिभाषा ध्वन स्पष्ट हो जाती है । कही-कही आख्यान और उपाख्यान के प्रयोग म विणत-व्याप्ति और तथु व्याप्ति का अंतर नहीं किया गया है । महाभारत म शकुन्तला और नल आदि की जो कथाएँ मिलती हैं उनसे निण कनी आख्यान का प्रयोग मिलता है और कही उपाख्याना का । फिर भी आख्यान मे जो छोटा है और जो उसके अन्तगत साधी-कथा या अर्थ रूप म आता है उसी को उपाख्यान ही मना लेना सक्ती है । एक वाक्य म आख्यान की अन्तकथाओ को ही उपाख्यान कहन है ।^५ हमसे शत्रु म रामायण और महाभारत के इतिवन्त-वर्णन म जो उपाख्यान उपागत रूप म प्रयुक्त होने हैं या उनक आख्याना के अन्तगत प्रकी का काम करते हैं वे उपाख्यान कहनात है ।^६

पौराणिक आख्यान

एक यूनानी विद्वान फिराना मक्विनयो ने ठीक ही कहा है कि य पुराण गाथाएँ — चाहे हम उन्हें ग्रीक कहें अथवा आय या और कुर — उम घास के समान हैं जो प्रत्येक भूमि पर पगती हैं । हमार का कोई देश और को प्राचीन सभ्रानि एना न होगी जिसकी अपनी पुराण गाथाएँ न हों ।

१ यास्क वन निघन्त ५ २१ और ७-७

२ शिल्पो रणकाल्य का स्वरूप विशाग हा शम्भनाथ सिंह प ६

३ कौ प १

४ भारतीय प्रमाण्या काव्य हा हरिकान थीवास्तव प २

५ शिल्पुस्तानी भाग २ अंक ३ अक्टोबर् सिपम्बर १९५६ में प्रकाशित थी नमनेवर चतुर्वेदी का कथा के प्राचीन प्रकार शोधक लख प १ १

६ भारतीय प्रमाण्या की परम्परा भावाय परमात्म चतुर्वेदी प्रमावना प १

यहाँ यह प्रश्न उठता है कि पुराण गाथाएँ या पौराणिक आर्याण हम कहें क्या? चूँकि पुराण का अर्थ प्राचीन है इसलिए क्या सभी प्राचीन आर्याणों को पौराणिक आर्याण कहा जा सकता है ?

यद्यपि वैदिक साहित्य रामायण और महाभारत में भी बहुत-से आर्याणों का उल्लेख और विवरण हुआ है और पौराणिक आर्याणों का विकास क्रम जानने के लिए उनका मूल स्रोत का सन्धान आवश्यक होगा तथापि एक सीमित अर्थ में पौराणिक आर्याण जहाँ आर्याणों को कहा जाएगा वहाँ हिन्दू पुराणों तथा उपपुराणों से लिया गया है।

वैदिक साहित्य रामायण तथा महाभारत और पुराणों में जो आर्याण ग्रहण किये गए उनका मूल स्रोत वास्तव में लोकवाच्यता है जो सही अर्थों में 'पुराण' या प्राचीन कहा जा सकती है। उसी की वेदा, रामायण महाभारत तथा पुराणों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से ग्रहण किया। वेदों ने अपने काम के लिये लोकवाच्यता से लिये महाभारत ने किमी अर्थ प्रयोजन में उसका उपयोग किया। काव्यत्व के लिए उपयुक्त उससे अंशों को रामायण में लीया। इसी प्रकार पुराणों में लोकवाच्यता में प्रचलित कथाओं को अपने विशिष्ट साम्प्रदायिक मन या दृष्टिकोण से सम्बद्ध करने के लिए उनके रूप में आवश्यक परिवर्तन कर लिया। जहाँ बौद्ध तथा हिन्दू पुराणों में सौं अधिक प्राचीन है और कौन कम, इस विवाद में न पड़कर भी यह निर्विकल्प रूप से कहा जा सकता है कि इन सबका स्रोत एक था इनमें कथाओं के उपयोग का स्वरूप ही अलग-अलग रहा।

यह सम्भव है कि रामायण न वैदिक साहित्य से महाभारत न वैदिक साहित्य और रामायण से तथा पुराणों ने वैदिक साहित्य रामायण तथा महाभारत तीनों में कुछ ग्रहण किया है परन्तु जिस मूल स्रोत के मुखापक्षी वे सभी रहे जिस अर्थ भांडार के आगे वे सभी अपनी-अपनी कथाएँ कह रहे वही स्रोत या भांडार मुख्यतः लोकवाच्यता ही थी।

पौराणिक आर्याणों का अर्थ

रस्किन न पौराणिक आर्याण या धर्मगाथा के विषय में लिखा है— एक धर्मगुण (माइथोलॉजी) अपनी मूलतः परिभाषा में एक कहानी है जिसमें एक अर्थ सम्बद्ध है ऐसा अर्थ या प्रकृत होना आवश्यक नहीं है। ऐसी कहानी में ऐसा कोई अभिप्रेत अर्थ है यह उस कहानी की कुछ उन परिस्थितियों में साधारणतः विदित होता है जो साधारणतः हाता है अथवा शास्त्र के साधारण अर्थ में अस्वाभाविक कहानी है।'

रस्किन का यह अर्थ धर्म कथाओं में एक मूलतः सत्य का और सत्य

करता है। घम गाथाओं में जो जय प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त होता है उसका पीछे उसका एक गीर अथ प्रच्छन्न रहता है। पौराणिक आख्यान किमा आधिभौतिक या आध्यात्मिक रूपक का नियम है। जब तक उनका सही मर्म का न समझा जाय तब तक ऊपरी दृष्टि से पौराणिक आख्यान कपोल-कल्पित जगद्विनीय और व पर की उन्नत नग सकत हैं। पौराणिक आख्याना में 'ना अलौकिकता' होती है जिसके कारण उनका पाठक का साधारणीकरण कभी कभी नहीं हो पाता उसका मूल में कुछ तो है उनकी धार्मिक पृष्ठभूमि और कुछ है उनका अत्यापत्तिक (एलीगारिक) स्वरूप।

पौराणिक आख्यान मोक्षार्थक है। वह किसी विधामा या रीति रिवाज की उपयोगिता समान अथवा प्रकृतिक शक्ति या दवी व्यक्ति या अथ शक्ति या का रहस्य समझाकर मनुष्य का मस्तिष्क में स्थापित करत है। अतः लाव-कथाओं की भाँति उनके अर्थ में मरतता नहीं होती। साधारण नाक साहित्य में यद्यपि घमगाथा का समान समस्त रूप मिल सकता है पर उमम उम दिशिष्ट अथ की अतर्थापित नही मिलती जिससे उमका समस्त कथानक मूल बाज के रूप में किसी प्राकृतिक व्यापार का कोई अंग बन सके।^१

सामान्यतः पौराणिक आख्याना के अर्थ तीन प्रकार से विव जा सकत हैं (१) आधिभौतिक (२) आधिदैविक (३) आध्यात्मिक। आध्यात्मिक अथ वाक्याथ नहीं करत रहता अथ समान होता है जिसमें अर्थ का एक रूपका की प्रधानता होती है।

उचिततः तीन प्रकार की जाती है स्वभावोक्ति, रूपकवित और अतिगाथावित। विद्वान्-सम्मत बानें या एहिक ज्ञान की बानें स्वभावाक्ति पठति में वही जाती है। वित्तिक महिताए रूपकवित में वहा सुई है। पुराणा की वणन-पद्धति अति शयाक्तिपूण है। जब तक स्वभावाक्तिमय ज्वाति मिद्धात या प्राकृतिक व्यापार तथा रूपकमय वित्तिक साहित्य में अनिशयोक्तिपूण पौराणिक आख्याना को मिलाकर न दया जाय तब तब उनका वास्तविक अर्थ स्पष्ट नहीं हो सकता।

पर नु प्रस्तुत प्रश्न में पौराणिक आख्याना के आधिभौतिक, अधिदैविक तथा आध्यात्मिक अर्थों का स्पष्ट करना हमारा उद्देश्य नहीं है। अपन आप में यह अध्ययन का एक स्वतंत्र विषय हो सकता है।

हम प्रवृत्त में ता हूँम अपन को हिन्दी के सूफी कवियों द्वारा रचित प्रेमाख्याना में पौराणिक आख्याना तथा पात्रों के विविध रूप से किय गये प्रयाग का मर्म समझ सकत हैं।

१ अलौकिकता का अर्थ है अतीत्य दानवाय अममव विविध बलानाओं का सहायक निरन्तर तथा ज्ञान के समस्त दवी कारणान। एही घटनाओं अथवा वानों के समाम से एह अर्थक वित्तिक और मिद्धात बानाकरण पदा हो जाता है। अथ मानवीय भावनाओं की प्रयोगिता रूप हो जाती है। यहा साधारणकरण में बाधा टापती है।

—समीक्षा के निदात टों सदेव वा विष्णो ५० ११६

२ अत्रनाह माहित का अर्थमन टा सदेव वि म ५० ७

हिन्दी सूफी कवियों के प्रेमाख्यान और पौराणिक आख्यान

हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यानों अथवा सूफी कवियों द्वारा रचित हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्यात्मक पौराणिक आख्यानों का विविध रूप में प्रयोग हुआ है। कुछ प्रेमाख्यान तो ऐसे हैं जिनके कथानक पूरा रूप से किसी पौराणिक आख्यान या उपाख्यान पर आधारित हैं। इनके अतिरिक्त भी पौराणिक आख्यानों के प्रयोग का एक विस्तृत क्षेत्र इन प्रेमाख्यानों में मिलता है। भारतीय पौराणिक आख्यानों तथा पात्रों का आलंकारिक, दार्ष्टान्तिक प्रतीकात्मक और केवल उल्लेख के रूप में जो प्रयोग इन प्रेमाख्यानों में हुए हैं उनका क्षेत्र बहुत विस्तृत है। कुछ सूफी प्रेमाख्यानों में शामी परम्परा के पौराणिक आख्यानों का भी प्रतीकात्मक आलंकारिक दार्ष्टान्तिक एवं उल्लेखात्मक प्रयोग हुआ है। कुछ निजधरी पात्रों जैसे राजा विक्रम भोज भक्त हरि तथा गोपीचन्द आदि से सम्बन्धित कथाएँ भी इन प्रेमाख्यानों में अन्वयार दृष्टान्त प्रतीक एवं उल्लेख के रूप में प्रयुक्त हुई हैं। हिन्दी कथा साहित्य के ये निजधरी पात्र भी एक प्रकार का पौराणिक स्वरूप ही प्राप्त कर चुके हैं। सूफी काव्यात्मक नाथ पथ की विचारधारा का प्रभाव होने के कारण मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, जालंधरनाथ आदि नाथ सम्प्रदाय के आचार्यों की लोकप्रचलित कथाओं तथा उनके नामों का भी इन प्रेमाख्यानों में अनेक रूपों में प्रयोग किया गया है।

सूफी कवियों ने अपने प्रेमाख्यानक काव्यों में पौराणिक आख्यानों का जो विविध रूपों में उपयोग किया है उसकी विस्तृत चर्चा हम आगामी अध्यायों में करेंगे। यहाँ तो उसकी स्थूल चर्चा मात्र की जाएगी। पौराणिक आख्यानों तथा पात्रों का उपयोग उन्होंने कुछ तो तत्कालीन प्रचलित काव्य रूढ़ि एवं परम्परा के अनुरोध से किया और कुछ अपने विशिष्ट साम्प्रदायिक उद्देश्य की मिद्धि के लिए। सूफी कवियों द्वारा पौराणिक आख्यानों का उपयोग करने में सूचित करता है कि वे देव की हिन्दू परम्पराओं और सांस्कृतिक प्राणधाराओं से कितने घनिष्ठ रूप में जुड़े हुए थे।

पौराणिक आख्यानों के उपयोग की दृष्टि से प्रेमाख्यानों का वर्गीकरण

पौराणिक आख्यानों के उपयोग की दृष्टि में प्रस्तुत प्रबंध की अध्ययन-परिधि

में आनबाग मफी प्रेमाख्यानो अथवा हिन्दी सूफो कविया द्वारा लिखित प्रेमख्यानो को निम्नलिखित वर्गों में मरणिबद्ध किया जा सकता है —

- (१) पूरा आख्यानक काव्य ।
- (२) पौराणिक आख्यानो या पात्रो का प्रतीकात्मक प्रयोग करनेवाले काव्य ।
- (३) पौराणिक आख्यानो या पात्रो का आन्तरिक प्रयोग करनेवाले काव्य ।
- (४) पौराणिक आख्यानो या पात्रो का दार्ष्टान्तिक प्रयोग करनेवाले काव्य ।
- (५) पौराणिक नामो पात्रो या स्थानो का उल्लेख-मात्र करनेवाले काव्य ।
- (६) पौराणिक आख्यानो के माध्यम से सूफो दर्शन तत्त्व को निरूपण करने वाले काव्य ।
- (७) पौराणिक-आख्यान की कथानक रचिया का प्रयोग करनेवाले काव्य ।

इन शीपको के अंतगत हमने हिन्दी सूफो कवियो के जिन ५ प्रेमख्यानो का अध्ययन किया है उनका हम वर्गों में हम प्रकार बांटा जा सकता है —

१ पूरा आख्यानक काव्य

पूरा आख्यानक काव्य में हमारा तात्पर्य उन सूफो प्रेमख्यानक काव्यो से है जिनका अर्थानक किसी पौराणिक आख्यान या उपाख्यान पर पूणत आधागत है । सूफा प्रेमख्यानो में हम काव्यो का संख्या अधिक नही है । कवन दो ही काव्य हम देखि से पूरा आख्यानक हैं जिनमें एक भारतीय पौराणिक आख्यान (मल दमयन्ता आख्यान) का उपयोग किया गया है —

- (१) मरदास तख्तवी कृत नन-अमन (१६५७ ई०)
- (२) जान कब्रि कृत कथा नन-अमनो (१६६१ ई०) ।

गामी परम्परा के एक पौराणिक आख्यान को उकर निसा गया कवन एक काव्य ही मिनता है—

- शेख निमार कृत यूमुफ जुलखा (१७८० ई०) ।

२ पौराणिक आख्यानो या पात्रो का प्रतीकात्मक प्रयोग करनेवाले काव्य

(१) चण्डाल (२) मगावता (३) पन्मावत (४) चिन्तरखा (५) मधुमाती (मन्त) (६) माधवानल कामकन्ता (ज्ञानम) (७) चिन्तावली (८) जानदीप (९) कथा कवनावनी (१०) कथा कनकावता (११) कथा गननावती (१२) कथा पुष्प-वरिषा () नन-अमन (१४) हम तख्तिर (१५) इन्द्रावता (१६) अनुराग वामुरी ।

३ पौराणिक आख्यानो या पात्रो का आन्तरिक प्रयोग करनेवाले काव्य

- (१) चण्डाल (२) मगावता () पन्मावत (४) चिन्तरखा (५) मधुमन्ता,
- (६) माधवानल कामकन्ता (७) चिन्तावली (८) जानदीप (९) कथा कवनावनी

(१०) कथा वनकावती, (११) कथा कौतूहली, (१२) कथा कामलता, (१३) कथा पट्टपवरिपा, (१४) कथा रतनमजरी, (१५) कथा छीता (१६) कथा मोहिनी, (१७) कथा नल दमयन्ती, (१८) कथा मुभटराइ (१९) नल दमन (२०) हंस जवाहिर, (२१) इद्रावती (२२) अनुराग-बांसुरी (२३) यूसुफ-जुलैसा ।

४ पौराणिक आर्याना या पात्रों का दार्ष्टान्तिक प्रयोग करनेवाले काव्य

(१) चदायन (२) मगावती (३) पदमावत (४) चित्ररेखा (५) मधुमालती (६) माधवानन्द-कामकदला (७) चित्रावली (८) जानकीप (९) कथा रतनावती, (१०) नल दमन (११) हंस जवाहिर (१२) इद्रावती (१३) अनुराग वासुरी (१४) यूसुफ जुलैसा ।

५ पौराणिक पात्रों या स्थानों का उत्प्रेषण मान करनेवाले काव्य

इस वर्ग में वे काव्य सम्मिलित हैं जिनमें पौराणिक नामों पात्रों या स्थानों का अर्थ प्रवार से उपयोग करा व साथ साथ किसी सदभ में केवल उल्लेख मान किया गया है । ऐसे काव्य हैं—

(१) चदायन (२) मगावती (३) पदमावत (४) चित्ररेखा (५) मधुमानती (६) चित्रावती (७) जानकीप (८) कथा रतनमजरी (९) ग्रन्थ नल मजनु (१०) कथा रतनावती (११) नल दमन (१२) कथा नल दमयन्ती (१३) हंस जवाहिर (१४) इद्रावती (१५) अनुराग वासुरी (१६) यूसुफ जुलैसा ।

ग्रन्थ नल मजनु में केवल कुछ पौराणिक पात्रों का ही उल्लेख तथा है आर्याना का नहीं ।

६ पौराणिक आर्यानाओं के माध्यम से सूफी दर्शन-तत्त्व का निरूपण करनेवाले काव्य

(१) चदायन (२) मगावती, (३) पदमावत (४) मधुमालती (५) माधवानन्द-कामकदला (६) चित्रावली (७) जानकीप (८) कथा रतनावती (९) कथा छीता (१०) नल दमन (११) कथा नल दमयन्ती (१२) हंस जवाहिर (१३) इद्रावती (१४) अनुराग वासुरी ।

७ पौराणिक स्रोत की कथानक रूढ़ियों (मोटिपस) का प्रयोग करनेवाले काव्य

पौराणिक स्रोत की कथानक रूढ़ियों का प्रयोग करनेवाले काव्यों की संख्या पौराणिक आर्याना का किसी न किसी रूप में प्रयोग करनेवाले काव्यों की अपेक्षा अधिक है । विशेषतः जान कवि रचित 'प्रेमाह्वाना' का सदभ में यह उल्लेखनीय है

१ जान कवि के जिन प्रमाह्वानक काव्यों में पौराणिक आर्यानाओं या पात्रों का किसी न किसी रूप में प्रयोग किया गया है उनका संख्या केवल १२ है जबकि इस कवि ने २८ प्रमाह्वानक काव्य

किन्तु उनके जिन प्रमाण्याना में पौराणिक आख्यायनों का उपयोग नहीं किया गया है उनमें भी पौराणिक ख्योत की कथानक रूढ़िया का प्रयोग मिलता है। नीचे उन प्रमाण्याना का नाम की तालिका दी जा रही है जिनमें अन्य भारतीय लोककथा रूढ़िया का साथ-साथ भारतीय पौराणिक कथा रूढ़िया का व्यवहार किया गया है -

(१) चण्डायन (२) मगावती (३) पद्मभावत (४) विश्वरेखा (५) मधुमालती (६) माधवानल कामकल्या, (७) चित्रावती (८) नानदीप (९) कथा वैवलावती (१०) कथा कलावती (११) कथा कनकावती (१२) कथा कौतूहली (१३) कथा कामलता (१४) कथा सतवती (१५) कथा सीलवती (१६) कथा रूपमजरी (१७) कथा पुष्पवर्षिणी (१८) कथा तनमजरी (१९) कथा दुधिसागर या मधुकर मालती (२०) कथा रतनावती (२१) प्रिय लल मजनु (२२) कथा कामरानी पीतमलाम (२३) चंद्रमन सीलनिधान का कथा (२४) कथा छोटा (२५) कथा विश्वनाथवल दे (२६) कथा मोहिनी (२७) कथा कलदर (२८) कथा छविमागर, (२९) कथा नल दमयन्ती (३०) कथा मुभटराट्ट (३१) नल-दमन (३२) हम जवाहिर (३३) इन्द्रावती (३४) अनुराग-श्रीमुरी (३५) यूनूप-जुलता ।

लिख है। हमने इस प्रकाश में उनके केवल २ प्रमाण्यानों को ही उपयोगी पाया है। उनमें जिन प्रमाण्यानों को हमने छपने लिए उपयोगी नहीं समझा है वे हैं—(१) कथा कलकिया लिखा (२) छन्द सर पाननाहि की कथा (३) कथा कुलवती (४) कथा तमीम घनाते (५) कथा निरधत (६) शीरीनामा। ये छन्द प्रमाण्याना अन्त सामान्य कोटि के और अत्यंत लघुकाय हैं। पौराणिक आख्यायनों एक पाठों का उपयोग करनेवाले एक काव्य है—(१) कथा कलावती (२) कथा कनकावती (३) कथा कौतूहली (४) कथा कामलता (५) कथा पुष्पवर्षिणी (६) कथा तनमजरी (७) कथा रतनावती (८) प्रिय लल-मजनु (९) कथा छोटा (१०) कथा मोहिनी (११) कथा नल-दमयती (१२) कथा मुभटराट्ट ।

हिन्दी सूफी कवियों के पूर्ण-आख्यानक काव्य

‘पूर्ण आख्यानक’ काव्य में तात्पर्य ऐसे काव्य से है जिसका पूरा कथानक किसी पौराणिक आख्यान पर आधारित हो। मूल पौराणिक आख्यान और पुराण साहित्य में उसके हानवाले क्रमिक विकास से कुछ भिन्नता या कवि की मौलिक उन्मादना उस काव्य में भले ही मिले किंतु सामान्य रूप से उसके कथानक का टीचा पौराणिक आख्यान का आधार न छोड़े।

प्रस्तुत प्रबंध में हमने जिन पंजीस प्रेमाख्यानक काव्या को अपने अध्ययन का विषय बनाया है उनमें से केवल तीन काव्य पूर्ण-आख्यानक हैं। वे हैं—सूरदास लखनवी कृत नल-दमन जान कवि कृत कथा नल-दमयती तथा शेख निसार कृत ‘यूसुफ जुलखा। इनमें से प्रथम दो तो भारतीय पौराणिक पूर्ण आख्यानक काव्यों की श्रेणी में आते हैं और तीसरा यानी यूसुफ जुलखा शायी पौराणिक पूर्ण आख्यानक काव्यों की श्रेणी में। इस अध्याय में हमारा उद्देश्य इन सभी काव्यों के कथानकों की आधुनिक पौराणिक कथाओं को बताते हुए उनमें उनकी भिन्नता का निर्देश करना है। कवि का मौलिक उन्मादना को भी यथास्थान स्पष्ट किया जायगा।

रामो ग्रन्थ से हिन्दी में जो आख्यानक काव्या एवं प्रेमाख्याना की परंपरा आरम्भ हुई उसमें १६५७ ई० में पूर्व लिखित कोई ऐसा प्रमाण्यन नहीं मिलता जो नल-दमयती के आख्यान पर आधारित हो। सूरदास लखनवी द्वारा सन् १६५७ ई० में रचित नल-दमन ही नलाख्यान-परम्परा का प्रथम हिन्दी काव्य जान पड़ता है। इस काव्य से केवल चार वर्ष बाद यानी १६६१ ई० में जान कवि ने कथा नल-दमयती’ शीर्षक प्रमाण्यन लिखा जो इस परम्परा में हिन्दी का दूसरा काव्य है।

‘नल-दमन’ और ‘कथा नल-दमयती’ के आख्यान का मूल स्रोत

इन दोनों काव्यों में नल-दमयती की प्रसिद्ध प्रेम कथा को आधार बनाया गया है। नल-दमन में कवि सूरदास लखनवी ने अपने काव्य में कथा-स्रोत का स्पष्ट उल्लेख कर दिया है।

एक दिवस मारे मन घाई । भारत पड़े साथ चित साई ॥
तहि के परय पढ़त जब घावा । नल की कथा खोज हिय लावा ॥'

कथा 'नव-रमयती' में कवि जान न कथा 'नात का रूप' उल्लेख न करत हुए त्रिविध कथा का पत्रक उनकी जच्छा वाता का पुनःकर जवन प्रथम का कथा संगठन करत की बात कही है।^१ परन्तु नव-रमन की भाँति कथा नल दमयती का भा मुख्य नात महाभारत ही है यह बात के विवचन स्पष्ट हो जाएगा ।

'महाभारत में वर्णित नला रत्यान

महाभारत में सूत्र किसी भाग्यीय साहित्य में नल रमयता का जाध्यान नया मिलता । पहली बार महाभारत के दशम स्कंध के २८ अध्याय (अध्याय ५२-८) में नलापात्रान की एक नव रमयता के प्रमास्थान का विशद वर्णन हुआ है ।

कथा—जब धर्मराज युधिष्ठिर दुर्गोधन में द्यूत शीला में पराजित होकर वनवास का दण्डमय जीवन बिता रहे थे और एक दिन ग्नातिपूज मनाश्रा में चिता दून दूध के तमी कनी से बल्लभ क्रिये जा गये । युधिष्ठिर का ग्नाति का क्रम करन के लिए उन्होंने उनकी नव का जाध्यान सुनाया । उन्होंने बताया कि नव न भी दून-क्रम के कारण बन्त दुःखमय जीवन बिताया था । इस प्रकार महाभारत में नलापात्रान रत्यान कथा के रूप में आया है । इस आश्रयन की निम्नलिखित चरणा न विवचन किया जा सकता है—

(१) निवस दश ग राजा जार परमन का पुत्र नव अत्र चालन विद्या में निरुण था । वह उत्त शीला का भी प्रमी था । उगक नार्त्त ग नाम पुष्कर था ।

(२) विदम दग (आधुनिक बरार) के राजा का नाम भीम था । उनकी राजा शी कुण्डिनपुर थी । भीम नि नवान हान के कारण निन्तित और भिन रहन थे । रमन नामक एक ऋषि उनके राजभवन में पधार । राजा के मकार में प्रगत हान र्ति न भीम तथा उनकी रानी का एक कथा और तान पुत्र हान का बर्यान दिया । र्या का नाम रमयती और पशा का नाम त्रमश दम दात और दमन रखा गया ।

१ नव रमन सम्पादक डा० रामदेवहरण धरवाल और या दोसतराम जपाल प्रकाशक क०म०

द्वितीय तथा माया विनायक विद्यापात्र भागसा छ २५ चौ० १२

२ नव-रमयता कथा बयानी । कवन जान जसी विधि जानी ॥

कथा में बहुत दृश्यत भाँति । एक भाँति प पात्र नाहि ॥

घोर घोर भाँति में लगे । साया भनी बन्त गा कही ॥

कथा करि गत भर्त्स विचारि । कमा कोरी गय निवारि ॥

कथा का मति बलि-बलि लीयो । चतुरनि हनु धरगया कोयो ॥

बन्त दिव्योनी निर्वै मवाम । धति मगध हे क्षेत्र प्रशाम ॥

(३) नल और दमयती दोना अत्यन्त रूपवान थे । एक दूसरे को प्रत्यन्त देख बिना ही, रूप गुण श्रवण मान स दोनो म परस्पर प्रीति उत्पन्न हा गयी ।

(४) एक दिन नल दमयती के विरह म दुःखी होकर अपने उद्यान मे बठे थ । उनकी दष्टि स्वर्णिम पखो वाले कुछ हंस पर पडी । उन्होन उनम से एक हंस को किमी प्रकार पकड लिया । हंस न नल से कहा कि आप मुझे मारें मत मैं आपका प्रिय माघन करूंगा । दमयती क नास जाकर आपकी ऐसी प्रशसा करूंगा कि वह आपका छाड किसी अन्य पुरुष का नही चाहेगी । नल ने हंस को मुक्त कर दिया ।

(५) सभी हम उडन हुए विद्वान देश की ओर गय । कुण्डिनपुर म पहुँच कर वह नुःस हंस दमयती के पास गया और उससे उमन नल के हृदय की खूब अतिशयोक्तिपूण प्रशसा की और उनके हृदय म नल के प्रति अनुराग उत्पन्न करन म सफल हुआ । दमयती न अपना प्रेम मन्त्र हंस के माध्यम से नल के पास भेजा ।

(६) दमयती जब नल क विरह म दिन दिन मुरझान लगी । उसकी सखियो न उमका राय पहचान लिया । उन्हाने राजा भीम को सूचित किया । भीम न अपनी वटी को विवाह योग्य जान उसके लिए स्वयवर का आयोजन किया । देश दश के राजा दमयती को पाने क लाभ म उस स्वयवर मे जान लग । नारद जीर पवत ऋषि के द्वारा स्वलोक म इस स्वयवर का समाचार पहुँचा । इन्द्र सहित अग्नि यम और वरुण लोकपाला न स्वयवर म भाग लेन का निश्चय किया और मत्स्य लोक की ओर चल पडे । मान न उनकी भेंट राजा नल मे हुई जे स्वय दमयती क स्वयवर म एक प्रयाशी के रूप म जा रहे थे । चारा देवताओ न नल स कहा कि तुम हमार दूत बनकर दमयती के पास जाओ और उससे कहा कि वह हमसे किसी एक का अपना पति चुन ले । नल पहल तो इम दौतर काम के लिए हिचक पर इन्द्र के आदेश से उन्हें जाना ही पया । इन्द्र की कृपा न वे अदरर रूप म दमयती के अति सुरक्षित प्रामाद म प्रवेश पा सके । दमयती उनक सीदय को देखकर मुग्ध हो गयी । उनके पूछने पर नल न अपना परिचय दिया और देवताओ का सदेश कहा । दमयती न नल के साथ ही विवाह करने का सकल प्रवृत्त किया किन्तु नल के ऊपर देवताओ का कोप न हा इसलिए कहा कि मैं देवताओ की उपस्थिति म आपका वरण करूँगी । नल न दमयती का निश्चय देवताओ को बतला दिया ।

(७) स्वयवर का दिन आया । इन्द्र वरुण यम तथा अग्नि—ये चारा देवता पहल स ही नल का रूप धारणकर नल क पास जा बठे थ । दमयती न जब पाँच नला को बठे दखा तब वह इम दुविधा म पड गयी कि इनम वास्तविक नल को काम परचने ? देवताओ का पहचानन क जो लक्षण उस बात थे उनम से कोई भी उनम न था । अतत उनने देवताओ से ही प्राथना की कि वे अपना रूप स्वय प्रकट कर दें ताकि वह नल को पहचान सक । देवताओ न दमयती म वह शक्ति उत्पन्न कर दी जिससे उम देख सूचक लक्षणा का निश्चय हो सके । दमयती ने दखा उनमे स जो

(२३) इस घटना क दसवें दिन बाहुक नामधारी नल इक्वाकृवशी राजा ऋतुपण के नगर अयोध्या म पहुँच । बाहुक न बताया कि मैं सब क्लाएँ जानता हूँ याव शास्त्र म नियुक्त हूँ और अब चालन विद्या म तो मुम जसा पारगन इस पृथ्वी पर दूमरा कोई ह ही नहीं । राजा ऋतुपण न बाहुक को अश्व शाला का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया और वाष्ण्य तथा जीवल दो सारथियों को उनके अतगत रख दिया । वाष्ण्य कभी नल का सारथि रह चुका था परंतु परिवर्तित रूप म वह नल को न पहचान सका । इस प्रकार दमयती का स्मरण करन हुए नल अनातवाम करने लग ।

(२४) उधर विन्भ नरेश भीम को अपने जामाता और पुत्री पर पडी विपदा का कुमवाद मिल चुका था । और वह उन्हें बूढ़न का याकुल था । उमन कई ब्राह्मणों को प्रभूत पुरस्कार (एक सहस्र गौएँ अग्रहार—कर मुक्त भूमि—तथा एक समृद्ध गाव जादि) न्त का लोभ दकर नल जाग दमयती की खोज करन क लिए यन तत्र भेज दिया ।

(२५) सुत्रेव नामक ब्राह्मण सयाग स चदि नगर म जा पहुँचा । उसने वहाँ दमयती को देखा । दमयती ने भी उम दखकर पहचान लिया । दमयती ब्राह्मण से सबका कुशल-अेम पूछनी हुई रोन लगी । समाचार पाकर राजमाता और सुनदा भी बट्टा जा गया । सुत्रेव न दमयती का वास्तविक परिचय उन्हें दिया । राजमाता तो दमयती की मौसी ही निकली । उहान बताया कि दशाण दश के राजा सुदामा की दो पुत्रिया थी जिनम से एक का (राजमाता स्वयं का) विवाह चेत्रिराज वीरबाहु से हुआ और दूसरी का विवाह विदभ नरेश भीम स ।

(२६) दमयती सुत्रेव क साथ सम्मानपूर्वक कुण्डिनपुर आ गयी । माता पिता, पुन-पुत्री से मिलकर वह प्रसन्न हुई । किंतु नल की खोज कराय बिना उस कहाँ बन ? अपनी माता से उसने सकीव छोकर कह दिया कि यदि मुझे जीवित देखना चाहती हो तो मेरे पति का पना लगवाओ ।

(२७) राजा भीम ने नल का पता लगाने के लिए जगह जगह ब्राह्मण भेजे । दमयती ने सब खोजी ब्राह्मणों को बुलाकर कहा कि तुम जहाँ कहीं जाओ उच्च स्वर मे यह कहना कि एक निष्ठुर पति ने जिसने अग्नि का साक्ष्य देकर जीवन-मयन्त पत्नी को साथ रखन की प्रतिज्ञा की थी घोर बन म उसे अकेली छोड दिया और जान-जाते वह उसकी आधी साडी भी फाडकर लेना गया । उस निमम को अपनी पत्नी को इस अमहायावस्था म छोडत तनिक भी दया न आयी ।

(२८) दीघकाल के अनंतर पणाद नामक ब्राह्मण जयोंया पहुँचा । उसने राजा ऋतुपण की राज सभा म जाकर उच्च स्वर से दमयती का उक्त सदश कह सुनया । किसी ने उसका प्रत्युत्तर नहीं दिया पर बाहुक ने उसे एकांत म ले जाकर कहा कि जिस पति ने ऐसा किया होगा विवशतावश ही किया होगा उसने अपनी

पत्नी का बप्ट रंगा न जा रहा हागा । पर गांधी कही जानवाली स्त्री का यह बग़ाव्यवहार कि यह अपन पति की निन्दा कर रहा है ! पति द्वारा रयागी जान पर भी उत्तमकुम की पतिव्रता पत्नी उमकी निन्दा नहा करता । पणा न बाटूक का जमा दगा और उमग जगा गुना समयता म जा कहा । समयता का मन्त्र हा गया कि कर्माचिन बाटूक ही तन हो जिनन छपवग धारण कर रगा हो ।

(२६) समयती न अपनी माता का का परामर्श रकर मुन्त्र ब्राह्मण का अयोध्या नजा और उमग कर्मा लिया कि जय तुम ऋतुपण स मित्रा ता कहना कि नन का बुद्ध पता न मित्रन म समयती न दूसरा पति चुनन का निश्चय किया है और कर्मा स्वयवर कर्मा ही प्राण वाच है । कर्मा मूर्खोन्ध कर्मा समयता जिन्ही और का हा जाणगी ।

(३०) मुन्त्र न अयोध्या पहुँचकर राजा ऋतुपण स एगा ही कहा । ऋतुपण का बाटूक की अन्ध विद्या का ध्यान आ गया । यह सोचकर कि आज-आज म मी योजना की दूरी रथ द्वारा पार करान की क्षमता बाटूक म ही है उहान बाटूक को बुलाया । बाटूक रूपधारी नन को पन्ना ता समयती कर्मा निन्दा स्वयवर का बाण मुनकर धान हुआ पर यह सोचकर कि एक बार चलकर समयता उचित रगा उहानि ऋतुपण का सध्या मे पूव कुण्डिनपुर पहुँचान का आशयन म लिया । अन्धी मन्त्र के चार टुकल लियायी नन का मोड नन न रथ म चान । ऋतुपण न बाण्य का नी मार न दिया । पवन गति म रथ कुण्डिनपुर की निन्दा म तौन चना । एक जाण ऋतुपण का उत्तराय गिर पहा । ऋतुपण न रथ रोकर उठया मोगन का हृत्ता ध्यन की । बाटूक न कहा रतनी दर म तो कर्मा स्थान चार काम पाछ छुट गया । ऋतुपण न बाटूक म कर्मा कि तुम अन्ध चानन विद्या म पदु हा तो मे गणित विद्या न निपुण । प्रमणम्बन्ध ऋतुपण न माग क एन वट्टा वक्ष क सार पता का गिनती क्षण भर म कर दी । बाटूक न रथ रोककर गणना का सत्यता दर्शना चना । उहानि कर्मा के कथ का काटकर गिरा लिया । गिन ता उत्तन ही पन निक्ल चिनन ऋतुपण न बताय थ । बाटूक न उनकी गणित विद्या का त्राहा माना । प्रमन हाकर ऋतुपण न बाटूक का दूत विद्या सिखा दी और कहा कि मे तुम स अश्वविद्या फिर सीख लूंगा । जन ही नल न दूत विद्या साखा उनक गरीर स कलि भय क मार काँपना हुआ निक्लकर मामन खचा हा गया और अपन जपराधा क लिए क्षमा माँगन लगा । नन न उन क्षमा कर लिया । कर्मा बहू क वक्ष म मगा गया । रम घटना का ऋतुपण या बाण्य न न जाना । मूयाम्त स पूव हा ऋतुपण का रथ कुण्डिनपुर म प्रविष्ट हो गया । रथ का धार गजना मुनकर समयता भा अटारी पर चक्कर दयन लगा ।

(१) ऋतुपण को यह दयकर आश्चर्य रगा कि नगर म स्वयवर का कोई टाट नही है सबत्र उपासी छापी है । उसम भी अधिक जा ध्य हुआ राजा भीम को

स्वयंवर के लिए तत्पक्षी त्वरा से ऋतुपण के आने पर। अस्तु, ऋतुपण का बड़ा सकार हुआ।

(३२) इस बीच दमयती ने अपनी सखी केशिनी को बाहुक की प्रत्यक्ष गति विधि पर दृष्टि रखन और सूचना देने रहने का आदेश देकर अश्वशाला में भेज दिया। इस बात के लिए उसने खासतौर से सहेज दिया कि बाहुक को आग या पानी न लिया जाय। केशिनी ने देखा कि ऋतुपण के लिए रसाई बनाने की जा सामग्री बाष्क के पास आयी। उस लेकर उहीन खाली घने की दृष्टि मात्र से लवालब भर लिया एक मुट्ठी तिनके लेकर मूय की ओर दिवाकर उनमें अग्नि प्रज्वलित कर ली और बात-की-बात में भोजन तयार कर दिया। केशिनी ने यह भी देखा कि छोटे द्वार भी बाहुक के प्रवेश करते समय स्वयंमय बड़े हो जाते हैं और बाहुक द्वारा मसले जान पर भी फल अधिकाधिक विकसित और सुवासित होने जाते हैं। उसने दमयती को यह सब बातें जा बताया। दमयती ने बाहुक के बनाये भोजन में न कुछ प्राप्त मँगाकर चखा तो उसमें वही सरस स्वाद मिला जा नल के बनाये भोजन में मिलता था। केशिनी के हाथ दक्षपत्नी ने अपने पुत्र तथा पुत्री को भी बाहुक के पास भेज दिया। बाहुक उन्हें आलिंगन में भरकर रो पड़े। केशिनी का उहान अपने रोने का कारण यह बताया कि उनके भी दो बच्चे थे जो अब इतने ही बड़े हुए होंगे इन्हें देखकर उनकी याद हो आयी। दमयती ने यह सुना तो उनका रहा सहा स नेत्र भी जाना रहा और उसने अपनी माता से कहा कि बाहुक नामधारी व्यक्ति जो राजा ऋतुपण का मारिय है अथ कोई नहीं, नल ही है।

(३३) परंतु उनके रूप रंग के परिवर्तन का क्या कारण हो सकता है, इस सम्बन्ध में आश्चर्य होने के लिए उसने माता का परामर्श लेकर बाहुक को अपने महल में बुला भेजा। दमयती को सामन पाकर नन फूट फूटकर रो पड़े। नल की जाया की पुत्रतिया कात्री था और नन के किनारे कुछ-कुछ लाल थे। दमयती और नन न परस्पर उपागमन लिये।

(३४) दमयती ने अपने पातिव्रत्य के साध्य के रूप में वायु, मूय और चंद्र देवता का आह्वान किया। अतिरिक्त ने वायु ने कहा कि 'तीन वर्षों से दमयती तुम्हारे शोक में रही है और हमने उसकी शीत रक्षा की है। दमयती जानती थी कि अमोघ्या से कुण्डिडापुर की सी याजन दूरी तुम्हारे अतिरिक्त अथ कोई एक दिन में पार नहीं कर सकता। अतः दमयती ने अगले दिन ही स्वयंवर होने की बात कहलायी थी। अतः नागण हर्षित हाकर दुःखिया बजान लग और पुष्प वर्षा करन लग। नल के मन में अब मरुत दूर हो गया।

(३५) नन ने तत्काल नागराज कर्वाटक का स्मरण किया और उसके द्वारा प्रदत्त दानो दिव्य वस्त्र ओज लिये। ओढत ही, उहीन अपना पूव स्वरूप प्राप्त कर लिया। दमयती का उहोने गती से लगा लिया। दमयती के माता पिता तथा

अनुपम का भाव नुभं गवां मिता । मय प्रमनं त्वा । तगर न उत्तमं गनाय ।
जान तया । अनुपम न नन म गवा-नाय नन क विण उतम क्षमा माया । नन न
ननुपम यो अत्र विद्या (शास्त्रिणां विद्या) प्रमानं वा । अनुपम न नन को पुन द्युत
विद्या ता रत्नं ममनाया ।

(६) एक माग कुण्डिनुरः २२५२ नन (स्मय नी का यत् एतत्पर) कुछ
गना क माय निपथ त्वा को चय । नन न पुनर न जूआ मसन का प्रस्ताव किया ।
जूआ न गान की लक्षा म नन न पुनर का युद्ध की तुनीती दी । दौव पर नन न
अपनी मपति लयनी - मय कृत्वा तगा त्रिया जीर पुनर न माग गाय । स्म
यार पहन ही प्रयाग म नन न जण म पुनर का हग दिग । पुनर न नन क प्रति
जसा लुब्धयनर किया था उमका स्मरण कर उमका मह मूय गया । किन्तु नन न
पुनर का क्षमा कर त्रिया और उपरो गाय ता एक अज्ञ निर्वाह क लिए दे त्रिया ।

(३७) नन स्मयनी का विश्व म विना करा ताय । अपन पुत्र-पुत्री तथा
पत्नी महित क वपों तक मुगपूवक रहे और यायपूवक जामन बरन रहे ।

‘महाभारत’ के परवर्ती ननाभ्यानाधारित संस्कृत काव्य

महाभारत क अनन्तर संस्कृत म कई काव्या न ननाभ्यान को अपना
आधार बनाया । उनम म प्रमुख हैं - ननाभ्य काव्यम^१ नन चम्पू या दमयन्ती
कथा^२ । कथा-सरितागर^३ और नवधीय चरितम^४ म भी नन कथा मिलती है ।

१ ननीभ्य काव्यम के रचयिता महाकवि कालिदास माने जाते हैं । (दे स्टीरी घाक मय -
सया० मोनियर विविधम प्रस्तावना प० ६ और ननीभ्य काव्यम प्रका बेंकटपुर प्रम
बम्बई प १) ।

इस काव्य के पाठ उल्लसों एव २१६२ श्लोका म नन दमयन्ती की कथा वर्णित है । ए की
काय कालिदास का समय ४० ई क घातपात मानत है किन्तु कुल विनाद् इनका काल पत्नी
कती ई पु तक ले जाते हैं । (दे० ए त्रिया घाँक संस्कृत लिटरेचर - ए मो कीय और
संस्कृत साहित्य का म विनाम वाचस्पति गरोवा) ।

२ नन चम्पू या दमयन्ती कथा रचयिता त्रिविजय भट्ट (१ वीं शती ई पूर्वाह्न) । इस काव्य
की शाली दुर्ह है । हमें नन-स्मयन्ती की कथा का पूर्वाह्न ही वर्णित है उत्तराह्न नग । का
शब्द-निर्णय सागर प्रम बम्बई त स १६३१ ।

३ कथा-सरितागर रचयिता कश्मीर क कवि सोमदेव प्रथम छन्द प्रका - बिहार गण्टभाया
परिपद् पटना समिका डॉ वासुदेवशरण घणवान प ५ घलकारदमी शीपक नवम
सम्बक छी तरय । कथा-सरितागर की रचना १०६३ १ ८१ ई के मध्य हुई । प्रथम शती
ई० म गवाद्रय न पशाको म बहुकहा (बहलकथा) लिखी । उसका सार कश्मीरी कवि क्षम
न बहुकथा मकरा म रिया । कथा सरितागर म भी बहुकथा का वत ग्रहण किया गया
है । क्षम क कथा क २ कय काय रचा गया । हमसे यह सूचित होता है कि कथा
सरितागर म घाया दुष्सा ननाभ्यान कभी वाक्या मे घा चका होगा ।

४ नवधीय चरितम शीघ्र (१२वीं शती ई उत्तराह्न) । टाकाकार-प शिवान्त शर्मा
प्रका - निर्णय सागर प्रम बम्बई १६३३ ई सप्तम संस्करण । इस काव्य के २२ सर्गों क
२८३ श्लोकों म घालकारिक शली में उमकन कहना विनाम के साथ नन दमयन्ती प्रमाभ्यान
वर्णित है ।

महाभारत के बाद और नल-दमन की रचना के पढ़ने, नल की प्रथा, म जो न विक्रम हुआ उसको जान लेना आवश्यक है।

'नलादय काव्यम' में 'महाभारत' के नलोपाख्यान से भिन्नता

(१) इसमें दमन ऋषि और राजा भीम के पुत्रों का कोई उल्लेख नहीं है।

(२) रूप गुण श्रवण जनिन प्रम तत्र और दमयती-दोना ही पक्ष में है।

(३) इन्द्र अग्नि वरुण यम के अतिरिक्त वायु भी दमयती के स्वयंवर में उपस्थित होते हैं।

(४) दूतत्व करन के निमित्त नल को देवताओं से कोई वरदान नहीं प्राप्त होता।

(५) स्वयंवर में वापसी में इन्द्रादि नाम्पालों की नट केवल कलि से होती है द्वार से नहीं।

(६) नल ने हसों पर घाती पंकी झुंघातें होकर नहीं वरन् दमयती के अनुरोध पर।

(७) दमयती जब मर्ने के साथ चदि जा रही थी तब माग में जैगी हाथिया द्वारा साथ को रीं जाने की घटना नहीं घटती।

'नलादय काव्यम' की शेष घटनाएँ 'महाभारत' के 'नलोपाख्यान' के ही अनुसार हैं।

'नल चम्पू' ('दमयती-कथा') में 'नलोपाख्यान' से कथांतर

(१) विदेह नरेश भीम को रानी को रात में स्वप्न दिखायी देता है कि शिवजी उसे पौरजात मारेंगे वे रहे हैं। शिवजी स्वप्न में ही उसे दमन ऋषि के आन की पूव सूचना देने हैं।

(२) रूप-गुण श्रवण जनिन प्रेम-दोना ही पिशा म है।

(३) नल हम को नहीं छात्रों तत्र आकाशवाणी होती है कि यत्र दमयती का प्राप्त करान में तुम्हारे लिए महत्विक होगा और तुम्हारे तथा दमयती के मध्य दूतत्व करेगा।

(४) नल-दमयती पहल में एक दूसरे से परिचित नहीं है। आकाशवाणी से दमयती नाम सुनकर नल उसके विषय में जानना चाहते हैं।

(५) दमयती के स्वयंवर में जाने समय नल की भेंट इन्द्र, वरुण, यम तथा कुबेर से होती है। (महाभारत में कुबेर की जगह अग्नि से मित्र का उल्लेख है)। इन्द्रादि लोकपालों से स्वयं नल यह कहते हैं कि मैं आपको क्या प्रिय बूढ़े।

(६) इन्द्रादि के भोजन पर नल अदृष्ट रूप में दमयती के अंतःपुर में जाते हैं। वहाँ दमयती एक सखी के मा यम में नल से बात करती है। शीत की दृष्टि से यह उदभावना उत्तम है। नल अंतःपुर में नहीं। स्वयंवर का क्या हुआ कुंडल पता

स्त्रिया का चर्चा पल गयी जानी है तब क्या म लग भाटिन आ जानी है और वह विम्भ-
नरश की क्या सम्यती क रूप की प्रतया करत उत पछिना स्त्रिया म ना बढ़कर
बनाना है । सम्यती क लग शिष्य तो रूप का बान क रूप नन क हृदय का काम
पीछिना बसा गती है । महाभारत क रूप का ना नीति तब समन म भी भाटिन बा
म क्या म नहा अती । काई हम मानव शशी म यान और नूनन कर यह विष्णुम
नीय नगी मन्ना गीतिण क्वाचित कवि न भाटिन का बानना की है ।

नन-समन का दमयती क हृदय म नन क प्रति प्रीति मन्ना ह्य समन हा
जानी है । दमयती क हृदय म समन प्रमोदय का बलाना प्रम की नीचिता म कवि
क विष्णुम की परिचापर है और मूफ़ी-दान की आर उतकी म्मान को मूचित करनी
है ।

(२) महाभारत की दमयती तो केवल अयत सम्यती है किंतु 'नन समन
की सम्यती पछिना है—नहा पछिनी स्त्रिया स भी योग है ।

(३) सम्यती के जन्म का बक्षान बक्षान का भाटिन कन्नी है कि दमन
क्रिय ने चार पक पन राती का मान क निण स्थि जिनम उसक एक पुत्री और तीन
पुत्र का । (महाभारत म क्या का उत्तम नगी ग्या है । महाभारत क अनुसार
समन क्रिय राजा भीम क घर पर आन है जब कि नन समन म राता नीम उनक
दानाय नगर ५ बाहर उनकी कुटिया पर जान है ।)

(४) महाभारत म दमयती क स्वयवर म इद्र वरुण अग्नि और यम
उपस्थित होत है नन समन म अग्नि का स्थान कुवर को मिन गया है ।

(५) महाभारत म जगै नन को दमयती क समन अपना परिचय स्वय
दान पन्ना है क्या नन-समन म दमयती नन का दान ही पहचान लता है । समन
प्रेम का महत्व मूचित होना है ।

(६) महाभारत म स्वनागण द्रवमूचक लक्षणा को स्वय यनना दन है ताकि
दमयती वास्नविन नन को पञ्चान कर सक । किंतु नन-समन म दमयती जचित
प्रभु की शरण जाती है और भगवन की कृपा से आकाशवाणी जानी है जिसके द्वारा
द्रवमूचक लक्षण बनाव जान है और दमयती को दुत्रिया स उबारा जाता है ।

(७) महाभारत म इन्द्रादि नाकपान प्रमत्त हाकर नन का आठ वरदान
दन है । नन-समन म तीन स्वना ही चार वर देते है । कुंजर वाई वर नही गत ।
इन्द्र ने नन को जानिहोत्र विद्या मिलायी (महाभारत म नन को प्रारम्भ से ही इस
विद्या का गान बतयाया गया है ।) यम न शतायु हान और अग्नि न वशवती हान का
वर लिया (महाभारत म यम न नन की बनायी रमोई म उत्तमात्म स्वात् हान और
उनकी घम म निच्छा हान का वर दिया है) । वरुण न इच्छा करत ही जल प्रवट हान
का वरदान लिया । (महाभारत क वरुण इसके अतिरिक्त भी एक वरदान दत है—
पुष्पमात्रा का कनी न मुरगान और सदा उत्तम गव-युक्त रहन का । नन-समन

क नन म प्रारम्भ म किसी चमत्कारिक शक्ति का उल्लेख नहीं है। कवि न अत म नन की पहचान के लिए दमयती द्वारा कशिनी के हाथ एक फूल भिजवाया है। यम न नल का शतायु होने का बरतान दिया। यही कारण है कि दमयती के मर जान पर नल मरना चाहकर भी इसलिए नहीं मर पाता, क्योंकि उमकी जायु क सो वय पूरे हान म अभी पाँच वय कम थे।

(८) 'नल दमन' में स्वयंवर से लौटत ममय इद्रादि देवताओं को केवल कलि मित्रता है महाभारत की भाँति कलि और द्वापर दोनों नहीं मिलत। जिस पक्षा प नल अपनी प्राती फेंकता है वह नल दमन' में कलि ही होता है। वह नल की धोती ल उड़ता है। महाभारत में जूए के पास पक्षियों का रूप धरकर बात हैं और नल को नग्न बना जाते हैं।

(९) 'नल दमन' में एमा प्रसंग आता है कि तीन दिन के भूखे प्यासे नल को एक नदी के तट पर मरी हुई दा मछलिया मिल गयी। उह पकाने के लिए दमयती को देकर नल स्नान करने चल गय। दमयती न मछलिया का जस ही साफ करना चाहा उसकी अँगुलियों का जमुत पीकर वे मत मछलिया जीवित हो गयी और जल में जा कूटी।

दमयती का अँगुलियों में अमृत होने की बात कवि की मौलिक उदभावना नहीं मानी जा सकती क्योंकि 'नल दमन' के चार वय बाद ही लिखित जान कवि की 'कथा नल-दमयती' में भी अँगुलियों के अमृत से मत मछलिया के जीवित ा जाने का प्रसंग आया है। जान कवि ने सूरदास की अनुकृति की हाँगी एमा नहीं लगना। निष्चय ही इन दोनों कवियों ने लोक कथाओं में अँगुलिया में अमृत होने की कथा कृति को ग्रहण किया होगा।

निम्नेह दमयती की अँगुलिया के अमृत से मछलियों के जीवित हो जाने की घटना का समावेश करके कवि ने चमत्कारिक तत्त्व की योजना कर ली है परंतु उमकी य कल्पना अव्याप्ति दोष से ग्रस्त है। क्या यह जसगत और हास्यास्पद नहीं लगता कि अँगुलियों में अमृत रखनवाली दमयती स्वयं अमर नहीं बन सकी? जगती हाथियों के परा म रों हूए बनजारो को जिनात के लिए उसन अपन इस अमृत का उपयाग क्या नहीं किया? वे तो उसने सहायक थे।

(१०) 'नल-दमन' में दमयती बनजारो के नायक के ममयान युधान पर उनके साथ चनेरी (महाभारत' में यह नाम 'चेरि' है) चनन्ती है पर महाभारत में व स्वत बनजारो के साथ लग लेती है।

(११) 'नल-दमन' में दमयती नल की परीक्षा लन के लिए अपन एक चर क हाथ रमोई का सामग्री, एक खाली घड़ा और एक फूल भिजवाती है। महाभारत में दमयती अपनी सगी केशिना की नन के पास भजती है, परंतु रमोई का ममान देवर नडा, बरन नल की गति विधि पर श्रुति रखन के लिए। महाभारत में

तन क प्रवण करे पर छोट छोटे खरवाओं के भा ऊँचे हो जान की बात है जो नल-रमन में नहीं मिलता।

(११) 'नल-रमन' में तन की पूष-स्वयम् प्रदान करने के लिए अपने लिए पान के आग्रहों के बर्णन नाग स्वयं उपस्थित हुआ है और अपना लिए पूषकर उठा ही नहीं कबुला पड़ना है किन्तु महाभारत में बर्णन के बाद का उल्लेख नहीं है कथन कबुली पड़कर ही नल अपना पूष रूप प्राप्त कर लेता है।

(१२) मूरुगम न कथा का जन्म महाभारत के समान न कर उसमें कुछ मौलिकता लाटा है। नल-रमन में तन जब ६५ वर्ष के हुआ गया तब दमयती की मृत्यु हो गयी। नल भरना चाहकर भी न मर पाया क्योंकि यम न उनको मृत्यु हान का दरदान जा दरगा था। पर तन का मन राज-काज न उलट गया। गाय-भार-रत्न पुत्र-प्राप्त का गी कर के मर्यादा बनकर पर म निकल गया और एक दिन ममास्थि-दर्या में उनका गंगारान हो गया। एका-वर्ग-पूषण-अन-नलाख्यन पर आधारित किन्ती पूष आख्यानक काव्य का नहीं हुआ है। इस काव्य के आदि और अन्त में कवि न जो मौलिक उद्भावनाएँ का है उनमें उगन-त्रैविक-प्रेम का अतीव प्र-का-व्यमयता म अभिमन्त्रित कर दिया है।

कथा-नल-रमयती और 'नलापाख्यान' म कथान्तर

तन-कवि-कृत कथा-नल-रमयता म कथा का आरम्भिक जग-नल-रमन का नीति-कल्पित न-हानर महाभारत के अनुसार है। कथा के अर्थ अत-भा-मना-भारत के नलापाख्यान का ही अनुकरण करते हैं फिर भी दोनों में कुछ अन्तर है।

(१) कथा-नल-रमयती में रमन ऋषि स्वयं राजा-भाम-के-मत्स्य-में-पशुपिन-नहा-हान-करन-राजधानी-के-समीप-एक-नदी-तट-पर-उनका-आरमन-मुनकर-निर्मलतन-राजा-गानी-एक-दशना-का-जात-है। दमन-ऋषि-राजा-का-एक-पता-नाम-आर-बुद्ध-दास-रत-है-और-कहते-हैं-कि-य-चीज-रानी-का-अभा-मिना-ना-दत्त-प्रभाव-न-यह-एक-पुत्र-और-एक-पुत्र-का-माता-बनगी-महाभारत-म-राना-ना-एक-पुत्र-और-तान-पुत्र-उत्पन्न-हान-है। ऋषि-न-कथा-का-नाम-दमयती-और-पुत्र-का-नाम-दास-रत-का-भी-सुधाव-लिया। दमयती-के-पता-ना-जात-के-दास-राजा-भाम-एक-द्वार-परि-ऋषि-का-दर्शन-करन-जात-है। ऋषि-दम-दार-रमयती-का-भविष्य-कथन-भी-करते-हैं-कि-रम-कथा-के-भाग्य-म-दुःख-लिया-है-रम-का-पति-रम-छान-देगा-यह-वन-वन-भटकती-फिरगी-पर-इसका-शीत-वाई-नग-नगा-कर-सकगा। तीन-वर्ष-बाद-पुन-पसाका-मिलाप-अपने-पति-स-हो-जाएगा। राजा-भीम-रम-भविष्यवाणी-की-बान-अन्त-तव-किमी-की-नहीं-कहते-अपनी-रानी-तक-स-नहीं। भविष्यवाणी-वाची-यह-उद्भावना-अर्थ-किसी-काव्य-में-नहीं-है। कवि-का-यह-मौलिक-सूच-है।

() दमयंती और नल दोनों एक-दूसरे को स्वप्न में देखते हैं। स्वप्न दशन से इनके पूर्वानुराग का आरम्भ होता है। दमयंती तो स्वयं चित्रकर्त्री थी इसलिए उमन स्वप्न दर्शित पुष्प का चित्र बना लिया और बाद में उसमें चित्र दशन में प्रेम का आरम्भ हुआ। नल खुद चित्रकार नहीं था इसलिए उन्होंने देश-विदेश की राजकुमारियों के चित्र मँगवाये उन चित्रों में दमयंती का चित्र स्वप्नदर्शिता नारी से मिल गया। नल प्रणय कर बैठे कि विवाह करूँगा तो इसी नारी से। स्वप्न दशन और चित्र की बात भी हम नलाख्यान पर आधारित किसी अन्य पूर्णाख्यानक काव्य में नहीं मिलती। यह भी कवि जान का इस कथा का विकास में अपना योग है यद्यपि स्वप्न दशन और चित्र दशन की कथा एक ही कथाओं में पहले से ही मौजूद रही होगी।

(३) कथा नल दमयंती में राजा नल का इन्द्रादि देवताओं का दूत बनकर, अश्वरूप से दमयंती के महल में जानवाला प्रसंग उल्लेखित किया गया है। जब दमयंती वरमाला लेकर नल के पास पहुँची और उनके मौर्य को देखकर चमत्कृत होने से उसके पर जगमगान लग तब देवताओं (इन्द्र, वरुण, यम तथा अग्नि) का महत्त्व हुआ कि दमयंती नल को ही वरण करेगी। उस समय उमका छलन के लिए उम चारा नहीं नल का रूप बना लिया और नल के पास जा खड़ा हुआ। इस काव्य में भी नल दमन की भाँति दमयंती को दुविधा में उवारन के लिए आकाश में होती है जिसमें देवताओं की पहचान के लक्षण बताये जाते हैं।

(४) कथा नल दमयंती में इन्द्रादि देवता नल को काँच वर नहीं देते।

(५) दमयंती के स्वयंवर से छोटत समय इन्द्रादि देवताओं की गैर कलि अथवा द्वार में हान का उल्लेख इस काव्य में नहीं है।

(६) महाभारत में नल और पुष्कर का दुर्बुद्धि का कारण बताया गया है कलि का उनमें प्रवेश। किन्तु कथा नल दमयंती में ऐसे किसी दवा तत्त्व की याचना नहीं की गयी है। इसमें नल के दुर्बुद्धि के लिए उसके जहकाँ और अभिमान का उल्लेखित बताया गया है। पुष्कर ने भी नल की दुर्बुद्धि का ही लाभ उठाया। धृतराष्ट्र में नल की हार इसलिए हुई क्योंकि यह भाग्य का फल था। इस काव्य में भाग्य को पद पद रूपों ठहराया गया है। भाग्य पर दोष मडन का विचार लोक विश्वास पर आधारित है।

(७) कथा नल दमयंती में नल पत्नियों के भुण्ड पर नहीं वरन एक पक्षी पर अपना उत्तरीय फेंकते हैं। उसे लेकर उड़ जाते हैं पर वे निपट नग भी नहीं होते। महाभारत में व पत्नी धृतराष्ट्र के पास होते हैं नल दमन में पत्नी स्वयं कलि हाना है, किन्तु इस काव्य में पत्नी केवल पक्षी ही होता है कोई दवा छनना नहीं।

(८) इस काव्य में यह कहा है कि मत्त मछलियाँ जल पका ली गयीं तब वे जीवित होकर पानी में डूब पड़ीं। किन्तु उमका कारण दमयंती की अँधुता है।

का हाना तही बताया गया जगा कि नल-दमन में। 'महाभारत में ता मदलियों का प्रसंग ही नहीं आया है।

(६) कथा नल दमयन्ती में वन में भक्तकी दमयन्ती की एक अजगर द्वारा जान निय जा का उन्वेण है कि तु नाग कुल्ल परिजन कर दिया गया है। महाभारत में अजगर पूरी तरह दमयन्ता का निगल तहीं चुका होता है कि तभी भाषा जा जाता है पर तु कथा नल दमयन्ता में नाग दमयन्ती को पूरा निगल चुका होता है तब एक घंटा हो जाता है। बिरहन का दमयन्ती का नाग का पट में पहुँच जान स यही नाग भी जल उठा। घंटाही न नाग का पट में आग भी दहती नागी का जो दया का माता कि दगको निवातकर दमन अपना दिया कर लूगा। वस उसन नाग का पट पाश्चर दमयन्ती का निवात लिया। तजिन तस ही वह नाग का मारन चला नाग न उगी को लाल किया।

(१०) कथा नल दमयन्ती में दमयन्ती की भेंट एक सरिता तट पर एक महात्मा से होती है जो उसकी विषय तथा गुणवर उस आश्वामन देन है कि तारा पनि तुझे शीघ्र मिला।

(११) कथा नल दमयन्ती में साथ या वनजारा में दमयन्ती की भेंट होन, उनका साथ साथ चदि या चदेरी नगर का जोर जान और माग में जगला हाधिया द्वारा उनसे रोने जान का कोई उल्लेख नहीं है। यहाँ एक नयी ही कल्पना कवि न की है। जिस सरिता-तट पर दमयन्ती की भेंट महात्मा से होती है, उस सरिता का दमयन्ती अपन पातिव्रत का प्रभाव से बिना नौका के ही, पार कर जाती है। उस पार जान पर वह देखती है कि राजा सुबाहु का सना का पडाव पडा है। राजमाता और सुबाहु की अग्निनी राजकुमारी सुनदा भी साथ हैं। राजमाता दमयन्ती पर कृपाकर वही न उसे अपन साथ चदरी से आती हैं और उस स्नहपूर्वक अपन पास रखती है। इस प्रसंग का इस रूप में उल्लेख न ता महाभारत में है न अथ किसी नताख्याना धारित काव्य में।

(१२) नल दायगिनि से जिस नाग को बचात है उसका नाम कथा नल दमयन्ती में कर्कोटक नहीं दिया गया है। दसवें दृग पर जब नाग नल को डस लेता है और उनका रंग काला पड जाता है तथा हाथ पाँव छोटे हो जात हैं तब नाग उनका अपनी कंचुल तथा देवताजा के दो वस्त्र देता है। वह कहता है—जब तू अपना पूव रूप चाहे मेरी कंचुल का जला देना मैं प्रवट हो जाऊंगा और इन देव वस्त्रों को पहनने ही तू पूववत मुँर हो जाएगा।

कंचुल जलान से कर्कोटक का प्रकट हान की बात कथा नल दमयन्ती में हा मिलती है।

(१३) चूँकि कथा नल दमयन्ती में इसी देवताजा में वरदान प्राप्त करने का काइ उल्लेख नहीं है इसलिए यहाँ हम वाहक नामधारी कल्प और बीने नल का

ऋतुपण के समथ अपना परिचय इन शब्दा मे देत हुए सुनत है— मैं सूय की तरह शीघ्र अथ चलन कर सकता है, मुझे घाडो की अच्छी परख है, मैं आग-पानी की महयता लिय बिना स्वादिष्ट भोजन बना सकता है और मुझे जूआ खेलना भी आता है । इम प्रकार 'कथा नल-दमयती' म नल क य गुण दवी वृषा स प्राप्त न होकर स्वाजिन जान पडने ३ ।

(१४) महाभारत म नल की परी ग लनवाली कशिपी दमयती की सखी होता है, 'कथा नल दमयती' म उसका नाम सुनशी हो गया है और वह सखी स दासी बन गयी है ।

(१५) अयोध्या मे विदभ जात समय ऋतुपण के उत्तरीय के उड जान का घटना का सो 'कथा नल दमयती' म उल्लेख है पर नु ऋतुपण द्वारा चहेडा क वध के पता तथा फना का गिनन का उल्लेख नही है । न यही कि ऋतुपण न भाग म नल का दूत िद्या मिखायी । यह काय उहोन विदभ म नल के रहस्य का उद्घाटन हा जान के बाट किया है । पुन द्वारा बदल म ऋतुपण को शालिहान विद्या सिखान का कोई उल्लेख 'कथा नल दमयती' म नही मिलता ।

(१६) इम काव्य म, नल के सामन दमयती क साध्वीपन की साक्षी जाकाश वाणी क द्वारा दिनायी गयी ह । महाभारत' म वायु अतरिक्ष से यह साक्ष्य दता है ।

(१७) अत मे 'नल-दमन की भांति हा कथा नल दमयती म भी कुछ मौनिक उद्भावना मिलती है । यही पुष्कर के साथ नल जब दुबारा जूआ खेलत हैं तब शत यह ठहरती है कि नल हारें तो सैयासी बन जायें और पुष्कर हारे तो पूरा राय नन को मिल जाय । महाभारत म नल ने इस बार सारी सम्पत्ति और दमयती तक को दाव पर लगा दिया है । जीत जान पर नल महाभारत की भांति हा पुष्कर के साथ कोई दुव्यवहार नही करते ।

(१८) 'कथा नल दमयती' म नल अपने पुत्र इन्द्रसेन के वयस्क हो जान पर उने राजकाज सौंप दत हैं और स्वयं दमयती को लेकर बन चल जात हैं । बद्धावस्था म नल की मृत्यु हो जान पर दमयती उनक शव का चिता पर रखकर सती हो जाती है । दमयती के गती हो जान का यह प्रसंग केवल 'कथा नल दमयती' म पाया जाता है, अथ किसी नलाख्यानाधारित काव्य म नही ।

६ 'यूसुफ-जुलेखा काव्य की परम्परा

सूफी कवि शेख निमार कृत 'यूसुफ जुलखा' एक भारतीय कथा पर आधा गित हिन्दी का एक अथ पूण-आख्यानक काव्य है । इस अख्यान का मूल अर्थ

'आल्ड टेस्टामेंट' (पुरानी बाइबिल) में वर्णित एक कथा है जो बाद में 'कुरान' में भी गृहीत हुई। कुरान की इस कथा का आधार पर फारसी के प्रसिद्ध कवि जामा न १४८३ ई० में यूसुफ-जुनखा मसनवी लिखी थी।

नेत्र निमार ने १२०५ हि० (स० १८४७ या १७६० ई०) में जामा की मसनवी और कुरान की कथा का आधार पर यूसुफ जुनखा लिखी। उनके पूर्व उद में बीजापुर दरबार के कवि हाशिमि द्वारा एक मसनवी की नाम में लिखी जा चुकी थी।^१ बंगला में अठारवां शताब्दी में गरीबुल्ला ने भी इस कथानक का आधार पर काव्य रचना की थी। यह कृति श्रेष्ठ निमार का कृति से बस दो वर्ष बाद ही लिखी गयी।^२ शायद निमार की यूसुफ जुनखा का अतिरिक्त एक अन्य सूफ़ी कवि शायद निसार ने निमार का लगभग सत्तर वर्ष बाद, सन १६१७ ई० में यूसुफ जुनखा का प्रमाण्यान का आधार पर प्रेम स्तवण लिखा। यहाँ इस कथा का विकास देखने के लिए मुहयस निम्न चार कथा का उपयोग किया जाएगा—

(१) आल्ड टेस्टामेंट (बाइबिल का ईसा-पूर्व अंश)।

(२) कुरान शरीफ (सूफ़-यूसुफ और 'बना उबरिउ' अध्याय)—अरबी।

(३) यूसुफ जुनखा (जामी)—फारसी।

(४) यूसुफ जुनखा (शखनिसार)—हिन्दी (अवधी)।

१ घोड टेस्टामेंट ईसाया की समस्तक बाइबिल का वह अंश है जिसमें जाहरेट (ईसा मसीह) से पहले के सत्रों (मोज़स या मसा धारि) द्वारा किये गये उपाय सचलित हैं। दि होली बाइबिल (घोड एण्ड य टेस्टामेंट) प्रकाशक—वासि से क्लोथर टाइप प्रस सदन—ग्लास्गो—चपाक १६५२

२ शयद कुरान शरीफ धन की प्रमाण्य वकीर प्रकाशक—श्री प्रभाकर साहित्यालोक रानी कटरा लखनऊ १६५६

३ मध्ययमान प्रमाण्यान डा श्याममनोहर पाण्डेय प ३३

४ शख निसार ने यह प्रथम धपनी कपीनी में लिखा जबकि उनकी धाय १७ वर्ष की हो गयी थी।

सत्तावन वरस की धाऊ। तब उपजे यह कथा क चाऊ ॥

सात दि वस मह कीह समापत। दुरमति नाम रह्यो सो समत ॥

हिजरी सन बाह स पावा। वरनेउ प्रम कथा यह साँवा ॥

भट्टारह स सतासीमा। सबन विक्रम सेन नरेता ॥

सतर स बारह पुनि साबा। सतरह स नबर ईसा वा ॥

कवि निसार की धरन २२ वर्षीय इकलौत बेट लतीफ की मय से बहुत सदमा पडवा। वे धारदार याकब (यूसुफ क रिता) को याद किया करते थे क्योंकि उसकी भी पुत्र शाक सहन करना पडा था।

५ हाशिमि की मय १६६७ ई में हुई उसके पूर्व यह काव्य लिखा गया होगा। वे वही प ८७ और भारतीय प्रमाण्यान की परम्परा प० १५५

६ भारतीय प्रमाण्यान की परम्परा प १०३

‘आल्ड टेस्टामेंट’ में इस कथा का रूप

‘ओल्ड टेस्टामेंट’ में मूसा (मोजेज) की पहली पुस्तक (फ़स्ट बुक ऑफ़ मोजेज) जिसे साधारणतया जेनसिस कहा जाता है के अध्याय ३६ में ५० तक जोसेफ की कहानी आयी है। कहानी इस प्रकार है—

अब्राहम और उनकी पत्नी सगर से इसाक या इमहाक (Isaac) का जन्म हुआ। इसाक का विवाह रेवका से चालीस वष की आयु में हुआ। जब एसाउ (Esau) और जैकब नामक दो जुन्ना बच्चे रेवका से उत्पन्न हुए तब इसाक की उम्र ६० वष की थी। रेवका जैकब को अधिक स्नह करती थी और इमाक एसाउ का। जब दोना बच्चे बड़े हो गये तब रेवका ने एक स्नि दृष्टपूर्वक अपन प्रिय पुत्र जैकब को अपन पति से आशीर्वाद दिला लिया, एसाउ अपने पिता के आशीर्वाद से वंचित रह गया। इस कारण में वह जैकब से घणा करने लगा।

बाद में जैकब का विवाह अपन मामा लबन की दो बंटियों लीह और रैचेल से हुआ। लीह कुम्प थी और रचेल सुन्दर। जैकब तो केवल रचेल से ही विवाह करना चाहता था परन्तु उसका मामा बड़ा काँड़िया था। उसने यह आन्वासन देकर कि यदि तुम मरे यहा सात वष तक रहकर सेवा करो तो तुम्हें रचेल से ब्याह दूंगा जैकब ने अपन पाम रखा। लेकिन सात वष बाद घोड़े से उसका विवाह अपनी बड़ी बटी लीह से कर लिया। रचेल का प्राप्त करण के लिए जैकब को सात वष तक और अपन मामा की मना में रहना पडा। मामा ने दोना लडकियों के साथ एक एक दासी भी दे दी थी। लीह की दासा का नाम जिलपा था और रचेल की दासी का नाम था वीहा। जैकब को लीह से ६ पुत्र (रुबेन, सिमिअन, लेवी, जूडा इसाकर जेबुलुन) हुए और एक पुत्री (दीना) हुई। विवाह के कई वर्षों तक रचेल के कोई सतान न हुआ। लीह के ६ पुत्र हा जान के बाद जैकब का रचेल से दो पुत्र हुए जाजेफ और बेंजामिन। लीह की तामी जिलपा से भी उसे दो पुत्र (गड और अशर) हुए और रचेल की दासी वीहा से भी दो पुत्र (डन और नफाथी)। इस प्रकार जैकब के बारह पुत्र थे और एक पुत्री थी। इन सारी मतानों में जैकब अपनी प्यारी पत्नी रचेल के दोना पुत्रों को विगेषत जाजेफ का वृत्न चाहता था। जोजेफ अपन सभी भाइयों में अधिक सुन्दर था। वह जैकब की सुती की मतान था। बेंजामिन जैकब को दो कारणों से प्यारा था—एक तो वह रचेल का पुत्र था दूसरे उसको जन्म कर रचेल का देहात हो गया था। मान-विहीन शालव। पर पिता का अधिक स्नह होना स्वाभाविक ही था।

[उपर्युक्त कथा में जेनसिस (फ़स्ट बुक ऑफ़ मोजेज) के अध्याय ३६ तक पूरा हो जाता है। अध्याय ३७ से जोसेफ से सम्बन्धित कथा प्रारम्भ होती है जो अध्याय ५० तक चलती है।]

जोसेफ १७ वष का हो चुका था। वह भेद चरान जाया करता था। जैकब ने जोसेफ के लिए एक लम्बा कुत्ता (चोगा) बनवाया जिसमें वहिं थीं। जोसेफ के

सोता भाई एक तो या ही उससे जलत था क्योंकि वह पिता को अधिक प्यारा था, लेकिन कुर्ता बनवान वाली बात से तो वह और चिढ़ गया।

जोराफ न एक स्वप्न देखा खेत में वह अपने भाइयों के साथ अनाज की अटिया बाँध रहा था। उसकी अटिया उठकर सीधी गड्डी हो गयी और उसके भाइयों की अटियाएँ उनसे चारा और एकत्र हो गयी और उसकी अटिया को उहान भुक्कर आदाब सा बजाया। जब जोराफ ने इस स्वप्न के विषय में अपने भाइयों का बताया तब वे चिन्तित होकर बोले कि क्या तुम हम पर शासन करने का स्वप्न देख रहे हो? उनकी घणा उसके प्रति और बढ़ गयी।

जोराफ ने कुछ दिनों बाद दूसरा स्वप्न देखा सूप चढ़मा और ग्यारह तारे उसको प्रणाम (सिजदा) कर रहे हैं।

जोराफ ने इस स्वप्न का चर्चा अपने पिता से की। पिता ने भी उस चिटका — 'क्या मैं तुम्हारी माँ और तुम्हारे भाई तुम्हारे आगे जमीन पर माथा टके?' जोराफ ने भाई अधिन ईप्यालु हो उठे। परन्तु जोराफ ने पिता का यह बात याद रखी।

जोराफ के भाई भी भेड़ चराने जाया करते थे। एक दिन वह पहल जा चुके थे। उनके पिता ने पीछे से जोराफ का भी उनसे पाम भजा। भाई डोयन तक पहुँच चुके थे। जोराफ को आता देकर उहान मिसकुट किया कि आज इस जान से मार टालें। लेकिन सबसे बड़े भाई स्वप्न ने सुनाव दिया कि इसको मारने के बजाय यह ज्यादत अच्छा होगा कि हम जंगल में एक गड्ढे में गिरा दें। स्वप्न की मशाफी कि भाइयों के चल जान पर वह जोराफ को गड्ढे में से निशान लगा और पिता के पाम पहुँचा देगा।

जोराफ तब पास आया तब उसके मौतल भाइयों ने उनका लम्बा कुत्ता उतार कर उस नगा कर दिया और उसे एक गहर गड्ढे में डबेन दिया। गड्ढे में पाना नहीं था। ऐसा करके वे माना खान गठे। तभी वहाँ से मिस की ओर जाता था एक काफिला गुजरा।

जोराफ ने सुनाया कि जोराफ का मानने के बजाय इस से काफिले के मालिक के हाथ चढ़ना अधिन लाभदायक होगा। पिता का यह सुझाव पसन्द आया गया। उहान जोराफ का गड्ढे में से निकाला और काफिले के मालिक के हाथ उस चाली के २० शकत (यहलिया का प्राचीन सिक्का) के बदले वच दिया। काफिले वापस जोराफ का मिसल ल गया।

जोराफ भाई स्वप्न जा कहीं चला गया था, जब लौटकर आया तब उसने जोराफ को गड्ढे में नहीं पाया। वह अपने कपड़े धोवन लगा और बोला कि हम अनाजान को क्या जवाब देंगे? इस पर अन्य भाइयों ने एक बकरी मारी और उसके गून में जोराफ का कुर्ता रग लिया। उस के अपने पिता के पाम लाय। बाल हम यह मिला है कि गिन यह आपका पुत्र का वस्त्र है या किसी और का? जबकि न कुर्ता पहचान

लिया और समझ लिया कि दरि दो ने जोसेफ को फाड़ ख़ाया । कई दिना तक उसन अपन लाडसे बटे का शोक मनाया ।

काफिल के मालिक ने जोसेफ को मिन्न ले जाकर फराओ (बादशाह की उपाधि) के एक राज्याधिकारी पोटिफर के हाथ उसे बच दिया ।^१

[जिनेसिस ३८ म जूडा के विवाह और उसके बच्चा आदि की कहानी नहीं गयी ह । जोसेफ का कोई उल्लेख इस अध्याय म नहीं आता ।]

जिस पोटिफर न जोसेफ को खरीदा था, वह मिन्न के बादशाह (फराओ) के रक्षक दल का सनापति था । जोसेफ के जाने के बाद से सनापति के घर म सुख समृद्धि बटन लगी । उसका जागमन गुम मानकर पोटिफर न उसका जनानम्बान की सारी व्यवस्था का प्रभारी बना दिया । घर से वह केवल खान पीन का नाता रखता । शेष सारा उत्तरदायित्व जोसेफ को सौंपकर वह निश्चिन हो गया ।

जोसेफ की खूबसूरती ने गजब ढाया । उसके मालिक की बीवी न उस पर अपनी निगाह डाली । उसने जासेफ स कहा कि मेर साथ सोओ किंतु जोसेफ न इकार कर लिया । उसने कहा—मेर मालिक ने मुझ पर ही सारा घर छोड़ रखा है मैं उनक साथ विश्वासघात नहीं कर सकता ।

पोटिफर की बीवी उसे रोज रोज परेखान करने लगी । एक दिन जब घर म कोई दूसरा पुरुष न था उसन जोसेफ का कपडा पकड़ लिया और उससे कहा—'सोओ मेर साथ तकिन जोसेफ न अपना वस्त्र उसी के हाथ म छाड़ दिया और भागकर घर स बाहर निकल आया । उस औरन ने चिल्लाकर घर क लोगो को इकट्ठा कर लिया और कहा कि देखो मेर पति न कसा हिंदू गुलाम मुझे लाकर दिया है जो मेरा अपमान करने की नीयत रखता है । आज उसन कुचेष्टा की । मैं चिल्ला पटी इसलिए वह भाग गया । उनका यह कपडा मेरे पाम रह गया है ।

पति क आने पर उसन कहा—देखा तुम्हारे नीकर न मेर साथ कसा व्यवहार किया है । पोटिफर का क्रोध भडक उठा उसन जोसेफ को कपखान म डाल दिया । लेकिन खुदा न कद म भी जासेफ पर महरबानी की । जेलर का प्रेम और विश्वास उसे प्राप्त हो गया । जेलर न उसको कदिया का मेट बना दिया ।^२

दस घटना के कुछ समय बाद बादशाह (फराओ) के मुख्य रसोइय और मुख्य परिचारक (चोफ बटलर) ने अपने व्यवहार स बादशाह को अप्रसन्न कर दिया । दोना का उमी बदग्वान मे भेज दिया गया जिमम जोसेफ पहले से ही कद था ।

एक रात दोना कदियो न अलग-अलग तरह के स्वप्न दथे । उनकी समय म उन स्वप्न का कुछ अर्थ न आया । जासेफ म उन्होंने जब चर्चा की तब उसने उनका स्वप्न पूछा ।

१ जिनेसिस ३७

२ वही ६

मुख्य परिचारक ने बताया—'मैंने देखा कि अगूर की एक लता है। उसमें तीन टहनियाँ हैं। ज्योंही उसमें कलियाँ फूटती हैं फूल निकल आते हैं और फिर अगूर के गुच्छे पक जाते हैं। फराजो का प्याला मेरे हाथ में है। मैं उसमें अगूरों को निचोड़ता हूँ और फराजो के हाथ में धमा देता हूँ।

जोजेफ ने इस स्वप्न का यह अर्थ बताया—तीन टहनियाँ तीन दिन की सूचना हैं तीन जिनो के भीतर फराजो तुम्हारा सिर उठाएँगे और तुम्हें तुम्हारे पहले बाज ओहल पर बहाल कर देंगे। तुम पहले की ही तरह फराजो के हाथ में फराजो का प्याला दे सकाग। लेकिन जब तुम्हारे अर्धे दिन लौट आएँ तो मुझे भूल मत जाना। बाग्शाह से मरना बिक्र करना। मैं निर्दोष हूँ। मुझे व्यथ ही कष्ट में डाला गया है।'

मुख्य रसोद्भय ने भी अपना स्वप्न बताया—मेरे सिर पर रोटियो की तीन टाकरियाँ थीं। सनस ऊपर वाली टाकरी में फराजो के लिए नाना प्रकार के व्यजन रखे थे। परन्तु मैंने दया कि मेरे सिर पर रखी उन टाकरी में चिटियाँ चुग रहा था। जोजेफ ने स्वप्न का यह फल बताया—'तीन टाकरियाँ तीन दिन हैं। तीन जिनो के भीतर फराजो तुम्हारा सिर घड़ से अलग करवा देंगे। एक पड़ पर तुम्हारा ताण लटका दी जाएगी और पत्नी तुम्हारा माँग नाच नाच कर लाएंगी।

तीसरे दिन फराजो का जन्म हुआ। उसने तीकरा का दावत खा। इस खुशी में उसने मुख्य परिचारक का रिहा कर दिया। परिवार में पुनः उस मस्जिद का प्याला पकना सका। किन्तु वह जोजेफ का भुना बटा। उधर मुख्य रसोद्भय का फाँसी पर लटका दिया गया।'

इसके दो बड़े बच्चे हुए फराजो ने एक स्वप्न देखा। स्वप्न यह था—वह नीचे नदी के तट पर खड़ा है। बगार पर सान मांगी ताजी गाएँ चन्दा चली आ रही हैं। ऊपर आकर वे घास चरने लगीं। उनमें पाँच-बीछ सात दुवनी पतली मन्मिल सी गाएँ नन्दा के द्वार से जायी जो उहाँ माटा-ताजी गाथा का गा डाला। लेकिन उनसे खानर भी वे बसी हा मरियत बनी रहा। उसने ब्राह्मण वादशाह की नाच टूट गयो। घोड़ी दर बाट उगकी आँखें फिर उग गया। उसने तुम्हारा यह स्वप्न देखा कि अनाज का गान बानियाँ हैं—एक भूँ पूरे दाना वाली। मातो बानियाँ एक ही डटल पर उगी हैं। उनके बाट सात दूसरी बानियाँ उग आया। उनके दान विचर और नि मन्थे। पुरवा हवा में ये बानियाँ छितरा गया। फिर उहाँ पहलवाती साता पुष्ट बानियाँ का निगल दिया। यदा ब्राह्मण की नीद टूट गयी। इन स्वप्नों के कारण बाग्शाह का चित्त प्रभुन विचर हुआ उठा। उसने मिस्र के सभी ज्योतिषियों और चतुर सयाना का बुनाया परन्तु कोना उन स्वप्नों का अर्थ न बनला मना।

तभी मुख्य परिवारक का जोजेफ की याद आ गया। उसने बाग्शाह से उसका जिक्र किया। बाग्शाह के आदेश पर जोजेफ वन्नीगूह से मुक्त कर दिया गया। उस

नहना धुलाकर, अच्छे कपड़े पहनाकर बादशाह के सामने पेग किया गया। जोसेफ ने कहा कि मैं किस योग्य हूँ कि आपके स्वप्नों का अर्थ बता सकूँ, परन्तु मेरे भीतर जो खुश है, वही इनका अर्थ बताएगा। आपके दोनों स्वप्न तत्त्वतः एक हैं। इनके द्वारा इश्वर ने आगामी घटनाओं की सूचना दी है। सात मोटी लाजी गाए सात वर्ष हैं और सात पुष्ट बानें भी सात वर्ष ही हैं। जो सात मरियल-सी गाए बाद में आयीं, वे भी सात वर्ष की ही सूचक हैं। इस स्वप्न का अर्थ यह है कि सात वर्ष तक मिस्र में खूब अच्छी फसल होगी। लेकिन अगले सात वर्षों में भयंकर अकाल पड़ेगा। फसल बिल्कुल न उगती। आप किमी ईमानदार और चतुर आदमी को मिस्र का प्रशासक बना दें अच्छी फसल व सात वर्षों में किसानों से उनकी उपज का पाचवा भाग वसूल कराएँ और उस अन्न का जमा रखवाएँ। अकाल के दिनों में यही अन्न काम आएगा।

बादशाह को जोसेफ से बचकर ईमानदार और चतुर आदमी दूसरा नहीं खिचावी दिया इसलिए उसने उसका ही मिस्र का प्रशासक नियुक्त कर लिया। बादशाह ने उसकी अंगुली में अपनी राजमुद्रिका पहना दी और आँसु के पादरी पोटीकर की बेटो अशेनथ से उसका विवाह कर दिया। उस समय उसकी आयु तीस वर्ष थी।

जोसेफ ने मिस्र भर का दौरा किया। अच्छी फसल के सात वर्षों में जितना अनिश्चित अन्न पटा हुआ उसकी वसूली करके उसने शहरी गोदामों में भरवा दिया। अकाल के सात वर्ष शुरू होने से पहले जोसेफ ने दो पुत्र हुए जिनके नाम थे—मानसेह और एफरम। अकाल केवल मिस्र में ही नहीं पड़ा था दुनिया भर में पड़ा था।^१

जब अकाल न सुना कि मिस्र में अनाज जमा है तब उसने अपने बेटों से कहा कि हाथ पर हाथ धरकर मत बठो मिस्र जाकर अनाज खरीद लो। उसके बेटे बनान से मिस्र चल पड़े।

अनाज की बिक्री का सर्वाधिकार जोसेफ के पास था। उसने अनाज की तलाश में आम अपने सौने भाइयों का पहचान लिया परन्तु वे जोसेफ का न पहचान पाए। जोसेफ ने उन पर विदेशी गुप्तचर होने का आरोप लगाया तब उन्होंने सफाई में कहा कि हम बाराह भाई हैं जिनमें से एक तो इस दुनिया में ही नहीं है और दूसरा हमारे पिता के पास है। जोसेफ ने कहा कि तुममें से एक यही रह और शेष भाई जाकर अपने छोटे भाई को लिवा लायें, यदि तुम उसे न लाये तो मैं समझूँगा कि तुम झूठ बोलते हो। जोसेफ ने उन्हें तीन दिन के लिए कदखाने में डाल दिया।

तीसरे दिन उन्हें कद से रिहा करके उनमें से एक भाई को बंधक रखकर और शेष भाइयों को अनाज देकर जोसेफ ने उन्हें बनान जाने दिया। अपने आदमियों से उसने यह कहा कि इनकी बोरियों में इनके द्वारा चुकायी कीमत की रकम भी रख दो और इनको गह-शुब भी ले दो। जोसेफ ने जिस भाई को रोना लिया था, उसका नाम सिमिअन था।

कनान उस वापस आन पर जबकि क पुत्रों न तब अपनी अपनी वारिसा खाती और अपने द्वारा चुकायी रकम को भी उनमें रखा पाया तब बड़े विस्मित हुए। उन्होंने अपने पिता से कहा कि बेंजामिन का हमारे भाव जान दीजिए, अथवा मिमि अत का छुटकारा न हो सकता और हम झूठे समझे जाएंगे। जबकि न कहा— तुम लोग पहले ही एक घंटे में मुझे जुदा कर चुके हो। अब बेंजामिन का भाव जान का कह रहा है। हमने नौटान का क्या भरोसा? मैं हम नहीं जान दगा। इस पर अनन न कहा कि मैं हमारा जामिन बनता हूँ। यदि मैं न नौटान लाऊँ हम तो आप मराना वचन का मार डालिएगा।^१

कनान देश में अकाल का रूप अधिक भयंकर हो उठा। तबसे क पुत्र चिनता अनाज मिश्र न तबसे क करीब करीब खस रहा था। जबकि तब उह पुन मिश्र जान क लिए कहा। परंतु लूडा न क्या कि अगर हम बेंजामिन क बिना जाएँ तो उम राज्याधिकारों का अनुसार उसका दीदार भा हम नहीं मिल पाएगा।

जबकि न मन मार्कर बेंजामिन का भजना स्वीकार किया। परंतु उमने अन वटा से कहा कि यथा से तुम उम राज्याधिकारों के लिए कुछ सौगात जम कि कुछ फल मव तथा प्राप्त जाति जरूर ल जाओ। अगर तुम तांग बेंजामिन से वापस न लाय तो मैं प्राण न बचेंगे। जबकि न यह भी हिलायत कर दी कि पिठना बार बोरियों में जा रकम मिता था उम नौटान के लिए साथ नन जाया।

जबकि क पुत्र द्वारा अनाज खरादन के लिए मिश्र पहुँच। जोरफ न तब बेंजामिन को उनका साथ गया तब उमने अपने नौकरों का आग्रह किया कि आप नौकरों का मन मचका खाना मर माय भागा।

खान के समय तबसे क मार्क पुत्र जाजफ के निवास स्थान पर एकत्र हुए। भावना न सौगात की वस्तुएं जाजफ का नौट की और खान पर भुनकर मिजला किया। उनमें से कार्द जाजफ का न पहचान पाया। सब भाई अनम अनम खान कर। जाजफ न अपने दस्तरखान में कुछ खाया अपने भाव्या के दाग भेजा परंतु बेंजामिन का औरों से पाच गुना चारों भवा।^२

जाजफ न अपने परिचारक को आग्रह किया कि ये चिनता अनाज न तबसे देह देना उनके द्वारा खकाया मूय भा वारिसा के मुह में चुपचाप रखना और मरम छान भाई की बोग में मरा चाँदी का बटारा भी नी रख दना। जब मर भाई गधा पर बारियाँ ताकर खन पड़ और नगर में कुछ दूर पहुँच गये तब जाजफ के आग्रह पर उमके नौकर दाह्य में लौडे और उनका राक किया। कहा— तुम दाग वखान ही वृत्तमन है, त्रिमन तुम्हारे माय उपकार किया उमी का चाँदी का बटारा तुम खुश तब। भाव्या न वस्तु मफार्द नी त्रिमन नौकरों न एक न मुनी। परंतु

मरम बड़े भाई म्वेन की दोरी की तलाशी ली गयी उत्तम कुट्ट न मिना सिवाय अनान की कीमत वाली रकम व । एक-एक कर सबकी तलाशी हुई । बेंजामिन की बारी म चाँगी का कटोरा मिल गया । मार भाइया का जोसेफ के मामन पग किया गया । वह अभी तक अपन निवास-स्थान पर ही थ । जोसेफ न कहा कि तुम्हारी मजा यही है कि जिनकी बोगी म कटोरा मिला, वह मेरा गुनाम हाकर रहेगा । बाकी भाई अपन पिता के पाम जा सकत हैं । म्वन और जूडा न कहा कि हम ता बडी मुश्किल म बेंजामिन को ला पाय थे यदि यह नहीं लौटा, ता शान व मार हमार पिता के मिर के मार वाल मफेद हो जाएँगे और शायद उनक प्राणा पर बन आय ।^१

अब जोसेफ म न रहा गया । उमन सभी बाहरी आदमिया को वहाँ स हट जान का हुकम दिया । अब मत्र भाई ही रह गय तब वह जोर जोर स रो पड़ा और बोना कि मैं जोसेफ हूँ । म वही हूँ जिसे तुम लागा न काफिले वाला व हाय बच दिया था । तुमन जा किया उसम खुदा की मरजी थी अगर मैं पहले स यहाँ न आ गया होता तो तुम्हारे ओग इतन मारे न गा के प्राण इस भयकर अकाल म कस बचन ? अभी ता अकाल के तो सात ही बीन हैं पाव सात बाकी है । तुम ताग जाओ और अत्राजान का तथा अपन सारे बाल-बच्चा पंगुओ आदि का भी यही लेन आजा ।

बादगाह को भी जब पना चला कि जोसेफ व भाई आय हैं तब उमन कहला भेजा कि वे बनान छोकर मिय्र आ जायें, मैं उह जर-अमान सब दूगा । जोसेफ न अपने भाइयो के साथ गाटियो म नदवा कर अनाज भेन दिया जोर विदा के समय उनको मरोपा भी भेंट किया । बेंजामिन के लिए उसन राजसा वस्त्र और चादी क २०० शिकर (यहूदिया की प्राचीन मुद्रा) भी दिये । अपने पिता का लाने के लिए उसन एक गाँगी अलग स भेजी और उनके लिए भेंट म मिय्र की नायाब चीजा से न दस गन्हे दम गन्हियाँ अनाज रोटियाँ तथा राह खच आदि चीजें भी भेज दी ।

बनान रोप्तर जकब के पुत्रा न जब उससे कहा कि जानेफ अभी जीवित है और मिस्र का शामक है तब बह बहुत प्रमन हुआ । उमन कहा कि मेर लिए इतना ही काफी है कि मेरा जोसेफ अभी जियता है और मैं मरने म पहल उसे लेव सकूगा ।^२

मिस्र जाने से पहने जकब बीर शेवा गया जहा उसकी प्यारी पत्नी रचेन और उमने पिता इमाक की बयें थी । यहा उमन ईश्वर ने प्राथना की । ईश्वर न उससे कहा कि तुम निडर होकर मिस्र जाओ वहाँ मैं तुम्हारी रखा करूँगा । मैं तुम्हारी सतान को एक बहा राष्ट्र बना दगा ।

जकब अपन पत्र-सौदादि और सारे सरो-मामान के माय मिस्र के लिए रवाना हुआ । जब वे मोशन पहुँचे, तब जकब ने जोसेफ को सूचना देन के लिए जूडा को

१ गेनेसिस ४४

२ वही ४५

आगे भद्र किया। जोरफ ने आकर मन्वा अग्रणी की। पिता के मन में बहुत बुराई थी। जोरफ ने अपने भाइयों को बताया कि जब वाष्पाण्ड आयेन तब मैं तुम लोगों का पालन करूँ। तब वे वाष्पाण्डों को बुद्धि दी। परन्तु वे भी वाष्पाण्डों का पालन नहीं करे। अतः वे वाष्पाण्डों को छोड़कर मन्वा के पास आये। अतः वाष्पाण्डों को वाष्पाण्डों का पालन करने का अधिकार दिया।

जोरफ ने वाष्पाण्डों के पास आकर अपने भाइयों और पिता के आनन्द का समानान्तर सुनाया। अपने भाइयों के आनन्द पर वाष्पाण्डों का भी मन हुआ था। वाष्पाण्डों के पुत्रों पर वाष्पाण्डों ने बताया कि उनका पालन करने का अधिकार तुम्हारा है। वाष्पाण्डों ने उन्हें मान्यता दी। तब वे वाष्पाण्डों के पास आये। उन समय उनको आय १००० दी थी। उनमें वाष्पाण्डों का आशीर्वाद दिया।

इसके बाद जब १७ वर्ष की आयु में वे वाष्पाण्डों के पास आये। उनका आयु १४७ वर्ष की हो गयी थी। उनका मन बड़ा निराशा हुआ था। उनमें जोरफ का सुनारर कहा कि तुम मेरी जीवित ही हाथ रखकर प्रतिज्ञा करो कि मरने के बाद तुम मुझे मिस्र में ले जाओगे। और तुम्हारे ही नाम तुम्हारे नाम रखना दूँ। यही मुझे आसिद्धि दी। जोरफ ने प्रतिज्ञा की।

तब ही वे मिस्र और कनान के राजा का साथ देकर अन्तर्जा अन्तर्जा का सराफा करने लगे। उनके नौका मरने का नौका जा गया। जोरफ ने उनमें मार करने की आज्ञा दी। उनमें वे उनका नाम कहा कि अब तो हमारे पास मृत्यु के बाद का कुछ भी नहीं है। हम क्या अन्तर्जा सराफे? जोरफ ने उनको मारने उन्हीं पराश्रो (वाष्पाण्डों) के निमित्त सराफे की ओर उनका पराश्रो का सुनाम देना दिया। फिर उनमें उनको बीज देने और मनी करने को कहा। यह तब रहा कि यही मनी उनमें पराश्रो की है। इसलिए वे भूमि पर के रूप में अपने उपासने का पंचमाश पराश्रो का प्रतिवचन दिया करेंगे।

जब वे का जीवन प्रदीप बुलने को हुआ। उनमें जोरफ के दोना पुत्रा (एफरम और मानमह) को आशीर्वाद देने के लिए अपने पास बुलाया। उनमें बड़े बड़े के मिर पर अपना बायाँ हाथ रखकर और छोटे बड़े के मिर पर दायाँ हाथ रखकर आशावादी किया। जोरफ ने एमा करने का कारण पूछा तब उनमें कहा कि तुम्हारा बच्चा बड़ा महान् बनना परन्तु तुम्हारा छाटा बच्चा उसमें अधिक महान् होगा। जब वे न जोरफ से कहा कि तुम भी एक दिन अपने पूर्वजा की जन्मभूमि में वापस जाओगे। यही मैं एक पहाड़ी नाम की भूमि तुम्हारे नाम कर दी है। वह भूमि मैं अपने बाटुपले से अर्जित की थी।^१

१. पौर्विक ४६

२. वही ४७

३. वही ४८

इसके बाद जब न अपने सभी देता का भविष्य-कथन किया। जाजफ के विषय में उसने कहा कि वह फलदार शाखा है। लोगो ने उस पर डेले फेंके, परंतु वह अविचल रहा। ईश्वर उसकी मदद करेगा। यह कहकर उमा आविरी सांस ली।^१

जोजेफ अपने पिता की लाश पर गिरकर खूब रोया। जबकी लाश पर मसालो का तप लगाया गया। इस काय में ४० दिन लगे। मिस्र में ७० दिनों तक शोक मनाया जाता रहा। बादशाह की आज्ञा से जबकी अंतिम यात्रा राजसी ठाठ-बाट से आरम्भ हुई। जबकी सारे पुत्र तथा मित्र के बहुत से सम्भ्रांत व्यक्ति कनान देश गये और वहाँ एफ्रात के मैदान में उस दफनावर मित्र सोटा थाय।

पिता के मरने के बाद जोजेफ के भाव्या को डर हुआ कि कहीं वह उनसे उनके पिछले अपराधो का बदला न निकाले। उन्होंने जोजेफ को कहलाया कि पिता न भरत ममय कहा था कि वह अपने भाइयो को क्षमा कर दे। जोजेफ ने अपने भाव्याो का क्षमा कर दिया। उसने कहा कि जब मैं मर जाऊँ तब मेरी अस्थियो को कनान ही न जाना। ६० वय की अवस्था में जोजेफ का देहांत हो गया। तब तक उसके कई पात पोती हो गये थे। मिस्र में उसकी लाश को मसाला में सपेट कर कफन में रखा गया।^२

‘कुरान’ में यूसुफ-जुलेखा की कथा

कुरान के ‘मूरे यूसुफ अध्याय में जिसमें १११ आयतों और १२ सूक्त ह पृ० २३६ २५४ पर यूसुफ जुलेखा की कथा वर्णित है। प्रसंग यह है कि कुछ यहूदियो न मक्के के बड़े लोगो से कहा कि मुहम्मद साहब से पूछो कि याकूब की सतान शामदेश में मिस्र क्योंकर आई? इस प्रश्न के उत्तर में कुरान की यह सूरात उतरी। कथा इस प्रकार है—

यूसुफ याकूब का बेटा था। उसके एक सगा भाई और दस मौजल भाई थे। याकूब अपने सब पुत्रों में यूसुफ और उसके भाई को ही अधिक प्यार करत था। एक दिन यूसुफ ने याकूब से कहा कि मैंने स्वप्न में ग्यारह मितारो जीर सूरज तथा चाँद का दषा है। य सब के सब मुझे सिजदा कर रह थे। याकूब न कहा कि तू इस स्वप्न की बात अपने भाइयो से न कह बठना नही तो वे तुझे किसी न किसी आपत में फसा देंगे। तू न जसा स्वप्न में देखा है, वसा ही होगा। खुदा तुझे कुबूल करेगा। तुझे स्वप्न की वाता का फल बेटाना मिस्रायेगा और जिस तरह खुदा ने अपनी पामत पहने तेरे दादा इनाक और इब्राहीम पर पूरी की थी उसी तरह तुव पर भी करेगा।

१ नेनसिस ४६

२ बहो ५०

एक दिन यूसुफ को सोनेन भाव्यान्त न जापन में मत्ताह की कि हम लोग स्तन भाई ह, लेकिन हमारे बालिन यूसुफ और उमक भाई न हमस ज्यान्त प्यार करत ह । यह उननी गलती है, इसलिए हम या ता यूसुफ को मार डालें या किसी जगह फेंक आए । एन भाई न राय जाहिर की कि जान न मारन क बजाय यह ज्यादा ठीक रहेगा कि हम यूसुफ का किमो अध कुएँ में डाल द । कोई राह चलता काफिन उम निकान लगा और उसे अपन साथ लेता जायगा ।

सब भाव्यो न जाकर अपने पिता याकूब स कन्त जि जाप यूसुफ क मामल में हमारा विश्वास क्या नहीं करत ? हम तो उनके हिनगी हैं । जाज उम हमारे साथ जगन में जा दीजिए । वहा उसे हम जगनी फल आदि खिला लाएंग । उसकी सुरक्षा क हम उत्तरदायी हांग । याकूब का मन भीतर स तो जाशकित हुआ पर तु उहान अपन अध पुत्रा क आग्रह पर यूसुफ को उनक साथ भज दिया ।

यूसुफ क सोनल भाई उमका एक अघे कुएँ में गिराकर धाडी रात गप रोन पीटन अपन पिता क पास आय और बोन कि हम तो कबडडी खेनन लग और यूसुफ का हमन जसबाब क पास छोड दिया । इतन में एक भेटिया आया और उमनी खा गया । उ नि यूसुफ क कुर्ते पर झूठ मूठ में लून भी लगा दिया और प्रमाण में उस पण कर दिया । याकूब न कहा जि मुझे विश्वास नहीं हाता कि यूसुफ का भेटिए न खाया है तुम योगा न अपना मुह उजागर करके क लिए यह बात मन स गन्ती है । लेकिन याकूब न मुदा पर भगता करके मन्न कर दिया । यूसुफ को अध-रूप में एक मुदाइ पगाम भिन्ता कि तुम एक दिन इनकी (अपन भाव्यो का) इनके वस बुरे पवंगर से जतनाओग और य तुमका पहचान नहीं पाएंग ।

जिम अध रूप में यूसुफ गिरा पन्त था, उसक पास स एक काफिला गुजरा । काफिन वाला न कुएँ स पानी तान क लिए अपने भिन्ती का भजा । भिन्ती न जब कुएँ में डाल टाका तब यूसुफ उस पर उठकर बाहर आ गया । भिन्ती चिल्ला उठा कि अरे यह ता लन्का है ! तभा यूसुफ के भाई खबर पाकर वहा आ गये । उहोन कहा कि यन्ता हमारा भगोन्त गुनाम है । उहान चद दिरहम के एवज में यूसुफ को काफिन वाला क हाथ मुलाम क रूप में उच लिया ।

काफिन वालो न यूसुफ को भिन्त ल जाकर वहा के बाग्शाह के हाथ बच दिया । शाह न अपनी बीवी जुलेखा स कहा कि इस गडके को अच्छी तरह रखो अच्छा निजला तो हम वस अपना धेठा बना लेंगे । यूसुफ जब जबरान हथा तब उसकी खूब सूरती निखर आयी । एक राज यादशाह की बीवी जुलेखा न उसक साथ वन्कारी का इरादा किया और कमर क सारे दरवाजे बन् कर लिये । लेकिन यूसुफ न कहा कि तुम्हारा पनि मरा मालिक है उसन मुझे अच्छी तरह रखा है मैं उसकी अमानत में खयानत नहीं कर सकता । यह कन्कर यूसुफ दरवाजे की आर भागा । जुलेखा भी उसको पकडने के लिए पीछे भागी । उसन पीछे स यूसुफ का कुर्ता पकडन की काशिन

की। कुर्ता फट गया और उसकी खूट जुलेखा के हाथ में आ रही। तभी दरवाजे के पास बादशाह आता हुआ मिल गया। जुलेखा ने उमम शिकायत की कि यूसुफ मर साथ वफाकारी करने का इरादा कर रहा था, इसलिए उसको कड़ी में बड़ी मजा दी जाय। शाह ने कुटुम्बियों में से एक ने कहा कि यूसुफ का कुर्ता देखा जाय अगर वह आगे से फटा हो तो औरत सच्ची है और यूसुफ झूठा, लेकिन अगर वह पीछे से फटा हो तो औरत झूठी है और यूसुफ सच्चा। बादशाह ने यूसुफ का कुर्ता देखा। वह पीछे से फटा था। बादशाह को यूसुफ की निर्दोषता का विश्वास हो गया। उसने जुलेखा को बताने का आदेश दिया और उमम ने कहा कि तुम यूसुफ से माफी मागो।

मिस्र नगर की औरतों में यह चर्चा का विषय बन गया कि शाह अजीज की बीबी अपने गुलाम से नाजायज मतलब हासिल करना चाहती है। इसका लिए वे जुलेखा की निंदा करने लगी। यूसुफ की सुन्दरता कितना गजब होती है और कोई भी स्त्री उसका देखकर तन मन की मुग्ध कैसे बिसरा देती है यह प्रत्यक्षत दिखाने के लिए एक दिन जुलेखा ने एक महफिल का आयोजन किया जिसमें सब औरतें बुलाई गईं। जुलेखा ने हर औरत को पत्र तारामकर खान के लिए एक एक छुरी दे दी। जब वे पत्र ताराश रही थी तभी जुलेखा ने यूसुफ से कहा कि बाहर जाकर जरा अपनी शकल तो दिखाओ। जब औरतों ने यूसुफ को देखा तो देखती ही रह गयी। उन्होंने छुरी से अपने हाथ काट लिये और कहने लगी—अल्लाह कर्म यह आदमी नहीं कोई फिरतना है। जुलेखा ने सब औरतों से कहा कि यही है वह यूसुफ जिसकी वजह से तुम लोग ने मेरी मलामत की कि मैं इससे नाजायज मतलब हासिल करना चाहती हूँ। औरतें समझ गयी कि जुलेखा क्या कोई भी औरत ऐसा बुरा मूरत मद पर अपने को थोड़ा कर सकती है।

जुलेखा की दिनचर्या और यूसुफ को उसकी नजर से दूर रखने के लिए बादशाह ने यूसुफ को कुछ समय तक कदखाने में रखना ही उचित समझा। यूसुफ के साथ दो अन्य व्यक्ति भी कदखाने गए थे। एक रात उनमें में एक ने यह स्वप्न देखा कि वह शराब निचोटा रहा है। दूसरे आदमी ने स्वप्न देखा कि वह अपने मिर पर रोटीया उठाये हुए है और पक्षी उमम चाच मार मारकर खा जाते हैं। दोनों आदमियों ने यूसुफ को भला इसान समझकर उससे इस स्वप्न का फल पूछा। यूसुफ ने कहा कि जो खाना तुमको अब मिलनेवाला है वह तुम तक आ पाय उसका पहल पहले मैं तुमका इन स्वप्न का फल बतला दूंगा। फिर यह है—तुममें से एक तो अपने मालिक को शराब पिलाएगा और दूसरा फामी पर लटकाया जाएगा और पक्षी उसका सिर खाएंगे। पहले आदमी की कुछ दिना बाद कद से रिहाई हो गयी। जब वह बाहर जान लगा, तब यूसुफ ने उससे कहा कि अपने मालिक (बादशाह) से मरी भी चर्चा करना। लेकिन घबराकर वह आदमी यूसुफ को भुला गया। यूसुफ कई वर्षों तक कदखाने में पना रहा।

एक दिन बादशाह ने अपने दरबारियों म कहा कि 'मैंने एक स्वप्न देखा है कि मात मोटी गाएँ ३ और मात दुबली गाएँ । दुबली गाएँ मोटी गायो को खा रही हैं । मैं स्वप्न म मात हरी वानें लगी हैं और मात मगी वानें । क्या तुमम से कोई हम स्वप्न का फल जानता गाता ३ ?' दरबारिया ने कहा कि मैं तो कुछ उम्न गयात हूँ तन गयाता गी ताजीर (फन) हमका नहीं आती । वही वह व्यक्ति भी था जो यूसुफ क साथ कल्यात म रन चुका था और जिमको यूसुफ ने स्वप्न फन बतलाया था त्रिन जो रिश हातर उमे भूत गया था । उमने बादशाह म कहा कि अगर मुझे कल्यात नव तान की अनुमति मिले तो मैं (यूसुफ से पूछकर) इगकी ताजीर आपका बतना गरता हूँ । उमना बादशाह न अनुमति दे दी ।

यूसुफ न स्वप्न का फल फन बतनाया— तुम लोग मात वष तब बराबर गती बरन रहा म । फमन क फव जान पर तव तुम उम काटो तब आज को उमकी बाना म ही रहा दगा (ताहि गलना मर नहीं) । अच्छी फमल के सात मान बीतन पर सात माल तव भयकर अवात पश्या ! जो कुछ तुमन पिछन वर्षों म सचिन कर रखा हागा उस तुम ताम गा जाभोग परन बीज के त्रिण रखा हुआ अनाज बच रहेगा । अवात के मात वष ब तन पर उमक अगल वष गूब वर्षा होगी । फमत तो अच्छी रहेगी ही उम वष अगूर नी गूब फरेंगे । लोग शरात बनाने के लिए उनका रम निचारेंगे ।

उम आदमी न कल्यात मे त्रीकर बादशाह को उनके स्वप्न का फल जा बताया । बादशाह न जाण शिया कि यूसुफ को तल मे तुरत रिहा किया जाय । जत चाबतर रिशद का आदेश तकर गया तब यूसुफ न कहा कि तुम अपने शाह से जातर पूछो कि तन औरतो की बात आपको मालम है या नहीं जिहान चाकू स अपन हाथ काट लिय थ । (यूसुफ का आशय यह था कि बादशाह को अभी तक यह पता चन या नहा कि क औरतें ही मर पीछे पडी थी मैं उनक पीछे नहीं पडा था) । बादशाह न उन औरता का बुलाकर पूछा कि चाकू स तुम्हारे हाथ कसे बट गय थे, क्या यूसुफ का उमम कोई कसूर था ? औरता न कहा कि हमन तो यूसुफ म किसी तरह की बुराई नहीं पायी । अजीज (बादशाह) की बीवी भी बोल उठी कि यूसुफ सच्चा आदमी है खर मैं ही उसस अपना मतलब निकालना चाहा था ।

चौबदार न यूसुफ स यह हाल बताया । यूसुफ ने कहा कि मैंने कभी की दबी दवायी बात रमलिए उलाठी कि मिस्र क अजीज को मालूम हो जाय कि मैंन उसकी पीठ पीछे उसकी अमानत म खयानत नहीं की और यह भी मालूम रहे कि खयानत करन वालो की तन्बीरा को खुदा बलन नहीं देता ।

यूसुफ न आग कहा कि मैं यह नहीं कहता कि मैं पाव साफ हूँ क्योंकि इद्रियाँ तो बुराई के लिए उत्तजित करती ही रहती हे लेकिन मेरा परवरदिगार रहीम (दयालु) है । बादशाह न यूसुफ को आतर भाव स बुलाकर कहा कि तुम मरे विश्वास

पात्र हो, तुम जहाँ कहो, तुम्हें नियुक्त कर दूँ। यूसुफ ने निवेदन किया कि मुझको मुल्की खजान पर नियुक्त कर दीजिए।

अकाल के दिना म अनाज की तगी स परेशान होकर यूसुफ व सौतन भाई भी शाम दश स मिस्र पहुँचे। यूसुफ न तो उनको पहचान लिया, किन्तु उन्होंने उसका नहीं पहचाना। यूसुफ ने उनको धाडा सा अनाज कीमत लकर द दिया और कहा कि तुम अपने सौतले भाई इब्नयामीन (यूसुफ का सहोदर भाई) का अगली बार साथ लाभोग तो तुम्हें ज्यादा अनाज मिलगा। अगर उसका तुम साथ नहीं लाय तो समझ रखना तुम्हें अनाज नहीं मिलगा। यूसुफ न अपन नौकरा का ह्वम दिया कि इन योगी की पूजा भी चुपके-से इनकी बागिया म रख दा।

यूसुफ व मौनरु भाई अपन पिता क पास पहुँचे। उनस वाल कि आप दून यामीन का इय बार हमार साथ कर दीजिए ताकि उसकी वजह स हम जूरत के मुनाबिक अनाज मिन सक। याकूब न कहा कि म तुम्हारा यकीन करके यूसुफ क मामले म ही पछता रहा हूँ, अब कस तुम पर यकीन करूँ? याकूब के तन्का न खुटा को हाजिर नाजिर रखकर कसम खायी कि अब ते विश्वासघात न करेग और इब्नयामीन की हिफाजत करेग। जब उहोन अपनी बोरिया खाती तब उनः अपना पूजा भी पा ली। इनम उनको लगा कि मिस्र का वह अधिकारा बहुत दयानु है।

यूसुफ के मोतेले भाई इब्नयामीन को साथ लकर पुन मिस्र पहुँचे। यूसुफ न उहे जितना अनाज चाहिए था द निया परत उसक इशार पर उसक नौकरा न इब्नयामीन का बोरा म अनाज नापन का कटारा छिपा दिया। जब सब भाई रवाना हान को हुए तो कटार की खोज हुई। नौकरा न कहा कि कटारे की चारी इही लोगा न की है। यूसुफ व सौतन भाइ बहुत विगडः। लेकिन जब तांगी तब इनयामीन की बोरी म स कटोरा बरामद हुआ। उस समय मिस्र म ग्राहीमी याय पास्र लागू था जिसके अनुमार चार को मालबाख आदमी की एक सात तक गुत्तामी करनी पडती थी। अमन म यूसुफ न यह जान इमनिए रन था ताकि वह अपन सहोदर भाई को अपन पास राक सक। यूसुफ के भाइया न कहा कि इब्न न चागी की है तो कोई आचय नहीं, दसका भाई (यूसुफ) भी चारों कर चुका है। उहान बहुत कहा कि इब्नयामीन का वाप बूटा है उसक बिछोह का वह नहीं सह पाग्या परत यूसुफ न इनयामीन को न जान दिया। यूसुफ व मौनरु भाई लोट गय। उहोन घर पहुँचकर अपन पिता याकूब से मारी बात बतना दी। याकूब को किमी तरह विश्वास न हुआ कि इब्नयामीन चारी कर सकता है लेकिन खुटा पर नरामा करके वे चुप हो रह। यूसुफ क लिए रीत रान उनकी दोनों जाँचें मफू हो गया थी

१ यूसुफ क भाइयों न यूसुफ पर यह मूठा साछन लगाया था। लेकिन कुछ लोग कहत है कि यूसुफ अपने घर से छिठाकर यरीसा को मन या मोजन दे गये प। भाइयो का सबत कदाचित् इसी बात को धोर था।

और वे जी ही जी में घुटत रहते थे।

यूसुफ़ के सौतेले भाई कुछ दिनों बाद फिर गल्ला खरीदने के लिए मिस्र पहुँचे। उस हान यूसुफ़ से कहा कि हमारे बच्चे भूख से बिलबिला रहे हैं, परन्तु हमारे पास पूजा कम है, हम थोड़ा सा अनाज दे दीजिए। हो सके तो हम कुछ अनाज खरात में दिला दीजिए। अब यूसुफ़ से न रहा गया। उसने कहा कि तुम्हें याद है तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या सलूक किया था। भाइयों को कुछ सदेह हुआ। उस होने पूछा— वही तुम यूसुफ़ तो नहीं हो? यूसुफ़ ने कहा— हाँ मैं यूसुफ़ ही हूँ। भाई बहुत पछताये। यूसुफ़ ने खुदा से उनसे गुनाह माफ़ करन की प्रार्थना की।

यूसुफ़ का जब पता चला कि उसका पिता भी आँखा की ज्योति जाती रही है, तब उसने अपने भाइयों को अपना कुर्ता दिया और उनसे कहा कि इस कुर्ते को पिता के मुँह पर डाल देना, इससे उनकी आँखों की ज्योति लौट आएगी।

उधर ता मिस्र से बह काफ़िला चला जिसमें यूसुफ़ के सौतेले भाई यूसुफ़ का कुर्ता लिये हुए आ रहे थे, इधर याक़ब ने अपने उन बेटों से जो इस बार मिस्र उठी गये थे कहा कि मुझे यूसुफ़ जसी ग़ा आ रही है।

यूसुफ़ के भाइयों ने मिस्र में लौटकर यूसुफ़ का कुर्ता अपने पिता के मुँह पर डाल दिया। कुर्ते का डालना था कि याक़ब की आँखों में दृष्टि पुनः आ गयी। भाइयों ने अपने पिता के सामने अपना अपराध स्वीकार किया और क्षमा माँगी।

अंतिम बार जब यूसुफ़ के भाई मिस्र गये तब वे अपने पिता को भी अपने साथ लाने गये। यूसुफ़ ने अपने माता पिता का अपने साथ उच्चासन पर बठाया। दस्तूर के मुताबिक यूसुफ़ के साथ भाई उसकी ताज़ीम करन के लिए उसका आम सिजदे में गिर पड़े, उसको सप्टाग दण्डित करे। यूसुफ़ ने अपने बचपन का स्वप्न याद करके अपने पिता से कहा कि यह स्वप्न ग़ा सच हुआ है। (यूसुफ़ ने ११ सितारों और ग़ा सूरज को स्वप्न में सिजदा करत देखा था। सितारे थे ग्यारह भाई और चाँद सूरज थे माँ बाप)। यूसुफ़ ने खुदा से प्रार्थना की कि उसे ग़ा इसानो जसी ज़रूरी सोत मिले।

‘ग़ोल्ड टेस्टामेंट’ और ‘कुरान’ की कथा में अन्तर

कुरान के सारे यूसुफ़ के १०वें सूरे और १११वीं आयत में लिखा है— यह (कुरान) को ग़ा ग़ायी हुई बात तो ग़ा है यन्नि जो (ग़ाममानी किताबों) ग़ाम पहल का ग़ा उतरी लम्बीक है और हमसे उन ग़ोमा के लिए जो ईमानवाग़ा हैं ग़ा धोज का ब्योरेवार बयान ग़ासीहत और हूवम है।’ हमसे स्पष्ट है कि कुरान में ‘ग़ोल्ड टेस्टामेंट’ (कुरानी यादग़िरी) की बऱ्फ़ ग़ायीयें पुनर्बलिह ईई हैं। यूसुफ़ जुग़ा की कथा उता ग़ा है।

दोनों धम-युक्तियों में इस कथा सम्बन्धी अन्तर के स्थान से है—

(१) जहाँ तब कथा के पात्रों के नाम का सम्बन्ध है 'ब्लॉड टस्टामेंट' में याकूब को 'जकब' और यूसुफ का 'जोसेफ' कहा गया है। याकूब के पिता उनहाज़ जोर दाग इनाहीम का 'ब्लॉड टेस्टामेंट' में प्रमत्त इसाक (Isaac) और जब्राह्म (Abraham) नाम मिला है। परन्तु उच्चारण-रूप के अनिश्चित इन नामों में पराप्त समानता है। 'जुलखा' नाम ब्लॉड टेस्टामेंट में नहीं नहीं आता। पाट्रिकर (मित्र क-सक दल के मनापति) की जिस बीबी की नीयत जात्रफ पर खराब हो गयी थी, उसका कोई नाम ब्लॉड टेस्टामेंट में नहीं दिया गया है। जिस लम्बी से जोसफ का विवाह हुआ वार जिससे उसका बच्चा हुआ उसका नाम 'ब्लॉड टेस्टामेंट' में 'अशेनथ' है चुन्ना नहीं। यूसुफ के मा-जाय भाई इब्नयामीन को पुरानी वाद्विन में 'बेजा-मिन' कहा गया है।

(२) 'कुरान' में यूसुफ के केवल एक स्वप्न का ही उल्लेख है जिसमें सूरज चान और ग्यारह नितार उसका मित्रता करत हैं। अनाज की जाटिया का उसकी आगे के गिर इकट्ठे हो जाने के स्वप्न का उल्लेख नहीं है।

(३) 'ब्लॉड टेस्टामेंट' में जैकब जात्रफ का अपने भाइयों के साथ मेड चगने के लिए खुद भजता है, 'कुरान' में भाई पिता में कटु-मुनवर उमे ले जान है। ले जाने के पहल ही उन्होंने उन मारने या अध-रूप में टकेलने का निदखत कर लिया था।

(४) अध-रूप में गिरा दिया जाने पर यूसुफ को 'कुरान' के अबुमार, मुदादें पगम मिला। ब्लॉड टेस्टामेंट में एम किमी ईबरीय सन्देश के मिलन या फरित्त के दशन दन का उल्लेख नहीं है। 'कुरान' में मिश्री के हाथ पर बैठकर यूसुफ के बाहर निकलने की बात है, परन्तु ब्लॉड टेस्टामेंट में जात्रफ के भाइयों ने ही उन गहरे गहरे में न निकाला है।

(५) ब्लॉड टेस्टामेंट में जात्रफ को वादशाह का एक सेनापति पाट्रिकर खरीदना है जबकि 'कुरान' में खुद वादशाह जिसकी बीबी का नाम चुलेखा था। एक में मनापति की बीबी जानेक में बदकारों की कोणा करती है और दूसरे में वादशाह की वधु।

(६) 'ब्लॉड टेस्टामेंट' में जोसफ (यूसुफ) के कुत्तों का पीस का मूट फटकर उनका के हाथ में जान का उल्लेख नहीं है। उसमें उसका एक कम्ब सेनापति की पत्नी के हाथ में आ जाता है। 'कुरान' में वादशाह के घरवान वेगम की सन्धान की जो परीमा लेत हैं वह भी ब्लॉड टेस्टामेंट में नहीं है।

(७) 'ब्लॉड टेस्टामेंट' में मनापति का पत्नी अपने का निर्णय मित करत है लिए नगर की सम्भ्रान्त महिनाया का दावत नहीं देता। यूसुफ के भाइयों में खाल्ट फन कानन के बाहू में हाथ काट लनवाला घटना का भी उल्लेख नहीं है।

(८) 'कुरान में बादशाह जुलया की त्रिजारी करन के लिए यूसुफ का बर्ती-गुद में डालता है जबकि आन्ट टस्टामट में शूद्र हाजर। आन्ट टस्टामट में जात्रेफ अपनी निर्दोषता का मिद्व करन का अधिक प्रयाम करता नहा त्रिषायी देता।

(९) आन्ट टस्टामट' में जात्रेफ का पहल कस्मान में रिहा किया जाता है तब वह शाशाह के सामने उपस्थित हाजर स्वप्न फल बताता है। कुरान में स्वप्न फल जानन के लिए शोरगार शूद्र कस्मान में जाता है।

(१०) कुरान में इन्तकमान का बागी में अनाज मापन का कटाग छिपाया गया है जसकि जोड टस्टामट में जात्रेफ के अपने दुस्मान का चाँगी का कठोरा। भाष्या का यूसुफ द्वारा अपने घर में दास्यन दन वाली घटना आन्ट टस्टामट' में नहा है।

(११) कुरान में बताया गया है कि यूसुफ की यात्रा में रात रात याकूब का आँसा की ज्याति चली गयी परंतु आन्ट टस्टामट में ऐसा नहीं है। यूसुफ के कुर्ने का मूत्र पर हाडा हा उसरी आँसा का रासनी फिर नोट आयी इस घटना का उल्लेख आन्ट टस्टामट में बिरतुन नहा है।

(१२) कुरान में यूसुफ के भाष्या का मिश्र के गागेन नामक उबर क्षत्र में वा बमने का जीव मार परिहार का पशुजा मरिच वहाँ ल गात की तबा नहीं है।

(१३) कुरान में याकूब की मौत बनाने का उमक दफनाय जान की अभिनाया जात्रेफ के पुत्रा का जबर द्वारा जागावातिन हाना और जात्रेफ का मृत्यु आति घटना का उल्लेख नहा है परंतु आन्ट टस्टामट में हुआ है।

(१४) मूर यूसुफ में इस मारी कहानी के माध्यम में अनन्य नतिन उपलक्ष्य स्थ है परंतु फस्त मुन आव मानज में ऐसा प्रयत्न नहा है। आन्ट टस्टामट के जात्रेफ का अपना कुरान का यूसुफ अधिक यत्र-परस्त नक जार घमास्मा त्रियाया गया है। आन्ट टस्टामट में उमक राज भक्त रूप का शक्ति निवारण गया है।

फारस और भारत के सूफा कविया न यूसुफ जुलया सम्प्र की अपने मसनवी काव्या में कुरान की कथा का ही मुख्यत अनुसरण किया जोड टस्टामट का आधार लना था ता उपाय मजहूरी त्रिष्टि में ठीक न समझा था उम तब उनकी पहुँच नहा पाया। यूसुफ जुलया के प्रमाख्यान का वैपयिक प्रम का भूमि से उठाकर आध्यात्मिक एव अशरारा प्रम का त्रिष्टि तब पहुँचान का प्रयाम सूफिया न ही किया।

आज हम शाय निगार का यूसुफ जुलया की कथा देख रहे हैं। यह कथा कुछ बाना में कुरान और जागी की यूसुफ जुलया' से कुछ भिन्नता त्रिय है।

शाल निसार-शून यूसुफ-जुलया का कथा

करर कहा जा चुका है कि सूफी कवि शाय निगार ने 'यूसुफ जुलया' प्रमाख्यान

की रचना जामी के फारसी मसनवी काव्य यूसुफ जुलेखा और 'कुरान क आधार पर की थी मुख्यत उहानि जामी की मसनवी का अनुकरण किया था। हम नीचे शैल निमार कृत यूसुफ-जुलेखा की कथा देख रहे हैं, तदनन्तर 'कुरान और 'यूसुफ-जुलेखा (जामी) के साथ उमवी भिन्नता पर विचार करेंगे।

कथा —नबी याकूब नूह के बसाय हुए विनअँ नगर म रहन थे। वह एक सिद्ध पुरुष थे। याकूब की सत बीवियाँ थी जिनस उहँ तरह पुत्र हुए। उनकी राहेल नामक सुन्दरी स्त्री से यूसुफ और इब्न यामीन दो पुत्र पैदा हुए। यूसुफ अत्यंत रूपवान और अलौकिक प्रतिभा-मम्पन्न था। इब्न यामीन क जन्म के समय यूसुफ की माता की मृत्यु हो गयी। याकूब के अय सन्के तो तरुण ही चुके थे य दो लडके ही छोटे थे अत याकूब इनको बहुत प्यार करत थ। यूसुफ क मधुर स्वभाव के कारण उनका सर्वाधिक प्रेम उसी पर था। एक क्षण का भी ब उस अपन स अलग नही करत थे। यूसुफ के मौतेले भाइया मे उसके प्रति ईर्ष्या जाग उठी। ये उस पिता स अलग करने का उपाय सोचन लग।

एक रात यूसुफ न एक स्वप्न दस्ता कि ग्यारह ग्रहो और रवि शशिन न आकर उसे शीश नवाया है। उमा अपन पिता स स्वप्न की चर्चा की। याकूब न स्वप्न विचार कर कहा कि तुम्हें राज-योग है। इस बात का जानकर यूसुफ क ग्यारह सौतेले भाई और भी जल उठे। एक दिन वे यूसुफ को अपन साथ भेड चराने ले गय। जब तक पिता क दृष्टि-नय म रहे सब तक उहानि यूसुफ पर बडा लाड चाव दिखाया, पर पिता के ओपल हात ही ब उसे मारन पीटन लग। जगल से लौटते समय उन्होंने यूसुफ को एक सूत कुएँ म धकेल दिया और उसके कुत्ते को बकरी क खून म रंग कर पिता को ला दिखाया और कह दिया कि यूसुफ को तो भेडिया खा गया। पिता को बडा सदमा पहुँचा। वह यूसुफ का कुर्त्ता छाती से लगाकर रोत रोत अघा हो गया।

कुएँ मे गिरे यूसुफ को जबरल (फरिस्ता) ने आकर ढाढस बँधाया उसे फल लाकर खिलाया और कहा कि एक दिन तुम राजा बनोग और तुम्हारे य भाई तुम्हारी सेवा करेंगे। यूसुफ को उस कुएँ म सात दिन रहते हो गय। सातवँ दिन उस वन म बनजारे उतरे। एक बनजारा पानी के लिए उस कुएँ पर आया। यूसुफ ने उसका डोल पकड लिया और अपने को बाहर निकालने की प्रायना की। बनजारा डरकर भाग गया। बनजारो के नायक ने आकर यूसुफ को अघ बूप से बाहर निकाला। वह उसे लेकर चलने को हुआ तो यूसुफ के सौतेले स्त्रों भाई आ गये। उन्होंने यूसुफ को अपना दास बतला कर बनजारा के हाथ उस बेच दिया। किन्अँ नगर को दूर से प्रणाम कर यूसुफ बनजारा की टोली क साथ चन दिया। बनजार उसे मिन्न देश की ओर ले चल।

×

×

×

पश्चिम देश म एक नगर था जहाँ का सुल्तान बमूस शाह था। उसके एक पुत्री थी जुलेखा ऐसी सुदरी जसे अप्सरा। उसके जोड का कोई वर ही नहीं मिल

पा रत्न था। एक रात जुनखा ने स्वप्न में एक गुजर युवक का देगा और दमन ही उमक हृदय में उमके प्रति प्रेम अकुण्ठित हो गया। उमने उमका स्वप्न में कई बार रत्ना पर स्वप्न में वह रत्ना ही जान मकी कि मियर दश क वजार के यहाँ उमसे मेट हा मकती है। युवक ने अपना नाम नहीं बताया था। जुनखा ने समझा कि यह युवक मियर का वजीर है। पिता ने अपनी पुत्री की विरह व्याथा का दात घाय क द्वारा जान सी। उमने मियर रत्न के वाग्शाप क वजीर क माथ जुलखा का विवाह कर दिया। मियर पहँचकर जब जन्मा न अपन शीर को रत्ना तो जस वह आसमान में गिरी। वह तो स्वप्न में दिगाधी दनवाला पुण्य न था। जनखा ने बीमारी का यहाँना बनाकर अपनी मतीत्व रत्ना करन का निश्चय कर लिया। मियर जान पर भी अपन प्रियतम के माथ न मिन पाने क भाग्य छन स जुलखा बहुत दुखी रहन गयो।

वजारी की वर टोनी जब यूमुफ को लेकर मियर पहँची और यूमुफ को बचन के लिए बाजार में लडा लिया तब उसक रूप-मो-रूप का दमन क लिए लागो क टा जुह कय। प्रमिद्वि मुनवर जुलखा भी अपनी घाय क माय आयी। यूमुफ का दमन ही वह पहँचान गयी कि यह तो उनी का स्वप्न-परम्य है। वजीर स कहकर जुलखा ने यूमुफ का मरीदवा लिया। वजीर ने यूमुफ का जन्मा की सेवा में हां नियुक्त कर दिया। जुलखा के प्रमित्त मनोभाव यूमुफ पर धीरे धीरे स्पष्टतर होकर प्रकट होन लग। जुनखा के मो-रूप के प्रति वह भी आकृष्ट हुआ। एक दिन कामातुर होकर वह उसकी ओर वग भी परन्तु पिता की पवित्र भूमि का ध्यान आत ही वह उल्टे पाँव भागा। भागत समय जुनखा ने उसका कुर्ता पाछे स पकड लिया। कुर्ते के पाछे की सूँट फट कर जुलखा के हाथ में रह गयी यूमुफ उसके हाथ में आया। प्रम-वचिता जुलखा ने यूमुफ पर कुचेष्टा करन का आरोप लगाया और वजीर से कहकर उस बदीगह में डलवा दिया। बदीगह में उसके रहन हुए भी जुलखा उस अपन वश में करन के प्रयत्न में लगी रही किन्तु यूमुफ उदासीन ही रहा।

मिस्र में जुलखा की दुस्चरित्रता की निन्दा होने लगी। जुनेखा ने यह प्रमाणित करने के लिए कि कोई ऐसी नारी नहीं है जिस पर यूमुफ के सौन्दर्य का जादू न चले एक बार शहर की बहुत-सी स्त्रियों को आमंत्रित किया और उन्हें एक एक तरबूज काटने को दिया। ठीक उनी समय जुलखा ने यूमुफ को उनके सामने स गुजारा। सब स्त्रियाँ ठगी-सी उसके रूप को देखनी रह गयी और सबन तरबूज काटने क बजाय चाकू से अपने हाथ काट लिय। सब स्त्रियाँ लज्जित हुड।

यूमुफ को कारागार में रहते सात बप हो गय। एक दिन कारागार की सिढकी से उसने किनआँ नगर के एक घुड़सवार को देखा। उस आवाज दकर उसने अपने पिता का हालचाल पूछा और अपना समाचार पिता को कहताया। यूमुफ ने बदीगह में रहते हुए कई लोगो की स्वप्न फल बताय जा सच निकले। एक रात मिस्र के बादशाह ने एक वेदब सपना देखा। उसका जय पूछन के लिए उसने यूमुफ का कारागह से बुलाया। यूमुफ ने बताया कि स्वप्न का अर्थ यह है कि सात सात तक

वर्षा न होगी, अतः प्रजा के लिए अन्न-वस्त्र पहले से ही जुटा लेना आवश्यक है। उत्पन्नतावश बादशाह ने वजीर से यूसुफ़ का कद करने का कारण जानना चाहा। इसी मिससिले में जुलेखा ने अपनी आत्म-कथा बादशाह को सुनायी। वजीर ने क्रोध वश जुलेखा का परिस्थान बर दिया। जुलम्मा यूसुफ़ को प्राप्त करने के लिए तप करने लगी।

बादशाह ने यूसुफ़ को वजीर बनाया और उसकी सलाह से राजकाज बरन लगा। यूसुफ़ न जसा कहा था, सात वर्ष तक महादुःखिता पड़ा परंतु चूँकि बादशाह ने पहले से ही अन्न सग्रह कर लिया था इसलिए मिस्र की प्रजा को कोई कष्ट नहीं हुआ। यूसुफ़ की जन्मभूमि किनआँ में भी अकाल पड़ा हुआ था। याकूब ने अन्न लाने के लिए और यूसुफ़ का पता लगाने के लिए अपने लडकों को मिस्र भेजा। यूसुफ़ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, पर उन्होंने यूसुफ़ को नहीं पहचाना। उन्हें खूब अन्न-वस्त्र दकर यूसुफ़ ने बिदा किया और कहा कि अगली बार आओ तो अपने भाई इब्न यामीन को भी लेने आना। उसे लाओगे तो और भी अधिक चीजें देंगे। दुसारा यूसुफ़ के सोतेले भाई इब्न को लेकर गये। यूसुफ़ अपने भाइयों के साथ खाने बठा— दो दो भाई एक थाली में। यूसुफ़ अपने भाई इब्न के साथ खाने बैठा। बाद में कटोरे की चोगी लगाकर उसने इब्न को रोक लिया। यूसुफ़ के सोतेले भाई अब उस पहचान गए और अपनी पिछली बरनी पर दुःख प्रकट करने लग। याकूब भी अपने पुत्र से भेंट करने के लिए मिस्र आय। यूसुफ़ के पिता की अधी आँखों में दृष्टि लौट आई। मिस्र का बादशाह भी पिता पुत्र के पुनर्मिलन से बहुत प्रसन्न हुआ वह तिसतान था ही, उसने यूसुफ़ को मिस्र के सिंहासन पर बठा दिया।

×

×

×

×

×

जुलखा को प्रेम-योग की साधना करते चालीस वर्ष हो गए। वहाँवृद्धा हो गयी रोते रोते आँखा की ज्योति खो बठी पीठ में बूबड़ निकल आया अंग बक्र हो गया। वह भीख माँगकर गुजारा करने लगी। जब तक उसके पास द्रव्य रहा तब तक वह यूसुफ़ का नाम सुनाने वाले को द्रव्य दान करती रही थी लेकिन जब वह बिल्कुल कंगाल हो गई तब लोग उसे पागल कहने लगे। एक दिन मिस्र के बादशाह यूसुफ़ की सवारी धूमधाम से निकला। जुलेखा ने एक स्त्री से यूसुफ़ की सवारी उसे भी दिखा देन का अनुरोध किया। जब यूसुफ़ की सवारी सामने आई तब उस स्त्री यूसुफ़ को पुकार कर कहा कि जुलेखा यहाँ बठी है। जुलेखा का नाम सुनते ही यूसुफ़ ने सवारी रोक ली और जुलेखा की दशा पर तरस खाकर उसे महल में भिजवा दिया। रात को भेंट होन पर जुलखा ने यूसुफ़ से कहा कि तुम नबी हो मुझे नेत्र-ज्योति प्रदान कर दो ताकि मैं तुम्हारा मुह देखकर जी सकूँ। तभी फरिश्ता जबरल आ गया। उसने जुलखा को स्नान कराने को कहा। स्नान करत ही जुलेखा चौदह वर्ष की कुमारी हो गयी। जबरल के कहने से यूसुफ़ ने जुलेखा से विवाह कर लिया। पर अब जुलेखा को सासारिक भोग विलास से विरक्ति हो गयी थी। यूसुफ़ ने तो वामना

की आग भडक उठी और जुलेखा म शरीर-सुख की अनित्यता का ज्ञान जाग गया । बहुत कास तक उनका जीवन ऐस ही चलता रहा । पहन याकूब मरा उसके दस वष बाद यूसुफ की भी मृत्यु हो गयी । जुलेखा ने यूसुफ की कब्र पर अपन दोनो नश निकालकर चढा दिये और वही उमके प्राण-पनेरू उड गए । पछा प्राण सो उड गयो रहे धार महे धार ।' लोगा ने उस भी यूसुफ की कब्र की बगल म दफना दिया ।

'कुरान' और जामी तथा निसार की कृतियों में कथांतर

जामी की 'यूसुफ-जुलेखा और निसार की यूसुफ जुलेखा म कथानक लगभग एक-जसा है । केवन कुछ मामूली सा अंतर है । अंतर यह है—

(१) यूसुफ ने ग्यारह सितारो के सजदा करने और चांद सूरज दखन का जो स्वप्न अपने पिता को बयान किया उसका फल उसके पिता याकूब ने यूसुफ-जुलेखा (निसार) के अनुसार यह बताया कि उसके भाग्य म राजा बनना लिखा है । जामी ने 'कुरान' की भांति इतना ही कहलाया है कि तुम पर ईश्वर विशेष कृपालु है । तुम इस स्वप्न को अपन भाइयो पर प्रकट न करना ।

(२) जामी कृत यूसुफ जुलेखा म अध-रूप से पानी भरने के लिए सीदागर का एक गुलाम जाता है और उसके डोल पर बठकर यूसुफ बाहर आ जाता है । 'कुरान' म भी ऐसा ही है लेकिन निसार-कृत यूसुफ-जुलेखा म कुएँ के पास से बनजारे निकलते हैं । एक बनजारा पानी भरन जाता है यूसुफ उसका डाल पकड सता है बनजारा डरकर भाग जाता है । नायक आकर यूसुफ का निकालता है । यूसुफ सात दिन तक कुएँ म रहता है । इम बीच परिशता जबरल आकर उस ढाढस बघाता है और उसके राजा बनने की भविष्यवाणी करता है । कुरान और जामीकृत यूसुफ जुलेखा म यह अंश नहीं है ।

(३) 'कुरान' म सीतेल भाइयों द्वारा बकरी मारकर उसके खून से यूसुफ का कूर्ता रंग लाने का जिक्र नहीं है, जबकि इन दोनो काव्यो म है ।

(४) कुरान म जुलेखा के एक पश्चिमी देश के सुल्तान बमूसशाह की बटी होने स्वप्न म एक सुन्दर युवक को कई बार देखने मिस्र के बजीर के यहाँ उसस मिलन होने की बात स्वप्न म जानने मिस्र के बजीर से उसके ब्याहे जान और बजीर को स्वप्नदर्शित पुरुष के सदृश न पाकर जुलेखा के निराश होने और बीमारो का बहाना बनाकर अपरे सतीत्व की रक्षा करने आदि बातो का कोई उल्लेख नहीं है जबकि जामी कृत 'यूसुफ जुलेखा' और निसार कृत यूसुफ जुलेखा म ये कथा तत्त्व इन्ही रूप म मिलते हैं । कुरान मे जुलेखा को मिस्र के बजीर की नहीं मिस्र के बादशाह की बीबी बताया गया है ।

(५) कुरान म इतना ही उल्लेख है कि मिस्र के बादशाह ने सीदागरो से यूसुफ को खरीद लिया । यूसुफ के बाजार म बिकन के लिए खड़ा होने उसके सी दय की प्रसिद्धि सुनकर लोगा का उसको देखने के लिए ठट लगा दना और जुलेखा का

भी उसे देखने आना तथा अपने पति (वजीर) को प्रेरणा देकर यूसुफ को खरीदवाने का उल्लेख जामी और निसार की कृतियों में तो है 'कुरान' में नहीं।

(६) 'कुरान' में बताया है कि जुलेखा ही पहले यूसुफ पर आसक्त हुई और उसने उसे वासना-रूपि बनाने की विफल कुचेष्टा की। परन्तु जामी और निसार की कृतियाँ में बताया है कि जुलेखा के मौ-दय को देखकर यूसुफ उस पर आसक्त हो गया, उससे काम-रूपि की चेष्टा पहले यूसुफ की ओर से हुई, परन्तु पिता की नसीहतों का ध्यान आ जान पर वह रुक गया। जुलेखा ने जिमकी वासना अब भड़क चुकी थी उसको पकड़ने की चेष्टा की तो वह भागा। भागत समय उसके कुत्ते के पीछे की खूट जुलेखा के हाथों में आ गयी और पट गयी। 'कुरान' में बादशाह को जुलेखा ही अपराधी जान पड़ती है, इसलिए वह उससे यूसुफ से माफी माँगने को कहता है। इन दोनों मसनवियों में वजीर को यूसुफ की निर्दोषता का विश्वास तो हो जाता है परन्तु जुलेखा कहने से वह यूसुफ को कद में डाल देता है। जुलखा ने कुरान में जाकर भी यूसुफ को लुभाने की चेष्टा की, इसका कोई उल्लेख 'कुरान' में नहीं है।

(७) बादशाह की स्वप्न आने की घटना तीनों ग्रन्थों में एक सी है। स्वप्न पत्र बताने में केवल इतना अंतर है कि दोनों मसनवियों में यूसुफ बताता है कि सात वष अति वष्टि होगी फिर सात वष अनावष्टि होगी और घोर अकाल पड़ेगा।

(८) वजीर या बादशाह द्वारा जुलेखा को त्यागन जुलेखा द्वारा यूसुफ को पाने के लिए ४० वर्षों तक प्रेम साधना करने यूसुफ का नाम लन वालों का धन लुटाने और अन्त में उसके निधन भिक्षुणी तथा अधी बढ़ा बन जान का उल्लेख 'कुरान' में नहीं आता जबकि जामी और निसार की 'यूसुफ जुलखा शीपक मसनविया' में आता है।

(९) आगे की कथा में अंतर के स्थल इतने हैं—(क) दोनों मसनवियाँ में यूसुफ और उसके ग्यारह भाइयों के एक पगत में खाना खान (दो-दो भाइयों का एक थाली में खाने बटने यूसुफ और इन यामीन का एक ही थाली में खान) और इन्म के सामान में खाने का कटोरा छिपा देना का उल्लेख है जबकि 'कुरान' में नहीं है। 'कुरान' में बताया है कि इन्म की बोरी में अनाज नापने का कटोरा छिपा दिया गया। (ख) किनआँ नगर के घुसवार का यूसुफ की कौठरी (कदखान की) से गुजरना यूसुफ द्वारा अपन पिता को सन्देश भेजना आदि का उल्लेख भी 'कुरान' में नहीं है। (ग) यूसुफ के मित्र के बादशाह बनन का जिक्र 'कुरान' में नहीं है। यूसुफ की शोभा-यात्रा निकलन, अधी बढ़ा जुलखा का उसे अपन पास बुनवान यूसुफ द्वारा तरस खाकर उम अपन महल में भिजवाने परिश्रमा जबरल की कृपा से जुलेखा का चौदह वष की लकड़ी बन जाने, यूसुफ की काम-वासना भड़क उठन और जुलेखा के वराम्य वृत्ति आ जान इन्क मजाजी (सांसारिक प्रेम) से इन्क हकीकी (ईश्वरीय प्रेम) की ओर उसके उमुख हो जान की भी काइ चर्चा 'कुरान' में नहीं आती।

१५० हिन्दी सूफी काव्य में पौराणिक आख्यान

(घ) यूसुफ के मर जान पर जुलखा का उसकी कब्र पर अपनी माँगों निकालकर घड़ा दना तथा स्वयं भी मर जाना और सोगा द्वारा यूसुफ की कब्र की बगल में जुलखा को भी दफना दना—जहाँ जामी और निसार की मसनवियों में उल्लिखित है, वहाँ कुरान में नहीं।

जुलखा की कथा को जो विस्तार 'कुरान' के बाद इन दो मसनवियों में मिला है, उसका प्रयोजन और उद्देश्य है प्रेम की तीव्रता विरह की पीड़ा और समपण की अनन्यता का चित्रण करना। कुरान में जबकि यूसुफ की कथा एक नक्लीमत इमान की कहानी बनी है वहाँ इन दोनों मसनवियों में जुलखा की प्रेम ज्योति पर अपन का बलिदान कर इन बाल प्रेमी की कथा बन गयी है। प्रेम की उच्चता और उदात्तता जुलखा में प्रतिभूत हो गयी है।

सूफी प्रेमाख्यानों में आगत पौराणिक आख्यान

हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो और सूफी कवियों द्वारा लिखित प्रेमाख्याना में पौराणिक आख्यानों तथा प्रसंगों का प्रचुर प्रयोग हुआ है। प्रयोग के स्वरूपों पर तो हम आगे विचार करेंगे, परन्तु पौराणिक कथाएँ जिस रूप में इन काव्यों में आयी हैं उनका आकलन भी आवश्यक है। पौराणिक आख्यानों का एक तो शास्त्रीय परिनिष्ठित रूप है जो वैदिक साहित्य महाकाव्यों तथा विविध पुराणों में विकसित होता रहा है। उनका दूसरा रूप है लौकिक जो लोकानुभूति और लोक विश्वास के द्वारा परिवर्तित एवं रूपांतरित होता रहा है। सूफी कवियों ने अधिकांशत आख्याना के लोकाधारित रूप का ही अपने साम्प्रदायिक उद्देश्य की पूर्ति तथा काव्य रूढ़ि के पालन के लिए प्रयोग किया। यही कारण है कि सूफियों द्वारा प्रयुक्त पौराणिक आख्याना तथा पौराणिक कथा प्रसंगों का रूप अपने शास्त्रीय रूप से काफी भिन्न हो गया है। सूफी कवियों का उद्देश्य कथा के लिए कथा कहना नहीं है। वे पौराणिक आख्यानों तथा पात्रों आदि का जब प्रयोग करते हैं, तब उनका प्रयोजन कुछ और ही होता है। कहीं तो वे सूफी-दर्शन-सत्त्व का निरूपण करने के लिए उनका प्रयोग करते हैं और कहीं अपनी उक्ति को प्रभावक और चमत्कारिक बनाने के लिए।

आगे हम हिन्दी के सूफी कवियों द्वारा विभिन्न प्रेमाख्याना में प्रयुक्त पौराणिक आख्यानों की स्वरूप चर्चा करेंगे। इन आख्यानों के विकास क्रम को दर्शने का यहाँ प्रयास नहीं किया जाएगा। उसके लिए इस प्रबंध के उत्तरार्द्ध^१ का अवलोकन करना चाहिए।

पौराणिक प्रसंगों का काव्यों की जिन पक्तियों में उल्लेख हुआ है उन सबका यहाँ उद्धृत करना आवश्यक नहीं लगा। चंदायन 'महावती पदमावत', विश्वरक्षा और मधुमालती के मुद्रित संस्करण अब सुलभ हैं अतः उनकी मूल

१ प्रस्तुत प्रबंध का उत्तम एक स्वतंत्र ग्रंथ के रूप में पौराणिक आख्यानों का विकासक्रम-प्रथम अर्धशतक १९७५ में प्रकाशित हो चुका है। प्रकाशक—दोआक प्रकाशन ६१-राफ कमलानगर दिल्ली-७ मूल्य ३०)

पकितया को उदघत करना अनावश्यक लगा। किंतु माघवानल-कामकदला (आलम कृत) चित्रावली' नल-मन द्वावती (पूर्वाद्ध) अनुराग-बामुरी हस-जवाहिर तथा यूसुफ जुनखा के मुद्रित संस्करण जब कम सुलभ या दुर्लभ हैं। नानदीप 'इद्रावती (उत्तराद्ध) और जान कवि के वाक्य ग्रंथ आदि तो अभी हस्तलिखित रूप में ही बिन्ही बिन्ही सप्रहालयो तथा व्यक्तियों के पास अवलोकनाय प्राप्य है सो भी सरलता से नहीं। अतः ऐसे ग्रंथों की ऐसी पकितया को जिनमें उक्त पौराणिक कथाशा का उल्लेख हुआ है हमने पाठ टिप्पणी में संसदभ द दिया है।

अगस्त्य ऋषि द्वारा समुद्र-शोषण

अगस्त्य द्वारा समुद्र शोषण के आख्यान का उल्लेख पदमावत^१ चित्रावली^२ (दो स्थान पर) और नानदीप^३ में हुआ है। पदमावत में एक स्थल पर ही इसका आलंकारिक प्रयोग किया गया है। जब राघव चेतन न यक्षिणी सिद्धि के बल पर द्रुज का चंद्रमा अममय में ही दिखला दिया तब रतनसेन की राजसभा के पंडितों ने उसके इस चमत्कारी कृत्य के लिए उसकी तुलना अगस्त्य मुनि से की, जिन्होंने समुद्र को सोख लिया था। चित्रावली में भी इस घटना का उल्लेख एक स्थल पर आलंकारिक रूप में हुआ है और इसे महती सामर्थ्य का द्योतक माना है किंतु दूसरे स्थल पर अगस्त्य और समुद्र को कथा के पात्र के रूप में अवतरित किया गया है। जब नायक मुजान का बोहित समुद्र में डूबने लगा तब दक्षताआ ने अगस्त्य को समुद्र का पानी कम करने के लिए कहा। जैसे ही अगस्त्य की ध्वजा दिखलाई दी वैसे ही समुद्र की उत्ताल तरंगें शांत हो गयीं और जैसे ही अगस्त्य ने तीक्ष्ण दृष्टि से समुद्र को देखा वह सहम गया डर के मारे उसका कलेजा धर-धर कांपने लगा। उस आशका हुई कि कौन अगस्त्य मुझे फिर न सोख लें। इससे ध्वनित होता है कि अगस्त्य न पहली बार जब समुद्र का शोषण किया होगा तब उस दण्ड देने के लिए ही। किंतु इस आख्यान

१ पदमावत ४४८।१

२ उत्तरि सभारि देहु तुम राजा एखो परव न वाहु छाजा।

वहु अगस्त ते उदधि धवारा धनरस किए परस किमि दारा ॥

—चित्रावली छंद ३६२ की ६-७

×

×

×

तब अगस्त सो कौन हकरी मर न पावहि तेहु उवारी।

कोहि अगस्त धजा दक्षराई सम द लौरि तब गयउ वताई ॥

तनिक अगस्त दिष्टि किय तेजा धरधर कापेठ समुद्र करेजा।

एकहि सहुरि मोइ अस जागा बोहित निकसि तार ग लाया ॥

—चित्रावली पं० २३२ छंद ६६ की १४

३ विरल रूप राज जगमाही राजा राम सो पाए उपाही।

अग्या ल पाव जहाँ धावहि सोपहि समद सुमेर नवावहि ॥

—ज्ञानदीप छंद १२

का जो स्वरूप पुराणों में मिलता है उसमें समुद्र को दण्ड देने के लिए उसका मोखा जाना नहीं वर्णित है। द-यों को दण्ड देने के लिए ही, देवताओं के कहन पर अगम्य ने समुद्र को सोखा था। ऐसा जान पड़ता है कि टिटहरी के अण्डों को बहा ले जान के कारण अगस्त्य द्वारा समुद्र को दण्डित करने का जो आख्यान लोक में प्रचलित है उसी पर कवि उममान की दृष्टि इस प्रसंग का उल्लेख करते समय गृही होगी। 'जानदीप' में घटना का उल्लेख कुछ दृष्टांत के रूप में हुआ है। जानदीप में हुए इस प्रयाग की विशेषता यह है कि इस कथा का प्रयोग इसमें मदभ-कथा के रूप में न होकर काव्य के कथानक के अंग के रूप में हुआ है। अगम्य और उदधि यहाँ कहानी के पात्र बन गये हैं। ऐसा प्रयोग सूफी काव्या में अपने ढंग का अकेला है।

अभिमन्यु का चक्रव्यूह में जूझना

अभिमन्यु के चक्रव्यूह में जूझने के प्रसंग का 'पदमावत' में आलंकारिक प्रयोग किया गया है। गुरु होने हुए भी द्रोणाचार्य ने जब अभिमन्यु को चक्रव्यूह में उलकाकर भरवा डालने का विचार कर लिया तब भला उसे कौन बचा सकता था? क्या का यही भाव पदमावत में ग्रहण किया गया है।

अर्जुन द्वारा मत्स्य-वेध कर द्रौपदी स्वयंवर की शत पूरी करना

मगावती, पदमावत 'नल-दमन इन्द्रावती' और अनुराग-बाँसुरी में इस कथा प्रसंग का उल्लेख हुआ है। मगावती में तो इसका प्रयाग केवल उल्लेख के रूप में हुआ है। राजकुंवर के रहने के लिए मानसरोदक के तट पर जो महल बनवाया गया उसमें अर्जुन द्वारा मत्स्य-वेध का दृश्य भी अंकित किया गया। अर्जुन ने मत्स्य वेध करने के उपरान्त कौरवों को हराकर द्रौपदी को जीता। ऐसा उल्लेख यहाँ मिलता है। द्रौपदी-स्वयंवर में कौरवों से अर्जुन का जो युद्ध हुआ, उसी की ओर इसमें संकेत है। पदमावत में इस प्रसंग का आठ बार^१ आलंकारिक दार्ष्टान्तिक और प्रतीकात्मक प्रयाग किया गया है। पदमावती की भौंहा की वक्रता की तुलना उस घनूप से की गयी है जिससे अर्जुन ने मत्स्य-वेध किया। इस घटना का उपयोग किसी शत का पूरा करके नायक द्वारा नायिका से साधिकात् त्रिवाह करने के अर्थ में भी किया गया है। पराक्रम और पुरुषाय के वृत्त के रूप में भी यह प्रसंग उल्लिखित है। लक्ष्य के प्रति एकाग्रता की भावना भी इससे ध्वनित की गयी है। पदमावत में मत्स्य का परच्छाद का देवकर अर्जुन द्वारा उमका वेध करने का उल्लेख है। यह लोक प्रचलित कथा रूप है। पौराणिक प्रथा में तल या अथ किसी तरल पदार्थ में मत्स्य का प्रतिबिम्ब देखकर उम बघन का उल्लेख नहीं आता। कवि ने इस कथा को

१ पदमावत २६४।१

२ मगावती १७।३

३ पदमावत १०२।१ १६७।१७ १६८।६ २३१।६ २३।१८ ३१६।४ ४७।१३ ४६९।३ ४ ४६९।७

पुराण कथा स नती मोक्ष म ही लिया है । नव जन्म म राहु-वध का मुमना विवाहगरात नायिका का बीमाय भग करन म भी की गयी है ।^१ द्वावनी म इगका उन्नेम अजून के परात्रम म रूप म हुआ है ।^२ अनुराग-बांगरी म मवमगना क कटाठा के कंठीरपन का मुमना अजून क बाण की माण्यता म हुई है ।^३

अजून का विदर-भ्रमण

जातनीय^४ म यागी मिदनाय राजा रायमान म बनाता है कि उमक रूपन अजून (पाय) न मारे ममार का मर टाला । रूपम अजून क विश्व भ्रमण का उन्नेम मात्र है ।

अजून का अश्विन (अजगर) की चपट में घाना

मगावनी म अश्विन की चपट म आन की घटना का अजून क माथ मम्बद्ध किया गया है किन्तु वस्तुतः यह घटना भीममन म सम्बन्धित होना चाहिए । अजून क विभी नाम की चपट म आन का उन्नेम पौराणिक माण्यम में नहीं मिलता । भीममन क माथ घटित घटना इस प्रकार है—

अपने अजातयाग क बाणवें वप में पाण्डव मग्गवनी तृपती दुनवन प्रण म घूम रहे थ । एक दिन जब भीम वन में अकने भ्रमण कर रहे थ तब उन्होंने एक दिशालकाय अजगर का देखा । उमका अरीर पवन के ममान विशाल था । उमन भीम की शला भुजाओं का जकट लिया । यद्यपि भीममन में रूप हजार गजराजा का बन था तथापि थ उम महाकाय अजगर की चपट स न छूट सक ।^५ तब भीम न

१ धरजन बान राहु जन मार । बरवा मोठा बध चलाय ॥

—नव-दमन प ११४ छं २१७ क बाद । नागरी प्रचारिणी सभा बासी प्रति में जो तीन छंद घटित हैं उनम मे प्रथम छं की सातवीं पंक्ति ।

२ मोठिय बर इन काहुक हाया मरुर बरु न मारेह माया ।

अक न धनुषारी कर्ता राहु सा बधे धाइ । सीट पन घनि गाड़ा शीरद ध्याही जाइ ॥

—द्वावनी (मन्त्र) पूर्वार्ध काय छंद १८१ दोहा १८

घम न छाहहु होइहु काजा । धरजन मम होई कोइ राजा ॥

जैके बरिष्ठक बधउ राहु । मएउ शीरने सग विपारु ॥

तम व मीठी धाइ निघारे । तोहि सग परमद बिन सवारै ॥

—बड़ी काय छंद छं ११ की ११

३ धरजन मुगिरि कटाछे तेरे । बघा देन बिघ तुम करे ।

(बिघ तुम = राहु = रोहु मछनी)

—अनुराग बांगरी पं १११ छं ७८११

४ तब विघनाय कहा मुन राजा हौं विघनाय विरोधनि राजा ।

मो विघनाय को मोरय बीठा मो विघनाय चारि जग बीठा ॥

मोरे देपन मंका टरी मोरे देपत मोधिन लूटी ।

मोरे देपन बलि बहूँ बाँधा मोरे देपन वारय जग धाँधा ॥ —ज्ञानपीठ छं २१२

५ महाभारत वन पर्व अध्याय १७८

उमका परिचय पूछा और अपना परिचय उसे दिया । अजगर न बताया कि मैं राजा नहुप हूँ और जगत्स्य ऋषि के शाप से अजगर हो गया हूँ । उसने कहा कि बिना मेरे प्रश्ना का उत्तर दिये तुम मेरी पकड़ से नहीं छूट पाओगे । तभी भीम को खाजत हुए युधिष्ठिर वहाँ आ पहुँचे । भीमसन को उस अजगर ने अपनी कठार जकड़ म बदन-सा कर रखा था । युधिष्ठिर ने अजगर के प्रश्ना के उत्तर दिये । फलत वह (नहुप) शापमुक्त होकर स्वर्ग चला गया ।^१

‘मगावती’^२ म अजुन के अहिवन की चपट म जाकर रान बिलखन का उल्लेख आलंकारिक रूप म आया है । राजकुवर जब जोगी बन जाता है तब उसका पिता विलाप करता है । अजुन के रोने बिलखने का इस घटना का उपमान बनाया गया है । लगता है कवि ने भ्रमवश ही भीमसन के साथ घटित घटना को अजुन के साथ सम्बद्ध कर लिया है । सूफी कवियों के इस तरह के तथ्यात्मक अज्ञान के उदाहरण और भी मिले हैं ।

अजुन द्वारा कौरव-दल का सहार

अजुन द्वारा कौरव सेना के सहार की घटना का उल्लेख ‘चदायन’^३ और चित्रावली^४ म आलंकारिक रूप म हुआ है । अजुन की वीरता की प्रशंसा ही इसके द्वारा अभिप्रेत है । चित्रावली^५ मे कामदेव को पाय माना है और सुख का कौरव-मना ।

इन्द्र का परनारी को छलना (धहल्या के साथ व्यभिचार)—
गौतम ऋषि द्वारा शाप—इन्द्र का सहस्रभग होना

इन्द्र के सहस्राक्ष होने का उल्लेख तो पदमावत^६ म भी आया है परन्तु उममे किसी कथा रूप का संकेत नहीं मिलता । युद्ध-क्षेत्र म गोरा कहता है कि मैं इन्द्र की तरह सहस्राक्ष होकर अपन शत्रुओं को देखूंगा । माधवानल-कामकदला^७ म इन्द्र के छलिमापन की ओर इंगित किया गया है । विक्रमादित्य जब कामकदला की सखियों से पूछने हैं कि वह किस के धरह म दुखी है तब सखियाँ माधवानल के आन और उससे कामकदला के प्रेम हो जान का वक्तव्य कहती हैं । उनकी संदेह

१ महाभारत वन पर्व अध्याय १७६ १०१

२ मगावती ६६।३

३ चदायन (प० सा गण्य) १२१।५

४ बिरह भनेक कटक दल सात्रा हम उर वीर घाइ भा राजा ।

मदन परप हूँ घनछ सभारा सुख कौरी दल मारि निमारा ॥

—चित्रावली प १६९ छ ५३५ शी २३

५ पदमावत ६२६।४

६ मोहन रूप विक्र कोड भावा । नन साथ तिन मन बौरावा ।

कँधी घान इट छल गयो । कँधी दरत मदन की भयो ॥

—माधवानल-कामकदला हस्तलेख ना० प्र० सं० प्रति पद ३२

है कि माध्यामन भी इन्द्र जसा ही कोई छनी था जिसने अहत्या की भाँति काम करना की आ छना । इन्द्र अहत्या-जार का स्पष्ट शर्तों म उल्लेख आता है 'गान दीप' म । पर नारी से प्रीति करने वाला मदा जपयण का भागी होता है इन नीति कथन क दृष्टांत क रूप म हम आख्यान का उल्लेख हुआ है । गौतम की पत्नी कितनी पतिव्रता थी पशु रूप में कपट रूप धारण कर उसके साथ जार-कम किया । उससे उसको कितनी माँगत नहीं गहनी पड़ी । उसके शरीर म सहस्र योनियाँ उत्पन्न हो गयीं । परस्त्रीगमन पाप क दण्डस्वरूप इन्द्र का सहस्रभग होना लोक-व्यवहार और सामाजिक मर्यादा के लिए एक दृष्टान्त ही बन गया । नल दमन' म भी इन्द्र के सहस्रभगधारी रूप का उल्लेख उस अवसर पर हुआ है जब इन्द्रादि देवता दमय ती स्वयंवर म नल का रूप धारण कर उस क समीप आ बठन हैं ।

इन्द्र का अपन त्रिशूल (वज्र) से सुमेर आदि पवतो के पल काटना—
सुमेर का आकाश तक ऊँचा उठना (स्वर्ण गिरि होकर)

पदमावत' म इन्द्र के वज्र को त्रिशूल कहा गया है । इन्द्र न अपने वज्र से ही पवतो के पल काटे थे । पल कट जाने से सुमेर विकलाग हो गया, पर इससे क्या ? विकलागता किसी की उन्नति म बाधक नहीं हो सकती यदि उसम स्वयं उन्नत होने की अदम्य इच्छा और लगन हो । सुमेर पवत पल कट जान के बाद भी आकाश की ओर ऊँचा उठना हुआ अपनी महीयता का उदघोष स्वर्णगिरि होकर करता रहा और हम सत्य का प्रवाशन करना रहा कि अतमूल्य ही व्यक्ति को महान बनात है । शारीरिक या सामाजिक विकलागता एक ओर मनुष्य को जहाँ कठिनाइयो एक उपेक्षा म तप जान क कारण करा मोना बना देती है वहाँ उसको महानता की ओर अप्रमर होने के लिए उत्प्रेरित करती है । पञ्चच्छिन्न सुमेर पवत इसका दृष्टांत है ।

उपा अनिरुद्ध-प्रेमाख्यान (उपा अनिरुद्ध के प्रेम पथ मे बाणासुर का बाधक बनना— दोनो प्रेमियों के सामने बाणासुर का हार मानना—अनिरुद्ध को उपा की प्राप्ति)

मगावती पदमावत जानदीप और इन्द्रावती म उपा अनिरुद्ध प्रमा

१ गौतम की बनिता पतिव्रता प्राप्त करने कोई पति करता ।

कती सौसति षट् बीन पाँ । सहस्रयोनि उपजी तन माही ॥

—जानदीप छंद ४४४

२ नल की निरुद्ध आन भये ठाढ़ नल मिलिया झलक नल पाढ़ ।

भय घाटि क भगल बनाबहि चहै न भगल काछ तिहि पावहि ॥

भगल किए वह हाथ न घाव गो निज मरम हिरी कोउ पाव ॥

(भगल = इन्द्र के जसा सहस्रभग बल रूप)

—नल दमन छंद १२६ चौ ६८

ख्यान का आलंकारिक और प्रतीकारत्मक प्रयोग हुआ है। मगावती^१ म उपा प्रेमिका के प्रतीक के रूप म प्रयुक्त हुई है। आख्यान का सकेत नहीं है। 'पदमावत'^२ म निर्दिष्ट है कि उपा-अनिरुद्ध का प्रेम मिलन हाकर रहा, किसी विघ्न बाधा के रोके न रुका क्योंकि दो प्रेमियो का सयोग दब के द्वारा पूव निर्धारित हाता है। भाग्याक को कीन मिटा सका है ?^३ प्रेमी प्रेमिका को प्राप्त करन के लिए सचेष्ट रहता है वह अपने प्राणो को सक्कट म डालकर भी उसे प्राप्त करने की चेष्टा करता है। अनिरुद्ध ने उपा को प्राप्त करने के लिए बाणासुर म धोर युद्ध किया था।^४ यदि अनिरुद्ध के गले म जममाला पडनी भाग्य लिखित थी तो बाणासुर बेचारा क्या करता ? उसने चेष्टा तो पूरी की कि अनिरुद्ध को उपा न मिल सके पर अतत उसे प्रेमियो के दह सकल्प के सम्मुख हारना ही पडा। उपा और अनिरुद्ध परस्पर सदा सदा के लिए मिले देवताओ को हप हुआ और दत्यो को मिर दद।^५ 'ज्ञानदीप'^६ और इन्द्रावती^७ में अनिरुद्ध तथा उपा का दो प्रेमियो के रूप म, जो परम्पर मिलन के लिए उत्कण्ठित हैं उल्लेख हुआ है।

कच का शुक्राचार्य के पास सजीवनी विद्या सीखने जाना—
कच-देवयानी-प्रेम

आलोच्यकाल के समस्त सूफी प्रेमाख्यानों मे केवल शेख नबी के 'ज्ञानदीप'^८

१ मगावती १५ । दोहा

२ पदमावत १६८।७

३ वही २३३।७

४ वही २७४।३ ४

५ तीन पहर एह रति मह करिय जो करना होइ ।

तब निचित बठठ एक हि मानहु रति रतिपति को नाइ ॥

उपा गीव जनु धनरुष मोसा राए दुपत जस कुसा कीला ।

राजा नन जब दामावती सुधर कल और सुधर कती ॥

कामदला पाइय माघो जेव राधा नदलालहि साघो ।

गुरजानी बिहसी तस देवी जीवन सुफल प्राप्तो सेवा ॥ — ज्ञानदीप छंद ११४

६ रागै कहा भूख मोहि माहो खातें कहा फल यह बन माहो ।

हो भनरुष चाहत हौ ऊया बहि दरसन का हौ मैं भूखा ॥

हौ करती तेहि पय को इन्द्रावति जेहि नाउ ।

पल प्रहार तेहि दरस को बाहो तेहि दिसि जाउ ॥

इन्द्रावती (पूर्वादि) मन्त्रि प्रति प० २७ छंद ११ को १५ और दोहा

७ प्रसम बान भनसिख के छूट रति सगराम राम दुप छूटे ।

बिरह सब छत्रि सात्र पराना त्रियत सोहाय रह भदाना ॥

कामदेव पूस रत माहा सुरगुर बिठा जातु त्रियाही ।

कच गुप बापि रही देवजानी जनु सकोच पिता का भानी ॥

× × ×

नबी गुरति सप्राम भवि हुने काम निशि बापि ।

प्रम कच सोपत सुक दिव मत्र सो जीवन सापि ॥ — ज्ञानदीप छंद २७६

कण का कवच इन्द्र द्वारा छलपूर्वक मागा जाना

'पद्मावत'^१ म इस आख्यान का जा रूप ग्रहण किया गया है वह यह कि इन्द्र ने छलपूर्वक कण का कवच उससे माँग लिया, इसम अजुन को तो सुप्त पहुँचा और कण को दु ख । नागमती हीरामन का इन्द्र की तरह छलिया घटाती है । इन्द्र न कपटपूर्वक कण से कवच माँग लिया या हरण कर लिया और हीरामन उसके प्रियतम को ही उससे छीन ल गया । जैसे इन्द्र व काय ने अजुन को सुखी किया और कण को दु खी, वस ही हीरामन व काय से पद्मावती की साध पूरी हो गयी, पर नागमती की तो दुनिया ही उजड़ गयी । कण के दानी रूप पर इसम बल नहीं दिया गया है ।

-कण की दानशीलता

कण की दानशीलता का उल्लेख 'मगावती'^२, 'पदमावत'^३, 'चित्ररेखा'^४, 'मधुमालती'^५ 'चित्रावली'^६ 'नानदीप'^७ और 'माधवानल-कामकदला'^८ तथा 'कथा कबलावती'^९ म हुआ है । कण का नाम बलि हातिम, शेरशाह आदि के साथ लिया गया है । दान की महिमा बताते हुए कहा गया है कि वह दान देने व कारण ही इह लोक और परलोक को तर सवा । कही-कही नायक या शाहवक्त को कण से अधिक दानशील बताया गया है ।^{१०} अधिकतर कण को दानशीलता के लिए उपमान ही रखा गया है ।

कण का पराक्रमी होना

कण के पराक्रम का आलंकारिक वर्णन 'मगावती'^{११} और 'पदमावत'^{१२} मे

१ पदमावत ३४१ श्लो ३७

२ मगावती छन्द ४ श्लो ४

३ पदमावत १७१२ १४५१७ ३८७१६-७

४ चित्ररेखा ५० १०८ श्लो ३

५ मधुमालती, छंद १२ १३

६ दान निसान कहु खड बाजा करन कुबद बनू बलि साजा ।

—चित्रावली ५० १७ छंद ४०, श्लो ३

७ राज करे सागा एह राजा दिन दिन मानहुँ इन्द्र होइ गाम्हा ।

जैसे राजनेति बुधिरानी बिक्रम भोज करन की कानी ॥

—ज्ञानदीप छंद १६५

तेहु बाहि पधिक एहि बाही नाइ बाघ अग एकद पाही ।

—ज्ञानदीप छंद ४१६

८ धनि कुरण जिनि राग मुनि रोझि न राख प्राण ।

वन करन बलि बिक्रमा दियो न ऐसी दान ॥

घारा भोज सज्ज जिनि दोत्री करन वन बलि बिक्रम कीनी ।

वे सब मए भोज के मारे रोझि प्राण नहि दिए पियारे ॥

—माधवानल-कामकदला ५० १६५ पं ८

९ दबै को वह करन कहावे ग्यान भोज नौ पटतर पावे ।

—कथा कबलावती पत्र ३ छंद ८

१० चित्ररेखा १०८१ पद्मावत १७१२ मगावती ४१४ चित्रावली ४०१३

११ मगावती ३३३

१२ पदमावत ६११ श्लो १ श्लो ५

एक एक बार आया है। ममावती में ब्रह्म का ब्रह्म का तीक्ष्णता का मायिका का ब्रह्म-ब्रह्म की तीक्ष्णता में और पन्मावत में ब्रह्म और गोरा की धीरता का परनुराम तथा ब्रह्म की धीरता में उपमित किया गया है।

कार्तिकेय का शरजात होना

नूरमुहम्मद-कृत अनुशासक-गीतों^१ में अनेकानेक रूप में शरजात कृत का उल्लेख हुआ है। कहा है कि जिन प्रकार शरजात (शरजात) वन में लटक रहा था उसी प्रकार प्रमी भी प्रमिता का विरह में लटक रहा है। आषाढ चन्द्रमा की पार्वत्य में शरजात कृत के दो अर्थ पहल किए हैं— (१) शरजात - शरवण में उत्पन्न स्वामी कार्तिकेय और (२) शरजात—मरावण में उत्पन्न मदन। मदन का साथ उन्होंने वन का अर्थ स्पष्ट किया है।^२ किन्तु शरजात में कार्तिकेय का अर्थ पहल करना ही समीचीन जान पड़ता है क्योंकि स्पष्ट कहा है— लखनाइ जिन वन शरजात।^३ यहाँ कोई संशय नहीं दिया गया कि शरजात नामक घास के वन में शिबु (कार्तिकेय) को छुट्टानी स्थिति में किसने छोड़ा—कृत्तिकाओं ने गंगा ने या श्रद्धि-पत्नियों ने ?

कृष्ण (वसुदेव-मुत्त) का नन्द द्वारा पालित होना

शम नबी कृत ज्ञानदीप^४ में एक स्थल पर ही इस प्रसंग का उल्लेख हुआ है। राजा रायभात योगा गिज्ञानाय से कहता है कि ज्ञानदीप को मैंने पाला-पोसा और पोष्य बनाया है तो इसमें क्या पुत्र तो वह रायगिरोमणि का ही कहलाएगा। कृष्ण को नन्द महार ने पाला परन्तु वे नन्द-मुत्त न कहनाकर वसुदेव-मुत्त ही तो कहनाय। किन्ती का नाँव-ऊँच कोई छीन थोड़े ही सता है? कृष्ण का नन्द द्वारा पालित होना की घटना सोच-व्यवहार का एक दृष्टान्त बनकर उपस्थित हुई है। मूफ़ी काव्या की साहित्यिक का यह एक प्रमाण है।

कृष्ण द्वारा बाल्यावस्था में ही कई चमत्कारपूर्ण और वीरतापूर्ण लीलाएँ करना तथा ब्रजवासियों पर आये सबके को टालना

उपयुक्त चमत्कारी एक वीरतापूर्ण कृत्या में से केवल कार्तिकेय नामक मन्त्र मुष्टिक वध कामासुर और बस-वध का ही उल्लेख स्पष्टतः मूफ़ी प्रमाण्याना में हुआ है। शेष कृत्या का नामोल्लेख न होकर पन्मावत में बाल्यावस्था में ही कृष्ण की

१ एहि काँठार नाँव की पार केहि रहि बिय बहुत बह मान ।

लखनाइ जिन वन शरजातु जिन प्रमी को है मरजातु ॥

—अनुशासक-गीतों २६१४५

२ वही पृ १३ पाद टिप्पणी

३ ज्ञानदीप पृ २६७

वीरता का सवेत प्रतीकारत्मक रूप से^१ और वज्रवासियां पर आय सक्टी को टालने का उल्लेख अलकाय रूप म हुआ है।^२

कृष्ण का कालियनाग को नाथना—उसके फनो पर नृत्य करना—
कालि का मुह मे कमल लिये कृष्ण के साथ आना

कवल पदमावत और 'कथा कनकावती' म ही कालियनाग मदन प्रसंग का आन्कारिक उल्लेख मिला है। अथ किसी सूफी प्रेसाराखान म इस प्रसंग की चर्चा नहीं आती। पदमावत म पदमावती की बेणी को कालियनाग से उपमित किया गया है और कहा गया है कि कृष्ण न कालियनाग को नाया था और कृपाकर उसे जीवित छोड़ दिया था।^३ वहाँ यह भी वणन है कि कालियनाग जब कृष्ण क पीछे पीछे आया तब उसने अपन मुख म कमल ल रखा था।^४ (इस शुभ शकुन भी कहा गया है।^५) कालियनाग क फना को नाथने की क्रिया को एक सत्रासवारी भयानक घटना के रूप म भी देखा गया।^६ कथा कनकावती म कालिय और शेष को एक ही मानकर उमके नाथे जान की घटना को पराक्रमपूर्ण एव साहसिक कृत्य कहा गया है।^७

कृष्ण को अक्रूर द्वारा मथुरा ले जाना—कृष्ण का गापियो को विरहावस्था मे
झाड़कर मथुरा जा वमना—गोकुल का उजाड हो जाना

पदमावत नलत्तमन कथा कनकावती और इद्रावती म इस प्रसंग की चर्चा आन्कारिक रूप म की गयी है। पदमावत म अक्रूर को प्रेमिका स प्रेमी का छीन ले जान थाले बाधक तत्त्व के रूप म चित्रित किया गया है। नागमती ने हीरामन ताता को अक्रूर स उपमित किया है।^८ इसी काव्य म अ यत्र कृष्ण को रूप लाभो तथा छतिरा सिद्ध किया गया है और कहा गया है कि कृष्ण ने जिनके जीवन का उपभोग किया उन गोपियो के प्रेम वचन को तोड़कर वह निष्ठुरतापूर्वक मथुरा चले गय।^९ पदमावत म ही कृष्ण द्वारा गोपियो को छोड़कर चले जाने का कारण यह

१ पदमावत ६१४ दोहा ५२२

२ व ६१४।६

३ वहाँ ११५।५ २६५।३

४ वनी ११५।६

५ वही टिप्पणी प ११२

६ वही ५०६।५

७ हों जगपनि जगत सभ जान तू सहहा जो भान न भाने ॥

+ + +

का २ होइ मथपुर ज्यों मोह सेस भये नाथ नू छोड़ू ॥

८ पदमावत ३४१।७

९ वहाँ ५६३ दोहा ५६।१

कथाया गया है कि कृष्ण गाणियों म पार न पा सक, उनम जपन म अगमय रहे इमनिह उ ते लोहकर कम मय ।^१ इम प्रकार उनक मयरा पत्न जाने का घटा घनाया क रूप म चित्रित कई है । नव म्मन म गाणियों का कृष्ण की स्मृति म कथा लिखाया गया है ।^२ कथा कनकावती म कृष्ण क मयरा जा। का उन्नत मय है ।^३ म्मनो में कृष्ण क मयरा मयन का गाणिया क प्रति उाही 'तप्यता और निष्करता का मूयक माता गया है और उा क पत्न जान पर गाहुन का उजाड़' या मूना^४ हा जाना यताया गया है ।

कृष्ण द्वारा कर्मागुर ता उघ

मूनी प्रमाण्याना म भी कवल पम्मायत इ हा मा भी पर स्यन पर कृष्ण द्वारा अया धनुष म कर्मागुर का मारन का उन्नत आत्मकारिण रूप म हुआ है ।^५ मन्नाभारत' म उपमन-गुण कम म भिन किमी कर्मागुर का उन्नत अय प हुआ है ।^६ किन्तु कथा समा सगता है कि कम का । उमकी म्पत्ता और इमिन नामक दानव क योय म उपात होउ^७ क कारण अगुर की मना क दा गया है ।

कृष्ण द्वारा कम ता उघ (कम ता नाम नपस्त्रियो क पाप म कम क मरने के पूय उपात हाना)

पम्मायत ६ चिन्तावती १ नव-म्मन ११ और इम-जवा

१ पम्मायत १२२।१ २

२ उयो अमया मय तरनि कई गागे कई कथन ।

उयो मूय मूय मय स्वाणि मयि तीव मय अमनन ॥ —नम इमन ११६।।पोहा

३ कथा कनकावती पत्र ७ छद २१ (पूर्वोक्तिविन)

४ है कथाह जोवन उधि पारी माव हमार । खेक काह कहीं है खेद सगावद नार ॥

+ + +

माह कसाएउ मयवन । नई नदकुमार । इम धन मुर राठ दिन मोहुम मएउ उजार ॥

—इन्नावती (पूर्वाई) मन्ति पागखण्ड छद ४ दोहा और छद ५ दोहा

५ अत मा कयय राम विन मूना, तम मा मून मयद दुख हुना ।

मोहुम मून किलन किन्तु तीरें मयतपूर मूना है कथें ॥

—इन्नावती (उत्तराई) हस्तलिखित प १६३

६ पम्मायत १०२।४

७ महाभारत समा पर्व ३८।२६ के बाद दाधिमार्ग पाठ प० ८२२

८ हरिबंश पुराण विष्णुपर्व २८।३८ १०३

९ पम्मायत २६३।३ ४८।६ २७६।६

१० श्रीकामपुर नगरकेर एक मनी कथा कपनगर अत मुनी ।

धन मयि यद तजि मा परयेती मावै कथा देखावै भेसी ॥

+ + +

माव पुनि किमना श्रीशारा मछुर जेस कसागुर मारा ।

भारत माह कोउ उपाया जिम पांडव कौरव कुल मारा ॥ —विज्ञावती ४७।११ ६

११ राम हरा रावन त्रिति कृष्ण हरा त्रिति कथ ।

ते क धानव ह ज मना वही धनक कर घत ॥ —नम इमन ६ । हा

हिर' में कृष्ण द्वारा कम के वध का दृष्टान्त और आलंकारिक रूप में उल्लेख हुआ है। कम वध प्रसंग का विस्तार से वर्णन नहीं है। इस घटना का उल्लेख कृष्ण के पराक्रम अत्याचारी के अतत विनष्ट होने और एक सत्रासकारी घटना के रूप में किया गया है। इस जगह हिर में कस के विनाश का कारण तपस्वियों का शाप बताया गया है। चित्रावली में कस का कमासुर कहा गया है और मयुरा में कृष्ण द्वारा मारे जाने का उल्लेख है। नल दमन में धनुष द्वारा कस का वध करने का उल्लेख है। केश पकड़ कर खींचे जान या कृष्ण के गिर पड़ने से कस के मर जाने का उल्लेख किसी भी काव्य में नहीं हुआ है।

कृष्ण (नन्दलाल) से राधा का मिलना

सूफी प्रेमाख्यानों में केवल जानदीप^२ में ही वियोग के उपरान्त प्रेमिका के साथ प्रेमी के मिलन के रूप में कृष्ण और राधा के मिलन का उल्लेख आलंकारिक रूप में हुआ है। कृष्ण के वियोग में राधा के दुःख सहन का उल्लेख तो 'पदमावत'^३ में भी हुआ है किंतु 'त्रिगृह' के बाद मिलन का उल्लेख तो जानदीप में ही।

कृष्ण पर भोलह सौ गोपियों का अनुरक्त होना

मगावती^४ में भोलह सौ गोपिया का उल्लेख हुआ है और जानदीप में सोनह सौ गोपियों के कृष्ण में अनुरक्त होने^५ और कृष्ण द्वारा उन गोपियों को लूटे जान की चर्चा दृष्टान्त रूप में आयी है।^६

कृष्ण को गोपियों से मिलाना—उद्धव द्वारा

जान कृत कथा कंबलावती^७ में उद्धव का उल्लेख प्रतीकात्मक रूप से कृष्ण और गोपियों को मिलानेवाले के रूप में किया गया है। किसी भी पुराण में कृष्ण और गोपियों का प्रत्यक्ष मिलन उद्धव के प्रयत्न से नहीं बताया गया है। यदि संदेश

१ तपसा से हर मानिस राजा कर सेवा जनि बूडस काजा ।

तपसी शाप जगत जरि जाई मयो शाप तिनहीं बिलमाई ॥

× × ×

तपसी शाप लंक भइ छारा कस बिलान तपसि कर माछ ।

—हसत्रवाहिर प० १५६ छंद ४२१बी० १२ ६

२ जानदीप छंद १६४

३ पदमावत ४२८१

४ मगावती २६।४ ५

५ सोरह सहस रही सभ गोपी अजगत बाहू जो एक सोपी ।

एक पिया की भइ सो दासी मिटी कालिमा भ भुपवासी ।

—जान दीप छंद १०३

६ जानदीप छंद २६२

७ बाहू कही राजा सौ सुधी बाहू मिलायो गोपिन ऊधो ।

—कथा कंबलावती पत्र १० छंद ७१ (हरत०)

को मिला की सजा दी जाय तो बान दूगरी है। 'ग्रहावतत पुराण' में राधा और गोपियाँ कृष्ण से स्वप्न में मिलती हैं।^१

कृष्ण द्वारा बुज्जा का बूचड़ ठीक कर दिया जाना

बेबल 'नस दमन'^२ में इस प्रसंग का उत्तम आसकारिक रूप में हुआ है। पौराणिक वस्तु में इसमें एक अंतर यह मक्षित होता है कि यहाँ कृष्ण सात मारकर बुज्जा का बूचड़ ठीक करते बताये गये हैं। पुराणों में उहाँन हाथ की दो अंगुलियों से उसका चिबुक को उचकाकर और उसका परो को अपने पर से दबाकर उस सीधा कर दिया है। सात मारकर बूचड़ ठीक करने का कथा रूप सूरदास लखनवी ने निश्चय ही सात सात में ग्रहण किया होगा।

कृष्ण द्वारा सादीपनि गुरु के सोये (मत) पुत्र को खोज निकालना (यमपुर से वापस ले आना)

कवन 'जानदीप में दो स्थलों'^३ पर इस कथा का अलंकार प्रयोग हुआ है। सादीपनि गुरु अपने इकलौत पुत्र को खोजे जान या समुद्र में डूब जान के कारण निपून हो गये थे। कृष्ण ने उनका उस पुत्र को खोज साकर पिता-पुत्र का सुख मिलान करा दिया। कृष्ण का महत्व इसमें सूचित हुआ है। गुरु भक्ति पर यहाँ बल नहीं है बल्कि पुत्र त्रिगुण पिता का पुत्र दन या पुत्र से बिसुने पिता का उससे मिला दन बाल पुण्य पर बल दिया गया है।

कृष्ण द्वारा सुदामा का दारिद्र्य दूर किया जाना सुदामा का द्वारकापुरी से लौटकर अपनी मंडया को न पहचानना

चित्रावली और 'जानदीप' — दो सूफी प्रमाख्याना में ही यह कथा प्रसंग

१ ग्रहावतत पुराण कृष्ण जन्म-खण्ड पृ. ११६८

२ अर्थात् कहि मो दुषावन बाता ५ मोहि भइ बुज्जा के साता।

(यद्यपि इन्होंने जो बात कही वह मेरे लिए दुःख थी परन्तु तुमसे (दमयती से) भेंट हो जाने का निमित्त बनने के कारण वह बात मेरे (नल के) लिए कल्याणप्रद हुई जिस प्रकार बुज्जा के लिए कृष्ण की सात हुई थी।) — नसदमन १६२।४

३ राए सिरोमनि मुनि भकुलाना बहुत भाति की हेउ सनमाना।

× × ×

हैं सेवक तुम ठाकुर मोरा प्राण जात घट तुमहि बहोरा।

सदीपनि मुत जसिय बोधा भाहु दइउ तस दी ह बिछोसा।।

तुम होइ निरन की ह उदघाटा तुम गइइ जिमि हों सम थाटा।।

—जानदीप छंद २६६

दिहेउ पूत हम रहेउ निपूता एहि देव करि बहू बेहि बूता।

बोहि जग करण की कीसन सदीपा की तुम प्राज दिगहु एहि दीपा।।

—बही छंद ४१६

एक एक बार आया है। 'चित्रावली' में उस स्थिति का उल्लेख है जब सुदामा द्वारका से लौटकर अमरावती तुल्य निमित्त अपने आश्रम में अपनी मँडिया (धोपट्टी) का न पहचानकर न हँस पाते हैं, न रो पाते हैं। 'जानदीप' में सुदामा के दारिद्र्य को दूर करने की घटना भगवान द्वारा अपन भक्तों पर अनुग्रह करने का दृष्टान्त बनकर आयी है।

कृष्ण से गोडिया (बहेलिया) का प्रतिशोध लेना

इस कथा प्रसंग का उल्लेख केवल 'चित्रावली' में एक स्थल^३ पर आलंकारिक रूप में आया है। गोडिया (बहेलिया) जैसे तुच्छ-तन व्यक्ति द्वारा कृष्ण जैसे महा प्रतापी राजा से अपना प्रतिशोध लेने का उल्लेख इस अभिप्राय को व्यक्त करने के लिए हुआ है कि दौब पाकर बरी को नहीं छोड़ना चाहिए चाहे वह कितना ही बलवान क्यों न हो।

गधवों का सुदरी कथाओं पर मुग्ध होना

पदमावत में पद्मिनी स्त्रियों के शरीर में निकलन वाले भीने परिमल की सुगंध से गधवों के गगो के मोहिन हो जाने का उल्लेख आया है।^४ जाज्वल भी लोक विश्वास है कि अधिक रूपवती स्त्रियाँ को जिन आविष्ट कर लेते हैं। तीव्र सुगंध में उनका आकर्षित होना भी प्रसिद्ध है। कुछ इसी प्रकार का लोक विश्वास प्राचीन काल में गधवों के विषय में भी प्रचलित था। इस सम्बन्ध में डा० वामुदेवशरण जगवान की एक टिप्पणी को यहाँ उद्धृत किया जा रहा है— प्राचीन मायता के अनुसार गधव स्त्री कामुक होते हैं और सहवास के लिए उत्सुक हाकर सुदरी कुमारी कथाओं पर आ जाते हैं। ऐसी कथाएँ गधव गहीता कही जाती थी। सोम, गधव और अग्नि कुमारी कथा के अ क्रमशः तीन पति कह गए हैं (तुरीयस्त मनुष्यज) यह उक्ति दिव्य गधवों के विषय में चरिताय है। देव गधवों के अतिरिक्त दूसरे मानुषी गधव होते हैं जो नृत्य गीत के अनुरागी एवं स्त्री कामी होते हैं। यहाँ जायमी ने स्त्रियाँ

१ मही सबारि देव जौ प्राबा मही न पावा चहुँ दिशि छावा ।

छावत फिर न पाव वासा विधि यह पुन्मी क कविलासा ॥

भूलि सुगमा ज्यों फिर न हमी धाव न रोइ ।

भक्त फिर चहुँ दिशि गई मन्दा छोइ ॥

—चित्रावली छन्द १ ६।६ ७ और दोहा १०६

२ धनि माह्व जहि दास दुप होत हिए मह पीर ।

देवा मरत सुदामही हस्त द्रोपदी चीर ॥

—ज्ञानपीठ छन्द ७७

३ कर्न सो गोडिया तुच्छ तन बहूँ विस्मय भस राउ ।

बरी जो बस क मिल सेइ सो प्रापन दाउ ॥

—विवावली प ११२ छन्द २६३।दोहा

४ पदमावत ५६।दोहा ५

के प्रति गधवों के अनुराग की निबन्धनी या लासमायना के आधार पर कल्पना की है कि कुमारी कागधा के गुरभिन्त गोत्रय में माना गधव उनके चारा और आहृत हा गण ध ।^१

गरुड का अपने पत्नी में प्रमृत भाडना

प्रसिद्ध है कि गरुड जो अना पत्नी पर स्वयं से अमृत का घट रख कर पाय ध । अमृत की कुछ बूँदें उनके पत्नी में लग गयी थी और उनके पस हिलान से अमृत शकता था ।^२

पद्मावत में गरुड के पत्नी से अमृत शकन का उल्लेख हुआ है ।^३ गरुड के स्वयं से अमृत खाने की घटना पौराणिक है किन्तु उनके पत्नी में अमृत शकन की बात लोकमानस की कल्पना की उपज जान पड़ती है । माया का यह विश्वास करन पत्नी स्वाभाविक ही था कि जब गरुड अपने पक्षी पर अमृत का घटा रखकर लाय होगा इन्द्र में उनका मधय हुआ होगा तब अमृत की कुछ बूँदें उनके पक्षी पर अवश्य छनक कर गिर गयी हागा । बड़ी बूँदें गरुड के पंख चलान के साथ शकती रहती हैं ।

चन्द्रमा का राहु का श्रणी होना

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने पद्मावत संजीवनी टीका में लिखा है— पुराणा के अनुसार चन्द्रमा राहु का श्रणी है अतः राहु अपना श्रण मागत के लिए उम पकड़ लेता है और लाग उम समय दान देकर राहु का श्रण चुकान हैं ।^४ परन्तु हम रिगी भी पुराण में चन्द्रमा के राहु का श्रणी होने का उल्लेख नहीं मिला । पुराणा में राहु और चन्द्रमा की पारम्परिक शत्रुता और प्रतिशोध भावना का ही उल्लेख मिनता है ।

‘पद्मावत’ में शक्ति और राहु के श्रणवधी (श्रणी और श्रणदाना के) सम्बन्ध का उल्लेख हुआ है । रतनमन अपने को पद्मावती के साथ ऐम ही सम्बन्ध में बंधा पाता है ।

चन्द्रमा और राहु की शत्रुता—चन्द्रमा और सूर्य का राहु द्वारा श्रमा जाना

सूफी प्रेमान्धानों में चन्द्रमा और सूर्य के साथ राहु की शत्रुता का तो उल्लेख हुआ है परन्तु उम शत्रुता के कारण की ओर किसी भी प्रेमान्धान में संकेत नहीं किया गया है ।

१ पद्मावत संजीवनी टीका टिप्पणी प० ६६७

२ वही संजीवनी टीका डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा हि सं प० २७

३ पद्मावत २३५। दोहा २३

४ वही संजीवनी टीका डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल द्वितीय सं० टिप्पणी पृ १०८

५ वही ६६।६७

राहु द्वारा चंद्रमा के ग्रस्त होने का वणन निम्नलिखित आठ रूपों में हुआ है

(१) चंद्रमा मुख की उत्फुल्लता का और राहु उमकी खिनता या उदासी का उपमान है।

(२) चंद्रमा नायिका व मुख का उपमान है और राहु नायिका की काला केश राशि का।

(३) चंद्रग्रहण का तात्पर्य चंद्रमा के गव को राहु द्वारा चूर चूर कर देना है। पूर्णिमा की रात जब चंद्र को अपनी पूर्णता का गव होता है उसी रात उस पर ग्रहण लगता है और फिर वह छीजन लगता है।

(४) पूर्णिमा का चाँद जीवन का और राहु चिरह का प्रतिरूप है।

(५) चंद्रमा का राहु ग्रस्त होना उसके जीवन की ऐसी घटना है जिसने उसकी सारी प्रसन्नता छीन ली हो।

(६) चंद्रमा शीतलता लाभ, सुख और भगल का तथा राहु दाह, अनिष्ट दुःख और अमगल का प्रतीक।

(७) चंद्रमा और राहु सौंदर्य के उपमान हैं—चंद्रमा मुख का और राहु भग-मद का।

(८) चंद्रमा और राहु की परस्पर शत्रुता।

पहले प्रकार का वर्णन 'चदायन' १ 'पद्मावत' २ 'ज्ञानदीप' ३ में आया है। दूसरे ४ तीसरे ५ और चौथे ६ प्रकार के वर्णन 'पद्मावत' में मिल जाते हैं। पाँचवें और छठे प्रकार के वणन 'चित्ररेखा' ७ 'चित्रावली' ८ तथा 'ज्ञानदीप' ९ तीनों में मिलते हैं। सातवें प्रकार का प्रयोग 'मधुमारती' १० में प्राप्त होता है और आठवें

१ चदायन (भूवाल प्रति) १५११ (प० ला० ग०) ४३१११ ४३३११वोहा

२ पद्मावत १ ११३४

३ ज्ञानदीप छंद १०१

४ पद्मावत ६११३ ११५१६

५ वही २५४

६ वही १७२ दोहा १८५ २५०११ २ ४२५६

७ वही २८११ ३४८३ ३८६६७

८ चित्ररेखा प ८८ जी० ३ प ६७। चौ ३ प० १ ३।की १

९ रानी कदा बगि चनि जाहू सप न पाउ मपकहि राहु। —चित्रावली छंद ५०७ चौ० १

१० रहहु भवन भवने होइ भारी भामिनि भागि जो कंत पियारी।

भयवा मूर कबल कुम्हिलाने चहू बदनु मुख राहु समाने ॥ —ज्ञानदीप प० १४ छंद ३७

जाना घत जोग से काज काज न घाइहि राजा राज।

साह बिभलि करीं रँग दाहु ससिभय देई सेउ दुप राहु ॥ —वही छंद ३३५

११ मधुमारती ८११३

प्रकार के प्रयोग 'पदमावत' तथा 'ज्ञानदीप' में उपलब्ध होते हैं।

चन्द्रमा के साथ-साथ मूय पर भी राहु का ग्रहण लगने का उल्लेख 'पदमावत' 'चित्ररेखा' और 'अनुराग बाँसुरी' और 'नल-धमन' में आया है।

राहु और बतु दोनो का उल्लेख 'चदायन' 'पदमावत' 'नल-धमन' और 'सूमुख जुलैमा' में आता है।

चन्द्रमा का कलकी होना (भाग्य के फर से)

सूफी प्रमाण्यानक काव्यो में कवन पदमावत^१ और चित्ररेखा^२ में ही चन्द्रमा के कलकी होने का उल्लेख मिलता है। इनमें चन्द्रमा का कलक रहते प्रकाशमान होने कलक के कारण चन्द्रमा का लोका निन्दित होने और उसके कलक के अमिट हान का भाव व्यक्त हुआ है। चन्द्रमा को कलक लगा क्या शक्य सबेते नहीं मिलता।

चन्द्रमा से रोहिणी का विवाह

जान कवि कृत कथा माहिनी^३ में ही यह प्रसंग उल्लिखित है किन्तु उसमें

१ पदमावत २३३।१ ३०५।५

२ जग मह कठिन नवनिया डाहू धामिय बंद मह अते राहू । —ज्ञानदीप छं० १ १

छबड राग मोउ बल माया पिय बिन बोल बोलावउँ बाया ।

चदहि राहु अचानक सावहुँ बिन बरिसे जल नगी बहावहुँ ॥ —वही छं० १ ५

३ पदमावत २५७।३ २५५।३ २५ ११ २ ३२ १४ ५ ५२२। दो० ४३।७ ५७१। दो ४०।२

६२५। दो ५ १५

४ चित्ररेखा प ८६।बो ५

५ अनुरागबाँसुरी १ १४

६ नल-धमन २४५।७ ८ २६२।६ २६३।दो ३२३।१ ३५८।३

७ चदायन (प ला० म०) ३३।५ ६७।दो० ३३४।१ २ सोरकटा (मा प्र ग) ४ ११ ५

८ पदमावत ३६३।५ ७ ११ २ ६ ६।दो ५१।३

९ तू जिनकर मैं राहु हूँ निम महुँ धरयो दरा ।

काल बतु रथ टरि गए बहुरि उब मुख धा ।

—नल-धमन २६ । दोहा

१० धो ता महू गू ध गज मोती राहु केत महू नखत के जोती ।

—सूमुख-जुलैमा (हि प्रै० मा का० सपह) प २५६ पक्ति ४

शब माये ग ध गज मोती राहु केत मानो चद के जाता ।

—वही प० ३६० पक्ति १

माँग सोहावन सुख भरे भाग अधिक तहू दी हू ।

राहु केत दुषो दम तहो रब कि किरन घस का ह । —वही प ३६८ पक्ति १ ११

११ पदमावत २१।१ २ १०१।३ ३३२।७

१२ चित्ररेखा ८६।५

१३ ब्याहू दई रति मैं कौँ किछी रोहिनी चद ।

—कथा मोहिनी (हस्तलिखित) पल ४, चौ० ११६

भी चन्द्रमा स रोहिणी के विवाह का ही उल्लेख है, उस पर चन्द्रमा की विशेष अनुरिक्त तथा दम के शाप का कोई संकेत नहीं दिया गया है।

जलमेदव (जनमेद) — जनमेजय ? — का वज्रित काय करके पछनाना

'मगावता' में राजकुवर मगावती के मना कर जान पर भी कठघरे में बंद राक्षस का मुकन कर देता है और वह राक्षस उस आकाश में ले उड़ता है। उस समय राजकुवर की पश्चात्तापपूर्ण मन स्थिति की तुलना जनमेजय की मन स्थिति से की गयी है क्योंकि जनमेजय ने भी ऋत्विजों के समझाने पर कान न देकर उनके द्वारा वज्रित काय किया और ऐसा ही मनस्ताप भागा था।

जलमेदव (जनमेजय ?) द्वारा नागयन्त्र में सर्पों का विनाश करना—

परीक्षित की मृत्यु का बदला लेना

सूफी प्रेमाख्याना म अकेले मगावती ^१ म एक स्थल पर जनमेजय द्वारा अपने पिता परीक्षित का प्रतिशाप लेने के लिए सप्त यज्ञ का आयोजन करने और उसकी आग में सर्पों को भस्म करने का आलंकारिक प्रयोग हुआ है।

जलमघर (जनमेजय ?) को भगवान् द्वारा कुएँ से उवारा जाना

इस कथा का कोई पौराणिक आधार नहीं है। उदाचित्त जनमेजय के सम्बन्ध में प्रचलित कोई लोक-कथा इसका आधार नहीं है। जलमघराख्याना में भी ऐसा प्रसंग हमारी दृष्टि में नहीं आया।

सूफी प्रेमाख्याना में म केवल मगावती म तीन-दुष्टियों को उवारेने के भगवान् के माहात्म्य वर्णन के प्रसंग में उसका आलंकारिक उल्लेख किया गया है।

दुर्योधन का पाण्डवों से छल करना

सूफी प्रेमाख्यानाक काव्य हम जवाहिर ^५ म पाण्डवों के साथ दुर्योधन के छल करने का संकेत मात्र किया गया है और इसका आलंकारिक प्रयोग हुआ है।

द्रौपदी का भाण्डार अखूट होना

पद्मावत ^६ म द्रौपदी के भाण्डार के अखूट होने का उत्तम मिहलमठ की नीर-क्षीर नामक ^७ नदिया के सदा भरे रहने के प्रसंग में केवल एक स्थल पर हुआ है।

१ मगावती २ ०१२

२ नहीं २५७१२ ५

३ वही २३६१२ ५

५ जल छल दुरजन घर किया तस भये सुन्तान।

गीतबारा के पूछियो जान चहू है प्रान। —दम-जवाहिर ५० १०३ दहा २८२

६ पद्मावत ५३१

द्रौपदी का दुःशासन द्वारा मनाया जाना—चार-दूरण का प्रयास—द्रौपदी का कृष्ण का गुहागना कृष्ण द्वारा द्रौपदी का चार बढाया जाना

जातनीय^१ और नन-दमन^२ मनुशामन द्वारा द्रौपदी का मतान द्रौपदी का चारदूरण करने द्रौपदी की गुहाग मुनतर कृष्ण का महायना क त्रिण उपस्थित दान का प्रमग गार्णोत्क और आनकारिक प्रयोग हुआ है। जातनीय मनुशामन का उल्लेख नहीं आता पर नल-दमन म आता है। भगवान की आन भक्ता पर कृपा क उदाहरण के रूप म म धटना का जना काव्या म प्रस्तुत किया गया है।

नल-दमयती की कथा (नन-दमयती का हम द्वारा मिलाया जाना—
नल-दमयती का विछाह—नल का दमयती के विरह म मनप्य होना—
नल पर विपत्ति पडना—नल-दमयती का पुनर्मिलन)

नन-दमयती प्रमाथ्यान क आधार पर हिन्दी कला सूफी कवियों सूर्यम लल नवी और जान कवि प्रमग नन-दमन और कथा नन दमयती काव्य की रचना कर चुके हैं किन्तु हिन्दी क अव्य सूफी प्रेमाथ्याना म भी नल-दमयती आख्यान के विविध प्रसंगों के प्रतीकात्मक आलंकारिक और दार्ष्टान्तिक प्रयोग हुए हैं। यहाँ उही पर ममग्र रूप से दृष्टिपात किया जाएगा।

म आख्यान के विविध पयोग को चार वर्गों म विभाजित किया जा सकता है—(१) नन-दमयती का हम द्वारा मिलाना (प्रथम मिलन) (२) नल-दमयती का परस्पर त्रियोग (३) नल पर विपत्ति पडना और (४) नन-दमयती का पुनर्मिलन। प्रथम वर्ग क प्रयोग जिनका वास्तविक तात्पर्य हम द्वारा दूतत्व करके नल का सदश नल क पास पहुँचाने से है मगावती^३ पन्मावत^४ माधवानल कामकदला^५ और

१ छति साहेब जहि दाम दुप जेन हिए मह पीर ।

देया मरन मुगमहि हरन द्रौपदी चीर —जातनीय छ ७७

२ देखी घामु बहै तू नये जन भलाई बग दायग ।

विरह दुपावन क बस घाँ भजन कर हरि होहु सगर् ॥ —नल-दमन १६३।२३

३ मगावती ११६।गेहा

४ पन्मावत २११।७

५ माधोवन सो कहा बसार् तो मैं धपनी पीर सनाई ।

द्विनवतहु सकबधा राई विरह उपन मो लेगु छटाई ॥

मा उपकार करा मन माही दमवनी त्रिम नलहि मिया ॥ (पत्र ३६)

× × ×

माधोवन ज काना मिली मिय मन दुहु मन कु दलो ।

मित मन नर नारी मय पावा मित वा माजा नाथि मियावा ॥

राश नन राना दमवना राम चन्द मो मिया साधनी ।

माधव मिली कामकदला धानक वडी सधतन भला ॥ (पत्र ४५)

—माधवानन-कामकदला (हि० प्र गा० का सं) प २३१ प० ८
तथा कहा हस्तलेख (ना प्र सभा की छोटी प्रति) पत्र ३६ और पत्र ४५

'नानदीव' म मिलने हैं । द्वितीय वग के प्रयाग पदमादत',^२ 'मधुमालती'^३ माणवा नन कामकला^४ और हम जवाहिर^५ म प्राप्त हुए हैं । ततीम वग का एक स्यन पर प्रयोग मगावती^६ म भिना^७ । चतुथ वग के प्रयाग मगावती^८ माधवानल-काम कदना^९ म हुए हैं । क्या विकास की दष्टि न इनमें काई नवीन बात नगी मिनो । नल दमयन्ती के आम्बान का उपयुक्त काथा में विछोह के बाद नायक-नायिका के अवस्थम्भावा पुनर्मिलन के रूप में ग्रहण किया गया है ।

नागो का पाताल-लोक मे वास

नागो के पाताल लोक में निवास करने का उल्लेख 'मधुमालती'^६ में आलंकारिक रूप में आया है ।

नारद-भोह की कथा (नारद का त्रिया के फेर मे पडकर यश खोना)

'हम जवाहिर'^५ मे नारद का त्रिया व कहने मे पडकर यश खोने का दष्टात-रूप मे प्रयोग हुआ है । शब्द परा कामाख्या देवी का रूप धारण कर राजा महीपति म कहती है कि इस का दोष नही है सारा दाय तुम्हारे लटकी का है । उसने त्रिया-चरित्र किया है । त्रिया के फेर म पडकर कस बडे-बडे लोग भी अपयश के भागी हान

१ ५था गीव जन धनुस्त्र सीला राए दुपत जन कुता कीसा ।

राशा नल जेव दामावती सभर कत घोर सुभर कती ॥

—जानगीप प० ५६ छद १६४ घोर—

दुलहिनि तिर पर सोहै मीरी लोग ठग जन पाइ ठगोर ।

मना हत दमयती सीमा राजा नल की देत मसीमा ॥ —वही ३० ६२ छद २५७

२ पन्मावन २००।६ ७ ४१७।७

३ मधुमालती २।५

४ माधवानल-कामकदला (हि० प्र गा० का० मग्रह) मद्रित प २०० प० २५ प० २०८ प० १६ राजा नल पयिबी मों मयऊ तिहि विछोह दमयती मयऊ । प० २१४ प० १

५ घोवों गम रक्त नल रोई तोहि मस गुरू मिला नहि कोई ।

—हम-जवाहिर प २१२ छद ५०३ घी० ५

६ मगावती १३२।४ ५

७ वही १७१।२ २४३।२ दिल्ली वाता इस्तलिखित प्रति म जिसकी प्रतिलिपि थी उदयशकर शास्त्री व सीताय से हम धवलोचनाय प्राप्त हुई उसक २०५वें छद की म पकितया भी दखिए मिरसावत सुनि तिउ रहसाई कौमा गन माधवानल पाई ।

बिहमा नाउ सनन मिरसावत नन यान भे । दामावत ॥

८ माधवानल कामकला मद्रित (हि० प्र गा० का स) पृ २२४ प० २५ २६

९ मधुमालती १ १।बोहा

१० तिरिया मते कौन नहि ययो केहि धर काग नार मन भयो ।

घाउ पिता जा जगत कर छोड दोन्हु कलास ।

खोने तिरिया के मते नारद भिटा मवास ॥

—हम-जवाहिर प १५६ छद ४३८ घी० ७ घोर बोहा

हे दमया एक उपासना नारायण जी है । श्रीमती (बहो-बहो दमयता नाम की स्त्री) क प्रेम म पण्डित नारायण या पवत ऋषि क साथ स्पर्धा करन और विधुयु स हरिमुनि (महदमुनि) होने का यत्नान पाने और हाम्पामान बनन की कथा पुराणों म' आया है जे नारायण माह कथा क नाम म प्रसिद्ध है । ह्य जवाहिर' म इन कथा का आर हा मकन है ।

प्रद्वान का माग म जलाया जाना पर उसका न जलना—
ननिहायतार नेत्र विष्णु द्वारा हिम्प्यन्दयपु का वध—
हिम्प्यन्दयपु का जलन क रागा पट्टा जाना

पान्तीय १ म प्रद्वान का अग्नि म जलान और उसमें म उगक वध निबलन का उल्लेख आया है । व' बचना ईश्वर कृपा म रही करन इगलिए कि जिमका आयु गारा है उम काइ दिनना भी बचटा कर नगी मार सकना । पान्तीय १ में हा द्दिग-कश्यपु वध का एक पराक्रमपूर्ण घटना क रूप में चित्रित किया गया है । विवाचना १ में पात्रक क योगीभूत हाकर हिम्प्यन्द यपु का वशी होता कहा है । यह स्पष्ट न । ३ कि हिम्प्यन्द-यपु न बीनजा पात्रक किया जिमक कारण उम बग होना पना । पुराणा में एमा काई प्रसंग उल्लेख नगी जाना ।

परशुराम द्वारा महाराज (महाराजुनि) तथा
अथ क्षत्रिया का सवान्त कर रना

परमावन १ में मन्मथान का घनपु (परशुराम क धनुष) म मारा जाना उल्लिखित है । परशुराम न मन्मथान का कथा माग म्मका काई मकन नहीं है ।

पाण्डवा का कजिरा दानव द्वारा हरा जाना—भीम द्वारा वचाया जाना

कवीर या कविग मानव द्वारा पाण्डवा का हरन की कथा हमें न ता

१ निवपुत्राण इ' म'ि ना म'ि घट घ० २ १ दधी भागवत पुराण ६।२६ २७ भविष्यपुराण उत्तराख घ० ३ बह्मवत पुराण बह्मवत ८ २१ निव पुत्राण उत्तराख

२ दानव भाग निरान न पीई घाहउ महि मूषा महि काइ ।
रना हि महि मगिनि मो आरा घाहउ आहि ताहि को मारा ॥

—पान्तीय छ' २ १

३ छाडि ध्यान बनकर रुप मन घाइ छरा घोरन दम मन ।
रावन हान राम हाइ बागी भीम जगति कोवक विधि माघी ।
हाइ नरमि' नो हरिनाम हनीवत जगति हनी रिधि राकम ।

—बही छ' १२४

४ सातव बोधा सब मयारा सातव मो मनु हो' पगरा ।
सातन हूँठा कर बन हारा सातव ती हरनाहुम घरा ॥

—विवाचनी प० १३२ छ' ४३१६-७

महाभारत में मिली, न किसी पुराण में। सूफी प्रेमाख्यानक काव्या में केवल 'मृगावती' में इस कथा का आलंकारिक प्रयोग हुआ है। उसमें एक स्थल^१ पर पाण्डवों के कबीर दानव द्वारा हरे जाने और भीम द्वारा उन्हें उसके चगुल म छुड़ाये जाने का उल्लेख है और दूसरे स्थल^२ पर केवल युधिष्ठिर के हरे जाने का। वहाँ भीम के उद्धारकर्ता होने का उल्लेख नहीं है। विपत्ति में भाई कितना सहायक होता है इसका उदाहरण देने के लिए इस कथा का उल्लेख हुआ है।

पाण्डवों का बंदी-गृह (लाक्षागृह) में डाला जाना—
भीम द्वारा उनके प्राण बचाना

पाण्डवों के बंदीगृह म पड़ने अर्थात् साभागृह म उनके तजरबद रखे जान की घटना साकेतिक रूप म पदमावत^३ में उल्लिखित है। परंतु उसी काव्य म 'जयत्र'^४ साभागृह म आग लगत जीर उसमें स भीम द्वारा माहमपूर्वक अपन भाइया का बचा लन का स्पष्ट उल्लेख है। यहाँ यह घटना एक साहसिक कृत्य का उदाहरण बनकर आयी है।

पाण्डवों की कौरवों पर विजय—एक सिद्ध योगी की सहायता से

इस जवाहिर^५ में तपस्वियों की महिमा का बखान करन हुए कथा गया है कि पाण्डव महाभारत युद्ध में एक सिद्ध योगी की सहायता से ही विजयी हो सके। सिद्ध योगी से तात्पर्य योमिराज श्रीकृष्ण से जान पड़ता है।

पाण्डवों द्वारा अपना कम-फल भोगना

भाग्य में जसा लिखा होता है उसका भोगना पड़ता है इस लोक विन्यास को उदाहृत करन के लिए 'भाषवानल कामकदला'^६ (आत्म) में पाण्डवों द्वारा अपन कम-फल का भाग करन का उल्लेख जाया है।

बलि का तीन पग पृथ्वी देने को वचनपद्ध हो जाना—

अपना भवस्व दान कर देना - विष्णु द्वारा बलि का छला जाना—

बंदी बनाकर पाताल में रहन को भेजा जाना

मृगावती पन्मावत 'चित्रावली और नानदीप म बलि वामन की कथा

१ मृगावती १३६।१ २ (दिल्लीवाला हस्तलिखित प्रति में यह छंद १७१।१ है)

२ वही २३६।४ ५

३ पदमावत ५७६।७

४ वही ६११।दोहा ५१।५

५ सिद्ध सहाय पाण्डवन जीना सिद्ध धाप परली हुई जाना।

—इस-जवाहिर प १५७ छंद ४ १ श्लो ५

६ कम हेत हरिचंद जल मरा, कम हेत बलि सधगु हरा।

कम हेत परीचंद पल छाप कम हेत रघुपति बन भाये ॥

—भाषवानल-कामकदला (हिंदी प्रमगाथा काव्य-संग्रह) प ० १६६ पंक्ति १३ १४

भायी है परन्तु इस पौराणिक कथा के मूल प्रमुख तत्त्व उनमें नहीं उभर पाये हैं। मगावती म बलि को वामन द्वारा बाधकर (नागपाश बद्ध करके) पाताल में भेजे जाने का और यहाँ से उमके बस भी न निकल पान का आलंकारिक प्रयोग हुआ है। बलि को ब दी बनाकर पाताल में जान का उल्लेख आलंकारिक रूप में ही 'पदमावत' में भी हुआ है परन्तु उममें एक स्थान पर तो वामन का उल्लेख आया है और अत्र तीन स्थानों पर^१ नहीं जाया है। 'पदमावत' में अथर्व विष्णु^२ की जगत् कृष्ण का उल्लेख करके उनके द्वारा बलि को धन जान का उल्लेख हुआ है।^३ 'चित्रावली' में भगवान द्वारा बलि को पाताल में रहने का निष्पन्न भजन की बात तो लिखी है ही^४ साथ ही शाङ्खेयकृत जर्गीर की तानशीलता की प्रशंसा करते हुए प्रकारांतर से बलि की तानशीलता की आश भी मकन कर लिया गया है। जर्गीर की इतना अधिक दानी बनाया है कि यदि आज बलि भी होता तो वह उससे मामूली तान माँगने के लिए पहुँच जाता।^५ बलि की दानशीलता को उपमान के रूप में अत्र कई स्थानों पर प्रयोग किया गया है। तानशील^६ में बलि के बाँधे जान का ही उल्लेख है।^७

बलि द्वारा समुद्र मथन करना

सूफी प्रेमाख्यान का अ मगावती में कवता एक स्थल पर^८ बलि द्वारा सागर

१ मगावती २४७।१२

२ प मावत ३४१।४

३ वही २६५।६ ५७६।१०हा ४७ ६१५।दोहा ५२

४ वही ५५।दोहा ४६

५ जहाँ जहाँ परगन सब देना बाजि बरन जोन्हूँ महि सेना।

हेठ जाइ बलि बागुनि चौंसा ऊर दरि सुरपति पुनि कौसा ॥ —चित्रावली १४।४५

सुम्ही पताल की ह बलि बागु तपनि प्रीर सब तार दागु। —वही ३ ०।१७

६ एकटि बर एक कह देई दूमरि बरि न कोऊ सेई।

पिरधी बली होत जो भाजू माँगत देखि दान कर साजू ॥ —वही २।१४

७ मगावती ४।४ पदमावत १७।२ मघमासता १३। ४ धीर—

धनि कुरग जिनि राग सुनि रीसिन राध प्राण।

बन करन बलि विक्रमा दियो न एसो दान ॥

धारा भोज सखल जिनि दीनी करन बत बलि विक्रम कीनी।

—माघवानस-कामकद-या (हि प्र गा० का० स) प १६५ प० ६८

कम हेत हरिचन्द जल भरा कम हेत बलि सबसु हरा।

—वही प० १६६ प० १३ १४

तथा—

दान निघान बहूँ खड बाजा बरन कुबेह बन बलि लाजा।

—चित्रावली ४।३ (नवाल के राजा धरणीधर की प्रशंसा में)

तपह नहा त धर्म सगीता सत हरिचन्द दान बलि जीता। —वही ४।२१

८ तानशील छ २६२

९ मगावती ३७६।५

मथन करन का दार्ष्टान्तिक प्रयाग मिलता है। बलि दत्तराज या समुद्र मथन क्रिया में दबो क साथ दबो ने भी भाग लिया था इसलिए बलि द्वारा समुद्र मथन किय जान की बात कही गयी है। प्रजा की उपलब्धियों का श्रेय राजा को सनिकों की शूरता और सफलता का श्रेय सनापति को तो मिलता ही है।

भगीरथ द्वारा गंगा को पृथ्वी पर लाकर अपने पितरो को तारना

भगीरथ द्वारा गंगा-आनयन के प्रसंग को सूफी काव्यों म भगीरथ की पितकुल मवा क रूप म स्मरण किया गया है। पुत्र का होना पितकुल के उद्धार क लिए बहुत जाव यक है और पिता की सारी अभिल पाओ की पूर्ति पुत्र द्वारा ही होती है, इस बात का उदाहृत करन के लिए 'चदायन' 'चित्ररेखा' तथा नल दमन^१ म इस कथा का आलंकारिक एव दार्ष्टान्तिक प्रयोग किया गया है।

बालि द्वारा परस्त्री-हरण और उमके कुपरिणाम

केवल नानदीप म इस कथा प्रसंग का दृष्टान्त रूप म उल्लेख हुआ है। पर स्त्री हरण का कुपरिणाम रावण और बालि दोनो को भोगना पडा।^२

भीम द्वारा कीचक वध

मगावती तथा नानदीप म इस घटना का संकेत दिया गया है। मगावती^३ म मानमरोदक तट पर निर्मित राजकुवर के महल की भित्तिया पर उरेह गय चित्रो म एक कीचक वध का भी चित्र होन का उल्लेख है। नानदीप^४ म इस युक्तिपूर्वक काय करन का उदाहरण बताया गया है। सुरनानी कुवर नानदीप से कहती है कि जिम तरह भीम ने युक्तिपूर्वक कीचक का मारा उसी तरह तुम भी युक्तिपूर्वक मेरे, बागज के घोड़े को पकडो।

भीम का कुम्भकण की खोपडी मे डूबना

कुम्भकण की खोपडे म भीम के डूबन की घटना का कोई उल्लेख 'महाभारत

१ चदायन (प सा० गल्प) २५५।१

२ चित्ररेखा प ६४ चौ० २

३ भगीरथ गंगा स घावा किन किन काज पुत्र नहि भावा।
तु हि सौ पूजहि सब स्वारथ पुत्र न होई तो जनम प्रकारथ ॥

—नल-दमन ९०।१० ११—

४ परदारा पर जइ चित साका घसी जगति भुगति तेन पावा।
राम धरनि जो रावन हरी एही जगति विपति बोधि परी ॥
बारि (= बालि) जो नारि परा सोन्हा कहु विघन कइसी गति कीता ॥

—नानदीप छंद ४४४

५ मगावती २७।१

६ छेडि ध्यान धन कर दुप मुने घाइ धरो धीरज दस गने।

रावन होइ राम होइ बाजो भीम जगति कीचक विधि साघी ॥ —नानदीप छंद १२४

राक्षसों की दिशा दक्षिण में होना

दक्षिण दिशा को राक्षसों से समुक्त करने का एक उदाहरण मधुमालती^१ में मिलता है।

राम-कथा के विविध प्रसंग

किमी भी सूफी प्रेमार्थानक काव्य में राम-कथा संक्षिप्त रूप में नहीं मिलती। अलग अलग काव्यों में राम-कथा के अलग-अलग अंश बिखरे मिलते हैं। सब तीलियाँ को यदि एकत्र कर लिया जाय तो उनसे राम-कथा का एक ढाँचा बनाया जा सकता है। अदायत, 'मगावती', पदमावत चित्ररेखा' मधुमालती माधवानल कामकदला, चित्रावती जानदीप कथा-कवलावती कथा रतनमजरी कथा छोटा कथा कनकावती नल-दमन 'हंस जवाहिर इन्द्रावती अनुराग घाँसुरी और यूसुफ जुलखा में राम कथा के विविध अंशों का प्रतीक अलंकार दृष्टांत अथवा उदाहरण— किसी न किसी रूप में प्रयोग हुआ है। इस सम्बन्ध में पहले चर्चा हो चुकी है। चित्ररेखा कथा कवलावती कथा रतनमजरी कथा छोटा कथा कनकावती नल-दमन तथा यूसुफ जुलखा को छोड़कर अन्य काव्यों में राम-कथा के विविध पात्रों का भी किमी न किसी रूप में उल्लेख किया गया है।

राम कथा के जिन अंशों का सूफी काव्यों में प्रयोग है उन पर घटनाक्रम की दृष्टि से नीचे चर्चा की जा रही है—

सीता (पृथ्वी-सुता) का जनक द्वारा पालित होना

शेख नबी ने जानदीप^२ में सीता के पृथ्वी सुता होने का उल्लेख किया है किन्तु उनको अयोनिजा बतान के लिए नहीं बरन् लोक व्यवहार के इस सत्य की ओर संकेत करने के लिए कि पालित पुत्र या पुत्री को लोग पातक माता पिता के नाम से नहीं, अपितु जनक माता पिता के नाम से ही अभिहित करते हैं। सीता का पाला जनक ने परन्तु वे जनक सुता न कहलाकर 'पृथ्वी सुता' ही कहलायी। 'जानदीप' में रायभान ने कुवर जानदीप को पाला-पासा कि तु योगी सिद्धनाथ ने जब उस उम्रके जमली पिता राय शिरोमणि को दिलाना चाहा तब रायभान ने सीता का दृष्टांत दिया।

सीता स्वयंवर में राम द्वारा शिव धनुष को तोड़ना

जायसी ने पदमावत^३ में इस प्रसंग का आलंकारिक रूप में उल्लेख किया

१ मधुमालती २६२।१

२ करन पद्मसुत कवरो पाला पद्मसुता लिहा जनक भामाला ।

नच महूर बसुदेव सुत खीन्हा कालर नाँव डोज केई लीन्हा ॥ —जानदीप छंद २६७

३ पदमावत १ २।१५

है। जिस शिव धनुष को राम ने सीता-स्वयंवर के समय तोड़ा वह धनुष पद्मावती की भीहो के समान ही बक्र था। शिव धनुष की असाधारणता के साथ पद्मावती की असाधारण भीहो तुलनीय हो गयी हैं।

राम और सीता का आदश दाम्पत्य प्रेम, राम में सीता की अनुरक्ति और सीता का सतीत्व

'मगावती',^१ 'चित्रावती'^२ और 'इन्द्रावती'^३ में सीता का उल्लेख सती स्त्री और पति में अनुराग रखनेवाली आदश पत्नी के रूप में किया गया है तथा राम का उल्लेख आदश पति के रूप में, यहाँ तक कि राम और सीता परस्पर अनुराग रखने वाले दम्पति के उपमान और प्रतीक तक बन गये हैं। 'पद्मावत'^४ में भी ऐसा ही प्रयोग है।

राम का राज्याभिषेक

'मगावती'^५ में दशरथ द्वारा राम का राज्याभिषेक करने की घटना का उल्लेख आलंकारिक रूप में हुआ है। राजा दशरथ यद्यपि राम का राज्याभिषेक नहीं कर पाय तथापि यह घटना ज्येष्ठ पुत्र के वयस्क हो जाने पर उसको सारा उत्तरदायित्व सौंप कर पिता का अपन को बरी कर लेने का उपमान तो बन ही गई। मगावती में राजकुंवर कचनपुर से मगावती को लेकर चलने समय अपने ज्येष्ठ पुत्र रायभान का राज्य सौंप आता है। इस प्रसंग की तुलना दशरथ द्वारा राम का राज्याभिषेक करने की घटना से हुई है।

राम के बिना अयोध्या सूनी (राम वन-गमन)

राम जब अयोध्या को छोड़कर वन चले गये, तब अयोध्या उनके बिना सूनी हो गई। इस दशा का आलंकारिक प्रयोग इन्द्रावती^६ में हुआ है। सुखदेव मिश्र हनुमत्सुत कहता है कि जब से तुम जगतपुर को छोड़ आये हो, तब से वह वैसे ही सूना हो गया है जम राम के चले जाने पर अयोध्या सूनी हो गई थी।

१ मगावती ३७७।२

२ जो तुम हीव विदेसी राजा इहवा गौर कौन भव काजा।

पाछे महादुख पुनि बीता जहवा राम तहाँ पुनि सीता ॥ —चित्रावती ४६१।६ ७

३ कालिजर मों धन सुदरी पिय बियोग को पावक जही।

प्रोथम राम लाग वह सीता दुवल पीत भई जम पीता ॥

—इन्द्रावती (उत्तराखण्ड) हस्तलिखित प० २७१

४ पद्मावत १३१।४

५ मगावती ३०६।४ ५

६ जस भा भवष राम बिन सूना तस भा सून भयड दुख दूना।

गोकुल सून किन बिन जस जगतपुर सूना है तसों।

—इन्द्रावती (उत्तराखण्ड) हस्तलिखित प० १६३

दशरथ का मुन वियोग में प्राण देना

राजा दशरथ ने राम के वन व्रत जान पर तत्क्षण अपने प्राण त्याग दिए थे। यह घटना पुत्र के प्रति पिता के मोह या प्रेम की उन्कटता का उदाहरण बन गई। मगावती^१ में इस प्रेम का आलंकारिक उपयोग हुआ है। राजकुंवर के जोगी बन जान पर उसके पिता भी राजा दशरथ का तरह ही पुत्र वियोग में प्राण त्याग करने का उद्यम है।

राम का सीता के हठ के कारण उनका वन में ले जाना—सीता का वन में प्रियतम के साथ रहकर घर का-सा सुख मानना—राम का अपने कम-फन के कारण वन जाना

सीता राम के साथ हठपूर्वक वन गयीं परन्तु उनका हठ उनके लिए हितकर सिद्ध न हुआ। वे वन में न गईं हानीं तो रावण द्वारा उनका हरण क्योंकर होता और क्यों हाना राम रावण का नीपण युद्ध, क्या राम का दर दर की टाकरें खाना पढतीं, क्या उन्हें बन्दर भानुओं में मिश्रता करनी पडती और क्या सीता का लाडिल हाकर पति से परित्यक्त हाना पडता ? लोक मानस को रामावनार के दवी उन्मत्त से कोई प्रयोजन नहीं। सीता वन न गईं हानीं तो रावण ने उनका हरण न किया होता रावण से राम की शत्रुता न हुए हाना और राम ने रावण को मारकर उसके अत्याय-अयाचार में त्वता-आह्वाना को मुक्त न किया होता—इसी महत्त्व के लिए तो देवताओं के अनुरोध पर विष्णु ने दशरथ का पुत्र बन कर मनुष्य जन्म लेना स्वीकार किया था। यह इस घटना का पौराणिक पक्ष है किन्तु लोक-मानस अवतारी पुरुषों के चरित्र में भी अपने लिए साधारणीकरण का सामग्री द्रव्यता है। उसकी दृष्टि में राम भगवान ही नहीं साधारण पति भी हैं और सीता जगज्जननी लक्ष्मी अथवा योगमाया या शक्ति रूपा है न हाकर एक सामान्य पत्नी भी हैं जिन्हें कुतबधू की तरह माम समुर की सेवा करन दृष्ट परिजनों के मध्य रहना चाहिए था। नारी का हठ तो प्रसिद्ध ही है पर मन्त्र मन् अनिष्टकर भी होता है। सीता का वन जान का हठ इसी का एक उदाहरण है। पर लोकमानस में इस घटना का दूसरा पक्ष भी है कि पत्नी के लिए वही स्वर्ग है जहाँ उसके पति है। राम का हान तो जा रहा था राज्याभिषेक और हा गया वनवास। उसे लोकमानस कम फन न मान तो क्या माने ? दब-दुर्विपाक के कारण तेम उलट फर भी तो जीवन में दिखाई देन है !

इन भावनाओं की अभिव्यक्ति राम-कथा के इन प्रसंगों का उपयोग करत हुए जायसी ने पदमावत^२ आलम ने माधवानल कामकदला^३ उसमान ने

१ मगावती १६११ २

२ पदमावत १३२११ २

३ कम हेन हरिचंद जन भरा कम हेन बनि सबसु हरा ।

कर्म हेन पांडव फन छाये कम हेन रघुपति जन छाये ॥

चित्रावली^१ और नूरमुहम्मद ने इन्द्रावती^२ में की है। पदमावत में नागमती जब रतनसेन के साथ सिंहल-यात्रा पर चलने के लिए आग्रह करती है तब रतनसेन यह कहकर उसका मुह बन्द कर देना है कि राम ने सीता के हठ करने पर उसको साथ लिया तो उन्हें क्या सुख मिला? रावण द्वारा सीता हरी गई और अनक झमेलों में उन्हें पडना पडा। चित्रावली में भी कुंवर सुजान कौलावती को साथ चलने के लिए मना करता है क्योंकि राम और सीता का इसी कारण जन्म भर का विछोह हो गया। इन्द्रावती में ऐसी ही बात हसराम अपनी पत्नी चद्रवदन से कहता है, जब वह उसके साथ चलने का हठ करती है। हसराम उस समझता है कि दूर देश में स्त्री को साथ लेकर जाना ठीक नहीं। राम न जानकी का अपन साथ लिया था तो देखा उन्हें रावण न किस प्रकार छला। माघवानल कामकदला में जब माघवानल का काममें अपन राज्य से निकाल देता है तब माघव इमम अपने भाग्य का ही फेर खता है। राम को भी तो कमफलाधीन ही राज-सुख छोड़कर बन जाना पडा था।

बन में सीता द्वारा जोगी-वेशधारी रावण को भिक्षा देना

पदमावत^३ में सीता द्वारा रावण को भिक्षा देने की घटना का उल्लेख दृष्टांत रूप में आता है। जब सुहागराम में पदमावती रतनसेन के जोगी वेश और भिखारीपन पर कटाक्ष करती है तब रतनसेन कहता है कि जोगी—भले ही वह कपटी क्यों न हो—रावण का तो सीता न भी भिक्षा दी थी। क्या तुम अपनी प्रेम भिक्षा मुझे न दोगी?

बन में रावण द्वारा सीता का हरण—राम सीता के वियोग में आकुल

रावण द्वारा सीता के हरे जाने की घटना का उल्लेख 'चदायन' * 'मगावती' †

१ धी प्रति परति कहे सब कोई धरहि समार धरती सोई ।

राख जो सार सग सीता बिछुरेँ जनम दुख सब बीता ॥ —चित्रावली ४७२।३ ४

२ है प्यारी भन प्रीतम पासा पिय सग लीह सिधा बनवास ।

पिय को साथ न छोटव सीता जो दुख बीत बट नित बीता ॥

—इन्द्रावती (मद्रित) पूर्वाङ्क छन्द २७।१ २

जब बनवास राम कह भयेऊ सीता सती मोहेन बन गयेऊ ।

सम्न नरक भा पिठ बछुरावै बन बकुष्ठ भयेउ तेहि जावै ॥

—बही (मुद्रित) पूर्वाङ्क छन्द २८।१ २

दूर द्वेष में करव पयाना मलो न होइ नार ल जाना ।

राम जानकी कह सग सीन्हा रावन दधु कवन छल सीन्हा ॥

—बही (हस्तलिखित) उत्तराङ्क पं० १००

३ पदमावत ३०७।७

४ चदायन (भूपाल प्रति—सपाक वि० प्र०) पं० ५७ छन्द ३७

५ मगावती ६१।दोहा २५०

पद्मावत',^१ नल-रमन^२ 'चित्रावली'^३ और कथा छीना^४ में आया है। इनमें सीता हरण की घटना को मुख्यतः गननायक या किसी दुष्ट द्वारा नायक से नायिका का विमुक्त कर देने का उपमान के रूप में ग्रहण किया गया है। इनमें कोई नई उद्भावना नहीं दृष्टिगत होती।

सीता में वियोग हो जाने पर राम का विलाप करना

सूफी प्रेमाख्यातक भाष्या के नायक-नायिकाओं का एक बार मिलन हो जाना का अर्थ जब विद्योह हुआ है तब राम सीता के विलाप-दुःख में उन्हें अपने दुःख का सादृश्य मिला है और उनके विलाप के लिए विरही राम का विलाप कवियों को उपयुक्त उपमान के रूप में मूला है। एम प्रयोग अदायन^५ मगावती,^६ 'पद्मावत',^७ 'भाषवानल-कामकदला'^८ 'चित्रावली'^९ तथा 'कथा छीना'^४ में किया गया है। सबसे नायक का नायिका से वियोग होना पर दुःखी, सतप्त होना और विलाप करना वर्णित है।

१ पद्मावत ४०५।६-७ ४१।३६

२ घन सीता पिठ राम मन विष्टर भयो सजोय ।

दोऊ धानन्दिष मगन रावन हुना बियोग ॥ —नल-रमन ३२६।दोहा

३ अगहन सकल गहन की धरो घन सीता रावन बेहि हरी ।

विरह अयोक सोक फल करा तेहि की छोई धूप जित जरा ॥

राम कि हनुबंत से सुधि सोन्हा तू पिय निठर मुरति नहि बीना ।

उहो जोगि हूत जे सुधि पाई, रावन हनि तिय जाइ छोयाई ॥

तू जोगी बस सेसि न चाही जानिबूझि त अरबस बाही ।

विरह रीत कुरंग होए अर सकल सुख-चारि ।

भाइ त्विस एक राम होइ कस न जाहु पिय मारि ॥ —चित्रावली ४२२।९ ५

४ छोता बिना राम क्यों जीव दुख चिता विपु कौली पीव ।

सीता नाइ छीता हरी रामहि राम अवसथा धरी ॥ —कथा छीता छंद ३०

छीता सीता क्यों हरी रावन हूँ पतिसाहि ।

धरी अवसथा राम की राम कहै दुख बाहि ॥ —वही छंद ३०

५ अदायन (सं० विश्वनाथ प्र०) प २७ छंद ३७ स परमेश्वरी ला म० ३५।१

६ मगावती ६१।दोहा

७ पद्मावत ४०५।६ ७

८ कहा क्यों जित जाऊँ हौं राजा राम न घाहि ।

तिय वियोग सतार बस राखी जानर साहि ॥

रामचंद्र नहि जग मह घाँ तिया वियोग कियो दुख जाही ॥

—भाषवानल-कामकदला (हि० प्र गा का स) " २ = पंक्ति १३ १५

कौन भयो कल तिया वियोगी राख ब नख जु भरपरी जोगी ।

—वही हुस्निखित प्रति पत्र २५

९ गयो चित्र नगह ते छोई जस दसरप मुन सीव विछोही ।

को सेवक हुनिबत समाना बल बीसाइ बाहि को धाना ॥ —चित्रावली १०६।३ ४

१० कथा छीना छंद ३०

सीता का अशोक वृक्ष के नीचे बंठी रहकर राम का विरह दुःख सहना—वियोग में राम नाम का ही सहारा

'पदमावत'^१ और 'चित्रावली'^२ में अशोक वृक्ष के नीचे बंठी सीता का आल-कारिक प्रयोग किया गया है। 'इन्द्रावती'^३ में दार्ष्टान्तिक प्रयोग हुआ है। इन प्रयोगों में अंतर यही है कि पदमावत में जहाँ अशोक वृक्ष के नीचे बंठी सीता को उस वियोगिनी का उपमान बनाया गया है जिसका दुःख बीत गया वहाँ 'चित्रावली' में उनको रात्रि के एक एक याम को कठिनता से काटनेवाली विरहिणी का उपमान बनाया गया है। इन्द्रावती में सीता की मूर्ति राजकुंवर की पहली पत्नी सुन्दरी को अशोक वृक्ष के नीचे बंठकर शोक सहन करने का अर्थात् ही दृष्टान्त देकर सान्त्वना देती है।

सीता को पास रखते हुए भी रावण द्वारा उनका भोग न कर पाना

पदमावत^४ में उल्लेख आया है कि रावण सीता को अपने पास रखकर भी उनका भोग न कर सका किन्तु ऐसा वह किहीं शापो^५ के भय से नहीं करता। यहाँ तो इसका अभिप्राय यह लिया गया है कि प्रेमी प्रेमिका कुछ समय तक पास पास रहकर भी शरीर-सुख न ले सके। पदमावती न रतनमेन को जो पत्र लिखा है, उसमें उसका यही अभिप्राय है।

सुग्रीव का बालि को वाधना—बालि द्वारा पर-स्त्री-हरण,
इससे उसका नाश

शेख नबी न पानदीप में सुरपानी के मुह से कुंवर ज्ञानदीप को कहलाया

१ पदमावत ४१४।१

२। निजि दुख देखा बिन्नी सब निजि एक-एक जाय ।
जस अशोक तर, जानकी विरह सहा बिनु राम ॥

—चित्रावली प० ५ छंद १२७।दोहा

३ मूरत कह नहुबाइ न माँया कत मेराव दयावन्त भ सीता सबल करन मों भाव ।
का पाहन के पूजें लहई पूजो ताहि जो करता अह^६ ।
पाहन सुन न तेरी बालें सुमिरु जगत करता लिन रातें ॥
महू सहेउं यह बिछुरन पीरा दुवल पीयर भयउ सरोरा ॥

—इन्द्रावती (सत्तराई) हस्तलिखित प० २७५

४ पदमावत २३२।दोहा २३।१६

५ रावण को ब्रह्मा ने पुत्रिकस्यभो वेश्या के साथ बलात्कार करने के कारण यह शाप दिया था कि यदि तू किसी स्त्री का बलात्कार करेगा तो तेरे अस्तक के सौ टुकड़ हो जाएंगे (दे० वाल्मीकि रामायण मूढकांड १३।११ १४)। कुंवर के पुत्र नलकुंवर ने भी अपनी पत्नी रम्भा के साथ बलात्कार करने के कारण रावण को ऐसा ही शाप दिया था (दे० महाभारत वन पर्व २८० (६)। रावण ६। शापो के डर से सीता का बलात्कार करने से डरता था ।

है—'होइ सुधीव बालि हठि बांधी ।' किंतु वाल्मीकि रामायण' तथा अन्यत्र जहाँ भी सुधीव-बालि प्रसंग का उल्लेख है, वही भी सुधीव को इतना बली नहीं दिखाया गया कि वह बालि को बन्दी बना सके इसके विपरीत बालि स वह सत्रस्त है। उसकी स्त्री तक को बालि न छीन लिया है।^१ 'जानदीप'^२ में यह माना गया है कि बालि का विनाश परमत्री (सुधीव पत्नी) का हरण करने के कारण हुआ। इसमें पौराणिक तथ्य का उल्लेख नहीं है क्योंकि राम ने भी बालि को मारने का औचित्य इसी आधार पर ठहराया था यद्यपि इसमें उनका तक यह था कि अनुज की पत्नी का भोग करने वाला पापी होता है और उसका बंध बनने में पाप नहीं लगता।^३ पौराणिक प्रसंग का उपयोग नीति कथन के रूप में करने का यह एक उदाहरण है।

हनुमान का राम के आदेश पर सीता का पता लगाने के लिए लका जाना—वहाँ रावण का गव सख करना—ब्रह्मपाश में बंधना—लका को जला डालना—लका का एक तपस्वी के शाप से क्षार होना—हनुमान का सीता को सुध लाकर राम को देना—हनुमान की सहायता से राम सीता का पुनर्मिलन सम्भव होना

सूफी प्रमाख्यानक काव्यों में हनुमान द्वारा लका जाकर अशोक-वाटिका का विध्वंस करना वही तो पराक्रम प्रयास का दृष्टांत बनकर आया है^४ और वही बारी बाला (नायिका) का विध्वंस (कौमार्य भंग) करने के अर्थ में।^५ हनुमान द्वारा लका को जलाना मुख्यतः विरही राम की सहायता करने के उनके प्रयास के रूप में ग्रहण किया गया है। सूफी प्रमाख्यानक काव्य का नायक जब असहाय और विपत्ति प्रस्त होता है तब उसे हनुमान की याद हो आती है और इसके साथ ही राम की प्रिया को हरनेवाले खलनायक (रावण) का विनाश काय में की जानवाली उनकी महत्त्वपूर्ण सहायता का भी स्मरण उस हो आता है। उस लगता है काश। ऐसा ही कोई सहायक उसको भी प्राप्त होता। ऐसी ही स्थिति में उसे लक्ष्मण जैसे बंधु और

- १ छोटि ध्यान धन कर दुप सुने धाइ धरो धोरज दस गन ।
रावन होइ राम होइ बाजी भीम जगुति कीचक विधि साधो ॥
होइ नरसिंह हनो हरिनाकस हनीवत जगति हनो रिषि राकस ।
होइ सुधीव बालि हठि बांधी चक्र परछोव कि छारी धाँधो ॥ —जानदीप छंद १२४
- २ वाल्मीकि रामायण किष्किंधा कांड सग ६ १०
- ३ परदार पर जेइ चित लावा धरसी जगुति भुगति तेन पावा ।
राम धरनि जो रावन हरो एही जगति विपति बोहि परो ॥
बालि जो नारि परा सीहा बहु बिघनै कइसी मति कांडा ॥ —जानदीप छंद ४४४
- ४ वाल्मीकि रामायण किष्किंधा कांड सग १८
- ५ लोर-कहा (स डॉ० माताप्रसाद मज्ज) ४६।४ २ तथा चदायन (प ला० म०) ३५१।४ ५
- ६ १८मावत १६७।६ ७ दोहा २।१५ और १६८।४ ६

सहायक का भी स्मरण होता है। इस प्रसंग का इस रूप में उपयोग 'चदायन',^१ 'मगावती',^२ 'पदमावत'^३ 'चित्रावती'^४ 'कथा कंबलावती',^५ 'कथा कनकावती',^६ 'कथा छीता'^७ और 'अनुराग वासुरी'^८ में किया गया है। 'कथा रतनमजरी'^९ में हनुमान की तरह ही लक्ष्मण को राम की विपत्ति में सहायक बताया गया है और राम लक्ष्मण की प्रीति को भ्रात प्रेम का आदर्श माना गया है। हनुमान का लका में प्रवेश किन्नी स्थान पर छल द्वारा पहुँचने का उपमान भी चित्रावती^{१०} में धन गया है। उनका ब्रह्मपाश में बँध जाना किन्नी प्रिय काय के लिए अपन को सबट में डालने का उल्हाहरण धन गया है।^{११} 'पदमावत मधुमालती' और नानदीप में लका-दहन का प्रयोग कुछ अन्य प्रकार से भी किया गया है। पदमावत के अनुसार जिस आग ने लका को जलाया वही आग चित्तौडगढ़ में भी लगी थी।^{१२} लका के रहनेवाले लोग काल भी इसीलिए हाँ गए क्योंकि लका को जलानेवाली आग न उन्हें भी भुलसा

१ चदायन (प० सा० गु०) ३५१११५

२ मगावती ६६।३५ १३।।दोहा १७८।५ २२।।१ २४३।१

३ पदमावत ५ ५।६७

४ चित्रावती ५२।१५ दोहा

राम हेतु जिमि जानकी सजि कुल कीन्ह पयान ।

धस न जान जो लकापति करहि धान की धान ॥ —वही ५५५। दोहा

कहे कु मर सुनु हनिवत बीरा भाग नठ ज्यो सीत समीर ।

कहु कुसलात बगि शिष्य केरी निसरत प्रान राखु पर फेरी ॥ —वही ५६७।१२

५ कपो कीटि जो धपसच बोरे सक हनुमान नहि जारे ।

—कथा कंबलावती पत्र ३१।छंद १६३

चितरि चितेरा घर कौ घाघो हनु सुरति मनो सीता ल्यायो ।

आरि चन्पो चितरगड लका दुष परिहरि कै गयो बिलका ॥ —वही पत्र ६ छंद ६५

६ सपमन हूँ रावन ज्यो मारो हनवत हूँ लका ज्यो जाँरौ ।

—कथा कनकावती पत्र ७।छंद ५१

७ सीता नाइ छीता हरी रामही राम धयस्या परी ।

हे लपमन हनवत-से मार मेरे कीन बिना कर्यार ॥ —कथा छीता छंद ३०

हनुमान सो जो सय होइ हनुमान रिप सब सुख होइ ।

ल भाव वह ओवन मूर पुरि भावहि दुष पाव सपूर ॥ —वही छंद ३१

८ भा हनुवत प्रम बरियारा परि चिता को लका जारा । —अनुराग वासुरी १७।३

९ रामघट की विपत्ति में लपमन संगी होइ भायन सो या जगत में दूसर नाही कोइ ।

—कथा रतनमजरी पत्र ३३ छंद २२८

१० पुनि संभारि के बोला रागा साजहु बगि जूझि कर साजा ।

हनुमत अस लकाहुत भाया तस छलि क यहि काहु बधाना ॥

—चित्रावती ५ १।१२

११ चदायन (प सा० ग०) १६७।५५

१२ पदमावत ५२५।दोहा ५३

दिया ।^१ लका-दहन करनवासी ज्वाला को बाग्शाह जहाँगार की सडग की ज्वाला बतलाकर उमक प्रताप की भी अभिव्यजना की गई है ।^२ लका-दहन विनाश का भी प्रतीक बन गया है ।^३ प्राधाग्नि की तुलना भी लका को जलानेवाली आग म की गई है ।^४ सूफ़ी कवियों की नायक या नायिका के हृदय म प्रज्ज्वलित विरहान्नि क लेए लका दहन के रूप म एक अच्छा उपमान हाय लगा है । हनुमान द्वारा जनाई गई आग ने जैसे लका को जलाकर राख कर दिया वैसे ही विरह की आग नायक-नायिका के अस्तित्व को ही स्वाहा कर डालती है । इसके उदाहरण मगावती^५ पदमावत^६ और पानदीप^७ म मिलत हैं । लका-दहन पराजय और दुभाग्य का सूचक बन गया है ।^८ लका-दहन का कारण कासिमशाह दरियावादी एक तपस्वी के श्राप का बतान हैं ।^९ राम के अतिरिक्त वह तपस्वी और कौन ही सकता था ? विरही राम की आग ने लका को भस्म कर दिया । दिल-जल की आह ऐसी ही होती है । या या कह कि आध्यात्मिक शक्ति के आग भौतिक शक्ति की प्रतीक स्वण गड लका भी न ठहर सकी । लका का जलाया जाना रावण के अट्कार को धूर किया जाना भी तो हा सकता है । गव न किसका सबनाश नहीं किया ?^{१०}

१ पन्मावत ३६०।१ ३

२ मघमानती १।५

३ जानदीप छ० २६०

४ तुम रिसि कपि सरग पतासा तुम रिसि परबत घब सब हाला ।

तुम रिसि इद्र निठ हिए सका तुम रिसि भसम भई जरि लका ॥ —वही छद १७७

५ रावन लका जरि बहो हूँ यह कसो न बहाउ ।

जहि कारण यह भागो तेहि भेंट ती जाइ ॥

—मगावती २०४वें छ० का पाठान्तर दोहा

६ पन्मावत २४८।दो० २४।१० २५३।२ ३५३।२ ३ ३६३।१ और ५

७ एक राति एन निवस मह सका दाह बिमि दाह ।

रावट वरन कनक भा रावट जरि भा साह ॥ —पानदीप छद ३०६

८ जोना हस जो दुरजन मारा चला सन् गन् ताकि बुधारा ।

भापवन्त रन जोड सुभाया दुरजन भागि लक पस लागे ॥

—हस-जवाहिर प० २४७ छद ६८ ११२

९ तपसी श्राप लक भइ शारा कस विलान तपसि कर मारा ।

—वही प १५६ छद ४२६।६

१० यह भइपरि जो यड भभिमाना तपसी केर साव नहि जाना ।

जरा कटक भा रावन शारा कोटि दत्य द तपसी मारा ॥

—वही प० २२५ छद ६२०।२ ३

गव सौं ब्याध्र भापनो छाहीं परा दखि क कए माहा ।

रावन गयऊ गव सौं मारा सका एखो हनिवत जारा ॥

—इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त प० ११२

विभीषण वा लका को छोड़कर राम की शरण में आना—भाई-भाई की फूट विनाशकारी

लोकहा 'पदमावत'^१ 'मधुमालती'^२ और 'नानदीप'^३ म लका के रावण द्वारा विभीषण के निष्कासन या विभीषण द्वारा लका के परित्याग का आलंकारिक अथवा दार्ष्टान्तिक प्रयोग किया गया है। विभीषण वा लका-त्याग इस बात का दृष्टान्त बनकर भी उपस्थित हुआ है कि घर वा भेदिया कितना विनाश करवा सकता है। 'पदमावत' मधुमालती और नानदीप के कवियों न इस घटना से एक अनूठा आशय निकाला है जिस उनकी मौलिक उन्भावना कहा जा सकता है। विभीषण लका को छोड़ आया, अब उसकी बला से उसका चाहे जो हो। यह जहाँ स्वाथपरता का सूचक हो सकता है, वहाँ विरक्ति का भी। इन कवियों ने विरक्ति-परक अर्थ ही ग्रहण किया है।

राम द्वारा नल और नील की सहायता से समुद्र पर सेतु बाधा जाना

समुद्र पर सेतु बांधना अपनी प्रिया को प्राप्त करने के लिए राम के दृढ़ संकल्प और महत्प्रयत्न का सूचक तो है ही वह आंगिक सौंदर्य का उपमान भी बना है। मगावती^४ म सेतुबाध को इस बात का दृष्टान्त बनाया गया है कि एक विरही अपनी प्रियतमा की प्राप्ति के लिए क्या नहीं कर सकता? पदमावत^५ म नल और नील द्वारा समुद्र पर सेतु बांधे जाने का उल्लेख आया है। 'वाल्मीकि रामायण' म लेकर 'अध्यात्म रामायण' तक के पौराणिक साहित्य म नील द्वारा सेतु बाधन में सहयोग देने का उल्लेख नहीं आया है। रामचरित मानस^६ म अवश्य इसका उल्लेख हुआ है। वहाँ समुद्र न राम को बताया है कि उनकी सेना म जो नल और नील नामक दो वानर भाई हैं उह उनके बचपन में एक ऋषि ने यह वरदान दिया था कि भारी से भारी पहाड़ भी उनके स्पश कर खने मात्र से जल पर तर जाएँगे। जायसी न नल के साथ नील के भाँ सेतु बाध करने की बात लोक से ग्रहण की होगी जहाँ म कदाचित्त तुलसीदास ने भी की। पदमावत^७ म सेतु बाध को पराक्रम और उपलब्धि का द्योतक माना

१ लोकहा (सं मा० प्र० ग०) छंद ७८ (केवल उल्लेख रूप में)

२ पदमावत ३८४।४ ५ ३९१।३ ४ ६४७।वोहा ५६।१

३ मधुमालती (मा प्र ग) ५११।वोहा

४ नवी मिलनिर्घाँ मिला जो छोड़ बाँचँ कहा सच सो कोइ।

मिले मिलनिर्घाँ गोपहि लूगी घर के भेद लका गड़ टूटी ॥

—नानदीप छंद १३९ देखिए छंद ३८८ भी

५ मगावती ६६।२

६ पदमावत ४७५।१ ३ ६११।१ और ४

७ रामचरितमानस मुन्दरकांड छं ६०।ची १२

८ पदमावत ४९१।५ और ५३०।१ ३

गया है। नामिका की नामिका^१ और भौंह^२ का उपमान बनकर भी सतुबध उपस्थित हुआ है।

अगद का रावण की सभा में पाँव रोपना

रावण की सभा में अगद के पाँव रोपन की कथा इस रूप में पौराणिक साहित्य में कही नहीं मिलती। वाल्मीकि रामायण^३ में अगद का राक्षसों को चिटककर रावण के प्रासाद पर चढ़ जाना और सौम्य शिखर को पदाघात से विदीण कर देना मात्र उल्लिखित है। रामचरित मानस में राम के एक सामान्य सक्क और दूत की शक्ति का परिचय देने के लिए रावण की सभा में अगद के पाँव रोपन और उस उठाने में किसी के समर्थ न होने की घटना दी गयी है।^४ मध्यकाल में अगद के पाँव रोपन की घटना राम भक्त की शक्ति का प्रतीक होने के कारण लोक में बहुत प्रचलित हो गयी होगी तभी तो रामचरित मानस के पूर्व की रचनाओं मगावती^५ और 'पदमावत'^६ के माथ साथ उसकी परवर्ती रचनाओं चित्रावली^७ एवं अनुराग बाँसुरी^८ में भी इस घटना का आलंकारिक और उल्लेख रूप में प्रयोग हुआ है। इन सभी काव्यों में अगद के पाँव रोपने की घटना पराक्रम और पौरुष की सूचक बनकर आयी है।

लक्ष्मण की शक्ति बाण लगना—

हनमान द्वारा सजीवनी बूटी

लाकर उनके प्राण बचाना

लक्ष्मण की शक्ति बाण लगने और उनकी मुमुक्षु अवस्था को दूर करने के लिए हनुमान द्वारा सजीवनी बूटी लाने की घटना का आलंकारिक रूप में मगावती^६,

१ पदमावत ४७५।१ ३

२ वही ४७३।४

३ वाल्मीकि रामायण बृहत् कण्ड सर्ग ४१

४ रामचरितमानस लकाकाण्ड छं ३४।चौ० ४७ दोहा क ख और छंद ३५।चौ १ २

५ मगावती २६।४ ५

६ पदमावत ६११।१ २ ६१२।१ ६१४।४ ६३१।७

७ भावत हस्ति घुवत मग नद्या तोरत तरवर घावत कथा।

गज दात्री कह परली कोपा अगद पाँव पुहुमि जस रोपा।

—चित्रावली ४६६।१ २

८ अगद इहाँ न रोप पाऊं बरस खहन बान कँ पाऊं।

—अनुराग-बाँसुरी प० ११५।छंद १६।६

९ मगावती २४२।दोहा २५५।३ और ५

'पद्मावत' १ मधुमालती, २ 'माघवानल-कामकदला', ३ 'कथा छीता' ४ और अनुराग-बाँसुरी ५ में उल्लेख हुआ है। इन काव्यों में न तो यह उल्लेख हुआ है कि लक्ष्मण को शक्ति-बाण किसने मारा—रावण ने या मेघनाद ने—और न यही कि हनुमान केवल सजीवनी बूटी ही लाये या समूचे द्रोणगिरि को ही उखाड़ लाय। बूटी की जगह भी इनमें सबत्र 'मूर' (जड़ी) शब्द का प्रयोग हुआ है। फिर भी इस घटना से सूफी कवि परिचित हैं और इसका उपयोग उन्होंने साम्प्रदायिक मिद्धान्त प्रतिपादन के लिए भी किया है। 'मगावती' ६ 'पद्मावत' ७ 'मधुमालती' ८ और 'कथा छीता' ९ में विरह दुःख की शक्ति-बाण से और मिलन को मजीबन मूर से तथा प्रेमपात्र से मिलाने वाले को हनुमान से उपमित किया गया है। एक अन्य स्थल पर 'मगावती' १० में काम-बाण की तुलना शक्ति-बाण से की गयी है। 'माघवानल कामकदला' ११ में हनुमान के इस काय की परमाय या पगोपकार का द्योतक बताया गया है। अनुराग बाँसुरी १२ में प्रेम के घाव की शक्ति-बाण कहा गया है। जैसे शक्ति-बाण का लक्ष्मण नहीं भेले मरके और मूर्च्छित हो गये वैसे प्रेम के प्रखर सघप में डट रहना सबके बूत की बात नहीं।

राम का सीता के कारण रावण से सघर्ष मोल लेना—राम रावण की शत्रुता—राम द्वारा लका पर चढाई—राम रावण का युद्ध—राम द्वारा लका का विनाश करना—रावण को मारना और सोता को उमके वधन से छुड़ाकर लाना—वनवास से लौटकर राम का कौसल्या से मिलना

'रामायण' के युद्ध काण्ड की इन घटनाओं को जो एक प्रकार से राम-कथा

१ पद्मावत १२।३५ २५५।दोहा २५।१७

२ मधुमालती २५५।दोहा

३ यह हनुमत महावनी पर-स्वारण चल्थो दूरि।

लक्ष्मण को सकट हरयो घानि सजीवन मूरि ॥

—माघवानल-कामकदला (हि० प्र० गा का स) प० २२२।छंद १६ २०

४ का कांड हूँ सग सघमन की करो उपाव विरति लवि मन की।

हनुमान ही जो सग होइ हनुमान रिप सब सुख होइ ॥

स भाव वह जीवनमूर पुरि भावहि दुप भाव सपूर।

धरो बलु मो दन में नाहि जो चलि चिन्ती लन को जाहि ॥ —कथा छीता छंद ३१

५ है सनेह की कठिन लखाई सबती पाइ सखन मरि जाई ।। —अनुराग-बाँसुरी १६।५

६ मगावती २५२।दोहा

७ पद्मावत १२०।श्लो० ३५ २५५।दोहा २५।१०

८ मधुमालती २५५।दोहा

९ कथा छीता छंद ३१

१० मगावती २५५।३ श्लो० ५

११ माघवानल-कामकदला प० २२२।छंद १६ २०

१२ अनुराग-बाँसुरी १६।५

का उपसंहार ही हैं, कई सूफी काव्या में अपनाया गया है। राम का नायक, सीता का नायिका, रावण को खलनायक या नायिका की प्राप्ति में बाधक-रुच और लका-नाश को खलनायक का विनाश करके नायिका का प्राप्त करने में उपमित किया गया है। किसी किसी काव्य में राम को 'रामा (बाला), रावण का रमणकता और लका को लक (कटि प्रदेश) के श्लेषार्थ में प्रयोग कर नायक द्वारा नायिका के साथ रमण करने का भी रूप दे दिया गया है। प्रथम प्रकार के प्रयोग मृगावती ^१ 'पदमावत' ^२ 'चित्रावली' ^३ और 'नानदीप' ^४ में हुए हैं। दूसरे प्रकार के प्रयोग विशेषतः पद्मावत ^५ में मिले हैं। राम-रावण का युद्ध दो विरोधियों के सघर्ष और पराक्रम के उपमान के रूप में भी प्रयुक्त हुआ है और ऐसे उल्लेख पद्मावत ^६ 'चित्रावली' ^७ 'नानदीप', ^८ 'नल-दमन', ^९ और 'इन्द्रावती' ^{१०} में हुए हैं। पद्मावत में दोनों बरोनियों को राम-रावण की आंखों के सामने डटती सेनाया का और आँखों का ममूद्र का रूप भी दिया गया है ^{११} तथा राम द्वारा रावण को मारना एक सत्रासकारी घटना के रूप में चित्रित किया गया है ^{१२} राम द्वारा रावण का मारकर सीता का छुटाना का उल्लेख नायिका

१ मृगावती १ २। दाहा तथा १०३।१

२ पद्मावत १६७।५-७ दोहा २०।१५ १६८।४ ५

३ बीजानगर के एक सुनी आका रूपनगर जस सुनी।
घन लगी घर तजि भा परतेनी गाव क्या देखाव भसी ॥
गाव सत सती कर जाती हरिष भरा राम घर पातो।
रामचरित्रि रावन हुना सीता घानि दोह पुनि बना ॥ —चित्रावती ४७७।१ ४
मनमय दाव जाँष पुनि कानी रावन बार लक गहि चारी ॥ —वही ५६७।४

४ छोड़ि ध्यान धन कर दुप सुन साइ घरो घोरज दस गुने।
रावन नोइ राम होइ बाधो भीम जगति कीचक विधि साधो ॥ —नानदीप छंद १२४

५ पद्मावत २०।५ ३०४।१ ३१८।१ २ ३३।४ ५

६ वही २६६।१ ८

७ दक्षिण परवत उत्तर गया साइ चल जेहि पौष्य सगा।
पहिलहि जो नहि कर विचारा बीचनि मारि लहि बटमारा ॥
जनी तही देखहि परिहर सका राम जाइ जस रावन लका।
जो पुन्नी बनि सवन राता तही जाउ काउ पूछ न बाता ॥ —चित्रावती ४२२ ६

८ नानदीप पं० १ ५ छं २६२ (पूर्वोत्तिष्ठत)

९ राम हरा रावन जिहि कृष्ण हरा त्रिहि कस।
त व घनक हू ज मना वही घनक कर भस ॥ —नल-दमन ६०।१ दाहा

१० वहाँ मिले रावन श्री राम् इहाँ राम लछिमन सगराम्।

वहाँ मिलाप वहाँ विछराऊ भीषण उहाँ रहा है बाऊ ॥

—इन्द्रावती (उत्तरछंद) हस्तनेत्र पं० ८२

वहाँ राम श्री रावन वहाँ क्रिमुन श्री कस।

वहाँ भीम धरत्रन करन कह सरवर कह हस ॥ —वही पं० १७६

११ पद्मावत १ ४।२

१२ वही ५७६।५

ना बदी बनानवाले दुष्ट व्यक्ति या राजस को मारकर नायक द्वारा नायिका या उसकी सखी को छुड़ान के प्रतीक के रूप में भी हुआ है। 'मधुमालती म ऐसा एक उपयोग मिला है।' रावण न खूब धन-सचय किया और बिल्कुल दाग नहीं किया, इसलिए उसका नाश हुआ यह कारण पदमावत के कवि ने दिया है।^१ रावण बध के उपरान्त राम सीता का मिलन पदमावत^२ 'नानदीप'^३ और नल-दमन^४ म नायक नायिका के मिलन का उपमान बना है। वनवास से लौटकर राम द्वारा अपनी माता कोसल्या से भेंट करन की घटना की तुलना 'पदमावत^५ मे नायक (रतनसेन) के सिंहल स नायिका के साथ लौटकर अपनी वध्दा माता से मिलने की घटना से की गयी है।

'कथा कनकावती^६ म लपमन हू रावन ज्यों मारौ की उक्ति म रावण का लक्ष्मण द्वारा मारा जाना सूचित होता है। स्पष्ट ही कवि की यह ऐतिहासिक एव पौराणिक अज्ञानता है।

सूफी प्रेमाख्यानक काव्या म राम कथा के विविध प्रसंगों का जिस रूप म उपयोग हुआ है उससे यह पता चलता है कि कवियों म राम-कथा प्रसंगों को अधिकता से अपनान की रचान रही है। यदि ऐसा कहा जाय तो तथ्य-कथन ही होगा कि समस्त सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों म राम कथा के प्रसंगों का ही सर्वाधिक प्रयोग किया गया है। कदाचित इसका कारण राम म नायक का, सीता म प्रतिविधत नायिका का, रावण म प्रतिबधक खलनायक का लक्ष्मण-हनुमान म नायक को नायिका प्राप्ति के उसके प्रयास म सहायता करनेवाले सहायक-तत्वों का लका के रूप म नायिका का नायक से न मिलन देनेवाली दुलध्य प्राचीरा एव दुर्गों का पूरा साम्य मिल जाना है। कृष्ण कथा के प्रसंगों को मध्यकालीन सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों म उतना नहा अपनाया गया जितना राम-कथा के प्रसंगों का यह भी एक ध्यान देने योग्य बात है।

राम और परी की कथा

वासिमशाह कृत हंस-जवाहिर म राम और परी की किसी कथा का संकेत

१ मधुमालती २८८।१५

२ पदमावत ३८७।६७

३ वही ५१३।३६

४ भाग चाहि एहि भवघर पीठा बहू केहि राम मिलइ केहि सीता।

—नानदीप छंद २२०

५ धन सीता पिउ राम मनु विछुर भयो सङ्गोय।

दोऊ भानदित मगन रावन हुना विपोग ॥ —नल-दमन ३५१।दोहा

६ पदमावत ४२९।२

७ हौं जगपति जगत सभ जानू सू सक्हा जो धान न धान।

सपमन हूँ रावन ज्यों मारौ हनवत हू सका ज्यों जारौ ॥

—कथा कनकावती पत्र ७।छंद ५१

मिथता है^१ परन्तु एसी किमी कथा का पता पौराणिक साहित्य म तथा रामायण-ग्रन्थ म नहीं मिला । खोज म भी ऐसी किमी कथा का प्रचलन आजकल नहीं मिसता ।

राहु के गरीर के दो दूत करना

इम प्रसंग का आन्वयिक उल्लेख मधुमासतो^२ और नल दमन^३ म हुआ है किन्तु उगम कथा क मूल रूप पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता । 'नल दमन' म जो प्रयोग हुआ है उगम चन्द्रमा द्वारा अपना वर निकालन क लिए तन्दार म राहु क दो दूत बिय जान का उल्लेख है ।

त्रिप्लु का मत्स्यावतार—गन्धामुर को लील जाना और वेदा का उद्धार करना

पद्मावत^४ म एक स्थल पर तो त्रिप्लु द्वारा मात पाताला स खोजकर व^५ प्रयो को लान का उल्लेख है और दूसरे स्थल पर^६ मत्स्यावतारी त्रिप्लु द्वारा गन्धामुर को लीजन का । उगम वेदो के उद्धार की चर्चा नहीं है । जाननाप^७ म बवल मत्स्यावतार का मकेत मात्र है ।

जब म म निर्राषो गई मझूपा म व^८ जाननीय जय वाञ्छ निकला तब व^९ एगा त्रिप्लु दिया मातो त्रिप्लु ने जलचर (मत्स्य) का अवतार लिया हो ।

शकुन्तला का दुष्यत से वियोग और पुन सयाग

पद्मावत और जाननीय म दुष्यत शकुन्तला का आलवारिक प्रयोग हुआ है । पद्मावत म दुष्यत को शकुन्तला के विरह म दुखी कियाया गया है,^{१०} किन्तु 'जानदीप' म स्वजानी और जाननीय के प्रथम मिलन की तुलना शकुन्तला और दुष्यत

१ त्रिया दीप राता रूपवला । सरनगीः बह बह मप मिता ॥
 बह बह राम कनी बह परी । कही मु जाय कही उह परी ॥
 —हंस-जवाहिर प० ६१ छ० २७२।५ ६

२ मधुमासता ६१।५

३ बदन चद जनु बर सभारा की हेति छरण शत्रु द्वै पारा । —नल-दमन ८७।४
 काहु छरण तहि उदर विगारा निकस परी मनि भा उबियारा ।
 और राहु मनु चद विगारा सोहू करी कीन्ह परगारा ॥ —बही २७४।३ ४
 घन है व^{१०} उई इहि बारा धार कुचीर राहु रग बारा । —बही ३५३।६

४ पद्मावत १४६।१ १४६।४

५ बही ५७६।६

६ उमगठ देवन कहुँ सरी नग्र सोण ससार ।
 पहुँकर सहित प्रभानर बलचर सो प्रवतार ॥ —जानदीप छ० ११०

७ पद्मावत २ ०।९-७

के समागम से दी गई है।^१ एक में इस कथा का उल्लेख वियोग पक्ष में हुआ है दूसरे में समीप पक्ष में। दुप्यत में विरह की तीव्रता का स्थापन सूफी दर्शन के अनुरूप ही हुआ है।

श्रवणकुमार की मात-पित-भक्ति—दशरथ द्वारा अनजान में श्रवणकुमार की हत्या—उसके अन्धे माता-पिता का प्यासे मर जाना, पर दशरथ के हाथ का पानी न पीना—अधतापस का शाप—दशरथ द्वारा उनकी अत्येष्टि

‘भगावती’, ‘पदमावत’, ‘चित्ररेखा’, ‘मधुमालती’, ‘चित्रावली’ और ‘नल दमन’ में इस आख्यान का आलंकारिक और प्रतीकात्मक प्रयोग हुआ है। सूफी प्रेमाख्यानों के नायक माता पिता के रोकने पर भी नायिका की खोज में बल देते हैं, अतः उनका श्रवण से ता उपमित नहीं किया जाना चाहिए था, परंतु सूफी कविया ने इसका उपयोग बड़े कौशल से किया है। उन्होंने इस आख्यान के दो अंशों को ही अपने उपयुक्त पाया है—(१) एकाकी पुत्र माता पिता को आसो का तारा वृद्ध माता पिता का सहारा^२ उसका वियोग में उनकी मृत्यु (२) पुत्र वियोग में रोते रोते माता पिता का अधा हो जाना। पुत्र न हो तो उनकी सेवा कौन करे? ‘पदमावत’^३ में नागमती सिंहलगामा रतनसन का संदेश भेजते हुए उसकी माता के पुत्र वियोग में मर जाना का समाचार भेजती है और कहती है कि जैसे अधी-अधा श्रवण श्रवण रटते हुए मर गए दशरथ के हाथ का उन्होंने पानी तक न पिया, कावर ज्यों की त्या वक्ष की शाखा से टिकी पड़ी रही क्योंकि अब उसका उपयोग क्या था, वैसे ही तुम्हारी माँ तुम्हारा नाम रटते रटते चल बसी। तुम कैसे मात भक्त पुत्र हो कि माँ की यह दशा तुमने ही जाने दी? चित्रावली में एक स्थल पर^४ नायक

- १ तीनि गहर एह रनि मह करिय जो करना होइ ।
तब निश्चित बठउ एक ठाई भानहु रलि रतिपति की भाई ॥
उषा गीव जनु मनबध मोला राए दुपत जस कुन्ता बीला । —शानदीप छंद १६४
- २ सरवन पुत्र हुता सो काये कावर लिय फिरा सत बाँधे ।
कोहेसि मात पिता कर सेवा की घस पुव बिना मुज देवा ॥
भागीरथ गगा ल भावा किन किन काज पुत्र नहि भावा ।
पुत्रहि सो पुत्रहि सब स्वारथ पुत्र न होई तो जनम अकारथ ॥ —नल-दमन ६०१६ ६
- ३ पदमावत ३६२।६-७ दोहा ३१।४ ३६८ ३६
- ४ कुंवर कहा सुन प्रात पिमारी हम चित घाति चड़ेव दुख भारे ।
मैं अपने कुम सरवन अहेऊ अधीमघा कावरि बहुक ॥
नोरे पैम पिमास मतावा बाट छाडि एहि सरवर भावा ।
जम-दशरथ भाई सर सोवा महु बोसत मार दिख बाता ॥
इन्का सापि जाइ जय बाना घषा अधी तजहि पराना ।
उन कहै भवन कौन दुहेला अघलहुटिया मरा धकेला ।
जो एहि भव जाइ मुधि सह मुए जितव दूनहु गति देह ॥

अपने को श्रवणकुमार के तुल्य मानता है और नायिका का विदा कराके अपने माता पिता वं दशनाथ अपने दश के लिए खाना हो जाता है। चित्रावली में अथर्व^१ दशरथ द्वारा धाते में श्रवण का मारकर शापित हान का उल्लेख है। ममावती^२ चित्ररेखा^३ और मधुमालती^४ में दशरथ का वात्सल्य की उत्कटता के कारण पुन वियोग में मर जाने का आलंकारिक उल्लेख है।

शिव के ललाट पर द्वितीया का चंद्रमा होना

शिव द्वारा दूज के चंद्रमा को अपना ललाट पर धारण करने का उल्लेख अकेले पदमावत^५ में एक स्थल पर आया है। पदमावती को मिहासन पर बड़े देखकर शिव न उमक सामन सुंदर द्वितीया के चंद्र को अपना ललाट पर स्थान दिया।

शिव का कामदेव के सामन हार जाना

मदनश्रुत मधुमालती^६ में कामदेव के सामन शंकर के हारने का उल्लेख कामदेव के प्रभाव को बताने के उद्देश्य से किया गया है।

शिव के कंधे पर दो हत्याएँ होना

(१) ब्रह्मा की हत्या

(२) कामदेव की हत्या (कामदेव दहन)

शिव के कंधे पर दो हत्याओं का पातक होने का उल्लेख केवल पदमावत में हुआ है। रतनसेन जब चिता पर जलने को उद्यत होता है तब उसका आत्महत्या से रोबन के लिए शिव बल पर बड़े एक कोनी के रूप में उपस्थित होते हैं। उस समय उनका रूप धारण करत हुए जामसी ने उनके कंधे पर दो हत्याएँ होना का उल्लेख किया है।^७ पावती रतनसेन की परीक्षा लेने के बाद शिव से निवेदन करती हैं कि इसकी इच्छा-पूर्ति कीजिए अथवा व्यथ ही इसकी भी हत्या का पाप आपको लगेगा। पहले से ही आपन दो हत्याएँ अपने कंधे पर चला रखी है अब यह तीसरी तो मत कीजिए।^८ शिव द्वारा कामदेव दहन या कामदेव विजय का उल्लेख माधवा-

१ रानी कहा बसि बलि जाहू लग न पाउ मयकहि राहू।

जाइ जनाउ नरेस रिमाना जो लहू छुट पाव नहि बाना ॥

दशरथ घोष सरवन मारा पाइ सराप भयो हत्यारा। —चित्रावली १०७/१ ३

२ मगलती ६६/१ २

३ चित्ररेखा प ६७ शी २

४ मधुमालती १७१/४

५ पदमावत ११२/दोहा ११/७

६ मधुमालती १२४/५

७ पदमावत २०७/१ २

८ वही २११/६ ७ दोहा २२/५

नल कामकदला (आलम)^१ एवं 'चित्रावली'^२ में हुआ है।

शिव के द्वारा अधकासुर-कधकासुर का वध

केवल 'चित्रावली'^३ में शिव द्वारा अधकासुर के वध का उल्लेख हुआ है। कौलावती सुजान क मगलाय शिव की स्तुति करते हुए, उनको अधकासुर के वधकर्ता क रूप में स्मरण करती है।

शिव का त्रिनेत्र और योगीश्वर होना

'इन्द्रावती'^४ में राजकुवर को योग में त्रिनेत्र के समान बताया है। इस उल्लेख में शिव के त्रिनेत्र होने और उनके महान् योगी होने की सूचना मिलती है।

शिव की शरण में आकर राम का रण जीतना

पदमावत^५ में पावती शिव की प्रशंसा करती हुई कहती हैं कि आपकी शरण में आने पर ही राम रावण पर विजय पा सकते थे।

शिव द्वारा त्रिपुर सहार

चित्रावली^६ में शिव द्वारा त्रिपुर सहार करने का उल्लेख मात्र हुआ है। वहाँ भी कवि त्रिपुर और त्रिपुरारि का अंतर नहीं समझ सका है। तभी तो वह लिखता है—

तुम ही दच्छ प्रजापति मारा, जीति मार त्रिपुरारि सधारा।
अथ किसी सूफी काव्य में त्रिपुर सहार का उल्लेख नहीं आता।

शिव द्वारा दक्ष प्रजापति को मारना (उनका यज्ञ विध्वंस करना)

चित्रावली^७ में शिव को दक्ष प्रजापति का हत्ता कहकर सम्बोधित किया गया है। पौराणिक साहित्य में दक्ष यज्ञ विध्वंस कथा में कहीं दक्ष-वध का उल्लेख नहीं है। शिव ने अपने अश वीरभद्र से उनका वध कराया था। लोक में शिव के द्वारा दक्ष-वध की बात प्रचलित होगी उसी को उसमान कवि ने ग्रहण कर लिया होगा।

१ प्रति कटोर कुच तन उठे सब सँ सहित सुभाइ।

मनहु मन को मरु करि बटे ईस शबाइ ॥

—माघवानल-कामकदला प० १८६ प० ११ १२

२ तुम तँ सब धसुरपति हारे, तुमहीं धयक कधक भारे।

तुमही दच्छ प्रजापति मारा जीति मार त्रिपुरारि सधारा ॥ —चित्रावली ३६२।४ ५

३ चित्रावली ३६२।४ ५

४ जोगो कहिए जोगी सोई भोगो कहिए भोगी होई।

जोग देखि तिनन बखाना भोग देखि क किस्न सजाना ॥

—इन्द्रावती (उत्तराढ) हस्तलिखित प० २२७

५ पदमावत २११।६

६ चित्रावली ३६२।५

७ वही ३६२।४ ५

गिर का पावती के कटने से बलाम छोड़ देना

यह कथा बचल हजवाहिर^१ में दृष्टान्त रूप में उल्लिखित है। वहाँ समुराल में रहने की बुलाई के अर्थ में इगवा समरण नहीं किया गया है। प्रत्युत इस अर्थ में कि स्त्री की बुद्धि में काम करता है नहीं होता। दृष्टान्त दत्ते हुए बताया है कि पावती की मति में चलने के कारण जगत्प्रियता शिव को कलाश तक छोड़ देना पड़ा। शुभदेव का दा घड़ी में अधिन नहीं न ठहरना

पद्मावत^२ में इस प्रसंग का साहित्य अभिप्राय के रूप में एक सुन्दर प्रयोग उक्त स्थान पर मिलता है जहाँ अलाउद्दीन द्वारा भोजी गई दूती जागित के छप अर्थ में आकर पद्मावती में जाती है कि रतनगन को मिलनवासी यातना को न दण पान के कारण ही तो मैं चुबन्ने बने गई हूँ।

सती का सीता के वेग में राम का छनन की चेष्टा—
गिय द्वारा सती का परित्याग

यह कथा बचल पद्मावत^३ में दृष्टान्त रूप में उल्लिखित है। बने-ठनकर रहने वाली स्त्री भली नहीं होती। इस अभिप्राय को प्रकट करने के लिए सीता के वन में राम को छनन की सती की चेष्टा को निन्दनीय बताया है।

सती का दक्ष-यज्ञ-गुण्ड में बूदकर अपने का भस्म कर देना

पद्मावत^४ में इस प्रसंग का आलंकारिक रूप में वर्णन हुआ है। हीरामन माता पद्मावती से रतनगन का बिरह-वर्णन करते हुए कहता है कि तुम्हारे बटाक्ष बाण उसके रोम रोम में बिध गए। नत्रा में रक्त घार बहु निकनी। सती जा उमस लाल बना, तो उनकी मारा काया में आग लग गई। सती के शरीर का जलान वाली आग की लसाई से आकाश के मय लाल हो गए।

समुद्र का मथन—विष्णु के सहयोग से

गूफी प्रमास्याना में चन्द्रमा और राहु के वर का प्रसंग जिस रूप में मिलता है उगवा उल्लेख पीछे किया जा चुका है। हीर समुद्र मथन की कथा 'पद्मावत और चित्रावली में आलंकारिक रूप में वर्णित मिलती है। पद्मावत में एक स्थान^५ पर ता समुद्र मथन के समस्त उपकरणों का उल्लेख कर दिया गया है और ब्रह्मा

१ घात गिरा जो जगल कर छोड़ दीन कैसाग ।

सीत विरिया केधने मारन मिटा मुबाम ॥ —हंस बवाहिर पृ० १२६ छ० ४३८। १०

२ प पावत ६ ४१५

३ वही ४१५।६

४ वही २२८।६

५ पद्मावत ४ ६।१५

विष्णु तथा महेश स मिलन वाली सहायता की ओर भी सकेत कर दिया गया है। दधि-समुद्र म तूफान आन पर पदमावती से बिछुडकर रतनसेन सोचता है कि क्षीर समुद्र मथन के समय ता ब्रह्मा, विष्णु महेश सुमरु, वासुकि तथा शेषनाग सबन सहायता की थी, पर इस दधि समुद्र को मथन कर मेरे खाए रतन—पदमावती—को निकालने म मरी कौन सहायता करेगा ? यहाँ सुमरु को मथानी माना गया है मदराचल को नहीं। पदमावत म दूसरे स्थल पर समुद्र मथन का सबत मान्न है। चित्रावली ३ मे नायिका की नाभि की उपमा क्षीर समुद्र म से मथन के उपरात मथानी के निकालन पर बने आवत्त स दी गयी है।

सहदेव का पण्डित होते हुए भी चक् जाना

सूफी प्रेमाख्यानो म पाण्डु-पुत्र सहदेव पाण्डित्य के उपमान दष्टात एव प्रतीक के रूप मे कवियों को बहुत प्रिय हैं यही कारण है कि कई सूफी काव्यो म इनका उल्लेख मिलता है। चदायन ३ 'मगावती' ४ 'पदमावत ५ 'चित्ररेखा', ६ मधुमानती ७ चित्रावली ८ ज्ञानदेप ९ 'हस जवाहिर' तथा 'इन्द्रावती' १० मे इनका उल्लेख हुआ है। चित्ररेखा मे कहा गया है कि पढे लिखे भी कभी कभी भूल कर जात हैं। सहदेव कितने पण्डित थे, फिर भी जूआ खेलने के लिए युधिष्ठिर के साथ कौरव सभा मे वे भी पहुँचे और राज्य हार गए।

१ पदमावत ४६५।२ ३

२ क्षीर सिधु मथनी जब काठी नाभि भीर आही जह ठाढ़ी।

—चित्रावली, प० ७६। चौपाई

३ चगायन (प० सा गव्त) २६३।२ ३

४ मगावती २७।४

५ पदमावत ७६।४ ८१।५ ४४६।२

६ चित्ररेखा प० ८६ चौ० ८ ६

७ मधुमानती १५६।१ ३ भीर १६४।२

८ निमिष न जाद निषादे तोरा तँ सहदेव धनतर मोरा।

—चित्रावली ३०८।४

९ करता चढ़े करता कर भेऊ जानै नाहि मरम सहदेऊ।

—पान्थीप छन्द २०

१० तब तौ पाखी एक परेबा नाऊ शम् ज्ञान सहदेवा। —हम-जवाहिर २४३।६

११ तुम जोमें कछ बरतु न मोरे है यह मुवा देउ कर जोरें।

यह पण्डित जानत सब भेऊ जैसे बेयास भीर सहदेऊ।

—इन्द्रावती (उत्तराद) हस्त० १० ८१

सूय का राहु द्वारा ग्रस्त होना

‘चदायन’ पदमावत^३ चित्रावली^४ नल-दमन^५ हस्त जवाहिर^६ तथा अनुराग-बामुरी^७ में राहु द्वारा सूय को ग्रसन का उल्लेख हुआ है। उनमें राहु दुष्टता का प्रतीक बनकर उपस्थित हुआ है जो सज्जना को सताता है। सूय और राहु के बर के मूल कारण पर उनमें कहीं प्रकाश नहीं डाला गया।

हनुमान द्वारा महिरावणपुरी (पाताल) में जाकर जमकातर तोड़ना और महिरावण को मारकर उसके बचन में राम-लक्ष्मण को छुड़ा लाना

एसी लोक कथा है कि समुद्र के नीचे पाताल में महिरावणपुरी बसी है। उसमें जमकात (यम की तलवार) लगी है जिससे उस पुरी में कोई शत्रु प्रवेश नहीं कर सकता। महिरावण राम-लक्ष्मण को लवा के समुद्र-तट से हर ल गया था। हनुमान जी ने पाताल में प्रवेश कर जमकात को तोड़ा था और महिरावण को मारकर राम लक्ष्मण को उसके बचन में छुड़ाया था फिर अपने कंधे पर दोनों को बिठाकर वे उड़ लवा में लाय थे। रामानन्द जी ने अपने एक पद में जमकातर का उल्लेख किया है— ‘पठि पाताल जमकातर तोरयो।’^८

‘पदमावत’ में महिरावणपुरी के पाताल में होने और उसमें जमकातर लगी

१ चदायन (प सा गत) २३।३

२ पदमावत २४७।३ २४६।दोहा २४।११ २४०।३ २४२।३ २४२।३ २४७। दोहा ४६।२ ६ ६।
दो २१।३ ६१०।७ ६२१।दो० ५३।५

३ घाज सपथ जो देहु पिय बाज कहै नहि आहु।

बन्द छोरिकर धरम गहि सूर छहावहु राहु ॥ —चित्रावली ३८७।दोहा

४ जानौं गहन कौन गुण पर रवि वह रूप सुरत जब कर।

देखत स्वाम तिहि सीसा कीन्हु पहै अन तिहि की रीसा ॥

तन कारीछ लपाइ दिखाव यहै देख जग गहन बताव।

चद गन तसो पुनि होइ राहु दोस देहु जिन कोई ॥

भा तिहि रूप सदा तन राहु एकति दाग एक कह दाहु ॥ —नल-दमन ७६।४

कलिजग राहु सुख नल गहा वधि परकास मद होइ रहा ॥ —वही २४२।८

५ घय सुन शाह कहो यहि बात खोन देश जस कौन विघाता।

घासमशाह तहाँ मुलताना महापुरुष का करौ बखाना ॥

तेहि घर भई जवाहिर बारी बरणि न जाय रूप उजियारी।

× × ×

चाँद सुरज कह भाग राहु वह न कसरु बरणि तेहि काहु ॥

—हस्त-जवाहिर १२१।१ ३ और ६

६ तब मलीन रवि सति को पावे जब घन राहु दोउ प धावे।

—अनुराग-बामुरी प १४१ छंद १०।४

रही चित चित बीच उगसो चिता राहु मध दु गरासी ॥ —वही प १६१ छंद ६०।३

७ हिंदी शब्द-सागर (पुराना संस्करण) भूमिका प० ६२

होने का उल्लेख चार स्थलों^१ पर आया है। हनुमान न उस 'जमकातर' को ताड़ा था।^२ महिरावण बहुत विशालकाय था, जसा कि विभीषण ने राक्षस के कथन से पता चलता है। उसके मरने पर उसकी अस्थियों का ढेर पहाड़ जैसा या समुद्र में सेतु-वध जसा दिखाई देता था।^३

महिरावण द्वारा राम लक्ष्मण के हरे जान और हनुमान द्वारा उनको छुड़ा लान की कथा किमी पुराण में नहीं आती। वाल्मीकि रामायण 'अध्यात्म रामायण' और 'रामचरित मानस' में भी यह नहीं है। परंतु लोक में यह बहुत प्रसिद्ध है। वस्तुतः यह लोक-कथा ही है जिसका कई रामायणों में प्रक्षेपण हो गया है।

बंगला की कृत्तिवास रामायण और संस्कृत के आनन्द रामायण^४ में यह कथा आयी है। कृत्तिवास रामायण की कथा का रूप यह है—महिरावण रावण का पुत्र और अहिगवण का भाई था। राम लक्ष्मण को काली की भेंट चढ़ान के उद्देश्य से वह उन्हें लका में हर ले गया था। हनुमान को पता चलते ही वे पाताल में गए और वहाँ महिरावण उनकी पत्नी तथा पुत्र को मारकर राम लक्ष्मण को छुड़ा लाए।^५

'पदमावत' में इस कथा का आलंकारिक प्रयोग हुआ है। उसमें इतना ही पता चलता है कि हनुमान समुद्र में पठकर पाताल में गए थे और वहाँ जाकर उन्होंने 'जमकात' को ढाहा था तथा राम को (लक्ष्मण का नाम नहीं आता) बंधन से छुड़ाया था। उनके द्वारा महिरावण-वध का संकेत नहीं मिलता।^६ 'भगवती' में भी राम के पाताल में हरकर ले जाए जाने और हनुमान द्वारा राम को छुड़ाकर उन पर उपकार करने का उल्लेख मिलता है। इस कृत्य को किसी राक्षस के बंधन में पड़े नायक को उसके महायक द्वारा पराक्रम करके मुक्त करने के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

हनुमान का आकाश में चढ़ना

'चंदायन'^७ में एक स्थल पर इस प्रसंग का आलंकारिक उल्लेख हुआ है। चींग की सखी बिरम्पत लोरिक से कहती है कि चण्ड सखी ने हनुमान की तरह ऊँचे चण्डकर चींग के घौराहर में प्रवेश करो।

१ पद्मावत ३६४।१२ ३६४।२ ६ दोहा ३३।६ ६१३।४ ६२६।७

२ वही ६२६।७

३ वही ३६४।१२ और ३६४।२ ६ दो० ३३

४ रामकथा डॉ० कामिल बरके प० ४०२ घोर पदमावत की सजीवनी टीका डॉ० बामुनेश्वरनरन
प्रकाशन प्र संस्करण प० ६६२ ६६६ ७२६

५ पदमावत ६११।६-७ ६१४।७ ६२६।७

६ चंदायनी २३१।२ ३

७ चंदायन (प० भा० गु०) १६७।४ ३

हनुमान द्वारा ऋषि राक्षस (कालनेमि) का वध करना

नानदीप^१ में हनुमान द्वारा ऋषि राक्षस के मार जाने का आलंकारिक प्रयोग हुआ है। उमम हनुमान ड्राग युक्तिपूर्वक इस काव्य को करन की प्रशंसा की गयी है।

हनुमान का लका की रखवाली करना—छह महीने तक एक पवत पर सोते रहकर छठे महीने जागना और जोर से हाक लगाना

इस कथा का कोई पौराणिक आधार नहीं है। यह विशुद्ध लाक कल्पित कथा है। पदमावत मूल और सजीवनी टीका में डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने इस सम्बन्ध में एक टिप्पणी दी है उससे इस कथा पर किञ्चित् प्रकाश पड़ता है। टिप्पणी यह है— सिंहल के माग में भारत और लका के बीच हनुमान जी प्रहरी बनकर आज तक आवाज देते हैं जिन्हें भय से राक्षस लोग डरने न आवें ऐसा क्विदती है (दे० श्री सुधाकर द्विवेदी कृत पदमावत की टीका प० २७२)।

सूफी कविया में केवल जायमी ने ही इस क्विदती का वाच्यगत उपमाग किया है। पदमावत में कई स्थलों पर हनुमान जी के छह महीने तक सोने और छठे महीने उठकर लका की रक्षा के लिए जोर से हाक लगाने का उल्लेख किया गया है।

हनुमान का अजुन की ध्वजा पर जा बठना, जिससे अर्जुन की जीत होना

पदमावत में अजन की ध्वजा पर हनुमान जी का जा बठना सबल बन जाने का एक स्थान^२ पर उल्लेख हुआ है।

हरिचन्द्र राजा का नीच के घर जल भरना
(चाण्डान का दास बनना)

मगावती * पदमावत < मधुमानती^३ तथा चित्रावली^४ में राजा हरिचन्द्र

१ छोड़ ध्यान घनकर दुष मुने घाह घरो धीरज दम मुने ।

× × ×

होइ नरसिंह हनी हरिनाकस हनीवन जगति हनी रिपि राक्षस । —नानदीप छन्द १२५

२ पदमावत १ ४४६ २ ६१४ और दो० २१८ २३७१ ३ ३५५२ ५३०१ ३

३ वही ६४१७

४ मगावती ३७६।दोहा

५ पदमावत १६०११

६ मधुमानती १३१४ १३१४

७ तपन्ह कहा ते धम सगोना सन हरिचन्द्र राज बलि जीना ।

मोहि नरि पदुमि न रात्रा दूजा इम नित करहि सम्म की पूजा ॥ —चित्रावली ५२।१ २

× × ×

कोविन्दुन एक देस बघाना सख पूत चारी छेइ जाना ।

निहचय सख समर की मुरी प्रगट दखिन हरिचन्द्र पूछ ॥ —वही १ १८ छन्द ५३।६

ची सत्यवादिता एवं दानशीलता का उल्लेख हुआ है और उनका युधिष्ठिर एवं बलि के समकक्ष बनाया गया है। माधवानल कामकदला^१ (आलम) तथा चित्रावली^२ में उनके डोम के घर रहकर सत्य रक्षा के लिए जल भरन का दार्ष्टान्तिक प्रयोग हुआ है।

—

१ कम हेत हरिचद जल भरा कम हेत बनि सबगु हरा ।

बर्म हेत पांडव फल खाये कम हेत रघुपति बन भाये ॥

—माधवानल-कामकदला (हि० प्र गा का० त) पृ १२६ पत्रित १३।१४

२ गाव सत सती कर जानी हरिचद भरा डोम घर पानी ।

रामचंद्र बिमि रावन हना सीता भानि शह पुनि बना ॥

—चित्रावली ४७७।१२

सूफो प्रमाख्यानक काव्यो में पौराणिक आख्यानो का प्रतीकात्मक प्रयोग

मनुष्य प्रतीका का आश्रय मुख्यतः दो अवसरों पर लेता है (१) जब वह अपने हृत्पगत भावा का यथायत प्रकट करने में अपने को असमर्थ पाता है और (२) जब वह किसी कारण से अपने कथन को गुप्त बनाना चाहता है। पहली स्थिति में उसकी दृष्टि प्रधानतः प्रकृति की ओर जाता है। प्रकृति का नाना रूपों के साथ उस अपनी वस्तुओं का रागात्मक सम्बन्ध दिखायी देता है। अपने हृदयगत भावा में मिलन जुलन व्यापार उस प्रकृति में मिलन हैं और वह अपने गुण-दुःख राग-द्वेष तथा अन्य मनोभावों को प्रकट करने के लिए प्रकृति में प्रतीक चुन लेता है। धीरे धीरे कुछ विशेष वस्तुएँ तथा व्यापार कुछ विशेष भावा तथा विचारा का साथ विश्व प्रतिबिम्ब भाव स्थापित कर लेता है और अपने प्रयोग में रूप हो जाते हैं। जम पतन चरन मिक्का घिसा जाता है वैसे प्रतीक भी जब गहज बोधगम्य और बहु प्रचलित हो जाते हैं तब वे अपनी प्रतीकात्मकता खो देते हैं और तब मनुष्य नये प्रतीका की खोज करने लगता है। प्रकृति के क्षण के अतिरिक्त अन्य क्षणों से भी प्रतीक चुन जाते हैं परन्तु चुनाव का आधार उनके साथ मनुष्य का रागात्मक सम्बन्ध और व्यापार-साम्य ही होता है। मनुष्य के भाव प्रकाशन से सम्बन्ध होने के कारण प्रतीक-परंपरा बहुत प्राचीन है। प्रत्येक युग में क्षेत्र विशेष की आवश्यकता के अनुसार उनमें परिवर्तन होता रहा है परन्तु उनकी आवश्यकता कभी कम नहीं हुई। एक प्रकार की भाव धारा का प्रतीक दूसरे प्रकार की भावधारा के लिए अनुपयुक्त सिद्ध होते हैं। छायावादी काव्य के प्रतीक प्रगतिवादी काव्य के काम नहीं आये उमर अपने लिए अलग प्रतीक गढ़े। एम ही प्रगतिवादियों का प्रतीक आज की नयी कविता का भाव और विचार यहन में समर्थ नहीं हुए और उसने अपने भावों एवं वस्तुओं से रागात्मक या बौद्धिक साम्य रखने वाली वस्तुओं तथा व्यापारों से अपने लिए प्रतीक संग्रह किये। प्राचीन और साहित्यिक रचि बन गये प्रतीक भी नव-संस्कार का साथ नया अर्थ-बहन करने में सक्षम बनाये जाते रहे हैं। मानव जीवन के साथ प्रतीकों का सम्बन्ध इतना घनिष्ठ रहा है कि

उन्होंने उम पर दूरगामी प्रभाव भी डाला है। जब-जब भाव से अधिक प्रतीक का महत्व दे दिया गया है तब तब अनर्थ हुआ है। भारतीय बहुदेववाद और मूर्ति पूजा के पीछे प्रतीक-कल्पना नहीं तो और क्या है? परन्तु इतिहास में ऐसे अनर्थ अक्सर आये हैं जब प्रतीक-पूजा और अधश्रद्धा न धार्मिक और साम्प्रदायिक विद्वेषों का सघर्षों को जन्म दिया है। प्रारम्भ में सभी प्रतीक हमारे भावों के आलम्बन रहते हैं उनसे हमारा रागात्मक सम्बन्ध जुड़ा रहता है और उनमें हम अपनी अपनी भावना के अनुसार अर्थ बोध पाते हैं परन्तु कालांतर में ऐसी स्थिति आ जाती है जब प्रतीकों पर आगोपित मूलभाव तो उड़ जाते हैं और फिर उनकी ठठरी की उपासना हानि लगती है।^१ मोह और ममत्त्व के कारण प्रतीकों को आराध्य से भी अधिक समझा जाने लगता है।^२ ऐसी दशा सभी विचार सम्प्रदायों में देर-सबेर आती रही है।

प्रतीक प्रयोग की दूसरी स्थिति यह होती है जब कोई धार्मिक सम्प्रदाय विचार-प्रकाशन में अपने को स्वतन्त्र नहीं पाता। वह किसी सत्ता के दमन और कोप से बचने के लिए अपनी बात को सीधे नहीं कहकर अप्रस्तुत प्रतीकों के माध्यम से कहने लगता है। अयोक्ति की जाने लगती है। ईरान के सूफियों को ऐसी ही परिस्थिति में प्रतीक-प्रयोग का आश्रय लेना पड़ा था। उनके विचार स्वातन्त्र्य और औदाय का जब इस्लाम के कट्टरपथी शासकों शेरका और जाहिदों द्वारा दमित और प्रतिबन्धित करने की चेष्टा हुई तब सूफियों ने अपने भाव प्रकाशन के लिए प्रतीकों का आश्रय लिया। प्रत्येक गुह्य विधि में अपना एक रहस्यवात्मक आकषण होता है। लोक रूचि उधर सहज ही आकृष्ट हो जाती है। सूफियों ने प्रतीकों के साथ भी ऐसा ही हुआ और ऐसा ही हुआ भारत में सहजयानों सिद्धों और नाथपथी योगियों तथा उनके मतानुयायियों द्वारा प्रयुक्त जटिल और मनमाने प्रतीकों के साथ। कभी कभी किसी मतवाद के तात्त्विक रहस्य को सहज सुलभ और सस्ता न बना देने के लिए भी प्रतीक प्रयोग की प्रवृत्ति को स्फुरण प्राप्त होता है। प्रतीक प्रहित होने के कारण वह विचार धारा अनधिकारियों के हाथ में जान से बच जाती है और गुरु-मन्त्र हो जाती है। अधिकारी व्यक्ति ही किसी गुरु का कृपा से उन प्रतीकों का फलितार्थ समझकर तत्त्व-मन्त्रों में डुबकी लगा पाते हैं।

सूफी कवियों के प्रतीक

भारत के सूफी साधकों और कवियों ने फारसी-परम्परा के सूफी साधकों तथा कवियों द्वारा गहीत प्रतीकों का प्रयोग जहाँ एक सीमा तक जारी रखा, वहाँ उन्होंने सिद्धों और नाथपथी योगियों के योग प्रतीकों को भी उनकी लोकप्रियता के कारण ग्रहण कर लिया। उनका प्रयोग उन्होंने बिलकुल उही अर्थों में नहीं किया जिन अर्थों

१ तसल्लुफ़ अथवा सूफ़ीमत धाकाय चन्द्रवती पंडित प्रकाशक सरस्वती मंदिर अदनवर बना
२ रत्न द्वितीय सं० १९४८ पृ० १०१

में मित्र जी की हठयोगी करत थे अपितु अपने साम्प्रदायिक प्रयोजन के अनुरूप उनका नव मन्त्रार कर लिया। परन्तु इसमें मैं यह नहीं बि भारतीय सूफी कवियों को नाथ सम्प्रदाय के माधका व प्रतीक वृत्त मन भाय और उहानि श्रुतकर उनका प्रयोग अपने काव्य में किया। मन्त्रिक मुहम्मद जायमी का पदमावत इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। जायमी ने सूफी प्रेम साधना के अन्तगत कुण्डली योग की सब परिपाका का अंगीकार किया। सूफी साधना की शाशवती सरन बनकर भारतीय भावनाका व साथ इस प्रकार चल मित्र गयी कि पढ़न हुए मोना में को विरोध या पाथक्य नहीं दिवायी दता।^१ मिहतरग के नवा खण और नवा पीर व साथ काय साधन का माध्य वठान हुए जायमी ने बड़ी मूहमता से सूफीमत की साधना के चार पडावा—शरीअत तरीकत हकीकत और मारीफत—का भी उल्लेख कर दिया

नवों खण्ड नव पवरी श्री तहें बख्त बेवार।

चारि बसेरें सा छड़े सत सों छड़े जो पार ॥^२

एस प्रयोग जायमी ने अपने काव्य में प्रचुर परिमाण में किए हैं और उहाने उमे एक प्रकार से माहिगन अभिप्रायो के साथ-साथ अध्यात्म अर्थों का एक कोश ही बना जाना है।^३ इतना ता नहीं परन्तु पर्याप्त अज्ञ में अय सूफी कविया ने भी अपने पाथ्यो में सूफा और नाथपथी प्रतीको का सम्मिश्रण किया है।

जिन प्रकार सूफी कवियों ने अपने पूर्ववर्ती और समकालीन भारतीय मतवाता से प्रभावित होकर उनकी प्रतीकात्मक शब्दावली को ग्रहण किया उसी प्रकार उन्होंने अपने विशिष्ट साम्प्रदायिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए लोक प्रचलित तथा कुछ स्वकल्पित आख्याना का भी उपयोग किया। सूफियों ने जितने प्रमाख्यानक काव्य लिखे उनमें कहानी के साथ साथ अपने मत प्रचार का उद्देश्य भी सामन रखा है। कभी कभी ता अतिवक्त में अधिक उन्हें अपना मतवाद अधिक प्रिय हो उठा है और अयोचित तथा समामाकिन के मंचे में चलकर उनका काव्य सामान्य से अधिक विशेष अय का शातक बन गया है।

हिन्दी के सूफी कवियों ने पौराणिक आख्यानों का उपयोग पूण आख्यानक या अद्भुत आख्यानक का या के रूप में बहुत कम किया है परन्तु प्रतीक अलंकार तथा दृष्टांत के रूप में उनका प्रचुर प्रयोग उनके काव्य में मिलता है। पौराणिक आख्याना तथा पात्रों के जालकारिक और दार्ष्टान्तिक प्रयोग के विषय में तो चचा अगल अध्यायो में होगी यहाँ उनके प्रतीकात्मक प्रयोग पर ही कुछ विचार किया जाएगा।

पौराणिक आख्यान तथा कुछ पौराणिक पात्र लोक रुचि और जन भावना के

१ पत्रमावन मल धीर लजीबन; टीका डॉ. कामुदेवशरण शंभवाल प्रकाशक साहित्यसदन चिरगाँव (झाँसी) जिलाय स २ १८ वि० प्रकाशन १० ५६

२ वही छ ५१ दाहा २११७

३ वही प्रकाशन प ६२

लिए एतन जाकपक तथा मोहक सिद्ध हुए हैं कि उनका प्रयोग काव्य म साहित्यिक रूढ़ि का रूप ग्रहण कर चुका है। लोकोक्तियों और मुहावरों तक म उनको स्थान मिल गया है। किसी पात्र या आख्यान का लोकोक्ति बन जाना अपन-आपम उसको लोकप्रियता और काल सिद्धता का प्रमाण है। स्वाभाविक ही था कि ऐम लाकप्रिय आख्यान और पात्र सूफी कवियों के आख्यानों मे स्थान पा जात। किन्तु सूफी कवियों न उनका प्रयोग अपन विशिष्ट साम्प्रदायिक उद्देश्य की सिद्धि क लिए भी किया है। प्रस्तुत प्रबंध के अध्याय ११ म इस पर विचार किया जाएगा।

जिन सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो म पौराणिक आख्यानों अथवा पौराणिक पात्रों का प्रतीक के रूप म उपयोग हुआ है वे हैं— चदायन मगावती पद्मावत, चित्ररत्ना 'मधुमालती' 'मोघवानल-कामकदला (आलम) चित्रावली' नानदीप 'हंस जवाहिर', 'इन्द्रावती' और 'अनुराग-बाँसुरी'। केवल पद्मावत नन्दमन पुत्रवरिणा, तथा हंस-जवाहिर मे शामी पौराणिक आख्यानों तथा पात्रों का प्रतीकात्मक उपयोग किया गया है।

इन काव्यो मे प्रतीक के रूप म प्रयुक्त भारतीय एव शामी पौराणिक आख्यानों एव पात्रों का अकारादि त्रम से उनके प्रतीक विषय एव कथा सदम के सहित नीचे दिया जा रहा है। जिन हस्तलिखित ग्रन्थ दुलभ प्रेमाख्यानों की मूल पकितया को हम अध्याय ६ मे पाद टिप्पणी के अंतगत उद्धृत कर चुके हैं उनका यहाँ पुन नहीं उद्धृत किया जायगा। आवश्यकतानुसार उनको उस अध्याय म देखा जा सकता है।

भारतीय पौराणिक आख्यान

(१) अगद का रावण की सभा मे पाव रोपना^१—वरागी अत कण म कहता है कि प्रेम के रणभेद में अगद जैसे वीरों के भी पांव उखल जात हैं।

(२) अगस्त्य द्वारा समुद्र शोधन^२—राजा रायभान के सैनिक की वीरता का प्रतीक। राजा का जाना वाकर के समुद्र भी सोल सकता है।

(३) अर्जुन का द्रौपदी-स्वयंवर मे मत्स्य बंध कर साधिकार द्रौपदी से विवाह करना^३—रत्नमन न सिंहल जाकर साधना के द्वारा सिद्धि रूप पद्मावती को प्राप्त किया। वह माया रूप अलाउद्दीन के कहने स उम कस छाड दे ?

१ चदायन मगावती पद्मावत चित्ररत्ना मधुमालती मोघवानल-कामकदला (आलम) चित्रावली नानदीप हंस जवाहिर इन्द्रावती और अनुराग-बाँसुरी।

२ अनुराग-बाँसुरी प० ११५ छंद १६।६

३ नानदीप छंद १२

४ पद्मावत १६०।३ ६-७ १६०।६ ४६१।३ ४ इन्द्रावती (पूरबांड) पाग छंद १०।३ दाहा १८

अजुन भावी वर का द्रौपदी नायिका का राहु वेष नायिका को पान की शन (समुद्र में स मोती निकालना) का प्रतीक ।

(४) उद्धव द्वारा गोपियों से कृष्ण को मिलाना^१—उद्धव द्वारा गापियों में कृष्ण को मिलाना किसी प्रसंगिक द्वारा न प्रेमिया को मिलान की प्रिया का प्रतीक । कृष्ण=नायक (उद्धवदन) । गापियाँ=नायिका (कञ्जलावती) । उद्धव=माध्यम (चित्ररा) ।

(५) उषा अनिरुद्ध का प्रेम—बाणामुर का वायक बनना—अतत बाणामुर का हार मानना अनिरुद्ध को उषा की प्राप्ति^२—यहाँ अनिरुद्ध प्रेमी का उषा प्रेमिका की और बाणामुर उन दोनों का मिलन में बाधक तत्व (यहाँ राजा गधवदन) का प्रतीक है ।

(६) कच देवयानी का प्रेम—कामदेव का मारा जाना—कच का कामदेव को जिलाने के लिए गुहाचाय के पास रहकर सजीवनी विद्या सोखना^३—प्रथम रात्रि में देवयानी कुंवर जाननीप से रति श्रीहा में पराजित । यही है यहाँ कामदेव का मारा जाना । कच यहाँ प्रतीक है नायक (जाननीप) का और देवयानी प्रतीक है नायिका (स्वयंजानी) की ।

(७) कृष्ण द्वारा बाल्यावस्था में की गई चमरकारी और वीरतापूण लोत्ताए करना^४—कृष्ण अल्पवयस में ही वीरतापूण वाय करनवाल साहमी बानक का प्रतीक । यहाँ बानक अपन को कृष्ण मानता है ।

(८) कृष्ण का निष्ठुर बनकर राधा (गोपियों) को विरहावस्था में छोड़कर मथरा जा बसना—गोकुल का उनका न रहने पर उजाड़ हो जाना^५—कहैया (कृष्ण) उम नायक का प्रतीक है जो नायिका को विरहावस्था में छोड़ देता है ।

मधुवन उम स्थान का प्रतीक है जहाँ नायक जा बसा है ।

गोकुल उस स्थान का प्रतीक है जहाँ नायिका विरह-दुःख भूल रहा है ।

गापिकाएँ नायिका की प्रताक हैं ।

(९) चंद्रमा और राहु की शत्रुता—राहु का चंद्रमा को ग्रसित करना^६ (अमावस्या को ही सूर्य-ग्रहण होता, अर्थात् सूर्य-ग्रहण से दुःखी होकर चंद्रमा का भी मुख काला पड़ जाता)—सूर्य प्रेम का प्रतीक है और चंद्र प्रेमिका या शीतलता का प्रतीक ।

१ कथा कविनावती (हस्तलिखित) पत्र १० छ ७१

२ परमावत २७५३४ इन्द्रावता (पूर्वाङ्क) मन्त्रि प० २७ छ १९१को ५ और दोहा ।

३ जाननीप छन्द २७६

४ परमावत ६१५१दाहा ५२२

५ इन्द्रावती (पूर्वाङ्क) काग छन्द छ ५११को ४ छ ५११दाहा ५

६ परमावत २३ ११ २५७११२ ३०६१६-७ ४४११६-७ ४४५१७ ६१०१७ चित्ररेखा

७ ८८५को ३ बहा प ६७१को ३ विज्ञावती ५०७१

राहु दोनो पर दु ख ढानवाले शतान या दुष्टात्मा का प्रतीक है । राहु विघ्न या अनिष्ट का भी प्रतीक है । चंद्र पर राहु की ग्रह दशा शुभ काय मे आनवाले विघ्न की प्रतीक है । यहा चांद प्रतीक है नायक का और राहु प्रतीक है काल (मृत्यु) का ।

(१०) दशरथ द्वारा अनजान मे श्रवणकुमार की हत्या—उसके अघे माता पिता का प्यासे मर जाना, पर दूसरे के हाथ का पानो न पीना—श्रवण श्रवण रटते उनको मृत्यु—दशरथ द्वारा उनके शव का अग्नि-संस्कार^१—नायक की पूव विवाहिता पत्नी द्वारा श्रवणकुमार की मात पित भक्ति^२ आख्यान का प्रतीक के रूप म प्रयोग ।

(११) नल और दमयन्ती का एक-दूसरे से बिछुडकर फिर मिल जाना—दमयन्ती के विरह-दुःख का अंत होना^३—नल नायक का और दमयन्ती नायिका की प्रतीक है ।

नल-दमयन्ती का बिछुडकर पुन एक-दूसरे म मिल जाना प्रेमी प्रेमिका के पुनर्मिलन का प्रतीक है ।

(१२) महाभारत का युद्ध पाण्डवों और कौरवों क मध्य^४—महाभारत भीषण युद्ध का प्रतीक है । कौरव-दल अयाय-पक्ष का प्रतीक है । महाभारत पाण्डव तथा कौरव लोक-अनुश्रुति म अमम युद्ध, अयाय और अयाय के प्रतीक बन गये हैं ।

(१३) राम और सीता का अादश दाम्पत्य प्रेम—पारस्परिक अनुरक्ति—राम का सीता के हठ के कारण उन्हें बन ले जाना—बन मे रावण द्वारा सीता हरण—राम-सीता का वियोग रावण के कारण—राम रावण की शत्रुता सीता को लेकर—सीता का रावण के बधन मे रहना—सीता के पास रहते भी रावण का उसको भोग न कर सकना—सीता के लिए राम द्वारा रावण का बध—सीता और राम का पुन मिलन । इस अभियान म राम के सहायक मित्र और सेवक लक्ष्मण तथा हनुमान^५—राम सीता परस्पर अनुरक्त पति पत्नी और प्रेमी प्रेमिका के प्रतीक हैं । रावण प्रेमी और प्रेमिका को वियुक्त करानेवाली शक्ति का प्रतीक हो गया है । वियोगी राम वियागो नायक के और वियोगिनी सीता वियोगिनी नायिका की प्रतीक । रावण और राम परस्पर शत्रु के प्रतीक ।

राम और लक्ष्मण परस्पर मित्र और सहयोगी के प्रतीक । हनुमान प्रिय का संश्लेष ल जानेवाले दूत और नायक के विश्वस्त मवक के प्रतीक ।

१ पद्मावत ३६२।६७ दोहा ३१।४ ३६८। ६

२ मृगावती २४३।२

३ विज्जावती ३८३।दोहा

४ मृगावती ६१।दो० ६३।२ १ २।दोहा १०३।१ पद्मावत १३१।४ २३२।दोहा २३।१६ ६३१।१ २ मद्यमानती २८८।१ और ४ विज्जावती ४६७।१ २ और ५ तथा दोहा जान १०७ २२० इन्द्रावती (उत्तराष्ट्र) हस्तलिखित ४० ८७ छंद २७१

राम नायक सीता नायिका और रावण खलनायक के प्रतीक ।

रावण नायिका को बदिनी बनाकर रखनवाल राक्षस का प्रतीक । रावण नारी-अपहर्ता का और सीता अपहरित नारी का प्रतीक ।

पदमावन २२।दो०२३।१६ म रावण को प्रेमी के प्रतीक और सीता का प्रेमिका के प्रतीक के रूप म प्रयाग किया गया है । रावण सीता का पाम रखकर भी उसका भोग न कर सका । ऐसे ही नायक-नायिका मितन हाने पर भी भोग न कर सके । राम द्वारा रावण को मारना खलनायक (या नायिक को बदी बनान वाल राक्षस) को नायक द्वारा मारने का प्रतीक ।

सीता राम का पुनर्मिलन नायक नायिका के पुनर्मिलन का प्रतीक ।

(१५) शुक्रदेव का कहीं दो घड़ी से अधिक न ठहरना^१—शुक्रदेव किसी स्थान पर गादोहन समय से अधिक नहीं ठहरत थे । उनका एक स्थान से दूसरे स्थान को घूमत फिरना साधु का रमत राम होने का प्रतीक । यहाँ शुक्रदेवजी की कथा का साहित्यिक अभिप्राय और प्रतीक के रूप म प्रयोग हुआ है ।

(१५) सुमेरु पर्वत को झुकाना^२—सुमेरु को झुकाना अटकारी का मान मदन करने का प्रतीक ।

(१६) हनुमान द्वारा रावण की पुष्प वाटिका (बारी) का विध्वंस करना—लका-बहन करना और रावण का गव-खव करना^३— हनुमान द्वारा वाटिका (बारी) का विध्वंस करना नायक द्वारा नायिका (बाला) का कौमार्य भंग करने का प्रतीक । लका गह विरहाग्नि द्वारा शरीर को जलान का प्रतीक ।

शामी पौराणिक एव निजधरी आख्यान

(१) मसूर का सूली पर चढना^४—मसूर शहीद का प्रतीक है ।

(२) लला मजनु मे प्रेम का अविच्छिन्न सूत्र होना^५—लला प्रेमिका का और मजनु प्रेमी का प्रतीक है ।

(३) मुलेमान द्वारा जिन्द (देव) पर चढाई करके उसे छपनी जाडुई अगठी को

१ पद्ममावत ६०।५।५

२ ज्ञानदीप छ १२

३ पद्ममावत १६७।दोहा २।१५ १६८।५ ६ ३५५।२ ।

मिथ्याय भाषा भुङ्ग सारे डेउ इराप होउ जरि छार ।

रावन गव रहा नहि राया ताश नस रहित सुव साया ॥

×

×

×

सका-बहन मजो एह गाऊ एक करऊ छन मह एह ठाऊ ।

घरी भाष मह घोवउ होउ सो वाचन रूप ॥ —पानशीप छ २६०

५ पद्ममावत २६०।६

५ नल दमन १३८।७ हस-जवाहिर प० १६६।१५

सहायता से अपने धर्म में करना—उससे सेवा लेना^१—सुनमान वीरता का प्रतीक ।
जिन या दर उम नायक का प्रतीक जो वनशाली शत्रु क बघन म पड गया हा ।

भारतीय पौराणिक पात्र, घटना तथा स्थान

अर्जुन^२—अर्जुन पराक्रमी और वीर नायक का प्रतीक है ।^१

इन्द्रलोक^३—इन्द्रनाक ऊचाई का प्रतीक है ।

उपा^४—उपा नायिका की प्रतीक है ।

कस^५—कम अत्याचारी राजा का प्रतीक है ।

कृष्ण^६—कृष्ण उम नायक के प्रतीक हैं जा कुछ दिन रस भोग कर नायिका को छोड जाता है ।

घवत्तरि^७—शामी परम्परा म जसे हकीम लुकमान योग्य चिक्किमरु क प्रतीक है, वस हा भारतीय परम्परा म घवत्तरि । घवत्तरि ही ममु मथन के उपरान्त अपन सिर पर अमत घट लेकर निकन ये अत यह मायता है कि उही म अल्पायु का दीर्घायु बनान की सामर्थ्य है । यह लोकविश्वास है ।

मल^८—मल सुन्दर और विरह पीडित नायक का प्रतीक ।

भीम^९—भीम पराक्रम का प्रतीक ।

मयन (मोज)^{१०}—मयन (कामरु) सुन्दर नायक का प्रतीक ।

१ पद्मावत ३७७।१ मान बहन कर मुता क्यानि मारयो देव कौ न गति हानि ।

एमा घोर न माता जामी कहा मुलेना फिर जगु पायो ॥

—गुरुपबरिया पत्र १४ छं ६८

२ एह धरजन अइ धारव बाँधा धरजुन रहै बचाकर बाँधा ।

—चित्रावली ३८६।७ धनुषाय-बाँसुरी १६।४

३ पद्मावत ४।१२

४ मृगावती १५ । दोहा

५ पद्मावत ६२६।३

६ लीरकहा (चण्डाल) (योगल प्रति), छं ३ । दोहा

७ चित्ररेखा १० ६२। दोहा १

चित्रावली १ ८।४ (निमित्त न आइ निशाँ तोरा सँ सहदेव धनुषर मोरा ।)

माधवानन-कामरुदला (हि प्रे० गा० का सपह) १० २२२ पक्ति १६

८ माधवानन-कामरुदला (हि प्रे० गा० का म) १० २१८ पक्ति १४

९ धनुषर जगु भीम सौँ जो धरजन मय होइ ।

धरि जाहु धर धारने जो धनुषर मनि धोइ ॥

(शान्तेर का कथन मुन्दरगेन से)

—शान्तेर छं ४४० धनुषाय-बाँसुरी १६।३ ६

१० धरि धरिधार विने रति-मैन मन उमभै वै उमडन मन ।

(रचनायनी घोर कु वर मोहन का धरिगतवद होना ।)

—नया पतनावती (हृत्) छं १ ०। पौ० ३

महाभारत युद्ध^१— महाभारत का युद्ध लाव अनुश्रुति में भयंकर युद्ध का प्रतीक ।

रति^२— कामध्वंज और रति की कामना उभर आइ । प्रेमी प्रेमिका का प्रतीक ।

राधा^३— राधा नायिका और मुगरी नायक का प्रतीक ।

रावण^४— रावण स्त्री अपहर्ता का प्रतीक । नगर सभा का पंचांग लारिक का रावण कहा क्योंकि उनकी दृष्टि में वह स्त्री उत्पन्नवाना था ।

लक्ष्मी^५— लक्ष्मी मुझीला स्त्री का प्रतीक ।

शिवलोक^६— शिवलोक चन जाना स्वर्गवाम का प्रतीक ।

सहृदय^७— सहृदय जा पच पाण्डवा में एक थे अपनी विद्वत्ता का कारण लाकानुश्रुति में पाण्डित्य का प्रतीक बन गए हैं ।

१ पन्नावत २४२१, दोहा २४१४ २६४१२ २६४१३ दोहा २५१८ ६३२१ दोहा ५३१९२

विज्ञावली ३८६१७ (एह भरजुन जइ भारत काषा भरजन रहे बचाकर बाँधा)

भौह धनय योरा सो तानी जिन निरपी सो हूयो बिनागो ।

धति भक्त सनमय भये भारत भरजन हू दयित तो हारत ॥

—कथा कवतावली पत्र ७ छं ४४

जगजनि भारत विषी धवार जीवित गहो भरप जसार ॥

—कथा कवतावली पत्र ७ छं ४५

विदे गय हाय निज चूना भारत पर भारत भा दूना ।

—दूस जवाहिर पं० २३८ छं ६२१। चौ० ४

मई जूम रज भारतहि गा परतो मस बीत ।

—वही पं० २३९ छं ६२८। दोहा

भयो जूम जस सब सुना भाग है भारत जा गुना ॥

—वही पं० २४० छं ६६२। चौ० ६

भय भारत सो गइ तज दूबो इला जो जाकर सो पूबो ।

—वही पं० २४६ छं ६७६। चौ० ५

बानई धटा धूर सा दिनमनि रहा छियाय ।

—इनावती (पूर्वांक) मुद्र खड दाहा ७

तहाँ महाभारत भा सबद परेठ हू हाय ॥

२ भरि भक्तार भिने रति मन मन उमग प उमदत नन ।

—कथा कवतावली छंद १३०। चौ० ३

३ ल कैं उहयो ऊर्ता ते पयो धायो अहा तथा हरनपी ।

बटी हा बहु दुख को जारो भरमी राधा देवि मरारी ।

—कथा कवतावली पत्र ३२ छं २००

४ चण्डन (प ता गण्ड) मनेर शराफ १८ पं० ३८२। ४

सोरकहा (सपा० डा० मा० प्र गण्ड) ६७। ५

५ पन्नावत ५३। ६

६ वनी ७६। १

७ वहा ८१। ५

निमित्त न जाइ निवाते तोरा तैं सहृदय धनतर मोरा ।

—विज्ञावली ३०८। ४

करता षहे करवा कर भऊ जान नाहि मरम सहृदु ।

—गानपीप छं १०

सावित्री^१—सावित्री सती साध्वी स्त्री की प्रतीक बन गयी है ।

गोरखनाथ (गोरख का वेश)^२—गोरख योगी का प्रतीक । गोरख-वेश मध्य कालीन योगियों द्वारा धारण किये जाने वाले वेश का प्रतीकात्मक शब्द ।

गोरखपथ^३—यह मध्यकालीन विश्वास था कि हर जोगी गोरखपथी होता है । जागी वेश भूषा के लिए गोरखपथ प्रतीक बन गया था ।

प्रतीक के रूप म प्रयोग किय गये भारतीय पौराणिक आख्यानों एव पात्रा आदि के उपयुक्त विवरण पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट हो जायेगा कि हिंदी सूफी प्रेमार्थानक काव्या म सर्वाधिक प्रतीक भारतीय पौराणिक आख्याना एव पात्रों से ग्रहण किय गये हैं । प्रतीक रूप म राम कथा के आख्यान अधिक प्रयुक्त हुए हैं और महाभारत-कथा के पात्र । इनकी सारिणी इस प्रकार है—

आख्यानक स्रोत	प्रयुक्त प्रतीकात्मक आख्यान	प्रयुक्त पात्र
गमायण (राम-कथा)	४	१
महाभारत-कथा	२	४
पौराणिक स्रोत—		
भारतीय	६	११
शामी	३	—
योग	भारतीय १५ शामी ३	भारतीय १७ शामी —

यदि राम-कथा महाभारत कथा और पौराणिक आख्याना एव पात्रा आदि को एक ही वर्ग (पौराणिक) म परिगणित कर लिया जाय तर् आख्यानक प्रतीकों के प्रयुक्ता सीलह सूफी प्रेमार्थानक काव्या म इन प्रयोगों की आवृत्ति-सारिणी इस प्रकार होगी—

- १ सावित्री के पाँच ठर है बहुत घनूप ।
जो सेव सो पाव रोक होर की धुव ॥

—दामता (पुस्तक), मानिक छन्द दोहा ६६

तुम गिठ भव घनूपन काया घन सावित्री जे सेहि जाया ।

—दामती (उत्तराखण्ड — हस्तलिखित) प० २९६

बन्तम की सावित्री रोव बन्त रकत घनूप सो छोव । —दही प० ३०१

२ मधमासतो (भा प्र० गु), १७२। दोहा २९१।२

३ अदायन १७५।१२ (दीप्तक ११२) मगावनी १०५:३ और दाहा

पौराणिक आख्यान एवं पात्रादिक प्रतीकों की आवृत्ति सारिणी

क्रम संख्या	सूफी प्रमाख्यानक का नाम	भारतीय पौराणिक प्रतीक		शामी पौराणिक प्रतीक	
		आख्यान	पात्र आदि	आख्यान	पात्र आदि
१	चदायन	—	२	—	—
२	मगावती	५	१	—	—
३	पदमावत	१०	६	०	—
४	चित्ररेखा	२	१	—	—
५	मधुमालती (मथन)	२	—	—	—
६	माधवानल कामकदना (आलम)	—	२	—	—
७	चिनावली	४	४	—	—
८	पानदीप	५	२	—	—
९	कथा बँवलावती	१	२	—	—
१०	कथा बनकावती	—	१	—	—
११	पुष्प बरिषा	—	—	१	—
१२	कथा रतनावती	—	२	—	—
१३	नल-दमन	—	—	१	—
१४	हम जवाहिर	—	४	१	—
१५	इद्रावती	६	४	—	—
१६	अनुराग बामुरा	१	२	—	—
योग		४६	३६	५	—

टिप्पणी—गारखनाथ और गारखपथ सम्प्रदायी उल्लेखों की गणना इस सारिणी में नहीं की गई है। उनकी आवृत्ति चदायन में १ बार पदमावत में १ बार और मधुमानता में २ बार हुई है।

आख्यानक प्रतीकों के विषय

प्रतीकों के उपयुक्त काण पर उल्लिखित करने पर यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि अधिकांश प्रतीक प्रेमोत्थाना में सम्बन्धित हैं। अन्तर प्रतीकों का प्रयोग भी प्रेम तत्त्व निरूपण के लिए ही किया गया है। जिन विविध गुणों और कामों के लिए आख्यानक प्रतीक प्रयुक्त हुए हैं वे ये हैं—

दूत बठिन काय सपादन, पराक्रम, अल्पवयस म वीरता और साहस के कृत्य प्रेमी प्रेमिका का अवश्यम्भावी मिलन, नायिका को प्राप्त करन की कोई शन, प्रेम-मन्त्र घटक या दूत द्वारा प्रेमी प्रेमिका का मिलन कराना नायक की निष्ठुरता, नायक का अदभुत काय प्रेमी प्रेमिका के मिलन म बाधक तत्त्व नारी अपहर्ता खननायक को पराजित कर नायिका की प्राप्ति विरह-दाह अति सौंदर्य, शुभ काय म विघ्न अनिष्ट मती साखी और सुशीला नारी पाण्डित्य मान पित भक्ति बल शानी अचाय पन् के माथ निबल 'याय-यक्ष का सघर्ष और उमम उसकी विजय अहंकारा का भान भदन अत्याचारी का विनाश अत्याचार के गढ़ वा ध्वस भीषण युद्ध याग्य चिकित्सक इत्यादि।

हिंदी के मध्यकालीन काव्य मे आख्यानक प्रतीक-परम्परा

हिंदी के मध्ययुगीन काव्यो म आख्यानक प्रतीका की परम्परा का अनुसंधान करन ह्य यह तथ्य उदघाटित हुआ कि 'रामचरित मानस सूरसागर' तथा 'राम चंद्रिका म पौराणिक आख्यानों का प्रतीक के रूप म प्रयोग नहीं किया गया है। कवल विद्यापति का पदावली म राहु और चंद्रमा के आख्यान का एक स्थल पर प्रतीकात्मक प्रयोग मिला है'। उसम सुरति क्रीडा क समय राहु को प्रेमी (कृष्ण) का और चंद्र को प्रेमिका (राधा) का प्रतीक माना गया है। इससे इस निष्कर्ष पर पहुँचना तथ्याधारित है कि मध्यकालीन काव्यो म पौराणिक आख्यानों का प्रतीकात्मक प्रयोग मुख्यत सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो म हुआ। मगावती पदमावत, मधुमालती, त्रिशावनी ज्ञानदीप हस जवाहिर इद्रावती तथा अनुराग बाँसुरी आदि प्रमुख सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो म एम प्रयोग विशेषत मिल हैं।

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में पौराणिक आख्यानों का आलंकारिक प्रयोग

कवियों द्वारा काव्य की शाभा बढान के लिए कथन की वक्रता या उक्ति वचिश्य का प्रयोग प्राचीन काल से किया जाता रहा है। हमारे देश के प्राचीन काव्य साहित्य 'वाल्मीकि रामायण' और महाभारत में उक्ति वचिश्य के अनेक उदाहरण मिल जाते हैं। पुराण साहित्य में भी इसकी कमी नहीं है। वस्तुतः अपनी बात को ऐसे चमत्कारिक ढंग से कहने की प्रवृत्ति जिससे भाव-संप्रपण में सहायता मिलती है उसमें तीव्रता भी आ जाय मानव स्वभाव में बढमूल है। कथन की इस वक्रता को ही काव्य शास्त्र में अलंकार की सजा दी गयी है। दो वस्तुओं या काव्य व्यापारों के परस्पर रूप गुण एवं स्वभाव सम्बंधों सादृश्य या विरोध के आधार पर उनकी तुलना करने की प्रवृत्ति न कथन की अनेक शक्तियों को जन्म दिया और उनका वर्गीकरण करके काव्यशास्त्रियों ने उनको १८० से भी अधिक अलंकारों के अंतर्गत परिगणित कर दिया।^१ श्रेष्ठ कवि कभी अपने काव्य को अलंकार बोझिल नहीं करते। उनके लिए अलंकार भावोत्तेजन के साधन मात्र होते हैं अपने-आप में वे साध्य नहीं बन जाते। किसी काव्य में अलंकारों का स्वल्प कवि और पाठक की मास्त्वृतिक चेतना के द्वारा निर्धारित होता है। अलंकार प्रयोग के बाद यदि कवि की उक्ति पाठक या श्रोता

१ भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में केवल ४ अलंकारों की ही गणना की गयी है। धर्मपुराण में उनकी संख्या १६ हो गयी है। तदुपरांत छठी शती में हुए भट्टि घोर भामह ने उनकी संख्या ३८ तक पहुँचा दी। ८वीं शती तक दण्डी उभयतः तथा रामानुजान् घाण्डी प्राचार्यों ने इस संख्या में १४ की घोर वृद्धि कर दी। साठवाँ से बारहवीं शती के मध्य दण्डी भोज्य मध्यक काल में घाण्डी ने अलंकारों की संख्या को १३ तक पहुँचा लिया। १३वीं शती में जयदेव के 'चंद्रालोक' में १६ संख्या नवीन अलंकार सामने आये। १४वीं से लेकर १७ वीं शती तक विश्वनाथ घोर घण्टे की शक्ति के द्वारा १३३ अलंकार परिगणित कर लिये गये थे। सत्रहवीं शती में जो भारतीय अलंकार शास्त्र के विकास का अन्तिम काल है 'पद्मिनीराज जगन्नाथ का 'रसगणोत्तर' लिखा गया। उसमें विभिन्न प्राचार्यों द्वारा निरूपित अलंकारों की संख्या को १८० से भी ऊपर पहुँचा लिया गया है। दो 'सम्पन्न अलंकार मञ्जरी' भूमिका सेठ कन्हैयालाल फोहार हिन्दी भा० में प्रयोग सं २ १२ पृ० १ १२।

के लिए सहज बोधगम्य न रही, उससे रसाद्रेक में महायत्ना न मिली, तो अलंकार का प्रयोजन ही नष्ट हो जाता है। कवि की भाव संप्रेषण क्षमता और पाठक या श्रोता की भाव बोध क्षमता में जब तक सामंजस्य नहीं होता किसी काव्य का कथ्य जानने की उपलब्धि नहीं करा पाता। इसीलिए रसमिद्ध कवि अपने पाठक या श्रोता के रमबाध की सामर्थ्य का ध्यान रखकर चलते हैं।

बौद्धिक से मत्रहवा या अठारहवीं शती तक का काल एक ओर जहाँ अनकार-शास्त्र के विकास का समय रहा वहीं दूसरी ओर हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यानक काव्य के उत्पन्न और विकास का भी। अतः सूफी कवियों द्वारा अपने काव्य में अलंकारों की विलकुल उपेक्षा सम्भव नहीं थी। परन्तु चूँकि सूफी कवि अधिकशत लोकोदित कवि थे, जनता की ठेठ भाषा में काव्य रचना करनेवाले और लोक प्रचलित कथाओं से अपनी काव्य वस्तु का एक विशेष आध्यात्मिक अर्थ की व्यञ्जना के लिए शृंगार करनवाने इसलिए उन्होंने उन्हीं अलंकारों को चुना जिनमें उनके सामान्य श्रेणियों के पाठकों की आवश्यक भावोत्तेजन प्राप्त हो सके। सूफी कवियों ने बौद्धिक कलावादी से अपने को दूर ही रखा और शब्द-कौतुक से अलग, यहाँ तक कि श्लेष और यमक जैसे शब्दालंकारों का प्रयोग भी इन कवियों द्वारा भूते भटके ही किया गया। अर्थालंकारों में भी इन्होंने अधिकतर सादृश्य मूलक अलंकारों को ही चुना है और उनमें भी इनकी अधिक स्थान उपमा उत्प्रेक्षा रूपक उदाहरण तथा अतिशयोक्ति अपोक्ति, ममागोक्ति उल्लेख व्यतिरेक मन्त्रेह आदि बहुप्रचलित अलंकारों की ओर ही रही।

सूफी प्रेमाख्यानक काव्य में अलंकारों का समावेश मायाम नहीं अनायाम और सहज है। इन काव्यों के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हुए बिना नहीं रहती कि ये कवि भारतीय साहित्यिक परम्परा में परिचित थे और लोक भावना के लिए अपने काव्य को संप्रेषण बनाने में उन्होंने अपने अप्रस्तुत विधान में अधिकशत परम्परागत सादृश्य योजनाओं को स्थान दिया। भारतीय लोक जीवन विवेकत पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोक जीवन में इन कवियों ने अपने को इतना एकरम कर लिया था कि इनकी अलंकार-योजना में ग्रहण किया गया अप्रस्तुत विधानों में जन रसिक की पर्याप्त चाँकी मिल जाती है। सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों की अलंकार-योजना में गृहीत अप्रस्तुत विधान पर त्रिविध शोध प्रवृत्तियाँ एवं ग्रन्थों में प्रकाश डाला जा चुका है। उसके विप्लवपूर्ण की आवश्यकता नहीं। यहाँ तो इन काव्यों में पौराणिक आस्थानों का आलंकारिक प्रयोग के स्वरूप एवं प्रकार पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जाएगा। अभी तक एक तरह से यह अंग अटूटा ही है। हिन्दी के सूफी कवियों ने अपने प्रेमाख्यानो में पौराणिक आस्थानों के साथ-साथ कुछ भारतीय निजधरी आस्थानों लाक-कथाओं और प्रेमाख्यानो भी आलंकारिक प्रयोग किया है। कुछ शामी परम्परा की निजधरी लोक कथाओं का तथा पौराणिक कथाओं का भी इस निमित्त उपयोग किया गया है। साथ ही इन कवियों ने भारतीय और शामी परम्परा के पौराणिक तथा निजधरी पात्रों वस्तुओं

राना घटनाआ पशु-पक्षीया यथा पवता एव समुद्रा आदि का भी जातकारक प्रयोग किया है और उसी मर्यादागण्य नहीं है। उतारा एक सूची म प्रथम परिशिष्ट म मिली है। अथ अक्षयन क्रम म हम जिन पौराणिक आख्याना एव पात्राणि क आतकारित प्रयोग प्राप्त हुए हैं उसी एक मर्यादा मारिणी नाम दी जाया है।^१

भारतीय		नामा			
पौराणिक आख्याना	पौराणिक पात्राणि	निजघरा आख्याना	निजघरी पात्राणि	पौराणिक निजघरी एव ताव आख्याना	पौराणिक निजघरा एव ताव कथाजा क पात्राणि
१	२	३	४	५	६
१०५	५६	४	६	१०	३
(गम-शया क लगभग ३० प्रमुख आख्याना सन्निव)	(इनक अतिरिक्त २१ स अधिक पौराणिक प्रसिद्धि क स्थान, यन्तुए घटनाएँ, पशु-पक्षी यथा पवत समुद्र आदि भी है।)				

यहाँ मुख्यत भारतीय पौराणिक आख्याना पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। सुविधा की दृष्टि म उन आख्याना को (१) रामायण स्यात, (२) महाभारत स्योत एव (३) पौराणिक स्योत इन तीन वर्गों म विभाजित करके उनके उपयोग क स्वरूप पर विचार होगा।^२

१ इस सारिणी की सख्याएँ प्रायः ठीक हैं किन्तु भारतीय पौराणिक आख्याना की सख्या मे कुछ आख्याना को एक साथ सम्बद्ध कर दिये जान और कुछ मूलवहीन को छोड़ लिये जाने के कारण इस सख्या म दो-चार की यून्याधिकता ही सकती है।

२ आख्याना को प्रसंगानुसार न लेकर प्रकारादि क्रम स लिया गया है। आख्याना के शीघक सूची काव्यामे प्राप्त उनके रूप के आधार पर है। हस्तलिखित एव दुष्प्राप्य प्रमाख्याना स सम्बन्धित उद्धरण इत प्रथम मे अध्याय ६ म दिये जा चके हैं। पुनरावृत्ति से बचने के लिए उनको यहाँ पुन उद्धृत नही किया गया है।

मध्यकाल म पौराणिक आख्यानों के आलंकारिक प्रयोग की एक ममज्ज परम्परा हिन्दी म मिलती है। विद्यापति मूरदास, तुलसीदास तथा केशवदास आदि न अपन काव्यों म ऐसे प्रयोग प्रचुरता से किय हैं। 'विद्यापति की पदावली' 'मूरसागर' राम चरित मानस और 'रामचरितिका' म ता बहुत से पौराणिक आख्यानों क आलंकारिक प्रयोग टए हैं। परन्तु यहा केवल उन्हीं आख्यानों क प्रयोग पर तुलनात्मक दृष्टि स विचार किया जाएगा जिनका उपयोग सूफी कवियों न किया है।

रामायण-स्रोत के आख्यानों के आलंकारिक प्रयोग

(१) अगद का रावण की सभा मे पाव रोपना

१ १	अडिगता	गोरा बादल की बीरता । ^१
१ १ १		प्रम पथ म अगद जस गूग्वीरा के भी पाँव नहीं टिकत । ^२
१ २	आतक	विगडल हाथी द्वारा उत्पन्न प्रलय दश्य । ^३
१ ३	स्वामी के काय साधन का सकल्प	गारा बादल द्वारा बीजा उठाना । ^४

अलंकार १ १ १ ३ म उपमा और १ १ १ तथा १ २ म उदाहरण ।

(२) दारय का सुत वियोग मे प्राण देना

४ १	पुत्र वियाग की मर्णांतक पीडा	राजकुवर क घर छाडकर जान पर उसके पिता की मृत्यु । ^५
२ १ १		कुवर मनोहर का घर स जाना । ^६
२ १ २		प्रीतममिह के जान पर माता पिता का प्राण त्याग । ^७

अलंकार २ १ और २ १ १ म उपमा । २ १ २ म उदाहरण ।

१ पदमावत ६१४।४ ६३१।७

२ अनराग-बाँसुरी १६।६

३ चित्रावली ४६६।१ २

४ पदमावत ६१२।१ ६१४।४

५ मगावती ६६।१ २

६ मघमालती १७१।४

७ चित्ररक्षा ५० ६७ ची० २

२१८ हिंदी मूफ़ी काव्य म पौराणिक आख्यान

(२) दगरथ द्वारा धनज्ञान म धवणकुमार क प्रथ माता पिता की हत्या—उनका धवण कानाम रटते मर जाना—दगरथ क हाथ का पानी न पीना—पुत्र वियोग म मरने का गाय—दगरथ द्वारा उनकी अत्यष्टि—धवण की मानु पितृ सेवा ।

३ १ पुत्र वियोग म प्राण-त्याग राजकुवर क जोगी बनन पर उमक पिता का मानना ।^१

३ १ २ नागमती का रत्नमय की उसकी माना की मृत्यु का गमाचार भजना ।^२

३ २ मान गिन भक्ति उपयुक्त ।^३

३ ३ पाप म अपराध करके

नाष्टिन और दण्डित होना रानी हीराकवर का परेवा म कथन ।^४

अलंकार ३ १ २ म उपमा श्लेष म उदाहरण ।

(४) राम और सीता का आदर्श वाग्दत्त प्रेम—सीता का सतीत्व

४ १ दुःख म पति पत्नी का साथ कौशावती का सुज्ञान क माय चलने का आग्रह ।^५

४ १ १ पति म वियक्त होने पर प्रतिशण उमी का ध्यान

मुन्त्री का वियोग-वर्णन ।^६

अलंकार ४ १ म उदाहरण और ४ १ १ म रूपक ।

(५) राम के राजतिलक का समारम्भ

५ १ पिता के द्वारा पुत्र को उत्तराधिकार देना

राजकुवर द्वारा रायभान को गाय मौपना^७ ।

अलंकार उदाहरण ।

(६) राम के बिना शोषणा का सूना हो जाना (राम वन गमन)

६ १ भायक के चल जाने म उमका नगर उजाड

हमराज के अपना राज्य छोड़ आन पर राज्य की दशा ।^८

अलंकार उदाहरण ।

१ मगावती ६६ बोहा

२ एदमावन ३६८३ ६

३ वही ३६२।६ ७ दाहा ३१।४

४ चित्रावती ५०७।१ ३ (देखिए इस ग्रन्थ का अ ६ धवणकुमार की मात पितृ भक्ति सबंधी कथा)

५ वही ४७१।६ ७

६ कौशावती उत्तराड हस्त १० २७१

७ मगावती ३ ६।४ ५

८ कौशावती उत्तराड हस्त १० १६३

(७) राम सीता के वियोग म विरहाकुल—विलाप करना

७ १	प्रिया वियोग म दुःखी	चंद्रा की सपदश से मत्स्य लोरिक का विलाप । ^१
७ १ १	'	समुद्र का कथन वियोगी रतन-सन म । ^२
७ १ २	' '	मुजान का विलाप चित्रावली के लिए । ^३
७ १ ३	' "	छीता के अपहरण स राम दुःखी । ^४
अलंकार	७ १ ३ म उपमा । ७ १ १ और ७ १ २ म उदाहरण ।	

(८) राम रावण की शत्रुता सीता को लेकर

८ १	नारी को लेकर शत्रुता	सुरनानी का कथन नानदीप से । ^५
अलंकार	रूपक ।	

(९) राम को विपत्ति मे लक्ष्मण जैसे भाई और हनुमान जैसे सेवक की सहायता मिलना

९ १	विपत्ति म सहायता	सरजा को अमीर हुमाजा और अली की मदद । ^६
९ १ १	'	उदयभान का कथन अपने भाई से । ^७
९ १ २	'	छीता के पति राम का विमूर्खता । ^८
अलंकार	९ १ म व्यतिरेक ९ १ १ म अर्थांतर-यास और ९ १ २ म उपमा ।	

(१०) राम द्वारा बाण चलाकर सेतुबन्ध के पास समुद्र को दो टुकड़ों मे बाट देना

१० १	धनुष क लक्ष्य की अचूकता	पद्मावती की भौंहा की प्रशंसा । ^९
अलंकार	व्यतिरेक ।	

चन्द्रायन (पृ ११०) ३५१११

पद्मावत ४१३।३ ६

चित्रावली १०६।१ ५

कथा छीता छंद ३

ज्ञानदीप छंद १२४

पद्मावत ६३५।३

कथा रतनमजरी पत्र ३३। छंद २२८

कथा छीता छंद ३०

पद्मावत ४७३।४

(१५) सम्मन का रावण को मारना (?)

१५ १ साहसपूर्ण वृत्त्य
अलंकार उपमा ।

जगपति की गर्वोक्ति ।^१

(१६) सम्मन को शक्ति-बाण लगना—हनुमान का सजीवनी लाकर उसकी मूर्च्छा दूर करना

१६ १ मूर्च्छाग्रस्त होना

पदमावती का सौन्दर्य-वर्णन सुनकर रतनमन की दशा ।^२

१६ १ १ आलस्य-स्रोत का छिन्न जाना
दुःख आ पचना

रतनमन बढ़ी । पदमावती विरहा-कुल ।^३

१६ १ २ विरह की तुलना शक्ति बाण से

मनोहर का प्रेमा से मधुमालती के प्रति अपना विरह कथन ।^४

१६ १ ३ स्तह-पथ की दुर्गमता की शक्ति बाण से तुलना

वैरागी द्वारा अतः करण से स्तह-पथ की कठिनाई का वर्णन ।^५

१६ १ ४ वियोग की तुलना शक्ति-बाण से

मगावती विरह-पीडित ।^६

१६ १ ५ कामबाण की तुलना शक्ति बाण से

राजकुंवर का कथन ।^७

१६ १ ६ परमाथ के लिए कष्ट सहन

विक्रमादित्य का कामकला को अमृत दना ।^८

अलंकार १६ १ म उत्प्रेक्षा १६ १ १ में अयोक्ति (सासृष्य निवर्धना) ।
१६ १ २ म उपमा और रूपक । १६ १ ३ से १६ १ ६ तक उदाहरण ।

(१७) विभीषण द्वारा लका का परित्याग—(उनका निष्क्रामन)

१७ १ शरीर में से पाण निष्कृत जाना

रतनमन की मृत्यु ।^९

१७ १ १ कथा की दिनाई पीढ़र से

मधुमालती की विदा ।^{१०}

१ हौं जगपति जगत सभ आन । तू सकहा जो भान न मान ।
सपन हूँ रावन ज्यो मारौं । हनवत हूँ लका ज्यो जाँरौं ॥

—कथा कनकावती प ७ छंद ५१

२ पदमावत १२ । ३ ४

३ कही २५५। दो० २४। ७

४ मधुमालती २४४। दो०

५ हनुमान-बाँसुरी १६। ५

६ मगावती २४२। दो०

७ कही २५५। ३ ५

८ माधवानल-कामकला (हिं प्र० गा० का० स), प २२२। १६ २०

९ पदमावत ६४७। दो० ५६। १

१० मधुमालती २११। दो०

१७ १ २ विरकिन क साथ परित्याग

पान्नीप की रायभानपुर म जान की इच्छा ।^१

अलकार तीना म उप्र क्षा ।

(१८) सीता स्वयंवर मे गिय धनुष की प्रत्यक्षा चढ़ाकर राघ का सीता से विवाह करना

१८ १ राम क धनुष की पदमावती की भौंह की वक्रता और चुटीलपन स तलना

पदमावती की भौंहा की प्रशंसा ।^२

अलकार रूपर ।

(१९) सीता हरण

१९ १ पत्नी का अपहरण

छीता का अपहरण अनाउद्दीन द्वारा ।^३

१९ १ १

चदा को साप न हँसा ।^४

अलकार दाना म उपमा ।

(२०) सीता का अगोचर वक्ष क नीचे राम का विरह दु ख सहना

२० १ वियोगिनी नायिका द्वारा दु ख सहन

रतनसन से पद्मावती विद्युक्क होकर दु खी ।^५

२० १ १

गुजान क विरह म चित्रावती का दशा ।^६

अलकार २० १ म उदाहरण २० १ १ म उपमा ।

(२१) सीता और राम का वियोग के बाद फिर सयोग होना

२१ १ प्रिय प्रिया मिलन

नल और दमयन्ती का वियोग क बाद पुनर्मिलन ।^७

अलकार रूपक ।

१ पान्नीप छ ३८८

२ वही १ २।३

३ क्या छाता छ ३

४ लौरवहा (मा प्र ग०) छ ४६

५ पदमावत ४१४।१

६ चित्रावती १२७। दो

७ नल-दमन ३५६। द।०

(२२) सुग्रीव द्वारा बालि को बाँधना

२० १ पराक्रमपूर्ण कृत्य

सुरनामी का पानदीप से जादुई घोड़े का पकड़न के लिए कहना ।^१

अलंकार रूपक ।

(२३) हनुमान का आकाश में ऊँचे चढ़ना

२० १ नायिका प्राप्ति के लिए प्रयास

विरस्पत लोरिक का चढ़ा के घौराहर पर चढ़न का उक्ताती है ।^२

अलंकार सदह ।

(२४) हनुमान द्वारा लका की पुष्प-वाटिका की तहस-नहस करना

२४ १ कौमार्य भग

पदमावती का स्वप्न-दर्शन ।^३

२४ १ १

स्वप्न का अय-कथन सखियों द्वारा ।^४

अलंकार २४ १ म उत्प्रेक्षा उपमा । २४ १ १ म श्लेष तथा मुद्रालंकार ।

(२५) हनुमान का सीता की सुध लाना और उनके कारण लका को जला डालना

२५ १ सहायक का अदभुत कार्य ।

नायिका प्राप्ति म नायक की सहायता

चढ़ा सपदशिता । लोरिक का विसाप ।^५

२५ १ १ "

मृगावती के चल जान पर राजकुबर का विसूरना ।^६

२५ १ २ भ्रू और घनुप की तुलना

राजकुबर मूर्च्छित ।^७

२५ १ ३ विरह की ज्वाला की तुलना

लका को जलान वाला आग स

पदमावती का विरह-वर्णन ।^८

२५ १ ४

नागमती का विरह ।^९

१ पानदीप छंद १२४

२ चदायन (५ ला गु०) १६७।४ ५

३ पद्मावत १६७।६ दो० २ ।१५

४ वही १६८।४ ६

५ चदायन (५० ला० गु०) ३३१।२ ५

६ मगावती, ६६।२ ४

७ वही १७८।४

८ पद्मावत २३३।२

९ वही ३३३।२ ३

- २५ १ ५ परानमपूज कृत्य जगपति की गर्वोक्ति ।^१
 २५ १ ६ नायिका की मुच लाना कँवलावती का चित्र बनाकर चित्र
 का वापस जाना ।^२
 २५ १ ७ अत्रतिम काय कोटि कवि भा हनुमान मा कृत्य
 नहीं कर सकत ।^३
 २५ १ ८ विरह का हनुमान की तरह नागमती का विरह वषण ।^४
 गजन-तजन

२५ १ ९ घर का भेनी लका टाँ रतनमन द्वारा भाण्यो के पड्यत्र
 का बहाना बनाकर गधवसन में
 घर लौटन की आजा लना ।^५

अलंकार २५ १ २५ १ ३ २५ १ ४ और २५ १ ९ म उदाहरण
 २५ १ १, २५ १ ३ और २५ १ ७ म उपमा
 २५ १ २ २५ १ और २५ १ ४ म रूपक ।

(२६) हनुमान का अपुन क रय की ध्वजा पर बठना जिससे अर्जुन की जीत होना
 २७ १ परानम की प्रसा पदमावता द्वारा बादल की आरनी
 उतारना ।^६

अलंकार रूपक ।

(२८) हनुमान का जमकात नोडकर राम लक्ष्मण को पाताल (महिरावणपुरा)
 से बधन-महत करके ले जाना—महिरावण को मारना

२८ १ प्रिय क लिए कठिन काय की मगावती राजकुवर का धन क
 मिद्धि लिए पाताल तक भी जान का
 प्रस्तुत ।^७

२८ १ १ साहमपूज कृत्य करक नायक का पादिमती का गारा-वाण म
 छुगाना नायिका म मिलाना कथन ।^८

२८ १ २ युद्धभेध म गारा की उक्ति ।^९
 २८ १ ३ मुजान का विलाप ।^{१०}

१ कथा कनकावती पत्र ७ छ ११

२ कथा कँवलावती पत्र ९ छ ६५

३ बही पत्र १ छ १९

४ परमावत ३५५।२ ३

५ बहा ७६।१ २

६ बही ६४१।७

७ मगावता २३१ २ ३

८ परमावत ६११।६ ७

९ वग २६।७

१० चित्रावता १ ८।१ ५

सूफी प्रेमसाधनाक काव्यों में पौगणिक आख्यानों का आलंकारिक प्रयोग २२५

२८ १४ विशाल कायत्व

विभीषण के दूत राक्षस का कथन ।^१

अलंकार २८ ११ में उदाहरण । २८ १२ में रूपक ।

२८ १, २८ १३ और २८ १४ में उपमा ।

(२६) हनुमान द्वारा ऋषि राक्षस (कालनेमि) का वध

२६ १ युक्ति-पूर्वक पराक्रम का काय करना

सुरनामी का पानदीप से जादुई घोड़ा पकड़न को बहना ।^२

अलंकार उदाहरण ।

(२७) हनुमान द्वारा लका का रक्षवाली करना—छह महीने सोना—छठे महीने जागकर जोर की हूक लगाना

३० १ विरही के विरह का प्रभाव

रतनसेन की चिता की आँखें हनुमान तक पहुँचीं ।^३

३० १ १ हृदय को सुखकर काय

रतनसेन को पदमावती का सन्देश ।^४

३० १ २ जाबट का काय

अलाउद्दीन द्वारा गढ़ पर मत्त-वध ।^५

३० १ ३ विरह की तीव्रता

नागमती का विरह वणन ।^६

अलंकार ३० १ में अतिशयोक्ति, ३० १ १ और ३० १ २ में उपमा ।

३० १ ३ में रूपक ।

महाभारत स्रोत के आख्याना के आलंकारिक प्रयोग

(१) अभिमन्यु का चक्रव्यूह में लूटना

१ १ तुमुन सघन

रतनसेन पदमावती की रति श्रीडा । रति श्रीडा की चक्रव्यूह से और रतनसेन की अभिमन्यु से तुलना ।^७

अलंकार उदाहरण ।

१ पदमावती ३६४।१५

२ ज्ञानदापि छ १२४

३ पदमावती २ ६।१४ से २१।८

४ वही २२७।१२

५ वही ५ १५ ३

६ वही ३२५।२

७ वही २६४।१

(२) धनुज का द्रौपदी-वधघर मे बाण से मत्स्य वध

२ १	धनुष की वपना	पदमावती की भौंहा म अजुन क उम धनुष की तुलना जिमम उन्हनि मत्स्य-वध किया । ^१
२ १ १	“ ”	राघवघनन द्वारा अलाउद्दीन से पद्मावती की भौंहो की प्रशसा । ^२
२ २	लटय-वध की श्चुकता	अजुन क बाणो नजस राधा-वैध किया वस ही रतनसन पद्मावती क साय रतिक्रीडा करत समय लटय-वध म तमय । ^३
२ २ १	,	रति क्रीडा म नल द्वारा दमयन्ती का कौमाय भग । ^४
२ ३	वशवर्ती बना ना	स्वप्न फल-वचन । कोइ आकर पद्मावती का अपन वश म करेगा । ^५
२ ४	शत पूगी करक साधिकार पाता	रतनमन का वचन अलाउद्दीन के दून म । पदमावती को उसने वस ही जीता जसे अजुन न द्रौपदी को । ^६
२ ४ १	,	इन्द्रावती को सलियो का समझाना कि कोई अजुन की तरह का धीर आकर समुद्र म म मोती अवश्य निकाल कर तुम्ह ब्याहेगा । ^७
२ ५	तीक्ष्णता	अजुन के बाणा की तरह ही सब मगला क कटासा म तीक्ष्णता । ^८

छलकार रूपक २ १

उपमा २ २, २ ४ १

उत्प्रेक्षा २ २ १

उदाहरण २ ३ २ ४ २ ४ १

हस्तुप्रेक्षा २ ५

प्रतीप २ १ १

१ पद्मावत १०२।५

२ वही ४७३।५

३ वही ३१६।४

४ नन-दमन छ २१७ के बा म प्र स० की प्रति क ३ छदों म छे प्रथम छ की उर्ध्वो पक्ति ।

५ पद्मावत १६७।५-७

६ वही ४६१।३ ४

७ इन्द्रावती (पूवाद्) फाय खण्ड १६।१ ३

८ धनुषाय बसुतो ७८।५

(३) अर्जुन द्वारा कौरव-दल का सहार

- ३१ शत्रु-नाश के लिए सन्नद्धता लोरिक अर्जुन की तरह शत्रु मना से लडने के लिए सन्नद्ध ।^१
 ३११ कामदेव ने नायिका के सुख का नष्ट करन के लिए पुष्प बाण सभागा ।^२
 अलकार उत्प्रेक्षा ३१, रूपक ३११

(४) अर्जुन का नाग (अहिबन) की चपेट में आकर रोना

- ४१ पुत्र के जोगी बन जाने राजकुवर के जोगी बन जाने पर उसके पर पिता की विकलता पिता की दशा ।^३
 अलकार उदाहरण ।

(५) द्रौपदी का दुःशासन द्वारा सताया जाना—कृष्ण से रक्षा की पुकार

- ५१ विरह की तुलना दुःशासन से दमयन्ती नल की याद में रो रही थी । उसकी सखी द्वारा विरह की तुलना दुःशासन से और दमयन्ती की दशा की तुलना द्रौपदी से ।^४
 ५२ कृष्ण की कृपा द्रौपदी का चीर बढाना । कवि द्वारा कृष्ण की प्रशंसा ।^५
 अलकार ५१ में उत्प्रेक्षा, ५२ में रूपक और उल्लेख ।

(६) दुर्योधन द्वारा छल करना

- ६१ सज्जनों के माथ छल भोलाशाह के पुत्र के साथ जवाहिर के पिता के छल की तुलना दुर्योधन के छल से । भोलाशाह के मन्त्री का दण्डिकोण ।^६
 अलकार उदाहरण ।

(७) पाण्डवों द्वारा कौरवों पर विजय

- ७१ भीह की तुलना धनुष से मगावती की भीह की तुलना अर्जुन के उस धनुष से जिसमें उहानि

१ अदायन (प० सा गु) १२१।५

२ विशावली ४३५।२ ३

३ मगावती ६६।३

४ नल-दमन १६३।२ ३

५ सूरसागर १।१६५ पक्ति ३ से ५, १।१७२ प० ३ ४ १।१९० प० ३ ४ १।३०६ प० ३

६ हस-जवाहिर प० १ शब्दो० २८२

कीरवों का नाग बिया ।^१

घलकार रूप ।

(८) पांडवों का वधन में पड जाना

८ १ साजना क ऊपर मकट

रतनमन अलाउद्दीन का बढी बना ।
दुमका तुलना पाण्डवा क वधन म
पहन म ।^२

अनकार उत्प्रेक्षा ।

(९) भीम द्वारा दु शासन की भुजा उलाड सेना

९ १ साजन क ऊपर मकट

अलाउद्दीन क द्वारा रतनमन का
बनी बनाया जाना एक मत्राम
कारी घटना । उमकी तुलना
भीम द्वारा दु शासन की भुजा
उलाडन स ।^३

घलकार उत्प्रेक्षा ।

(१०) भीम का सायामगूह मे साहस करके पांडवों क प्राण बचाना

१० १ विपत्तिग्रस्त की महायता
करन म साहम प्रदशन

पदमावती का वधन गाग-बापल
स कि जम भीम न दाशागह स
पाण्डवों को बचाया वस तुम राजा
का बचाओ ।^४

घलकार उदाहरण ।

(११) भीम द्वारा कीचक का वध

११ १ युक्तिपूर्वक काय करना

सुरपानी न कुवर स वसी ही युक्ति
स घाडा पकडन का कहा वसी
युक्ति से भीम न कीचक का मारा
था ।^५

घलकार उदाहरण ।

(१२) भीम का अघिक भोजन करना

१२ १ अपनी शक्ति स बाहर काय

जा मछुभी कुवर का निगल गई

१ मगावना १७८।५

२ पदमावन ५६६।७

३ वही ५६६।७

४ वही ६११।१० ५१।५

५ जानीप ७२ १२५

थी वह उस नहीं पचा सकी ।^१

प्रलकार उपमा ।

(१३) भीम द्वारा पांडवों को कबिरा दानव के बंधन से मुक्त कराना

१३ १ बंधन से मुक्त कराने वाला
सहायक

रहरिया की बंद म पड़ा हुआ
राजकुमार मोचता है कि मर पास
कोई हनुमान जमा सबक नहीं है ।^२

प्रलकार उपमा ।

(१४) युधिष्ठिर (दुदित्तिल) का हरा जाना—कबिरा दानव का पकड़ा जाना

१४ १ अपहरण की घटना

राजकुवर राक्षस द्वारा अपहरित ।
इसकी तुलना युधिष्ठिर क अपहरण
से ।^३

प्रलकार उदाहरण ।

(१५) महाभारत के युद्ध-रूपक

१५ १ मुहागरात की वणन ।

नायिका के कणफूल, भौंटा ताम्बूल
रजित मुल्ल प्रथम समागम और
रोमावली की तुलना क्रमश युधि
ष्ठिर कण पाय दु शामन और
दुर्योधन का मारनवाले भीम एव
वृष्ण से की गई है । रतमग्राम की
तुलना महाभारत से ।^४

प्रलकार रूपक ।

पौराणिक श्रोत के आख्यानों के आलंकारिक प्रयोग

(१) अगस्त्य द्वारा समुद्र को सोखना

१ १ चमत्कारिक वृत्त

राघव चेतन को अगस्त्य बताना ।
जम अगस्त्य का वृत्त चम कारिक
वम ही राघव चेतन का भी ।^५

१ १ १ राजा का मर्यादा-युक्त होना

जसे अगस्त्य समुद्र को पीकर पचा

१ शान्दीप छन्द १८७

२ मगावती १३६।१ २

३ वही २ १।४ ५

४ शान्दीप छन्द २६४

५ पन्मावन ४४।१

१२

गए वम ही सोहिलसन सागरपनि का
हरा सवता है ।^१

कुश क बाण म बसी ही दाहकता
जस अगस्त्य के उतर म । जस अगस्त्य
ने समुद्र साखा बस कुश न रामचंद्र
की सेना को समाप्त कर दिया ।^२

अलकार ११ और १११ म रूपर ।

(१क) इद्र द्वारा परनारी को छलना (अहल्या से व्यभिचार)

१क १ नायक की तुलना छलिया
इद्र म

विक्रमाप्त्य के पूछन पर कामकन्ता
की समिया बताती है कि कोई विप्र
आकर कदना को छन गया । कहा
वह कोई दूसरा इद्र ता न था ।^३

अलकार मरुह ।

(२) उपा का अनिरुद्ध से मिलन

२१ प्रेमिका का प्रेमी स मिलन

पदमावती के स्वप्न का फन यह कि
उस उमका पति मिलेगा जस उपा को
अनिरुद्ध मिला ।^४

२११ ,

देवजानी और कुवर जानदीप का
प्रथम मिलन एसा ही मानो उपा-अनि
रुद्ध परस्पर मिले हा ।^५

अलकार २१ म उदाहरण और २११ म उत्प्रेक्षा ।

(३) उद्धव के द्वारा गोपियों को कृष्ण से मिलाना

३१ नायक स मिलाना

कृष्ण की नायक से गोपियों की कवला
वती से और उद्धव की चितराम
तुलना ।^६

अलकार रूपकानिगयाकित ।

१ चि । वनी ३६२।६७ तथा दोहा

२ रामचंद्रिका ३६।११

३ माधवात्म-कामकन्ता हृत्तिलिखित पत्र ३२

४ पदमावत १६८।७

५ जानदीप छ १६५

६ क्या कवलावती पत्र १ छ ७१

(४) कच-देवयानी का प्रेम—कामदेव का मारा जाना

४ १ कामहनन

कच और देवयानी से क्रमशः नानदीप और देवजानी का उपमित करना । उनके मिलन और रति की तुलना कामदेव के मार गान से ।^१

अलंकार रूपक ।

(५) कामदेव को शिव द्वारा जलाया जाना

५ १ गर्वोक्ति

जगपति अपनी तुलना महादेव से और अन्य राजाओं की तुलना कामदेव से करना है ।^२

५ १ १ ईश्वर की मर्मा

कामदेव का शिव द्वारा मारा जाना ।^३

अलंकार ५ १ म रूपक और ५ १ १ म उल्लेख ।

(६) कृष्ण द्वारा लात मारकर कुंजा का कूबड़ ठोक कर दिया जाना

६ १ वुराई से भी नवाई

नन इन्द्र का सन्देश लेकर दमयन्ती के पाम जाता है । इससे जहाँ उस दुख बहा यह सुख भी कि दमयन्ती का दगन उम हो गया । कुंजा को कृष्ण ने लात मारी, लेकिन उससे वह सुदरी बन गई ।^४

अलंकार उल्लास ।

(७) कृष्ण द्वारा अजत्रासियों पर धाये सक्कट को टालना

७ १ अत्यायु म पराक्रम का कृत्य

बादल की उक्ति अपनी माता से—मैं छोटा हूँ तो क्या हुआ खीर हूँ । कृष्ण का उदाहरण देना ।^५

७ १ १

१

अलंकार ७ १ और ७ १ १ म उदाहरण ।

१ शान्तीप ७ १७६

२ हौं जगपति जगत सभ जान तू सकहा जो धान न मान ।

×

×

×

मान भये हूँ ईस बराके हरि भये मष्टपात हू घाऊँ ॥

बानर भये पवन हूँ फारु पान भये फागुन हूँ बारु ॥ —कथा कनकावती पत्र ७ ७ २१

३ रामचरित-मानस १।७।४

४ नन-दमन १६२।४

५ पद्मसूक्त ६१।४।६

६ बहा ६१।४।७ २२।२

(८) कृष्ण से गोडिया का प्रतिशोध लेना

८ १ घात पाकर शत्रु को न छोड़ना कृटीचर बुधर से कहता है कि मैंन
चाहे वह कितना भी बलवान अपना बदला तुमसे ले लिया ।^१
हो

अलंकार अर्थात् रयाम (सामान्य से विशेष का साधम्य-समथन) — अप्रस्तुत
प्रशंसा मिश्रित ।

(९) कृष्ण का कसासुर की भारना

९ १ भौंहा की तलना घनुप से पदमावती की भौंहे उतनी ही टुटीनी
जितना कृष्ण का घनुप ।^२

अलंकार रूपक ।

(१०) कृष्ण द्वारा कालियनाग का दमन

१० १ वणी के सौंदर्य की हीरामन ताता पदमावती की वणी की
तुलना नाग से प्रशंसा रतनसेन से करता है ।^३

१० १ १

१० २ गवोक्ति गधवसेन अपनी तुलना कृष्ण से करता
है ।^४

१० ३ सत्रासकारी घटना अलाउद्दीन द्वारा रतनसेन को बदी बन
लना वसी ही सत्रासकारी घटना जसी
कृष्ण द्वारा कालिय नाग का नाशन की
थी ।^५

अलंकार रूपक १० १ में उपमा १० १ १ में उत्प्रेक्षा १० ३ में और
अतिशयोक्ति १० २ में ।

(११) कृष्ण का गोपियों को छोड़कर मथुरा चले जाना

११ १ यौवन की ड़वह मादकता यौवन की समुद्र से नायिका की नाका
से तथा कृष्ण का मापी से उपमा
दना ।^६

१ चिन्तावली २३३, गेहा

२ पद्मभावन १ २।४

३ वही ११५।५

४ वही ११५।६

५ वही २६५।३

६ वही ५७६।३

७ इन्द्रावती मुन्नि फागवण छंद ४।दो ४

- ११२ नायक को विरहिणी का उपालम्भ कृष्ण की तुलना उस नायक से जो अपनी विवाहिता पत्नी का छाड़कर अयत्र जा बसा हा ।^१
- ११३ नायक के चले जान पर नगर का उदास हो जाना कृष्ण के गोकुल चले जाने से इसकी तुलना ।^२
- ११३१ नायिका के विरह के दुख से सारा समार दुखी (नायक से सहानुभूति) नल का मंत्री प्रहृतसेन उसे समघाता है कि सारा ससार तुम्ह दमयती विरह म दुखी देखकर दुखी है ।^३
- अलंकार १११ म उदाहरण ११२ म रूपकातिशयोक्ति ११३ म रूपक, १०३१ म उपमा तथा उदाहरण ।

(१) कृष्ण द्वारा कस को मारना

- १०१ नायिका के कटाक्ष की तीक्ष्णता नायिका क कटाक्ष की तुलना उस धनुष बाण से जिसमे कृष्ण ने कस को मारा ।^४
- अलंकार उत्प्रेक्षा ।

(१) कृष्ण द्वारा सादीपनि के खोये पुत्र का पता लगाना

- १३१ खोय पुत्र को मिलाकर पिता को सुखी करना गय शिरोमणि राघमान के प्रति कृतज्ञ कि उसन उमके खोय पुत्र को मिलाया ।^५
- १३० परोपकारिता राजा शिरोमणि सुखदेव क प्रति कृतज्ञ । उसकी तुलना कृष्ण से करना ।^६
- अलंकार १३१ म उदाहरण और १३० म तुल्ययागिता ।

(१४) गधवों का सुन्दरी कपाशो पर मुग्ध हो जाना

- १४१ मौ दय का आकषण पदमावता की ससिया के शरीर की सुगंध पर गधवों का माहित हा जाना ।^७

अलंकार अतिशयोक्ति ।

१ इन्द्रावती मुद्रित पाण्डुपुत्र ५।६० ५

२ वही हस्तलिखित प० १६३

३ नलदमन ११६।बोहा

४ वही ६।बोहा

५ नानदीप छ २६७

६ वही छ ४१६

७ पदमावत ५६।गो० ४।१

(१५) गण्ड का घपने पलों से घमूत शाडना

१५ १ प्रिय क सत्श की पदमावती क पत्र की तुलना सजीवनी न और
मधुरता हीरामन की तुलना गण्ड स ।^१

घलकार उपमा ।

(१६) चन्द्रमा राहु का श्रुणी

१६ १ ऋणदाता और श्रुणी रतनमन पदमावती की रूप प्रशसा सुनकर
का अटूट सम्बन्ध । मोहित । उमके माथ उसका मन मग्गद्ध ।^२

घलकार उत्प्रेक्षा ।

(१७) चन्द्रमा और राहु की मयुता--राहु द्वारा चन्द्रमा को घसा जाना

१७ १ चन्द्रमा की तुलना नायिका म मना का सत्श सुनकर चन्दा का
और राहु की तुलना विरह से मुख राहु घमूत चन्द्रमा क मनान
हा गया क्योंकि उस डर हुआ कि
'नोरिक अब घर चला जाएगा ।'^३

१७ १ १ यौवन की उपमा चाँद म और पदमावती की विरह व्यथा ।^४
विरह की राहु स

१७ १ २ नागमती का विरह प्रनाप ।
चन्द्रमा = नागमती राहु = विरह ।^५

१७ १ ३ पति क आन पर विरह छूटना रतनसन क 'नोट आन पर नागमती
का दुख दूर ।^६

१७ १ ४ प्रेमो प्रमिका के प्रेम म बाधा चन्दा लोरिक की घर म छिया
दनवाल की तुलना राहु स लती है । माता पिता उस राहु
दिलाई दन हैं ।^७

१७ २ नायिका के कान की तुलना परवा द्वारा चित्रावली क नख-
राहु केतु स और मुख की शिल का घणन ।^८
तुलना चन्द्रमा स

१ पदमावत २३५।दो २३।१६

२ वही ६६।६७

३ चदायन (१० ला० गु०) ५३१।१ वही ५३३।दो० मोपाल प्रति ५५।१

४ पदमावत १७२।दोहा १८।५

५ वही ३४८।३

६ वही ४२४।६

७ चदायन (१० ला० गु०) २३०।३

८ कचन छटिया जान बखाला गह सिध देन साग सति वाजा ।

राहु जड कई सपरि नसका दुः कर ली-हे सेलि मयका ॥

- १७ २ १ ग्रीवा का सौन्द्य-वर्णन परेवा द्वारा चित्रावली के नख-शिल का चपन ।^१
- १७ ३ मुख की तुलना चंद्रमा से जीर दुःख की राहु से पद्मावती रतनसेन की बारात को देखकर बारात की तुलना राहु से करती है ।^२
- १७ ४ नायिका के वक्ष की तुलना राहु से और मुख की चंद्रमा से दमयन्ती की सखियाँ उसके त्रिखरे वेश को देखकर अनुमान करती हैं कि रात को यह चंद्रमा राहु ग्रस्त हुआ है ।^३
- १७ ५ मुख के सौन्द्य की तुलना चंद्रमा से । राहु के द्वारा उमका भयभीत होना । राधा के सौन्द्य की प्रणसा ।^४
- १७ ६ नायिका का खलायक के द्वारा ग्रस्त होना चंद्रग्रहण से उपमित जानकी राक्षस रावण से आतंकित ।^५
- १७ ७ द्वितीया के चंद्रमा को राहु द्वारा न ग्रसा जाना सीता द्वितीया का चंद्र और रावण राहु । रावण न सीता का हरा पर वह उमका भोग न कर सका ।^६
- १७ ८ समुराल-गमन राहु के तुल्य— नायिका चंद्रमा के समान इन्द्रावती समुराल जान का राहु द्वारा ग्रस्त होना मानती है ।^७

१ सीहत हाँस जराउ सर बन्न हेठ निकलक ।
सर न भयक सूर जन डुरत राहु के सक ॥

—चित्रावली छंद १६ । दोहा

२ पद्मावती २८१।३

३ ब्रियुरे केस बन्न चहुँ पासा पूग्घो बाद राहु जन प्रासा ।

—नख-दमन २२१।७

४ विद्यापति की पदावली ६६।८

५ सूरमागर ६।७६।५१६

६ रामचंद्रिका १२।१६

७ मुनि सासुर की गवन पियारा सति के ऊपर कचपच धारी ।

भयउ चपन पिय सूरज केरा राहु प्राइ धन-सति कहूँ घेरा ॥

—इन्द्रावती उत्तराष्ट्र हस्तलिखित प २५७

१७६ नायिका का मुख चन्द्रमा सभोगावस्था म सुजान अपन मुख
नायक का मुख रातु म चिपावनी का मुख ठेक बता
है ।^१

अनकार उपप्रेक्षा १७१ १७२ १७३ १, १७४ १७८ म ।
उपमा १७१ १ १७३ १७६ म ।
विरोधाभास १७१ २ म । रूपन और अप्रस्तुत प्रशमा १७८ म ।
अप्रस्तुत प्रशमा (साहस्य निप्रथना) १७६ म ।

(१८) चन्द्रमा का कलकी होना यहस्पति की पत्नी तारा के हरण क कारण

१८१ कलकी हान टूट भी यशस्वी जायसी की एक आँख काना परतु
बह यशस्वी बधि ।^२

१८२ नायिका क मुख का चन्द्रमा से पदमावती के नाम शिख का वणन
भी अधिक सुन्दर बताना हीरामन तोते द्वारा ।^३

१८२ १ मीता क मुख की प्रशमा करत
हूए चन्द्रमा का उससे हीन
बताना ।^४

अनकार १८१ म उपमा १८२ तथा १८२ १ म व्यतिरेक ।

(१९) चन्द्रमा का रोहिणी से विवाह

१९१ नायक-नायिका का विवाह मोहिनी का व्याह माहन स ।^५

१९२ नायिका की शाभा का वणन मीता राम और लक्ष्मण के बीच
एन मुशाभित मानो चन्द्रमा और
बुध क बीच राहिणी ।^६

अनकार १९१ म उत्प्रेक्षा और सन्देह भी । १९२ म उत्प्रेक्षा ।

१ अघर घट सो अमिरित बोधा जिक विघ्नत अमर भा होया ॥चौ० १॥

राहु गरल क्लानिधि बोधा सोयन पल आनन पट झाँपा ॥चौ २॥

पुनि मनमथ रनि फाय सकारी धोलि अछूत बनव विचकारी ॥चौ ६॥

रग गवान दीऊ म धरे रोम रोम तन धोनी धरे ॥चौ ७॥

—चित्रावली छंद ५३६।चौ १ और ५७

करहु ल रतन जाइ जो योई मागन बहुरि पाव जग कोई ।

आन दोष कहीं का काऊ मण्ड सोइ लाग्यो सवि राहु ॥ —वही छंद २६८।चौ ६७

रानी क्य वशि चरि जाहू मग न पाउ प्रयकहि राहू ।

जाइ जनाठ नरेम रिमाना की लहु छट पाव नहि बाना ॥ —वही छंद ५७।चौ १२

२ पत्रमावल २१।१२

वही २०।१३

४ रा च मा १।२३।टीका

५ व्याह दर्ई रति मने का विधी रोहुनी जद । —कथा मीने नी पत्र ४।चौ ११४

६ रा च मा २।१२।१४

(२०) जनमेजय (जलमेदव) द्वारा वज्रित काय करके पड़नाना

२० १ वज्रित काय करन न विपत्ति कुबर न मगावती के मना कन
पर भी वज्रित काय खाला । परत
उम्का अपहरण । बाद म
पड़नाना ।^१

घनकार उदाहरण ।

(२१) जलमघर (?) जनमेजय को कुएँ से निकालना

२१ १ विपत्ति-भस्त का उद्धार कुबर द्वारा अपहरित होन प
इश्वर स प्रायना ।^१ जलमघर को
कुएँ न निकालन का उदाहरण
दना ।

घनकार उदाहरण ।

(१२) जनमेजय (जलमेदव) द्वारा नाग-यज्ञ में सर्पों का विनाश—परीक्षित का
बहला लेना

२२ १ दुष्ट का दण्ड देना मगावती राक्षस का उदा उ कदा
दण्ड देन क परम म । कुबर क
अपहरण का उदाहरण ।

घनकार उदाहरण ।

(२३) दुष्यन् और गकुन्तला का मिलन

२३ १ नायक-नायिका मेंट दवजानी और पानशीन के मिलन
को तुनना शकुन्तला और दुष्यन्
के मिलन स ।^१

घनकार उदाहरण ।

(१४) नल और दमयन्ता का मिलन—विधोष—पुनर्मिलन

२४ १ नायक-नायिका को मिलान वाला मगावती की सखियाँ उम शत्रुघ्न
माधन करती हैं कि व उम राजकुवर स
वस ही मिना लेंगी जस हम न नन-
दमयन्ती को मिनाया ।^१

१ मगावती २३ १२

२ वही २३११२४

३ वही २४७०२४

४ जानकी छ ११४

५ मगावती १२२११०६

- २४११ नायक नायिका को मिलाने
वाला साधन रतनसेन से विछुटकर पदमावती
दु खी । उसे कौन अपने प्रिय से
मिलावे ?^१
- २४१२ दमयती हंस को आशीष दती है
नल से मिलाने के लिए ।^२
- २४२ नायक-नायिका का वियोग पदमावती के चल जान के बाद
रतनसेन दु खी । अपन वियोग की
तुलना नल और दमयती के वियोग
स करता है ।^३
- २४२१ नायक नायिका का वियोग माधवानल कामकदला से बस ही
विना होता है जैसे नल दमयती
से हुआ था ।^४
- २४२२ राजा विक्रम माधवानल को सतोष
देने हैं ।^५
- २४२३ हंस जवाहिर के वियोग में
दु खी ।^६
- २४३ नायक नायिका का पुनर्मिलन यह जानकर कि कचनपुर की रानी
मगावती है राजकुवर प्रसन्न
माने नल को दमयती मिली ।^७
- २४३१ ।
- २४३२ " कामकदला का अनुरोध विक्रम से
माधवानल से मिलाने के लिए ।^८

१ पदमावत २५५।७

२ ज्ञानदीप छंद २५७

३ पदमावत २०।छंद ६७

४ मिलन विछोह विधाता की हँस दमयती नल को दुख दी हँस ।

—माधवानल कामकदला प० २० प २५

५ राजा वहे सुनु विक्रम गुसाह दिन दस रहौ नलन की नाइ ।

—वहा प० २१४ प० १

६ हंस जवाहिर प० २१२ छंद २८३।५

७ मगावती १७१।२

८ वही दिल्ली प्रति हुस्त० छंद २०५

९ दिनदत हौ सर बधी राई विरह निस्टि सौं सेउ बझाई ।

सौ उपकार करौ जिय भाई दमयती ज्यौं नलहि मिलाई ॥

—माधवानल-कामकदला (हि० प्रे गा का० स) प० २२४ प० २५ २६

- २४ ३ ३ नायक नायिका का पुनर्मिलन माधवानल-कामकदला का पुन-
मिलन दीघ विरह के पश्चात ।^१
- २४ ३ ४ ' कामकदला विश्रम के प्रति कृतज्ञ
कि उसने माधवानल से उमे फिर
मिलाया ।^२
- २४ ३ ५ माधवानल और कामकदला फिर
मिले ।^३
- २४ ३ ६ देवजानी और ज्ञानदीप का मिलन
नल-दमयती के मिलन के
समान ।^४
- २४ ४ नायक नायिका की किलोल नायक-नायिका का जल क्रीडा
करना । सीता जल क्रीडा करते
समय वैसे ही होंसती हैं, जैसे
दमयती हस पकडते समय होंसी
थी ।^५

अलकार २४ १ २४ १ १, २४ २ २४ ३ २ २४ ३ ३, २४ ३ ४, २४ ३ ५
म उदाहरण । २४ १ २ २४ ३ २४ ३ १ म उत्प्रेक्षा ।
२४ २ १ २४ ३ ६ और २४ ४ में उपमा ।

(२५) नल और नील जिन्होंने सेतु बाधा

२५ १ नायिका और नायक को मिलान
वाला सहायक
अलकार उपमा ।

पद्मिनी गौरा-बादल की उपमा
नल और नील से देती है ।^१

(२६) नागों का पाताल लोक में वास

२६ १ पाताल म नागा का रहना एक
रहस्यमय वस्तु

जागने पर चकित मधुमालती
मनोहर से उसका परिचय पूछती
है ।^२

अलकार सन्नेह ।

१ मित्थी सोर भावत भावती राजा नल रामी दमयती ।

२ बही हस्तलेख पत्र ३६ छोटी प्रति (ना० प्र० स०)

३ बही हस्तलेख पत्र ४२ छोटी प्रति

४ ज्ञानदीप छ० १६४

५ रामचरिता ३२।३७

६ पद्मभाष्य ६११।१४ तथा १०२।२

७ मधुमालती १०१।दोहा

- २१२ एक सज्जन व्यक्ति को छलना नागमती का विरह प्रलाप । हीरामन की बलि से तुलना करना ।^१
- ३१३ सत्रासकारी घटना अलाउद्दीन द्वारा रतनसन को बंदी किया जाना वसी ही एक सत्रासकारी घटना जसी बलि को बधन में डालने वाली घटना ।^२
- ३१४ बरी का छलन करना गौरा बादल की चेतावनी रतनसन को कि अलाउद्दीन बस ही छल करेगा जस वामन विष्णु ने बलि के साथ किया ।^३
- ३१५ बनि को बांधकर पाताल में भेजना ।^४
- २१६ विष्णु द्वारा त्रिनोक का दो ड में नापना ।^५

अलंकार ३११ में उदाहरण ३१२ में रूपक ३१३ में उत्प्रेक्षा ३१४ में उपमा ३१५ और ३१६ में उल्लेख ।

(३२) विष्णु का सात पाताल बूढ़कर वेदों का उद्धार करना—

शंखासुर को मारना

- ३२१ परिश्रम साध्य काय राजा रतनसन और उसके साथी समुद्र यात्रा करने गए ।^६
- ३२२ सत्रासकारी घटना अलाउद्दीन द्वारा रतनसन को बंदी बनाना वसी ही सत्रासकारी घटना जसी विष्णु द्वारा मत्स्यावतार में शंखासुर को निगल जान की घटना थी ।^७

अलंकार ३२१ और ३२२ में उपमा ।

-
- १ पदमावत ३४१।४
 २ वही ५७६।दोहा ४७।४
 ३ वही ५५८।दोहा ४६।७
 ४ मूरसागर १०।३५१५ १०।३५४६ १०।३८३६
 ५ रा०व मा २।१ १।३४
 ६ पदमावत १४६।दोहा १७।४
 ७ वही ५७६।६

(३३) शिव के ललाट पर द्वितीया का चंद्र होना

३३ १ नायिका के सौंदर्य की प्रशंसा

शिव ने पदमावती को सिंहासन पर बठे देख द्वितीया का चंद्र को अपने ललाट पर स्थान दिया ।^१

अलंकार हतुत्प्रेक्षा ।

(३४) शिव का त्रिनेत्र होना

३४ १ नायक के सौंदर्य का वर्णन

राजकुंवर को शिवजी से बढकर योगी बताना ।^२

अलंकार व्यतिरेक ।

(३५) शुकदेव का दो घडों से अधिक कहीं नहीं ठहरना

३५ १ साधु का रमतेराम होना

अलाउद्दीन की भेजी कुटनी अपनी तुलना शुकदेव से करती है ।^३

अलंकार उपमा ।

(३६) सती का योगान्ति मे भस्म हो जाना

३६ १ विरहाग्नि का प्रभाव

रतनसन पदमावती के विरह मे इतना तप्त कि उसके शरीर की ज्वाला से सती के शरीर मे आग लग गई ।^४

अलंकार निदशना ।

(३७) समुद्र मथन—विष्णु को सहयोग से

३७ १ कठिन काय करना

समुद्री तूफान मे पदमावती से विछुडकर रतनसेन सोचता है कि कौन इस समुद्र का मथन करके पदमावती रूपी रत्न को मुझे दिलायगा ।^५

३७ २ सत्तासकारी घटना

अलाउद्दीन का धितौड के विरुद्ध प्रयाण ।^६

१ पदमावत ११२/शोहा ११/७

२ पदमावती उतरारुद्ध ह० लि० १ २२७

३ पदमावत, १ २/२

४ वही २२८/६

५ वही ४०६/१ २

६ वही ४६२/२ ३

- ३७ ३ नायिका की नाभि का सौंदर्य चित्रावती के सौंदर्य की प्रशंसा दूत परवा द्वारा ।^१
- ३७ ४ मुख के स्वेदधि ८ की प्रशंसा कृष्ण के मुख पर पमीन की बूदा की तुलना समुद्र में त मयन के पश्चात् निकले शशि से ।^२
- ३७ ५ अमल क लिए समुद्र मयन कृष्ण स्वर्ण मुकुट से सुशोभित एस लगन हैं मानो नक्षत्री और अमल का स्निग्ध प्रकाश समुद्र मयन के बाद फला हा ।^३
- ३७ ६ प्रेम की अमल से विरह की मदराचल से भरत की समुद्र में तुलना । चित्रकूट में राम भरत मित्रन का प्रसंग ।^४
- ३७ ७ समुद्र की रण भूमि के रक्त से मनाक की अमल से समुद्र में से निकले विप की विभीषण से घबतरि की जामव त म चन्द्रमा की भरत में अमल की शत्रुघ्न से शोपनाग की लक्ष्मण से तथा विष्णु की राम से तुलना ।

अलंकार उपमा और उदाहरण ३७ १ म, अत्युक्ति ३७ २ म, उत्प्रेक्षा ३७ ३ ३७ ४ ३७ ५ म, रूपक ३७ ६ ३७ ७ म ।

(३८) सुमेरु पर्वत की अडिगता और महानता

- ३८ १ नेपाल के राजा धरणीधर की प्रशंसा । उनकी महानता की तुलना सुमेरु से ।^१

अलंकार उपमा ।

- १ छोर सिधु मयनी जल कागी
नाभि और छाही अह टाड़ी । —चित्रावती ७६।१
- २ मूरमागर १ । ६२८ और ६४८
- ३ बही १ । १८२
- ४ रा० च० मा २।२ ८। दोहा
- ५ रामचरित्का ३६।६
- ६ तब हमि गिरिजा हर मुख हेरा
बहेसि सुमेरु सत ए केरा । —चित्रावती ४४।७

(३६) सदामा का द्वारिकापुरी से लौटकर अपनी मंडया को न पहचानना—
श्रीकृष्ण द्वारा उनका वारिद्रघ दूर करना

३६ १ भ्रमित होना

दव अपनी मंडी म लौटकर उने नही पहचान पाता । वह बटली हुई । सुदामा की स्थिति से तुलना ।^१

३६ २ कृपा करना

सुदामा का आते देखकर कृष्ण द्वारा उनके चरण पकडना और कृपाकर उनकी दरिद्रता दूर करना ।^२

अलंकार उदाहरण ३६ १ म, उल्लेख ३६ २ म ।

(४०) हरिश्चन्द्र की सत्यवादिता

४० १ सत्यवादिता की प्रशंसा

हीरामन तोते द्वारा रतनसेन की प्रशंसा ।^३

४० १ १ ' '

शाहे बक्त मलीम की प्रशंसा । उसे सत्य हरिश्चन्द्र जसा बताना ।^४

४० १ २ " ' ' "

' " ।^५

४० १ ३ ' '

शिव और पावती का तपस्वी-वेश मे आकर राजा धरणीधर को हरिश्चन्द्र क समान बताना ।^६
वरन उससे भी बढ़कर ।

अलंकार उपमा ४० १ ४० १ १ ४० १ २ म । व्यतिरेक ४० १ ३ म ।

(४१) हिरण्यकश्यपु का वध—नसिहायतार मे विष्णु द्वारा—प्रह्लाद का उद्धार

४१ १ युक्तिपूर्वक काय करना

सुरगानी चानदीप से जादुई घोडे का युक्तिपूर्वक पकडने के लिए कहती है । उस प्रसंग म हिरण्यकश्यपु के वध का उल्लेख ।^७

१ चित्रावली १ ६।६ ७ और दोहा १ ६

२ मूरसावर १।२ २

३ पदमावत १६ ११

४ मघपालनी ११।४

५ बही १ १४

६ चित्रावली ४२।१ २

७ ज्ञानदीप छन्द १२४

हिन्दी सूफी प्रेमार्थानक काव्यो मे आर्थानक दृष्टान्त

हिन्दी के सूफी प्रेमार्थानक काव्यो मे पौराणिक और निजघरी आर्थानको तथा पात्रो का दृष्टान्त के रूप मे प्रचुर प्रयोग हुआ है। अलकार शास्त्र मे दृष्टान्त नामक एक अलकार भी है जिकरी परिभाषा के अन्तगत उपमेय उरमान और माघा रण घम का विम्ब प्रतिविम्ब भाव होना कहा गया है।^१ इसमे उपमेय वाक्य को कहकर उपमान-वाक्य द्वारा उसका निश्चय कराया जाता है।^२ दोनो वाक्य या तो सामान्य होत हैं या दोनो ही विशेष^३ और दोनो मे प्रकट रूप से साम्य होना है। किन्तु हमारा प्रयोजन यहाँ अलकार शास्त्र मे विवक्षित इस अलकार के व्यवहार का देखना न होकर उन दृष्टान्त कथना पर विचार करना है जिनका प्रयोग बोलचाल मे लोग अपने कथन के समर्थन मे प्राय किया करत हैं। सामान्य वाणी-व्यवहार मे जिस प्रकार जनता लोकोक्तियो और मुहावरो का प्रयोग अपनी अभिव्यक्ति का अधिक अव्यवजक बनाने के लिए करती है उसी प्रकार आर्थानको एव पात्रो का दृष्टान्त रूप मे प्रस्तुत करके वह अपने कथ्य को अधिक प्रभावोत्पादक प्रामाणिक और सटीक बनान मे सचेष्ट रहती है। दृष्टान्त हमारे सामाजिक और साम्कृतिक जीवन के विविष्ट प्रसंगो एव परिस्थितियो के रूप प्रतीक से बन जाते हैं और युग युग तक उनका प्रयोग एक पीढी से दूसरी पीढी को दाय मे प्राप्त हाता रहता है।

हमारे नित्य प्रति के जीवन मे सद-असद प्रवृत्तियो और घटनाएँ दृष्टान्तो का निर्माण करती रहती हैं। छोटे लागा के जीवन के वक्त भी उनके सीमित समाज मे उन्हा-हृत होते रहते हैं, परन्तु जिन वक्तो का प्रभाव लोक मानमे पर विस्तृत और चिरस्थायी होता है उन वक्तो का किमी जास्त चरित्र से सम्बन्धित होना आवश्यक है। आप्त वाक्य प्रमाण की भांति ही आप्त चरित्र भी जन-मानमे मे सवेदना की अनुकूल नह रिझा उत्पन्न करते रहत हैं। माघारणतया जनता अपने कथन को प्रामाणिक बनाता

१ स० घनकार-मजरी सेठ कहेयानाल पोद्दार प० १२१

२ दृष्टान्त निश्चयोल स दृष्टान्त। —काव्य प्रकाश
काव्यांग-कौमुदा आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र मुद्रिका

के लिए समानधर्मा जीवन यापारा की आर उमुख हाती है। कभी उसकी दृष्टि सुदूर अतीत पर पडती है कभी निकट अतीत पर और कभी वर्तमान पर। इस प्रकार दृष्टांत चयन के लिए लोक मुख्यत तान छोतो का आपक्षी होता है—

- (१) पौराणिक और निजधरी आख्यान तथा पात्र
- (२) ऐतिहासिक वक्त तथा पात्र
- (३) नित्य प्रति क जीवन या वर्तमान का घटनाए तथा व्यक्ति।

वर्तमान जीवन की कोई प्रमुख घटना किस प्रकार दृष्टांत का रूप ले लती है इसका एक उदाहरण महात्मा गांधी की हत्या है। गांधीजी की हत्या में समाचार न ममस्त ससार की चेतना को स्त घ कर दिया था। अग्रजी के प्रसिद्ध नाट्यकार जाज बनड शा न अपनी प्रतिप्रिया व्यक्त करत दूए कहा था— बहुत भला हुना भी कितना भयानक है। वस्तुत मह उही की प्रतिप्रिया न थी जाज भी और अनवान युगा म भी जब किसी को यह कहना होगा कि भल स भल आदमी के भी शत्रु होत हैं तब गांधीजी की हत्या दृष्टांत क रूप म उसकी प्रतिप्रिया का साक्ष्य भरती रहगी। जनना अपन निकट अतीत अर्थात इतिहास का भी दृष्टाता क लिए टटावता है यद्यपि उसक चरित्रा म उस बह माहकता और रहस्यमयता की झिलमिलाहट नही मिलती जो सुदूर अतीत म दृष्टि निक्षेप करन स उन प्राप्त हानी है। फिर भी ऐतिहासिक वक्त तथा पात्र उमकी भावना को उद्बलित किय बिना नहा रहत। राणा प्रताप और शिवाजी की वीरता प्रत्येक हिंदू म ओजस्विता का भाव उत्पन्न करन म सम्य होती है। स्वतंत्रता के लिए प्रताप का कष्ट सन्न हमार स्वतंत्रता सधाम क दिना म एक भारतीय के लिए कितना प्रेरणाप्रद दृष्टांत और आदेश बन सका था। ता भी सामान्य लोक जीवन म पौराणिक आख्यानों एव पात्रों का प्रभाव सविज्ञेय होना है इसका कारण वश-परम्परा स प्राप्त सांस्कृतिक ढांच और धार्मिक श्रद्धा का लोक मन म बद्धमूल होना है।

दृष्टांत के निमित्त पौराणिक स्रोत की आर उमुख हान पर जन मानस का तीव्र प्रकार क जीवन वक्त आकर्षित करत है—

- (१) सदा या आदेश पात्रा क जीवन और उनस सम्बन्धित आख्यान जिस बलि और कर्ण की दानशीलता हरिश्चन्द्र और युधिष्ठिर की सत्यनादिता तथा उन आदेशों की रक्षा के लिए उनक द्वारा सह्य गयी विपत्तियाँ।
- (२) मन्त्र अमृत पात्रों के जीवन और काय जिस हिरण्यकश्यप (हरनाकम) दुर्योधन और कर्म आदि द्वारा मज्जना एव भगवद भक्तों पर ढाय गय अत्याचार।
- (३) मन्त्र और आदेश यकितया की सहज मानवीय दुबलताए और उनसे स्वलन की घटनाएँ।

जो महान होता है उसके जीवन की छोटी से छोटी भूल भी जनता की दष्टि म बड़ी से बड़ी भूल और अक्षम्य अपराध बन जाती है। फिर लोक मानस अपनी रुचियों और अरुचियों को बड़े तीव्रपन से व्यक्त करन म नहीं चूकता। चूकता ही नहीं उसे वह महान की महानता का अमर बना दता है वसे ही महान क पतन को भी। इ द्र की पूजनीयता उनक महस्रभग या सहस्राक्ष हून क कलक के समान ही अमरत्प प्राप्त कर गयी है। नारद कितन ही बड़े ऋषि बयो न हो ब्रह्मा के मानस पुत्र ही हा भव, पर त्रिया के फेर म पडकर उह भी निदित होना पडा और एस ही सरस्वती पर ब्रह्मा की कामासक्ति ने उनके सारे पुराण पुरुषत्व का लोक मानस के समथ कलुपित कर डाला। विद्वामिन और मनका पाराशर और सत्यवती क आरखान काम शक्ति क सम्मुख तप शक्ति के पराजय और कृच्छ साधन के थोथेपन का उदघाप करते है। पौराणिक पात्रो के जहाँ प्रेम वीरता साहन, औग्य परोक्कार और पातिव्रत सम्ब धी आख्यानो को जन मानस दष्टात क लिए चुनता है वहा उनके दम्भ अहकार इर्ष्या और क्लीवता तथा व्यभिचार को भी।

सूफी कवि लोक जीवन म घनिष्ठ रूप स सम्बधित थ। अपने प्रेमाख्यानक काव्यो म उहोन जान बूझकर एस पौराणिक तथा निजधरी आख्याना को चुना जिनको लोक भावना अपन म पूणत आत्मसात कर चुकी थी और जो काला तर म लाकोकित या लोकानुश्रुति का रूप ले चुके थ। यहा केवन पौराणिक आख्यानो के दार्ष्टान्तिक प्रयोगो पर ही विचार किया जाएगा।

यह दिखाने के लिए कि मध्ययुग म सफियो के अतिरिक्त अय कवि भी उन आख्यानक दष्टातो का अपने काव्यो म प्रयोग करने थे हमन सूरसागर राम चरित मानस और रामचन्द्रिका का उपयोग तुलनात्मक अध्ययन के लिए किया है इनम पौराणिक आख्यानो के प्रति मध्ययुग की लोकरुचि पर भी प्रकाश पडेगा। नीचे आख्याना का उल्लेख अकारादि श्रम स किया जा रहा है

(१) अजुन द्वारा परछाइ देख कर मत्स्य वेध करना और द्रौपदी को ब्याहता

१ १ प्रेमिका को प्राप्त करने के लिए पुरुषाय। पदमावनी रतनसेन से अजुन द्वारा मत्स्य वेध करन का दष्टात देती ह।^१

१ २ शील सूचक। अलाउद्दीन कहता है मुझे उपर जाँख उठा कर नहीं देखना चाहिए। अजुन न भी नीची दष्टि किय हुए ही मत्स्य वेध किया था।^२

(२) अजुन का विन्व भ्रमण करना

२ १ योगी सिद्धनाथ द्वारा अपनी आयु के साधक क रूप म इस घटने का उल्लेख करना।^३

१ पद्मावत २३४।सोहा २३।१०

२ बही ५६१।७

३ शादीप छ २६२

(३) इन्द्र द्वारा परनारी सृष्ट्या का सतीत्य नष्ट करना—

उसके कारण दुःख उठाना—सहस्रभग होना

३ १ परनारी गमन पाप । एक पापी का ऋणित होना ।^१

३ २ गौतम द्वारा इन्द्र को शाप । प्रसंग राम विवाह ।^२

(४) इन्द्र द्वारा त्रिगुण से सुमेध प्रावि पशुओं के पक्ष काटना—पक्ष षट्ने पर भी सुमेध का प्राणागतक ऊँचा उठना

४ १ जायमी की एक आँसु पराव । एक कलक की सुमेध का दुष्टान्त एक उचक सिद्ध करना ।^३

(५) उषा के लिए अनिरुद्ध का युद्ध करना

५ १ पद्मावती का रतनमन को पत्र । यह बताना कि किम किमन प्रम के लिए क्या-क्या किया । उषा अनिरुद्ध का दष्टान्त ।^४

(६) कस का नाग तपस्वी के द्वारा

६ १ तमन्विषा को मताना ठीक नहीं । यागीनाथ महत महीपति राम का कस का दष्टान्त ।^५

(७) कण का कवच इन्द्र द्वारा छत्र से माँगा जाना

७ १ छत्रपूण काय से एक को दुःख दूमरे का मुख । हीरामन रतनसन का न गया इमम नागमती दुःखी पद्मावती मुखा ।^६

(८) कण का कौरवा द्वारा पाला जाना

८ १ पाननवान का नाम नहा अमली माना पिता का हा नाम । पाननीप के पालक रायमान द्वारा कण का दष्टान्त देना ।^७

१ पर वाच जेइ चित्र साका प्रमी जगति भुवनि तेन पावा ।
रामचरित जो रावन हरी एही जूगति विचरि बोहि परी ॥
बारि जो नारि पराई लीहा बहु बिषय कइगी गति कीन्हा ।
गौतम की बनिता पतिव्रता प्राण टरन कोरि पति करता ।
कौंसी सांमति मइ बोन पाँही सहस जोनि लपरी तन माँही ॥

—ज्ञानपीठ छ ४४४

२ रा० ख० मा वास० ३१७।६

३ पद्मावत २१।६

४ कही २३३।७

५ हनु श्यामिंद प १५६। छ ४२।६

६ पद्मावत ३४१। ५

७ ज्ञानपीठ छ २६७

(६) कण (वसुदेव सत) का नद द्वारा पालित होना

६१ प्रसंग उपयुक्त । कण को नद ने पाला, फिर भी व वसुदेव पुत्र ही कहलाय । दूसरे का बंटा अपना नहीं होता ।^१

(१०) कण का गोपियो को छोड़ जाना

१०१ जिस पर वश नहीं चलता उस छोड़ना ही पडता है । कण म गोपियो से जुम्ने की शक्ति न रही ता उन्हें छोड़ गये ।^२

१०२ पुरुष स्त्री के यौवन का साथी—यौवन ढलत ही टाड भागता है ।^३

(११) कण का अक्रूर द्वारा मयुरा ले जाया जाना

१११ छ्न स प्रियतम को दूर ल जाना । नायिका को दु ख । नागमती का हीरामन को कोसना । उपर्युक्त घटना का दष्टात ।^४

(१२) कण का कस को मारना

१२१ अत्याचार बढने पर पापी को दण्ड मिलना । दसोधा भाट द्वारा गधवसेन को कस-वध का दष्टात देना ।^५

१२२ अलाउद्दीन बनवान है तो क्या रतनसन उसे अपनी पत्नी सौंप दे ? दष्टात कण न कस को मारा तो इससे क्या किसी गोप न अपनी गोपी कण को द दी ?^६

(१३) चन्द्रमा का राहु द्वारा ग्रसा जाना

१३१ नागमती द्वारा हीरामन के सामने अपने रूप की प्रशसा । दष्टात चन्द्रमा पूर्णिमा को ही राहु ग्रस्त ।^७

१३२ राजा शिरोमणि का कथन अपनी रानियो से कि घर म सम्मान से रहो । बाहर निकलना ठीक नहीं । चन्द्र क मुख पर राहु की कुदृष्टि पड जाती है ।^८

१३३ नारी का राक्षस के हाथो पडना । चन्द्रमा और राहु का दष्टात ।^९

१ पानदीप छ २६७

२ पदभावत १२२।१२

३ वही ५६३।दोहा ५६।१

४ वही ३५१। ७

५ वही २६३।१३

६ वही ५८६।६

७ वही ८५।५

८ रहस्य भवन मपने होइ भारी मामिति मानि जो कत पियारी ।

भयवा सूर कवल कुम्हिलाने चद्र बदन मय राहु समाने ॥ —पानदीप छ ३७

९ सूरसागर ६।७६।५१६

२५० हिन्दी मूल्की काव्य म पीराणिक आख्यान

(१४) घट्टमा म कलक होना

१४१ गिधन रू का यत्न कुबरा । भाग्य का खेत । मुन्तर घट्टमा म भी तो कलक ।^१

(१५) दण्डरथ का घोष म अयणकुमार को मारना—हत्या का पाप—पापित होना

१५१ रानी हाग का परवा म कथन कि राजा क पाम जाकर मुजान का परिचय दो । वहीं व्यथ हत्या का नाछन न तग । दष्टांत दण्डरथ को शवण की हत्या से तगनवाला नाछन ।^२

(१६) द्रौपदी का चीर कृष्ण द्वारा यढ़ाया जाना

१६१ मुरपानी का विरह दु म तगर उमकी स्वामिनी दवजानी द्रविन । कृष्ण भी ता दौरदा क सकट का त्वकर दु सा हूए । महायना करना ।^३

१६२ नगरान द्वारा भवन पर कृपा । दष्टांत द्रौपदी का चीर बनाना ।^४

(१७) नल का दमयंती क विरह म सतप्त होना

१७१ विरह की प्रणमा । प्रमा द्वारा मनाहर की प्रणमा कि उमक मन म विरह जागा । उपयुक्त दष्टान ।^५

७२ विरही का दु म विरहा ही जान मक्ता है । माधवानन का कथन । नन का दष्टान देकर कटना कि जिम राजा नन न दमयंती का विदोग मत्ता वत् तो अब इस पृथ्वी पर है ननी अब भला किम मर माथ महानुभूति होगी ?^६

(१८) नल पर विपत्ति यत्ना—जूए मे राज्य हारना—यत्नी से वियोग आदि

१८१ राजकुवर रविमति क नगर म भागकर जोगी वन म भटकना रत्ता । नन पर भा एसी हा विपत्ति पड़ी थी ।^७

(१९) नारद का प्रिया क फर मे पडकर यग लोना (नारद मोह)

१९१ कामाख्या र्वा का रू घरकर शब्दपरी का र जा महीपत म कथन कि अपनी लडकी का विश्वास मत करो । नारी के फर म पडकर बड़े बड़ निश्चित हूए । उपयुक्त दष्टांत बना ।^८

१ चित्ररेखा प० ८६।वी० ५

२ बिजायली ५ ७।१ ३

३ पानगीव छ० ७७

४ मूरमागर १।५ १।१६।३ ४ १।१८।६ १।२ १४ १।२१।३ ४ १।२२ ३७ घोर १ ६ घोर ११२

५ मघमालती (शि गा मि०) प ७२ छ० २।५

६ माधवानन-नामकत्ता (हि प्र गा० का स०) प० २०८ पंक्ति १६

७ मगावनी १३२।४ ५

८ हम जवाहिर प० १५६ छ० ४३।८।७ घोर दोहा

- १६ २ माया म पडकर बुद्धि खोने के सम्भ म उपयुक्त दष्टात कथन ।^१
 १६ ३ माया म फसकर परेशान होना ।^२

(२०) प्रह्लाद को आग मे जलाना—उसका न जलना

- २० १ आयु रहते कोई न मार सकता है, न मर सकता है । स्वजानी ज्ञानदीप के विरह मे सतप्त । सुरजानी का उमसे कथन ।^३
 २० २ प्रह्लाद भगवान की भक्ति के कारण हिरण्यकश्यपु क अत्याचार से बचा । राम नाम का प्रभाव वणन ।^४

(२१) पाण्डवों का कबिरा दानव द्वारा हरा जाना — भीम द्वारा उन्हें बचाना

- २१ १ विपत्ति मे सहायक का अभाव खटकना । राजकुंवर चिताग्रस्त ।^५

(२२) पाण्डवों का घपना कम फल भोगना

- २२ १ कितना भी दान पुण्य करो यश देना भगवान क हाथ ।^६ राजा कामसन चितित । पाण्डवों का दष्टात ।

(२२) पाण्डवों की विजय सिद्ध (योगी) की सहायता से होना

- २३ १ महीपति को योगीनाथ महत्त द्वारा समझाना कि योगियो (हंस जीर उसके साथियो) को मत सता । योगियो म अद्भुत शक्ति ।^७ उपयुक्त दष्टात ।

(२४) बलि का सागर मयन करना

- २४ १ ससार म आन वाले की मृत्यु निश्चित चाहे वह कितना भी प्रतापी । दष्टान—सागर मयन करन वाला बलि भी मर गया ।^८

(२५) बलि का घचन हार जाना—सबस्व देना—पाताल मे घदी होना

- २५ १ यश भी कमफलाधीन । कामसन को दान पुण्य करने पर भी यश नहीं ।^९
 २५ २ भगवान द्वारा देवताओं की रक्षा के लिए बलि को छलना । भक्तों के लिए भगवान क्या नहीं करते ?^{१०}

१ रा० च मा० उत्तर० दो० ३६ चौ ६

२ सूरसागर १।४३।३

३ ज्ञानदीप छंद २०५

४ रा० च मा० बाल० २६।१२ २७।मेहा

५ मयावती (दिल्ली प्रति) छ० १७१ शी० १

६ माधवानल-कामकंदना (हि० प्र० गा का० सग्रह) प० १२६ पक्ति १३ १४

७ हंस-जवाहिर प १५७ छंद ४३१।५

८ मयावती ३७६।५

९ माधवानल कामकंदना प० १६६।१० १३ १४

१० सूरसागर १।६।४ १।१०।४।१० १ १३१६५।५ १०।३०२७।५

२५४ हिन्दी सूफी वाक्य में पौराणिक ज्ञान

२५ ३ धर्म के लिए सफट मन्ना । रतिन्व, बलि आदि का दृष्टात ।^१

(२६) बालि द्वारा परस्त्री हरण—उसके कारण विनाश

२६ १ पर स्त्री में अनुरक्ति रखनेवाले की दुदशा । बालि का दृष्टात ।^२

२६ २ राम द्वारा बालि का वध परस्त्री हरण के कारण ।^३

(२७) भगीरथ द्वारा गंगा को पृथ्वी पर लाना

७ १ पुत्र में ही मारी आशाएँ पूण—भास्त्रि का कथन नन ग । दृष्टात
भगीरथ द्वारा पितरो को तारने के लिए गंगा को लाना ।^४

(२८) भीम का कुम्भकण की खोज में गिरना

२८ १ गव करना ठीक नहीं । बड़ बड़ भी गव से पतित हुए । भाट दसोपा
का कथन गधवसेन से । उपयुक्त दृष्टात देना ।^५

(२९) रामचन्द्र का मनुष्य रूप धारणकर बृष्ट सहना

२९ १ शर्म निवारण के पुत्र का कथन पिता से—मनुष्य दहधारी के लिए दुःख
सहना अनिवाय । उपयुक्त दृष्टात ।^६

(३०) रामचन्द्र का कमफल के कारण वन जाना

३० १ यश भी कमफलाधान । रामचन्द्र कमफल के कारण वन गये । काम
सेन का सोचना ।^७

(३१) राम का सीता को वन ले जाना फलस्वरूप सीता का हरण

३१ १ नागमती का रतनसेन को जान से रोकना । रतनसेन का कथन कि
स्त्री की बुद्धि से चलना ठीक नहीं । उपयुक्त दृष्टात देना ।^८

३१ २ मुजान का कौलावती से कथन कि स्त्री का घर में रहना ही ठीक
अथवा दुःख उठाना पड़ता है । उपयुक्त दृष्टात देना ।^९

१ रा. च. मा. घयोव्या ३ । ७ घोर १५ । ३ ५

२ नागरीय छं ४४४

३ रा. च. मा. बाल. २९ (क) । ६ ८

४ नल मन १० । ८ ९

५ पदमावत २६५ । दोहा २५ । ९

६ रामचं जो दुःख सह्यो सो जायो सब कोइ ।

मानव देह धर सभ दुःख से ब्याकुल होइ ॥

—युमुक्-जलेषा (हि० प्रे० गा० का० सं०) पृ ४१२ पं १९२

७ माधवानल कामकदला ५ १९६ पं १३ १५

८ पदमावत १३२ । १ २

९ चित्रावती ४७ । २ । ५

३१३ हमराज का कथन अपनी म्त्री से । साथ ले चलना उचित नहीं । राम-सीता का दृष्टात ।^१

(२२) राम का पत्नी वियोग में दु खी होना (सीता के लिए विलाप करना)

३२१ माघवानल कामकदला के लिए दु खी । दृष्टात राम, नल और भक्त-हरि का ।^२

(२३) राम द्वारा सीता के उद्धार के लिए समुद्र पर सेतु बांधना

३३१ राजकुवर का सोचना कि मैं मृगावती के लिए कुछ भी न कर सका, जब कि राम ने सीता के लिए समुद्र पर पुल बाध डाला ।^३

(३४) राम घोर परी की क्या

३४१ शब्दपरी का समझाना जवाहिर को । सब भगवान की माया । कहाँ के राम और कहाँ की परी, दोनों का मिलन हुआ ।^४

(३५) रावण का साधु वेग में सीता को हरना

३५१ मुद्रागगत म पद्मावती का कटाक्ष जोगी वेशधारी रतनसेन पर । पद्मावती का कथन कि इसी वेश में रावण ने सीता को हरा ।^५

३५२ योगिया का क्या विश्वास ? दवजानी का कथन मुरचानी से ।^६

(३६) रावण को अहंकार हो जाना—घ्रहंकार से उसका नाग

३६१ रावण अहंकारी था और गधवसेन भी । जैसे उसका नाश हुआ वैसे ही नसका भी होगा ।^७

(३७) रावण का नाग एक तपस्वी (राम) के द्वारा

३७१ भाट दमोधा की चैतावनी गधवसेन से कि जागियो को मत छोड़ो । राम भी एक जोगी था जिसके शाप से लका जल गई ।^८

३७२ हम के सामने न मौलाशाह के दूत से कहा कि वह तपस्विद्या की शक्ति नहीं जानता । दृष्टात रावण की सेना को एक तपस्वी राम ने मारा ।^९

१ इन्द्रावती हस्तलिखित उत्तरार्द्ध पृ० १००

२ माघवानल-कामकदला हस्तलिखित प्रति पत्र २४

३ मृगावती ६६।२

४ हंस-जवाहिर पृ० ६६ २०२।५ ६

५ पद्मावत ३०६।४ २

६ रावण जोगी जो भए जाइ हरेनि पर भाय ।

ध्यान जउर द्विय मोइ घरे तीरे हाथ गहि लीय ॥ —जातपत्र, छंद ३३७

७ पद्मावत २६६।१

८ वहा २६६।१-७

९ हम जवाहिर पृ० २२३।६२ ।२ ३

२७ २ नगम्बी राम के शपथ में उजा का भाग होना ।^१

(८) सम्मन को गणित बाण सम्मन — हनुमान का मजौधनी छटी साका
उन्हें जिलाना

२८ १ पद्मावती का मीन्य वगन मुनकर रतनसन मूच्छिन । इकिन बाण
वगन म तमयी नुलना ।^२

(२९) विभीषण द्वारा सका का गेद राम को दिया जाना

३९ १ मुरग नी न पावती म प्रायना की कि कुवर का पान हू ला । उमम
प्रेम नर दा । कवि-कथन ।^३

(४०) श्रवणकुमार की मात पिन भक्ति

४० १ भाटिन का कथन नल म पुत्र विना माना रिना की कौन सवा कर ?
श्रवण का दष्टात ।

(४१) गिव का पावती के कहने से कलाम छोड़ देना

४१ १ स्थिया के कहन के अनुमार चलना ठीक नहीं । पावती न गिव म
कलाम छुटा दिया । नारक का यग मिटा । शम्परी का कथन मनीपनि
स ।^४

(४२) सती का सीता के वेग में राम को छलने की चेष्टा—

गिव द्वारा सती का त्याग

४२ १ इन-न कर रहनेवाली म्त्री ठीक नहीं । लक्ष्मी का रतनसेन की पराम्ना
लना ।^५

(४३) सहदेव का पण्डित हाते हुए भी चूक जाना और राज्य खोना

४३ १ पंडिता न जान-बूझकर विप्ररथा के लिए मिघनरव के कुड्ड बर का
वर चुना । महत्त्व का दष्टात ।^६

(४४) सीता (पृथ्वी मुता) का जनक द्वारा पाला जाना

४४ १ पालिन पृथ्वी या पुत्र म किमी का नाम नहीं चलता । दष्टात सीता
का । जनक न उम पाला पर कहलाई वह पृथ्वी की मुता ।^७

१ हस-जवाहिर २० १२६।४२६।६

२ पद्मावत १२ । १

३ पालनीय छ १ ६

४ मन-दमन ६ १६ ६

५ हस-जवाहिर २० १२६।४ ८ दोहा

६ पद्मावत ४१२।६

७ विजयेश १० ८६।ची ८-७

८ पालनीय छ २६७

- (४५) सीता का अपने प्रियतम के साथ वन जाना—वहा घर का-सा सुख मानना
 ४५ १ स्त्री के लिए पति के साथ रहने म ही सुख । इन्द्रावती की सखिया
 द्वारा उमको ममथाना । सीता का दृष्टात देना ।^१
- (४६) सीता द्वारा जोगी बेगधारी रावण को भिक्षा देना
 ४६ १ मुहागरात म पदमावती से रतनसेन की प्रेम-याचना । वह जोगी, अत
 भिक्षा का अधिकारी ।^२
- (४७) सीता को वियोग दु ख मे राम नाम का ही सहारा
 ४७ १ सीता की मूर्ति का राजकुवर की प्रथम पत्नी सुन्दरी से कथन ।
 वियोग दु ख म नारी को भगवान का स्मरण करना सहायक । सीता
 द्वारा अपना ही उदाहरण देना ।^३
- (४८) सीता का हरण करने पर रावण का दु ख उठाना
 ४८ १ परनारी पर कुदृष्टि डालना पाप । इससे दु ख उठाना पडता है । कवि
 कथन । रावण का दृष्टात ।^४
- (४९) सदाना का दान्द्रघ कृष्ण द्वारा दूर किया जाना
 ४९ १ देवजानी की महानुभूति सुरनानी की विरह व्यथा के प्रति । वह स्वामी
 धर्य जा भक्त के दु ख स दु खी । सुदाना-कृष्ण का दृष्टात ।^५
 ४९ २ भगवान द्वारा अपन भक्त के कष्ट को दूर करना । कवि कथन ।^६
- (५०) सोलह सहस्र गोपिया का कृष्ण मे अनुरक्त होना
 ५० १ देवजानी सुरनानी को अपन पति प्रेम का भागीदार बनाती है । कई
 स्त्रियाँ एक पुरुष स प्रेम कर सकती हैं । दृष्टात कृष्ण और गोपिया
 का ।^७
- (५१) हनुमान का सीता के कारण लका को जला डालना—हनुमान की सहायता
 से राम सीता का पुनर्मिलन
 ५१ १ लका को साप न डँस लिया । लारिक का विलाप । विपत्ति म उसका

१ इन्द्रावती (पूर्वाद्ध) पाण्डुपुत्र २७।१२ । वही व्याह खण्ड २८।१२

२ पदमावत ३ ७।७

३ इन्द्रावती उत्तराद्ध हस्त ५ २७५

४ मानस्य छ ४४४

५ वही छ ७७

६ मूरमागर १।२।६ १ १।७।५ ६ १।१८।५ १।१९।५ १।२०।६ १।२६।३ १।३१।६ १।३५।५
 १।१३ १३ १।१३।२ ५ १।१६।५ ६

७ मानस्य छ १०३

- काई मनायक नहीं। अर्थात् राम का अपनी विपत्ति म हनुमान को मनायता मिली जिनम गाना म उनका मिला हा गया।^१
- ५१० राजकुंवर मनायता का पान क लिए रिजस। मका छोट पनका मर जात की प्रगत।^२
- ५११ मन्थिया द्वारा गुना म य राजकुंवर मन म मापना है। त कान उलका हनुमान जगा काई मनायक होता।^३
- ५१८ ममुनी मूनात म पन्माया। से बिपुला पर रोजमन एकाका बटा मोच रहा है कि उम पचायी म कौन मिलाव ? दृष्टान हनुमान का।^४
- ५१५ मीमी मितनाय अपनी आय और कविन क अर्थात्-अरुण हनुमान द्वारा मका जगात की बात कहना है।^५

(५) हरिश्चंद्र का नीच के घर जल भरना (घाण्डाल की सेवा)

- ५०१ राजा काणमन मिति कि दाग पुण्ड क बाद मी उमका मश क्या नहीं मिला। यो भी कमफनाथी। भाग्यवश हरिश्चंद्र न भाग की सेवा स्वाकार की।^६
- ५२२ मयम क पर म मका व्यक्ति का भी दुग उठाना।^७
- ५२३ विनामित्र मशय की ममान हैं कि हरिश्चंद्र न सत्य क लिए राठ म मिया क्या तुम पुन भी नहीं मकन ?^८
- ५२४ मयण का मत्री महामर रावण का मताता है कि कितन प्रकार क राजा हात है। हरिश्चंद्र का दृष्टात दगा है जिहान राय तक म दिया।^९

(५३) हिरण्यकश्यपु का लासल क कारण पकडा जाना

- ५३१ कवलावती बशीमह म पडे मुजान क पहरारा का घूस दता है। उसका विरवाग कि मव कौई लासल के वशीभूत। दृष्टात हिरण्यकश्यपु का लासल क कारण पकडा जाना।^१

१ कन्यायन (प०मा ग०) ३२१।१५ (वि प्र) ३७।५ सोरकहा (माताप्रसाद गुप्त) ४६।४५
 २ मगावती ६६।३
 ३ कही १३७।दोहा
 ४ पन्मावत ४०५।६-७
 ५ जाननाय छ २६२
 ६ माशवानल-नामकला (हि० प्र० गा० का० स०) प० १६६। पवित्र १३ १४
 ७ मूरमावत १।२६५।६
 ८ रामचन्द्रिका २।२१
 ९ कही १७।२१
 १० विनावती ३४५।६ ७ (देखिए पद्माद-कथा प्रस्तुत प्रबंध का प ६)

हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो मे पौराणिक आख्यानों का उल्लेखात्मक प्रयोग

हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो मे पौराणिक आख्यानों के प्रतीकात्मक, आलंकारिक एव दार्ष्टान्तिक प्रयोगों का अध्ययन करते समय बहुत से ऐसे प्रसंग मिले जिनका इनमें से किसी भी श्रेणी में नहीं रखा जा सकता था और जो मात्र उल्लेख के रूप में प्रयोग किये गए हैं। उनको समझीत कर देना भी आवश्यक जान पडा।

अथ मध्ययुगीन आख्यानक काव्या में भी ऐसे उल्लेखात्मक प्रयोगों की परंपरा मिलती है। नीचे इस प्रकार के कुछ ऐसे आख्यानों की एक सप्तम-सूची दी जा रही है जो किसी न किसी रूप में सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो में भी संकेतित हुए हैं।

विद्यापति की पदावली (विद्यापति)

चंद्रमा का राहु द्वारा ग्रसा जाना ।^१

शिव की कामदेव से शत्रुता ।^२

सूरसागर (सूरदास)

कालिय नाग को नाथना—नाग-पत्नियों की प्राथना पर उस छोड़ देना ।^३

कृष्ण द्वारा साक्षीपति गुरु के मतक पुत्र को जिलाना—उसे यमपुर से लाकर गुरु दक्षिणा चुकाना ।^४

समुद्र मंथन प्रक्रिया में सुमेरु, शेषनाग, कच्छप आदि का उपयोग ।^५

१ विद्यापति की पदावली स० रामबल बनौपुरी प्रकाशक पुस्तक भवन लहेरिया सराय पटना १११६ ११३६

२ वही २१२।७

३ सूरसागर १०।३७४।११६२ १०।३७५।११६३ १०।३७६।११६४ १ १५७७।११६५

४ वही १ १३४११

५ वही १ १३३५६ पंक्ति ५

रामचरितमानम (तुलसीदास)

बकशी द्वारा दशरथ से दो वरदान प्राप्त करने की कथा ।^१

गंगा को भगीरथ द्वारा पृथ्वी पर लाया जाना ।^२

नन नील की कथा ।^३

नारद मोह की कथा ।^४

बालि का वध राम द्वारा ।^५

रावण द्वारा सीता हरण राम रावण-युद्ध, रावण का सपरिवार विनाश सीता का उद्धार ।^६

श्वशुरकुमार के अर्धे माता पिता द्वारा राजा दशरथ को शाप ।^७

शिव द्वारा कामदेव का दहन—उस अनग बनाना ।^८

शिव द्वारा सती त्याग—गिरिजा के रूप में पुन प्राप्ति ।^९

शिव द्वारा त्रिपुर-दाह ।^{१०}

शिव द्वारा गरल पान ।^{११}

शेषनाग का पृथ्वी को अपना महत्व पत्नी पर धारण करना ।^{१२}

रामचंद्रिका (केशवदास)

कार्तिकेय द्वारा श्रीच पवत का वध ।^{१३}

बलि का पाताल भेजना वामन द्वारा—पुरानी गास के कारण ।^{१४}

बाणासुर शिवजी का शिष्य ।^{१५}

बालि का वध राम द्वारा ।^{१६}

१ रामचरितमानम २।२२।५ ६ और २।२७। दोहा

२ वही २।२०।६।७ और १।२१।१ २

३ वही ६।१।५

४ वही ७।६।५।८

५ वही ४।६ १ १३ दो ७।११ २ २५ ३० दो ८।१ ८ ६।१ दोहा १।१।१

६ वही १।२।५।५

७ वही २।१।५।५ ६

८ वही १।८।३।५ १।८।४।४ १।८।७।१ २ १।८।४।४ १।८।७।७।० १।८।७।७।० १।८।८।१ २

९ वही १।५।१।१ २

१० वही १।५।७।८

११ वही ४।१।१।० २

१२ वही २।११।७।७।०

१३ रामचंद्रिका ७।२६

१४ वही १।८।१।८

१५ वही ४।२।८

१६ वही १।३।१

भगीरथ द्वारा गंगा को पृथ्वी पर लाना ।^१

मनाक पवत का समुद्र म से ऊपर उठना, हनुमान को विश्राम दन के लिए ।^२
 लक्ष्मण का १२ वष तक क्षुधा, श्रिया और निद्रा को जीत लना—इसीलिए
 मेघनाद का वध कर सकना ।^३

सीता—छाया रूपिणी ।^४

मध्यकालीन काव्यो म आख्याना के सूच्यात्मक प्रयोगो की परम्परा म ही
 सफी कबिया के इन प्रयोगो को देखना चाहिए ।

आम सूफी काव्यो मे प्रयुक्त उल्लेखात्मक आख्याना का प्रसंग एव मदम
 सहित निर्देश किया जा रहा है । पौराणिक पात्रो स्थानो आदि का भी उल्लेख रूप
 म प्रयोग हुआ है । उनके लिए इस ग्रथ का परिशिष्ट देखिए ।

केवल उल्लेख के रूप मे प्रयुक्त पौराणिक आख्यान प्रसंग-सहित

अगद का रावण की सभा में पाँव रोपना^५—राजकुवर के लिए मानसरोदक
 के किनारे बनवाय गए महल की भित्तियो पर उरेहे गय चित्रा म इस प्रसंग का चित्र
 भा था ।

अगस्त्य मुनि द्वारा समुद्र शोषण करना^६—स्वग के देवताआ न अगस्त्य को
 समुन् का पानी कम करने को कहा । सुजान की रक्षा क लिए देवताआ की सहायता ।

यहाँ अगस्त्य के समुद्र शोषण को सदभ कथा के रूप म नही प्रत्युत कथानक
 क अंश के रूप म प्रयोग किया गया है । अगस्त्य और उदधि यहाँ कहानी के पात्र बन
 गए हैं । समुद्र को यह डर लगा कि कही अगस्त्य मरा पुन शोषण न करें ।

सूफी काव्या म पौराणिक प्रसंग के इस रूप म प्रयोग का यह अक्ला ही
 उदाहरण है ।

अभिमन्यु का चक्र-यूह मे घिर जाना^७—चदा की चित्रसारी म लोरिक अनेक
 चित्रा म एक चित्र इस प्रसंग का भी देखता है ।

अर्जुन द्वारा दौपदी स्वयंवर मे मत्स्य वेष्ट^८—राजकुवर के लिए मानसरोत्क
 तट पर निर्मित प्रासाद के भित्ति चित्रा म से एक यह चित्र भा ।

१ रामचन्द्रिका ६।१६

२ वही १३।३६

३ वही १८।३१

४ वही १२।१२

५ मगावती छन्द २६।४५

६ चित्रावली प० २३२।छन्द ६०६।१४

७ चदायन (प० ला० गु०) २०५।१ और ५

८ मगावती २७।३

अर्जुन का कौरवों को मारकर द्रौपदी को जीतना^१—राजकुंवर के लिए मानसरोवर तट पर निर्मित प्रासाद के भित्ति चित्रा में से एक यह चित्र भी ।

अर्जुन (पाय) द्वारा विश्व भ्रमण^२—योगी सिद्धनाथ का रायभान में बचन कि उसके देखने पाय ने समार को खूब डाला ।

आदिमानव के चालीस पुत्र होना^३—एक सती का इन्द्रावती का सात्त्विकता देना और भगवान की रहस्यमयी लीला का बखान करना । यह कहना कि यदि मनुष्य को भगवान न मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर से सतति उत्पन्न की यदि मानव को चालीस पुत्र दिए ।

कृष्ण द्वारा कंस को मारना^४—बीजापुर के वियोगी गुनी द्वारा कुछ पौराणिक कथाओं का गायन उनमें से एक प्रसंग भी एक ।

चंद्रमा और सूर्य पर ग्रहण का विधान^५—कवि जायसी द्वारा प्रथारम्भ में ईश्वर के प्रताप का वर्णन ।

तीन सौ नौ वर्ष तक निद्रामग्न रहना (किसको ?)^६—ईश्वर जिस मार दे उस बचानवाला कोई नहीं । ईश्वर चाहे तो किसी को ३०६ वर्ष तक नींद में ही रखे ।

प्रयाग में करवत लेना—इसका माहात्म्य^७—गिरनार तीर्थ में जान समय कुंवर मुजान विचार करता है ।

पाण्डवों द्वारा कौरवों को महाभारत युद्ध में मारना^८—बीजापुर का वियोगी गुनी जिन कथाओं का गायन करता था उनमें से एक कथा यह भी ।

पाण्डवों और दुर्योधन का कुरुक्षेत्र में युद्ध^९—चदा की चिंतारिणी में कई चित्र बन हुए थे, उनमें से एक चित्र यह भी ।

शक्ति राजा को विष्णु द्वारा पाताल में रहने को भेजना^{१०}—अधस्ताह में पड़ा हुआ कुंवर मुजान भगवान का स्मरण करता है । भगवान की महिमा का वर्णन ।

१ मगावती २७।३

२ नानदीप छंद २६२

३ इन्द्रावती (पूर्वादि) पं १६१ मोतीखण्ड छंद १२।४ ५ और दोहा

४ चित्रावली पं १८१ छंद ४७७।१ ७

५ चित्ररेखा पं ६६।ची ५

६ इन्द्रावती (पूर्वादि) पं ४१ छंद २४।नेहा

७ चित्रावती पं १५७ छंद ४१२।दोहा

८ वही पं १८१।छंद ४७७।१ ७

९ चदायन (पं सा गं) २ ५।१ ३

१० चित्रावली पं ११५ छंद ३००।५ ७

भीम द्वारा कीचक वध^१—राजकुवर के लिए मानसरोदक तट पर निर्मित प्रासाद की भित्तियों पर बन चित्रा मे एक चित्र इस प्रसंग का भी उरेहा गया ।

भीम का दुःशासन की भुजा उल्लाडना^२— " "

महिरावण की पुरी मे जमवातर लगी होना—महिरावण की मृत्यु^३—विभीषण के राक्षस न रतनसेन के जहाज को भटका दिया । उसे वह पातालपुरी के द्वार तक ले गया । वहाँ महिरावण की अस्थियों का पहाड जसा ढेर दिखाई देना ।

राम द्वारा लका को जलाना^४—विभीषण का दूत राक्षस अपन बाले होन का कारण यह बताता है कि राम ने जब लका जलायी तब उमकी आँच स वह भुलस गया ।

राम द्वारा सेतु-बधन करना^५—विभीषण के राक्षस का रतनसेन से कहना कि वह उसे उस सेतु बधन नक ले चलेगा जिस राम न बाँधा था ।

राम द्वारा रावण का वध—सीता को लौटा लाना^६—बीजापुर का वियोगी गुनी जिन कथाओ का गायन करता था उनम स एक कथा यह भी ।

राम रावण का सप्राप्त^७—चदा की चित्रसारी म जब लोरिक पहुँचा तब उसन वहाँ बहुत मे चित्र अकित देखे । उनम स एक चित्र इस प्रसंग का भी ।

रावण द्वारा राम पत्नी सीता का हरण^८—

राजकुवर के लिए उसके पिता न मानसरोदक पर जो प्रामाद बनवाया उसकी भित्तियों पर पौराणिक आख्यानों के चित्र अकित कराये गये । उनम से एक चित्र राम-कथा स सम्बन्धित ।

राक्षसों की दिगा दक्षिण म होना^९—कुवर मनोहर ने राक्षस का दक्षिण स आन दखा ।

निव कामदेव के शत्रु^{१०}—सुरनानी ने शिव क अनगरिपु विशाषण का उल्लेख कर उनसे प्रार्थना की कि उसक वागज के घोडे का जीवित कर द ।

१ मगावती २७।१

२ वही २७।१

३ पदमावत ३६४।३ ५ ३६५।५ ६

४ वही ३६३।१ ४

५ वही ३६३।१ ४

६ चित्रावनी प० १८१ छ ४५३ ची १ ७

७ अदायत (प० ला० ग०) २०५।१ ३

८ वही २ ५।१ ३ मगावती (गिल्ली प्रति प्रतिलिपि उ० म शास्त्री छन्द ३४ ३५) मुद्रित मगावती में छन्द २५।४

९ मधमावती प० २२२।छन्द २६२।ची० १

१० मानदीप प ४४।छन्द १२०

शिव द्वारा कामदेव को जीतना^१—कुवर मुजान के मगलाय कौलावती द्वारा शिव की स्तुति ।

शिव का कामदेव को नरम करना^२—नपाल क राजा धरणाधर क मम्मूख शिव का प्रकट होना । उनक नरा का उल्लख जिनम उट्टनि कामन्द क मरम किया था ।

कौलावती द्वारा कुवर मुजान क मगलाय शिव का स्तुति । शिव द्वारा कामदेव के नाश का उल्लख ।

शिव का कामदेव के सामन हार मान लेना —मनाहर और मधुमावती परम्पर काम चप्टा करन तग जिस तखकर रतिपति भी डर गया कि बती यह मुझे नी न मारें । पर जिमस शकर जा ही हार गय, उम काम का कौन जात सकता है ?

शिव के कंधे पर दो हत्याएँ—(१) कामदेव की, (२) सरस्वती पर आसक्त ग्रहा की—रतनमन जब चिता म जलन का दृशा और हनुमान जी न पलना जाकर शिव का मूछा दी तब शिव का शिवमण्डप क पास जाना । पावती का शिव स यह कहना कि दा हत्याएँ ता आपके ऊपर पहल न ही हैं तस तीसरी का पाप भी क्या अपन ऊपर लत हैं ।

शिव द्वारा अधकासुर का वध^३—कौलावती की शिव स्तुति मुजान क करवाणाय ।

शिव द्वारा कधकासुर का वध^४—कौलावती की शिव स्तुति मुजान के कल्याणाय ।

शिव द्वारा त्रिपुर-संहार करना^५—मुजान क कल्याण क तिए कौलावती की शिव स प्रायना । शिव की प्रशंसा ।

शिव द्वारा दक्ष प्रजापति को मारना^६—

शिव की गरण मे आकर राम का रण जीतना^६—पावता रतनमन की पराभा लन क बाद उसकी समुत्ति शिव स करता ह । शिव की बृग हान पर

१ विज्ञावली २६२४४

२ वही प १६ छन्द ४५।चौ० ६ प १४६ छन्द ६२ चौ० ४५

३ मधुमावती प० १० । छन्द १२४।चौ ५

४ पन्नावत २ ७।१२ २११।६ अण्डहा २२।५

५ विज्ञावली प० १४६ छन्द ३६२ चौ० ४५

६ वही प १४६ छन्द ६२ चौ ४५

वहा ६२।४५

८ वही ३६२।४५

९ पन्नावत २११।६

ही राम रावण को जीत पाय । यदि रतन सेन पर भी कृपा हो जाय, तो वह अपनी मनावांछित वस्तु प्राप्त कर ले ।

हनुमान की हाँक सुनायी पडना (लका की रखवाली करना)^१—रतनसेन के भाग की कठिनाइया का वणन । लका की रखवाली हनुमान द्वारा करना । जोर से हाँक लगाना ।

हरिश्चंद्र का डोम के घर सेवा-श्राय करना ^२—बीजापुर के विद्योगी गुनी द्वारा गायो जानवाली गायत्री म स एक गाया सत्यवादी हरिश्चंद्र की भी ।

१ पदमावत १३६।४ ६

२ चित्रावली पृ० १८१ छंद ४७७।ची० १

प्रयुक्त पौराणिक आख्यानों में सूफी दर्शन-तत्त्व

जस सूफियों ने अपने प्रमाणानुसृत काव्यों के लिए लोक-कथाओं का ग्रहण कर अनेक विशिष्ट साम्प्रदायिक प्रयोजन की मिट्टि के निमित्त उनमें आवश्यक परिबर्तन कर लिया और उनका निरूपण हम दृष्ट में किया बिना वे उनके मन प्रचार के साधन बन सकें वस ही भारतीय पौराणिक आख्यानों या पात्रों का अपने काव्य में प्रयोग करने में सूफियों का क्या कोई विशेष दृष्टिकोण या प्रयोजन था? यह एक स्वाभाविक प्रश्न है जो सूफी काव्य के प्रत्येक अध्ययन के मन में उठ सकता है। सूफी कवियों ने सूफी दर्शन का अपने काव्य के माध्यम से प्रकट करने की चेष्टा की। वह लोक-प्राप्त बन सकें अथवा उनके लिए उन्हें लोक-रचि का ध्यान रखकर चयन करना पड़ा। इसमें निश्चय ही उन्हीं लोकप्रिय और लोकप्रचलित कथानकों तथा उपमाओं को ग्रहण किया वहाँ उन पौराणिक आख्यानों और पौराणिक पात्रों आदि का भी जिनका जन-मानस पर गहरा सामूहिक और सामाजिक प्रभाव था।

पौराणिक आख्यानों के प्रयोग में सूफी कवियों के विशिष्ट दृष्टिकोण और प्रयोजन को समझने के लिए आवश्यक है कि सूफी दर्शन के मनोभूत तत्त्वों में सामाजिक परिचय प्राप्त कर लिया जाय।

सूफी दर्शन के आध्यात्मिक तत्त्व

सूफी दर्शन में प्रेम सौन्दर्य विरह मिलन प्रेममाग की कठिनाइयों और गुण-आदि का विशेष महत्त्व है। इसमें तो जस सूफी दर्शन का प्राण-तत्त्व ही है। समस्त सूफी साधना प्रेम पर ही आधारित है। सच्चा सूफी वही है जो हर समय प्रेम में डूबा रहे। सूफी प्रेम को असाधारण अलौकिक और ईश्वरीय शक्ति समझते हैं। वह ईश्वरीय तत्त्व है। ईश्वरीय प्रेम मनुष्य के हृदय में स्वतः ही जागृत होता है, परन्तु होता तभी है जब ईश्वर की कृपा हो। इसलिए साधक अपने हृदय को सर्वात्मभाव से ईश्वर का नववेश बना देता है। ईश्वर की सत्ता में अपनी सत्ता का विमर्जन ही उसका चरम प्राप्ति होता है। प्रेमी के साथ तादात्म्य तब तक नहीं हो सकता जब

तक मनुष्य अपने अहंकार को खुदी की भावना को समाप्त न कर दे। 'अहं' या स्व की भावना मिट बिना मनुष्य म ममभाव से ससार को देखन की भावना उत्पन्न नहीं हाती। प्रेम ममभाव ही चाहता है सवीणता नहीं। जो ईश्वर का अपना परम प्रिय ममनता है, वह ईश्वर के द्वारा प्रेम के कारण ही बनायो इस सृष्टि इसके मनुष्या पदार्थों आदि से घणा कसे कर सकता है ? उसक हृदय मे तो मक्क लिए प्रेम का अथाह सागर हिनोरें नेता रहना है। प्रेम इपीनिए मकीगना मे दूर है। हृदय का जोदाय ही प्रेम को पल्लवित हान के लिए उपयुक्त भूमि प्रदान करता है।

प्रेम तक और ज्ञान से दूर भागता है उसे ता भ्रष्टा चाहिए और चाहिए विश्वास। प्रेम की चटसार की पडाई ही भिन्न है। उसकी वणमाला को प्रेमी ही पढ सकता है। प्रेम के बिना सब अपूण है, प्रेम ही मनुष्य को पूणत्व की उपलब्धि कराता है। मनुष्य को जब तक जपन वमन अपन पद आर अपन गौरव म आमक्ति रहती है, जब तक उमम मद और जहवार रहता है तब तक वह ईश्वरो-मुख नहीं हो पाता। जब मनुष्य के हृदय म ईश्वर के प्रति प्रेम के अतिरिक्त और कुछ रह न जाय तभी उसका घट प्रेम से लवालब भर उठने के लिए 'याकुल हो उठता है।

सूफी दशन म प्रेम के साथ ही सौदय का भी महत्व है। सूफा सौदय और प्रेम का सम्बन्ध अयो-याश्रित मानन है। जहा सौदय है वहाँ प्रेम क लिए महज आकषण उपस्थित है। नारी का सौदय भी ईश्वरीय ज्वाति का ही प्रतिबिम्ब है। जिसन ससार म सौदय की सृष्टि की वह स्वयं कितना सुन्दर होगा !—यह है वह भावना जो सूफी किसी सुन्दर वस्तु को दखकर अपन मन म करता है। सूफी काया म नौबिक सौदय का इमीलिए महत्व है क्योंकि वह अलौकिक सौदय की ओर साधक के मन का मोहन के लिए एक साधन का एक माध्यम का एक मापान का काम करता है। सूफी ल्शन म लौकिक प्रेम की ही अलौकिक प्रेम म परिणति हो जाती है इस्क मजाजी इस्क हकीकी बन जाता है।

सूफी प्रेमार्थानक काव्यो म नायिका के नख शिख सौदय का जो अतिशया कितपूण वणन मिलता है उसके मूल म यही भावना है। नारी सौदय की आर दखन म सूफी साधक की दष्टि वासनारमक नहीं रहती वह उसकी जाखा कपानो, ओठो भीहों आदि म एक अलौकिक सौदय की शलक दखता है। सौदय का मूल स्रोत परमात्मा है इसलिए लौकिक सौदय की उपासना परमात्मा का ही उपासना बन जाती है। सूफी प्रेमार्थाना म लौकिक सौदय वणन के साथ-साथ आध्यत्मिक सकेत मिलने का कारण यही है। लौकिक चूकि पारलौकिक का साधन या माध्यम है, इसलिए सूफी कायो म सासारिक प्रेम के आलम्बन अनुभाव, विभाव और सचारी भावो का इतना विशेष चित्रण मिलता है।

सूफी साधक की इस प्रेम यात्रा क भाग म अनेक प्रकार की साधनात्मक कठिनाइयाँ आती हैं, अनेक अवरोधा और विरोधा का उसे सामना करना पडता है।

सूफी वाक्या में नायक का प्रेम भाग की कठिनाइया का चित्रण साहस्य होता है। प्रेमी का हृदय कुत्तन की तरह धाँसवानी मात्र तो तरह दमक सब गुद्ध हा मक रमक तिम आवश्यक है कि थन कठिनाइया में न गुजरे। बिना कष्ट सहे दद की त्रिगा त्म उसकी जीत्मा में परिष्कार तनी जा पाता। प्रेमी को मित्रनवाला जति शय कष्ट उगके हृदय के कल्मष तो मिटा डानता है जिममें रू ईश्वरीय प्रेम की जमीनार कर्न के लिए उागुवन पात्र बन जाना है। सूफी साधना में मत्स्य भय का वस्तु तनी वह एन योगा का पत्नय मात्र है उसकी समाप्ति नहीं। यही कारण है कि सूफी प्रेमाख्याओं का नायक तो हम मोत में जूनन और मत्स्य में अभीत पान है।

सूफी साधना में भाग की कठिनाइया का महत्त्व होन का कारण एन आध्यात्मिक गुण की भी आवश्यकता अनुभव हुई है जो साधक को पथभ्रष्ट और विषय गामा बनने से बचा सन। गुरु न ही तो ध्वनि के सामारितता में भटक जान का सक्र पना रहता है।

सूफी साधना में विरह का भी अपना महत्त्व है। समार का सारे पत्नय और समस्त प्राणी अपने मूल स्रोत से जलग होकर तडप रहे है—एक पापक विरह की अग्नि जल रही है। प्रेमी के हृदय का विरह उम पापक अग्नि का ही रूप है। परमात्मा से मिलन हा रमक त्रिण आवश्यक है कि साधक का हृदय से वामनाजा का परिष्कार हो। इस परिष्कार के लिए प्रेमी को एक बार या कई बार विरह की अग्नि परीक्षा में से गुजरना आवश्यक है। प्रेम की तरह विरह भी ईश्वर प्रदत्त है। जिसके हृदय में विरह उत्पन्न हो जाय वह धय है। गुरु का काय जहाँ साधक का भाग की कठिनाइयो में उसका भाग-दशन करना उसकी रक्षा करना उसकी सहायता करना है वहाँ सूफी दशन में उसका एन बडा काय साधक या प्रेमी के हृदय में विरह की चिनगी जला देना भी है।

सूफी दशन के इस सामान्य परिवर्तन के बावजूद सूफियों के पौराणिक आख्यान मन्त्र की प्रयोगा का उद्देश्य समझने में कठिनाई नहीं रहती।

सूफी दशन तत्त्व निरूपण के लिए पौराणिक आख्यानादि का प्रयोग

हमारे आलोच्य ग्रन्थों के सफा कविता में मभी पौराणिक आख्याना एक पौराणिक पात्रा का सूफी दशन-तत्त्व के निरूपण के लिए ही प्रयोग किया हो एसी बात नहीं। अधिकांशत तो उ होने सामाजिक मन्त्र घो, मायताजा तथा योग व्यवहार के मानव सिद्धांतों का निरूपण करने के लिए ही इनका उपयोग किया है परन्तु कई आख्याना एवं पात्रा का उहोने अपन विशिष्ट साम्प्रदायिक प्रयोजन के भी प्रयोग किया है। नीचे हम ऐन कुछ प्रयोगा पर विचार करेंगे।

सौन्दर्य-चित्रण

उवशी^१ भनका^२ पलोमना^३ ध्रिताधी,^४ तिलात्मा^५ रम्भा^६ मृकेशा,^७ रति^८ आदि अप्सराएँ जा पौराणिक आख्यानों में उत्तेजक सौन्दर्य का प्रतिमान बन कर उपस्थित हुई हैं। सूफी कविया द्वारा अपनी नायिकाओं के अविश्वसनीय सौन्दर्य चित्रण के लिए उपमान के रूप में प्रयोग की गयी हैं। कई नायिकाओं को तो उनमें भी बह चक्कर बताया गया है।

नायिका के सौन्दर्य में ईश्वरीय सौन्दर्य की प्रतीति कराने के लिए सूफी कविया न लोक में अप्सराओं के अत्यन्त सुन्दर हान के विश्वास का उपयोग करते अपना वाय सरल कर लिया।

नायिका की नाभि के लिए जहाँ उहान क्षीर समुद्र में मथन के उपरांत मथानी निकानन में बन आवत्त का उपमान बताया है वहाँ नायिका की भौंह के लिए अजून^१ परशुराम^२ और कृष्ण^३ के उन धनुषों को उपमान बना दिया जिनका उपयोग उहाने प्रमथ करके सहस्रबाहु और कम के विनाश के लिए किया था। इन प्रयोगों से सूफी कवि केवल नायिका की भौंह की बल्लता का ही नहीं सूचित कर सकें वरन् उसकी अप्रतिम शक्ति का भी सहज ही बोध करा सके।

अहंकार का नाश

सूफी दर्शन साधक के अहंकार का नष्ट करन पर विशेष बल देता है क्योंकि उसका शिना परमात्म-तत्त्व का उदभास साधक के हृदय में नहीं हो सकता। दभ या

- १ चित्रावली ६०८।१ २ कथा कीतूहली, पत्र २ छन्द २ युमुक्त-जुलेधा (हि प्र० गा० का० ख०) प० ३६।१ पक्ति १२।१३ अनुरागवाँसुरी १।४।५ १३।५ ६ ७१।६
 - २ कथा छीता छन्द ५ कथा कीतूहली पत्र ३।छन्द २ कथा नल-दमयन्ती पत्र ३।छन्द १७ इन्वती (उत्तराद्ध) हस्त प० ११ और १६
 - ३ कथा नल-दमयन्ती पत्र ३।छन्द १७ पानदीप छन्द २७१
 - ४ कथा कीतूहली पत्र ३।छन्द २ पानदीप छन्द ७१ कथा नल-दमयन्ती पत्र ३। छन्द १७ कथा छीता छन्द ५
 - ५ कथा छीता छन्द ५ इन्वती (मल्लि) ६।१ वही हस्त ७ उत्तराद्ध प० ७६
 - ६ चित्रावली ३१८।५ ६०८।१ २ कथा रतनावती ८४।१ कथा कामलता ११।१ ३ माधवा-नल-नामकदला प० १६।१० ३ इन्वती स्वप्न खंड ३३।दोहा
 - ७ कथा छीता छन्द ५ कथा कीतूहली पत्र ३ छन्द २
 - ८ इन्वती (पूर्वाद्ध) ६।१ उत्तराद्ध हस्त प ७६ अनुराग-वाँसुरी ४।३
 - ९ चित्रावली प० ७६ चौ० १
 - १ मगावती १७८।५
 - ११ वही १७८।दोहा परमावत १ २।५
 - १२ परमावत १ २।४ और
- राम हरा रावन जिहि कृष्ण हरा जिमि कस ।
त वै धनक हु ज मनो वही धनक कर घस ।

अहवार व्यथ है मसार के बड़े बड़े प्रतापी राजा अहवार के कारण ही नष्ट हो गए इसका लिए अगस्त्य मुनि द्वारा समुद्र शोषण^१ कुम्भकण की शोषणों में भीम के डूब जान^२ रावण,^३ कस^४ तथा कौरवा^५ के मार जान तथा चंद्रमा के ग्रस जान^६ आदि से सम्बन्धित आर्यायनों का उपयोग किया गया है।

मृत्यु में अभौतता

मृत्यु से निडर होना साधक के लिए आवश्यक है तभी वह सक्ती का सामना साहस से कर सकेगा, इस विचार को प्रकट करने के लिए प्रह्लाद को जलाने तथा मसूर को सूली पर चढ़ाने की घटनाओं का उपयोग किया गया है।

प्रेम पथ की विकटता

प्रेम पथ पर चलना सत्रक व्रत की बात नहीं। बड़े बड़े ध्यवानों के ध्य यहाँ छूट जाते हैं बड़े बड़े पराश्रमियाँ को यहाँ हार माननी पड़ती है। इस पर चलता वही है जिसमें अभय साहस हो दण्ड आत्म विन्यास हो और अपने प्रीति पात्र को प्राप्त करने की अदम्य इच्छा हो। इस विचार को उदाहरण करने के लिए सूफी कवियाँ न अगस्त्य का रावण की सभा में पाव रापन से सम्बन्धित आर्यायनक प्रसंग का बना सुन्दर प्रयोग किया है।^१ अभिमयु के चक्र-यूह में जूझने^२ और नल पर विपत्ति पडने^३ का भी इसी प्रयोजन के लिए प्रयोग हुआ है।

१ विद्यावती २६२।६७ तथा दोहा

२ पद्ममावत २६५।१०। २।१६

३ सिधनाथ माध भद्र मारे देखे सराप होउ जरि छारे।

रावन गब रहा नहि राया तावा नख सहित सुय साया ॥ —ज्ञानदीप पृ १०५ छन्द २६०

गर्वे सो व्याघ्र घापनो छाहीं, परा देखि के कूए माहीं।

रावन गयउ गव सो मारा लका ऐसो हनिवन जारा ॥

—दत्तावती उत्तराष्ट्र हस्त० प० ११२

४ धमर भई मोहन की बात नित नित को जगु गाँ ठहरात।

×

×

×

जित बय बन वहाँ मसार करौ पाँडो चल धपार।

—कवा रतनावती पृ १७३ ज्ञानदीप छन्द २०५ (दत्तावती उत्तराष्ट्र) हस्त०

पृ १७६

५ मगावती ३७१।१०००

६ पद्ममावत ८५।४

७ ज्ञानदीप छन्द २५

८ पुद्गल बरिदा पत्र १४।छन्द ८८ पद्ममावत २६।६

९ धनराग वाँसुरी प० ११५।छन्द १६।६

१० पद्ममावत २६४।१२ साधवानल कामकला हस्त० पत्र २४ मन्त्रि प्रति (हि प्र० गा

का सं०) पृ २०८ प १२ १४

११ मगावती १३२।४५

विरह की उत्कटता

नायक म विरह की उत्कटता का चित्रण करन म रामचंद्र,^१ नल^२ आदि का उपयोग सूफी कवियो ने सुदरता से किया है ।

विरह कितना कष्टदायक है, इसको चित्रित करने के लिए राहु,^३ दुशासन^४ और अजुन को पकड़न वाले अहिबन^५ का उपयोग हुआ है ।

नायिका को प्राप्त करने मे नायक का उद्योग और प्रेम के प्रति उसकी निष्ठा

साधक अपने लक्ष्य को सतत और कठिन प्रयास के बिना नहीं पा सकता, इसका उल्लेख अजुन द्वारा मत्स्य वेध कर द्रौपदी को जीतन व आरयान के द्वारा किया गया है ।^६ भीम का अधिक भोजन करना^७ भी यहाँ विष—सासारिक छल, घान आदि—को पचाने म नायक की आत्मिक शक्ति का परिचायक बनकर उपस्थित हुआ है । राम द्वारा सीता को पाने के लिए ममुद्र पर सेतु-वधन और अजुन द्वारा मत्स्य-वध कर द्रौपदी को प्राप्त करना^८ आदि आख्यान भा इसी सद्भ म प्रयुक्त हुए हैं ।

नायक के प्रेम-पथ के सहायक

सूफी प्रेमाख्यानो म नायक-नायिका का बिछोह हो जाने के बाद नायको को प्राय हनुमान और भीम का स्मरण आता है । य दोना ही प्रसिद्ध पराक्रमी और बलशाली पौराणिक पात्र हैं । नायको को यह अभिलाषा रही है कि उनकी विपत्ति म हनुमान और भीम जसा कोई सहायक उनक पास होता जो उह अपनी प्रेयसी से मिला सकता ।

संसार के प्रति वैराग्य

संसार के प्रति साधक के वैराग्य का चित्रण विभीषण के लका छोड़ देने^९ और शुकत्व जी के कभी दा घड़ी एक स्थान पर न ठहरने^६ के पौराणिक आख्यानो के द्वारा किया गया है ।

य हैं कुछ पौराणिक आख्यान और पात्र जिनका उपयोग सूफी प्रेमाख्यानक काव्या म सूफी दशन-तत्त्व निरूपण के लिए हुआ है ।

१ मधुवातली २।५

२ माधवानल-कामकदला (हि० प्रे० गा० का० स) ५० ००। ५० २५ ५० २९५ ५० १

३ पदमावत १७२। गेहा १८।५

४ नल ममन १६३। २ ३

५ मग्गवती ६६। ३

६ पदमावत ४६१। २ ४

७ हाशनेध छन्द १८७

८ पदमावत ३८४। ४ ५

९ बहा ६०५। ५

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो की पौराणिक कथानक-रूढियाँ

जबस विभिन्न देशों व विभिन्न प्रदेशों की लोक कथाओं का अध्ययन प्रारम्भ हुआ है अध्ययताओं की दृष्टि स्वभावतः इस तथ्य पर गयी है कि कुछ कथाएँ अपन परम्परागत रूप में मिलती हैं। एक ही कथा विभिन्न शैलीगत परिवर्तन एवं वस्तुगत संशोधन परिवर्द्धन व साथ एक ही देश की विविध भौगोलिक इकाइयों में प्राप्त होती है। कथा रूपों की समानता व अनिर्विकृत एक बात और दृष्टिगत होती है कि प्रत्येक कथा वस्तुतः से लघु तः तुआ का समवाय ज्ञानी है और वस्तु या तत्त्व ससार व अनन्त देशों में प्रचलित लोक कथाओं के लघु तत्त्वा से समानता रखते हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय कथा रूपों तथा कथा नस्लों व तुलनात्मक अध्ययन की सामग्री उपलब्ध होने लगी है।

कथा रूपों का कथा प्रकार (एन टाइप) तथा कथा तत्त्वा या तः तुआ का कथानक रूढि (माटिफ) की सजा दी गई है। उनका स्वरूप और अन्तर को यहाँ स्पष्ट कर देना समीचीन होगा।

कथा प्रकार

सिद्ध धारणाओं व कथा प्रकार की परिभाषाएँ हैं— प्रकार (टाइप) वह परम्परागत कथा है जिसका स्वतंत्र अस्तित्व है। यह एक पूर्ण कथा व रूप में कहा जा सकती है और अपना अर्थ स्पष्ट करने के लिए यह किसी कथा पर निर्भर नहीं करती। हो सकती है कि यह अथवा कथा के माध्यम से दी गयी परंतु यह तथ्य कि यह अर्थ भी उपस्थित हो सकती है इसका स्वतंत्रता को प्रमाणित करता है। समान वस्तु एक कथानक रूढि (माटिफ) भी हो सकती है जो एकाधिक भा। अधिकांश पद्य विषय कथाएँ और कुछकुल तथा प्रवाण एक अभिप्रायवाचक प्रकार हैं। माघारण कथाएँ एकाधिक अभिप्रायवाचक कथा रूपों का उदाहरण हैं।¹

1 A type is a traditional tale that has an independent existence
It may be told as a complete narrative and does not depend for

उक्त परिभाषा से यह सूचित होता है कि कथा प्रकार स्वतंत्र बथाएँ ही गाने हैं जिनका एक परम्परागत रूप निश्चित हो चुका होता है। एक से कथा प्रकारों का मूल मानक रूप भी होना है जिनमें व निम्नृत हुए होना हैं। उदाहरण के लिए पुरूरवा उवशी का वदिक आख्याना का ही ल। इम आख्याना म एक परामानवी सुदरी अपन मनुष्य (प्रेमी) के साथ रन्ती तो है परन्तु एक शत के साथ कि वह उसका (प्रेमी को) कभी नग्मावस्था म न देखे। गंधर्वों के पडयत्र के कारण एक रात त्रिधुत प्रनाश म अप्परा अपने प्रेमी को नग्म देव लेती है और वह इद्रलोक चली जाती है। मानव प्रमी विरह-ध्याकुल हो उस दूढता फिरता है। अतत अप्परा को उस पर तरम आता है। वह प्रकट ङोर उम उपाय सुपाती है कि तुम ग र्वा स गवव योनि म सम्मिनिन हो जान का वरदान माँग लना फिर हम साथ रह सकेंग। इन तीलियो पर निर्मित पुरूरवा उवशी का आख्याना स्वतंत्र अस्तित्व रखते हुए भी एक कथा मानक रूप से सम्बद्ध है जिसका लेकर अपन ही दश म नही वरन विदेशो म भी अनक कथाया का निर्माण हुआ है। सी० एस० बन महादया न अपनी पुस्तक हैण्डबुक आव् फोकलार म जिन सत्तर कथा रूपो का संग्रह किया है उनम एक कथा रूप क्यूपिड एण्ड साइक का है। तनिक उस कथा रूप और पुरूरवा उवशी के उपयुक्त कथा रूप की तुलना कीजिए। क्यूपिड तथा साइक (Cupid and Psyche) के कथा रूप (टाइप) की तीलियाँ इस प्रकार हैं

- १ एक सुन्दर लडकी को एक परामानवीय जाति का व्यक्ति प्रेम करता है।
- २ वह मनुष्य रूप म रात्रि का लडकी का पाम आता है पर इस शत के साथ कि वह उसे देखे नहीं।
- ३ लडकी निषेध का उल्लघन कर देती है, फलत अपन त्रिध जाति के प्रेमी को खा बठनी है।
- ४ वह लडकी उसकी खोज म निकलती है और बहुत सी कठिनाइया का सामना करती ह।
- ५ अतत वह उसे पा लती है।

पुरूरवा उवशी के आख्याना की तीलियो जीर इस कथा रूप की तीलिया म किननी तात्त्विक समानता है। अतर है तो इतना ही कि क्यूपिड तथा साइक कथा

its meaning on any other tale. It may indeed happen to be told with another tale but the fact that it may appear alone attests its independence. It may consist of only one motif or of many. Most animal tales and jokes and anecdotes are types of one motif. The ordinary marchen are types consisting of many of them."

रूप म जा यूरोप म प्ररित है प्रेमी परामानवीय जाति का है जबकि पुष्करवा उवशी आख्या म प्रमिता । विष्णु क उतरात अन्त म दोना ही कथा रूपो म प्रमी प्रेमिका का मितन हा जाता है । क्या यह मितन उनी करता कि क्या रूपो न एक दश की गोमाआ का अतिप्रमण का रूपर दशो म मत्रमण किया है ? फिर एक देश के भीतर नी सा क्या रूपो के मन हीन को मुराति रगन न उनके पूर्णान या अन्प्राण को मकर लोह रथाओ का निर्माण हाता रग है । पुष्करवा उवशी क कथा रूप क अति माज्ञ का यह परिवर्तित रूप हम एक साक-कथा म उपलब्ध होता है—एक मनुष्य एक अम्परा का प्रेम करने लगता है । अम्परा उमको रूद्र क सम्मुख स जाती है । मनुष्य मन्त्र मान्न रोगन म रूद्र का रिया रता है और अम्परा क परामाण क अनुमार इद्र स गपनी प्रमिका को माग लता है ।

यदि हम कथा रूप के मूल तत्तुआ का अरित करना हो तो उमका रूप यह हागा—

(१) अम्परा (२) श्वता या परामानवीय पुरुष (३) मानव और परामानवीय जाति का प्रेम (४) मानव और परामानवीय जाति का प्रेम निषिद्ध (५) रूद्र अम्पराआ का राजा (६) रूद्रनोर (७) इन्मभा (८) निषध परामानवीय प्रेमी को श्वन हा या मानव प्रेमी को नान दान का (९) अय लोह की यात्रा परा मानवीय पत्नी नायक को जय लाव म ल गयी, (१०) दण्डित काय—निषिद्ध काय करन स अम्परा का चन जाना (११) दण्ड वियोग (१२) खोज प्रिय की खोज म लगी नायिका (१३) खोज प्रिया की खोज म लगी नायक (१४) नामक या नायिका क माग म जानवान मकर (१५) खोज म मफलता (१६) तबला (मदग) बजा इद्र को प्रमप्र कर प्रिया को पाना (१७) पुरस्कार नायिका प्राप्ति का साधन मालूम होना (१८) पुरस्कार कर माग लो (प्रमिका प्राप्ति), (१९) मानव और परामानव का विवाह ।

वस्तुत किमी 'कथा रूप या प्रकार (टाइप) क मूल तत्तु ही कथानक-रूटि या मोटिफ है ।

कथानक रूटि

अग्रजी म मोटिफ शब्द का अर्थ प्रधान अभिप्राय या भाव होता है । हिन्दी म उसक लिए कई शब्द प्रचलित हैं आचार्य हजारी प्रमाद त्विदी कथानक रूटि शब्द का प्रस्ताव करते हैं^१ श्री कृष्णानन्द गुप्त ने उसको कथानक का मूल नमण एवं मुख्य लक्षण कहा है^२ डा० मत्स्य ने उसके लिए अभिप्राय^३ और कथानक रूटि^४ दाना

१ हिन्दीसाहित्य का आदर्शन पृ० ८०

२ मानिक भास्करन (तिली) के साक-कथा म रूटि का प्रस्ताव लेख ।

३ देखिए ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन पृ० ४५१ और लोक साहित्य विज्ञान पृ० २८७

४ मध्ययगीन हिन्दी साहित्य का लोकात्मिक अध्ययन पृ० २४८

शब्द का प्रयोग किया है। डा० सावित्री सरौन ने भी 'अभिप्राय शब्द को ही चुना है।' डा० श्यामाचरण दुबे ने 'मोटिफ' को मूल भाव माना है। डा० ब्रजविलास श्रीवास्तव न अपनी पुस्तक 'पृथ्वीराज रासो म कथानक रूढ़ियाँ' म कथानक रूढ़ि' शब्द को प्रयुक्त किया है। डा० वृष्णदेव उपाध्याय अभिप्राय को मोटिफ का उचित पर्याय नहीं मानते।^१ जा हों, आजकल हिंदी में अंग्रेजी के 'मोटिफ' शब्द के लिए 'कथानक रूढ़ि' (कथा रूढ़ि) और 'अभिप्राय' (मूल अभिप्राय)—इन दो शब्दों का ही प्रयोग साधारणतः किया जा रहा है।

शिप्ले ने 'मोटिफ' की परिभाषा इन शब्दों में की है— अभिप्राय (मोटिफ) उस शब्द अथवा विचार के उस संचि को कहते हैं जो समान परिस्थिति में अथवा समान मन स्थिति उत्पन्न करने के लिए किसी कृति या एक ही जाति की विभिन्न कृतियों में बार-बार आता है।"^२ डा० स्टिथ थामसन इसको लोकवार्त्ता का वह अंश मानते हैं जिसमें लोकवार्त्ता की किसी वस्तु का विश्लेषण किया जा सके।^३ यों तो लोक-कला और लोक संगीत के भी अपने 'मोटिफ' होते हैं परंतु जिस क्षेत्र में अभिप्राय (Motifs) का व्यवस्थित अध्ययन किया गया है वह क्षेत्र लोक कथाओं का ही है।

प्रायः लोक कथाओं में बहुत सीधी सीधी बातें भी अपना स्थान परम्परागत रूप में रखती आती हैं। वे जम्तराए जादूगरिनें राक्षस क्रूर सौतेली माँ, मानव वाणी में बोलनेवाले पशु पक्षी तथा इसी प्रकार की अन्य बातें हो सकती हैं। ये सारी बातें किसी लोक कथा का अभिप्राय (मोटिफ) बन जाती हैं। कभी कभी कोई लघु कथा या श्रोताओं का मनोविनोद करने वाला चुटकुता भी अभिप्राय (मोटिफ) का रूप ग्रहण कर लेता है। अक्रूर वीरबल विनोद के चुटकुले लोकवार्त्ता क्षेत्र में मोटिफ का ही रूप ग्रहण कर चुके हैं।

अभिप्राय (मोटिफ) शब्द की व्याप्ति इतनी अधिक है कि इसके अंतर्गत

१ डॉ० सावित्री सरौन का शोधप्रबंध ब्रज की लोक-कथाओं के अभिप्रायों का अध्ययन वसुदेव विश्वविद्यालय से १९५७ में पी-एच डी उपाधि के लिए स्वीकृत (अप्रकाशित)

२ देखिए हिंदी साहित्य का बहन् इतिहास—मोदक भाग पृ० १२१

३ Motif—A word or a pattern of thought which recurs in a similar situation or to evoke a similar mood within a work or in various works of a genre' — Shiple Dictionary of World Literature

४ Motif—In folklore the term used to designate any one of the parts into which an item of folklore can be analyzed — Stith Thompson in Standard Dictionary of Folklore Mythology and Legend' Vol II, Editor Maria Leach New York First Ed., 1950

किसी परम्परागत कथा के अनक तत्त्व में से कोई भी तत्त्व गृहीत हो सकता है वन उम तत्त्व में ऐसी कोई असाधारणता या विचित्रता अवश्य होनी चाहिए जिसके स्मरण लाग उस स्मरण रख सकें और उसकी जाबत्ति हाती रह सक ताकि वह एक स्मृति बन जाय । उदाहरण के लिए मैं किसी कहानी का तत्त्व होन हुए भी एक अभिप्राय (मोटिफ) नहीं है क्योंकि उममें साधारणता है । पर क्रूर सौनेली मैं या क्रूर सौनेन भाई या क्रूर मास' अपनी असाधारणता के कारण अभिप्राय हैं । यदि कोई कहे कि जान न करण पहना और वह शहर गया ता इसमें ऐसी कोई बात नहीं जो स्मरण रखन योग्य हो परन्तु यदि इसी को इस रूप में कहा जाय कि नायक न एक ऐसी टोपी पहनी जिसमें यह गुण था कि उस पहनन वाला दूसरा की दृष्टि में अज्ञान रहकर भी स्वयं सबको देख सकता था इसके बाद वह अपने जादू के गनीचे पर बठा और एक एक लाक में गया जो मूय के पूव में और चंद्र के पश्चिम में अवस्थित है तो चार अभिप्रायों का कथन ही जाएगा (१) अदय बना बनवाली टोपी, (२) जादू का गनीचा (३) जान के वन से आकाश माग के पात्रा और (४) आश्चर्य जनक लोक । इनमें प्रत्येक अभिप्राय (मोटिफ) लोक रुचि को सतुष्ट और आकर्षित करने की अपनी शक्ति के कारण परम्परागत रूप से लोक-कथाओं में व्यवहृत होता आ रहा है । इन प्रकार अभिप्राय कथा का वह लघुतम तत्त्व है जो परम्परा में स्थिर रूप से रहने की शक्ति रखता है । इस प्रकार की शक्ति रखन के लिए उममें कुछ असाधारणता और अनुठापन हाना चाहिए । सोलोकोव के शब्दा में 'अभिप्राय कथानक का आंतरिक अविभाज्य तत्त्व है ।'^१

उन बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि अभिप्राय किसी भी लोक-कथा का एक आवश्यक मूल तत्त्व है जिसके बिना उमका निमाण ही नहीं हो सकता । 'अभिप्राय घटना चरित्र और काय तीनों से सम्बन्धित हो सकते हैं और किसी कथा में घटना चरित्र और काय का कथा महत्त्व है यह कहने की आवश्यकता नहीं ।

कथा प्रकारों और अभिप्रायों में अंतर

कथा प्रकारों (Fable types) का क्षत्र अभिप्रायों की अपेक्षा सन्कुचित होना है । कथा प्रकारों की व्याप्ति मुख्यतः एक विशेष भौगोलिक क्षत्र में ही देखी जाती है

१ बदाय ३५३

2 A motif is the smallest element in a tale having a power to persist in tradition. In order to have this power it must have some thing unusual and striking about it —Stith Thompson Folktales Page 416

3 The motifs are seen to be an integral part of the plot —Solokov Russian Folktales Page 418

जब कि अभिप्रायो का क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय व्याप्ति लिये है। एक कथा रूप या प्रकार का जब अध्ययन किया जाता है तब उसके परिवर्तित रूपों के मध्य ऐतिहासिक सम्बन्ध का अनुसंधान करना भी आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए ऊपर 'क्यूपिड और साइक' तथा पुरुरवा और उवशी के कथा प्रकारों में जो निकट समानता देखी गयी उससे स्वभावतः अध्ययन का ध्यान इस बात पर जा सकता है कि इस साम्य का कारण क्या है? कहीं ऐसा तो नहीं कि पुरुरवा उवशी की वदिक कथा प्रकार (टाइप) के रूप में भारत की सीमाओं को लाँच कर पश्चिम में पहुँच गयी और वहाँ उसने क्यूपिड तथा साइक का कथा रूप ग्रहण कर लिया? और ऐसा क्या इसी एक कथा रूप के साथ हुआ या अन्य कथा रूप भी हैं जिनके कारण वतफे के साथ हम भी कहना पड़े कि यूरोप की लोक कथाओं का जन्म भारत में हुआ?

पर तु अभिप्रायो या कथानक रूढ़ियों के तुलनात्मक अध्ययन के समय उनके किसी ऐतिहासिक सम्बन्ध सूत्र को ढूँढने की आवश्यकता नहीं होती। यही कारण है कि जब लोक-कथाओं के विश्व-यापी मूल तत्त्वों के अध्ययन का प्रश्न उपस्थित होता है तब 'अभिप्राय (मोटिफ) कथा प्रकारों' (टेल टाइप्स) से अधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं। कथाओं के अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को दिखाने के लिए कथा अभिप्राय जितने महत्वपूर्ण और उपानेय हैं उतने कथा प्रकार नहीं।

कथा प्रकार और कथानक रूढ़ि के अंतर को स्पष्ट करने के लिए यहाँ सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों के कथा प्रकार तथा उनकी कथानक रूढ़ियों का उल्लेख करना उचित होगा।

सूफी प्रेमाख्यानो का कथा प्रकार

अधिकांश सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों के कथानक लोक-स्रोत से गृहीत हैं परंतु कुछ काव्यों के कथानक कवि कल्पित भी हैं। जहाँ तक कथा प्रकार का सम्बन्ध है दोनों में कोई विशेष अंतर नहीं है। कल्पित कथाएँ भी लोक कथाओं के ढर्रे पर खड़ी हुई हैं। सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों का कथा संगठन कुछ समान तीलियों के सहारे हुआ है। चदायन और 'मगावती' में लेकर 'प्रम दपण' (नसीर कृत) तक सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों की जो लम्बी परम्परा मिलती है उसमें कथा संगठन का अभूत समानता है यहाँ तक कि यदि पात्रों और स्थानों के नाम बदले हुए न हों तो एक कवि की रचना को सरलता से दूसरे कवि की रचना समझा जा सकता है। इससे एक प्रकार की एकरसता (मोनोटनी) इन कथा काव्यों में आ गयी है। केवल जान कवि ने कथानक के सम्बन्ध में कुछ स्वतंत्रता का परिचय दिया है। फिर भी सूफी प्रेमाख्यानो का अपना एक कथा प्रकार है जो परम्परागत रूप से चुका है। सूफी काव्य रचयिताओं में से बहुत कम की उमर रूढ़ परम्परागत चौखटे के बाहर हाथ पर पसागन का साहस हुआ है। सूफी काव्यों का वह कथा प्रकार कुछ इस प्रकार का है—

(१) नायक या नायिका प्रायः अपने माता पिता की इकलौती सत्ता

- होती है। उमका जन्म काफी जप-तप दान पुण्य अथवा किसी साधु से तब आशीर्वाद या उसके द्वारा प्रदत्त अभिमन्त्रित फल चक्र आदि के परिणामस्वरूप होता है।
- (२) ज्यातिपी नायक की जन्म कुण्डली बनाते समय भविष्य वाणियाँ बरतें हैं। प्रायः किसी के प्रेम में पड़ने और राजपाट छोड़कर चल-दौड़ की बात से पहले ही कह देते हैं।
- (३) नायिका या तो महल द्वीप की राजकुमारी होती है या किसी दूरस्थ देश की राजकन्या या परतु वह पदिमनी स्त्री के लक्षणों में युक्त तो होती ही है।
- (४) प्रायः गुण श्रवण स्वप्न दर्शन जीर्ण चित्र दर्शन से प्रेम उत्पन्न होता है। किसी किसी प्रमाख्यान में प्रत्यक्ष दर्शन से भी। प्रेम घटक का काय या ता कोई पक्षी करता है या कोई सखी या जन्मरा या देव।
- (५) कुछ सूफी प्रेमाख्यानों के नायक का एक विवाह हो चुका होता है और कुछ कुंवारे ही होते हैं। दूत चित्र या स्वप्न के माध्यम से नायिका की प्रशंसा सुन या उसको देख नायक प्रेम-पीड़ित हो जाता है।
- (६) नायक के रोग का निदान करने के लिए बख्त हकीम ओया-पंडित बुलाए जाते हैं व कोई रोग समझ नहीं पाते। अतः प्रेम राग का निदान करते हैं। नायिका प्रायः अपनी किसी विश्वस्त और जतरम सखी या बूढ़ी धाय से अपने मन का रहस्य बताती है।
- (७) नायक अपने माता पिता के सम्मान दुखाने की कोई परवाह न कर राजपाट छोड़ पूरव पत्नी को त्याग (यदि वह पहले से विवाहित है) नायक जो गिया का वेश धारण कर अपने कुछ साथियों के संग नायिका की खोज में निकल पड़ता है। मार्ग में अनेक विघ्न पड़ते हैं। राशस रक्षित बौहड मार्गों से भयकर बना और मात समुन्ने से उमका सामना होता है।
- (८) उसके खोज प्रयत्न में उसका गुरु कोई साधु सयासी या कहीं का राजा सहायक बनता है।
- (९) मानसरोवर त्रिवेणी मन्दिर या किसी उद्यान में नायक नायिका का मिलाप होता है। बहुधा यह मिलाप पूरव योजित होता है और कभी कभी आकस्मिक भी। नायिका के अपूर्व सौन्दर्य की शलक पाकर नायक मूर्च्छित हो जाता है। नायिका उसकी छाती पर या चौर पर कुद्व निखकर लौट आती है।

- (१०) नायक को शिव पावती या किसी अन्य परामानवीय शक्ति अथवा किसी सिद्ध की सहायता प्राप्त होती है। सिद्ध गुटिका या लोपाजन का भी प्रयोग होता है। कही-कही विवाह के लिए कुछ युद्ध भी होता है।
- (११) अतत नायक नायिका को प्राप्त कर लेता है। दोनों का समारोह-पूर्वक विवाह होता है। गूब दान-दहेज मिलता है। कुछ काल तक नायक अपनी समुराल में ही रहकर रस बेलि करता है।
- (१२) उधर उसकी पूव पत्नी विरहाकुल हो अपना विरह-सदेश किसी पक्षी या दूत के माध्यम से भेजती है। कही कही पवन का भी दूत बनाया गया है। इसी विरह वणन प्रसंग में बारहमासा या छ मासा या दोनों का चित्रण होता है। यह भी एक रूडि बन गयी है। नायक यदि पूव विवाहित नहीं होता तो उस स्वप्न में रा रोकर अघे हए अपन माता पिता दिखाई देते हैं।
- (१३) पूव पत्नी का संशेष पाकर या स्वप्न से सूचना पाकर उसे घर की याद हो आती है और वह हठपूर्वक अपने श्वसुर से विदा लेकर नायिका की साथ ल चल देता है। उसके पास श्वसुर प्रदत्त हाथी-घोड़े लाव-लशकर तथा धन धाय भी होते ही हैं।
- (१४) भाग में विपत्ति आती है। समुद्र में तूफान आन से नायक की नौका या जहाज टूट जाता है। नायक-नायिका अलग अलग काष्ठ पत्तकी पर बहत हुए किसी तट या द्वीप पर जा निकलते हैं।
- (१५) पुन कोई परामानवीय शक्ति लक्ष्मी या समुद्र उनका मिलाप करगत हैं और नायक नायिका के साथ अपन दश पहुँचता है।
- (१६) उसकी पूव-पत्नी और नायिका म सौतियाडाह दिखाया जाता है। अतत वे दोनों (कही कहीं उनकी संख्या तीन भी है) साथ साथ मिलकर रहन लगती हैं। किसी किसी प्रेमाख्यान में नायक पूव-विवाहित नहा होता पर नायिका की खोज में जाते हुए उस भाग में किसी राजकुमारी (उपनायिका) से विवाह करना पडता है। उस दश में भी सौतिया डाह और सामजस्य का प्रसंग उपस्थित हाता है।
- (१७) कुछ प्रेमाख्यानों में तो मिलन के उपरांत कथा आगे नहीं चल्ती और वह सुखांत हो जाती है। किंतु कुछ प्रेमाख्यानों में मिलन के पश्चात भी व्यवधान उपस्थित होता है और कथा आगे खिचनी है। ऐसे स्थलों पर कोई खलनायक नायिका की रूप प्रशंसा किसी दुष्ट दूत या कुटीचर के द्वारा सुन नायक से उसकी माँग कर बठना

है। नायिका को फुमलान के लिए वह टूटी (कुटनी) भी भेजता है जिसे नायिका निकाल बाहर करती है परन्तु अपन सत से नहीं डिगती।

- (१८) नायिका का न देन पर खलनायक से नायक का युद्ध हुआ है नायक मारा जाता है नायिका और उसकी मौत नायक के शव के साथ चितारोहण कर सती हा जाती है।
- (१९) शकुन अथवा अशकुन का विचार भी प्रायः प्रत्येक काव्य में हुआ है।
- (२०) कथा में कही कही जादू मन् टोन टोटफ का भी उल्लेख मिलता है। जान कवि लिखित प्रेमाल्याना में यह विशेष है।
- (२१) सूफी कवियों ने कथा में प्रतीक-योजना और आध्यात्मिक प्रेम की तीव्रता का समावेश किया है।

यह है वह कथा प्रकार (टल टाइप) जिस पर अधिकांश सूफी प्रमाख्याना का संगठन हुआ है। यत्र-तत्र कुछ परिवर्तन भी दृष्टिगोचर होता है कुछ नयी उद भावनाएँ भी मिलती हैं परन्तु मूल ढांचा यही रहता है। सूफी प्रेमाल्यानों का यह साँचा (pattern) सूफी कवियों की अपनी उपज हा ऐसी बात नहीं। बहुत में असूफी प्रमाख्यानों का भी साँचा यही है। यही नहीं हिन्दी और हिन्दी-पूर्व के जन चरित काव्यों का भी साँचा बहुत कुछ यही है। निम्न ही यह साँचा सोक स्रोत की दन है पर सूफी प्रमाख्याना में यह रुढ़ हा गया है। इसलिए इस सूफी प्रमाख्याना के कथा प्रकार का नाम देना उचित है।

सूफी प्रेमाल्याना के काव्या में प्रयुक्त कुछ प्रमुख कथानक रूढ़ियाँ

सूफी प्रेमाल्यानों के उपयुक्त कथा प्रकार (टल टाइप) के आधार पर हिन्दी में जो प्रेमाल्याना लिखे गये उनमें अधिकांशतः भारतीय कथा साहित्य की चिराचरित कथानक रूढ़ियाँ का ही प्रयोग हुआ। उममान व्रत चित्रावती तक लिखी सूफी प्रेम कथाओं पर भारतीय कथा रूढ़ियों का ही विशेष प्रभाव दिखाई देता है। उसके अनन्तर जो प्रेम कथाएँ लिखी गयीं उनमें दखिलनी हिन्दी के सूफी प्रमाख्याना की दला गया प्रामी परम्परा की भाँ कुछ कथानक रूढ़ियों का ग्रहण जान लगा। जान कवि के काव्यों का मिमगाह दरियावादी के हम जवाहिर एव शव निमार के युमुफ जूतला में वह बात विशेषतः परिलक्षित होती है।

हिन्दी के सूफी प्रेमाल्याना के काव्यों में प्रयुक्त कुछ प्रमुख कथानक रूढ़ियाँ निम्नलिखित हैं—

१ निम्नमान राजा। सन्तान न हान के कारण दुःखी।

२ पुत्र (किमी किमा में पुत्री) उत्पन्न—

(क) ईश्वर भक्ति और जप-तप दान-गुण्य के प्रभाव में

- (ख) शिव (कही कही शिव पावती दोनों) के वरदान से
या अन्य देवताओं के वरदान से,
(ग) सिद्ध पुरुष के आशीर्वाद से,
(घ) मित्र पुरुष या ऋषि द्वारा प्रदत्त अभिमंत्रित फल की
रानी को सिलाने से ।
- ३ ज्योतिषियों द्वारा राजकुमार (या राजकुमारी) का भविष्य कथन ।
प्रेम वियोगी बनकर विशेष-यात्रा करने की बात ।
- ४ अल्पवयस में ही नायक सब विद्या-कला निपुण ।
- ५ आखेट खेलने जाकर भाग भूलना । किसी निजन वन में पहुँच
जाना । वहाँ एक सून महान में जो किसी राक्षस या नेव का होता
है सुप्त सुंदरी का दशन ।
- ६ राक्षस को मारकर सुंदरी का उद्धार । (कभी कभी यह सुंदरी
नायिका नहीं नायिका की सखी होती है) ।
- ७ मानमरोवर तट पर किसी सुंदरी का दशन उमसे प्रेम ।
- ८ चीर चुराकर अप्सरा का वेशवर्ती बनाना ।
- ९ राजकुमार होने हुए भी नायक का सामान्य जन जसा आचरण ।
- १० नायक नायिका में विग्रह ताप की तीव्रता हान पर बच ओझा का
रोग का निदान के लिए बुलाया जाना । निदान प्रेम रोग ।
- ११ नायक (क) पूव विवाहित या
(ख) नायिका प्राप्ति का प्रयास के मध्य उपनायिका
से विवाह ।
- १२ नायक नायिका के हृदय में परस्पर प्रेमादाय—
(क) प्रथम दशन से
(ख) स्वप्न दशन से
(ग) चित्र दशन से
(घ) रूपा गुण श्रवण से —
(i) पक्षी (ताता या स्वर्णिम हंस) के द्वारा,
(ii) भाट भाटिन या लोगों के मुख से,
(ङ) मूर्ति दशन से
(च) माहृचय से—
(i) एक गुरु की चटसारा में पढ़ते हुए ।
(ii) साथ साथ खेलते बूढ़े ।
- १३ नायक नायिका में पूर्वानुराग ।
- १४ नायक नायिका अत्यंत रूपवान् । विशेषतः नायिका जो ईश्वर
का प्रतीक । नायिका में पश्चिमी स्त्रियों का मंत्र लक्षण ।

हिन्दी सूफी वाक्य में पौराणिक आख्यान

- १५ नायक —आमा का प्रतीक अन उमम प्रेम की अपभ्रान्त लक्ष्यता । विरह की तीव्रता । यो तुल्यानुराग । मम प्रेम ।
- १६ प्रेम सम्बन्ध घटक
(क) पत्नी (ख) मखी (ग) भातिन (घ) परी या अप्परा
(ङ) अय काई ।
- १७ जोगी-वेश (नाथपथी नागियो जमा) धारण कर, किंगरी पर विरह का राग अनापन नायक का नायिका की खोज में निकल पटना (अकन या माधिया मन्ति) ।
- १८ प्रेम-योगी होने के कारण नायक मृत्यु से अभीत । प्रत्येक मकट का सामना करने का प्रस्तुत ।
- १९ मित्र देश या द्वीपतर की यात्रा ।
- २० शास्त्रन मानव भाषा-भाषी ताना ।
- २१ मानव भाषी पशु पत्नी ।
- २२ कोई माग निर्देशक गुण (आध्यात्मिक गुण)
(क) शास्त्रन तोना (ख) मिद्ध पुष्टप ।
- २३ माग की कठिनायों (आध्यात्मिक साधना के पथ में आनवाली कठिनायों की प्रतीक)
(क) माग में सात मागर
(ख) माग में सात बीहड़ वन
(ग) माग में दुग्म पवत
(घ) शिक पश-पत्नी मनुष्य भन्नी राक्षस पत्त्यानि ।
- २४ शकुना पर विश्वास साक माय शुभ अथवा जगुभ शकुन ।
- २५ मानमरावर (मानमरोटक) का चित्रण ।
- २६ चमत्कारिक और अविचमनीय घटनाओं की सृष्टि करके कौतुल या रोमांस उत्पन्न करना ।
- २७ नायक अशुभ शक्ति सम्पन्न । विरोधी कितना भी बलवान नायक ही अतन् विजयी ।
- २८ दुष्ट-बुद्धि राक्षस त्व प्रत या परिचा द्वारा नायक का कष्ट रना ।
- २९ विज्ञानकाय मनुष्य भन्नी राक्षस या त्व ।
- राजपत्नी (गण भण्ण) द्वारा—
 - (क) नायक की सहायता
 - (ख) नायक को कष्ट ।
- ३१ कोई देव या राक्षस भी नायिका का प्रेमी । वह नायक को कष्ट पहुँचाना है, या उन नायिका के पाम परैचन दन में बाधक बनना है

- या नायिका से नायक को विवृत्त कर देता है ।
- ३२ नायक नायिका को मिलाने में परामानवीय महायक
(क) देव (ख) परिया (जप्तराएँ) (ग) राजपक्षी या गरुड ।
- ३३ नायक (या नायिका) के दक्षी सहायक
(क) शिव पावती अथवा जय देवी देवता (वेश बदलकर)
(ख) आकाशवाणी (घटना प्रवाह को नयी गति देने के लिए नायक नायिका को किसी द्विविधापूर्ण स्थिति से उबारने के लिए किसी रहस्य कथन या साक्ष्य देने के लिए ।)
- ३४ पशु पक्षियों की बातचीत उनके अनजाने सुन लेना उससे किसी गुत्थी का सुलझ जाना या काय में सहायता मिलना या भावी घटना का सकेत पाना ।
- ३५ जादू-टोना यत्र मत्र सिद्ध गुटिका लापाजन (लुकाजन) उडन खटोला का आश्रय लेना (आकाश गमन या अदृश्य होने के लिए) ।
- ३६ नायक-नायिका का प्रथम साक्षात्कार—
(क) राजा की फुलवारी में
(ख) किसी मन्दिर (विशेषतः शिव-पावती के मन्दिर) में ।
- ३७ प्रथम साक्षात् होते ही नायक नायिका (अधिकतर नायक) मूर्च्छित । सुध आन पर उसके विरह-ताप में और वृद्धि ।
- ३८ नायक की भूच्छावस्था में नायिका का (क) उसकी छाती पर या (ख) चीर पर सन्देश निहकर गमन ।
- ३९ नायक या नायिका के पूर्व जन्म का प्रसंग-कथन अथवा दोनों का पूर्व-जन्म में भी प्रेमी होना (किसी किसी सूफी प्रेमालम्बन में ही यह कथा रूढ़ि) प्रेमियों के लाकात्तर सम्बन्ध का परिचायक ।
- ४० सहिदानि— (क) अगूठी (ख) सिर के बाल
(ग) नायक नायिका के बीच हुई कोई बात या घटना
(घ) अन्य कोई वस्तु ।
- ४१ नायक द्वारा (क) मतवाले हाथी (ख) हिंस्र पशु (सिंह),
(ग) राक्षस को मारकर नायिका की रक्षा करने पर या (घ) कोई कठिन काय-सम्पादन कर देने पर नायिका के माता पिता का प्रसन्न होकर नायक से नायिका का विवाह कर देना या उसे आधा राजपाट दे देना ।
- ४२ विवाह के लिए कोई कठिन शत— नायक द्वारा उसे पूरा कर दिया जाना ।
- ४३ नायिका द्वारा प्रेमी को गिरफ्तार करवा लेना ।

४४ नायिका जिस चाहती है उसमें उमर का विवाह न होकर ऐसे स हो जाना जिस वह नहीं चाहती—

(क) गन्त फहमी क कारण

(ख) माना पिता की इच्छा में ।

४५ प्रेम वचिता नारी का प्रतिशोध (नायक पर भूठा लाछन लगाकर उम दण्डित कराना) ।

४६ पहना बुझाना ।

४७ राजा और मन्त्री को माघ ही पुत्र उत्पन्न । राजकुमार के प्रेम प्रयत्न में मन्त्रि पुत्र का अभिन्न मित्र के रूप में सहायक और परामर्श ।

४८ नायिका का प्राप्त कराना किसी राजा का जा खाय विदुषे निराश्रित नायक का या ता अभिभावक होता है या उसका शरणदाता, सहायक हाना । इसके लिए नायिका के पिता या अभिभावक से युद्ध भी ।

४९ नायिका के माता पिता का प्रेमिया के मिलन में कटक बनना—
(क) कठोर माता (ख) कठोर पिता ।

५० अप्सरा मानव—ससग निषिद्ध ।

५१ रूप-परिवर्तन

(क) वेश बदलकर (ख) योनि परिवर्तन कर (ग) अभिमन्त्रित जल छिड़ककर (घ) मन्त्र-बल से या सिद्ध गुटिका मुह में रखकर (ङ) दिव्य परिधान पहनकर ।

५२ प्राण की अत्यन्त स्थिति (किसी राक्षस या देव के प्राण किसी वस्तु में—वन्दिनी राजकुमारी का रहस्य ज्ञात—उसकी सहायता से नायक द्वारा राक्षस या देव का वध) ।

५३ सुप्त सुन्दरी का जगान के टोटन ।

५४ यथा काम्य वस्तु दन वाता जानी ।

५५ (क) नायिका अप्सरा जाति की या
(ख) पूव जन्म में अप्सरा ।

५६ मूर्त्ति का जलहरण ।

५७ भाग्या का दिव्यमघात ।

५८ साहसिक काय करने के लिए बीडा उठाना ।

५९ आत्मत्याग करने की धमकी (प्रेम-पान के न मिलन की दशा में) ।

६० दुष्ट प्रवृत्ति माघु या दागी ।

६१ नायक-नायिका के प्रेम का परीक्षा—किसी देवी या परामानवी शक्ति के द्वारा—प्रेम में दट पाकर उनकी सहायता

- (क) पावती द्वारा (ग) समुद्र-पुत्री क द्वारा (ग) किसी अय मनुष्य या परी (अप्सरा) द्वारा ।
- ६२ प्रतीक-कथन (नायिका द्वारा अपना प्रेम-भाव नाव ठाँव सम्पन्न आदि प्रत्यक्षत या स्वप्न म साकेतिक भाषा म नायक पर प्रकट करना । नायक का उन अपन मित्र की सहायता स जय-बोध कराना) ।
- ६३ स्वप्न विचार (साकेतिक स्वप्न की व्याख्या नायिका की सखी या नायक के किसी बुद्धिमान मित्र या अय द्वारा) ।
- ६४ काष्ठ-मजूषा (कठपौर) म नायक (नायिका) का बन्दकर समुद्र (नदी) मे बहा दिया (हूवा दिया) जाना । किसी मच्छ द्वारा उम निगल जाना या मछुजारे द्वारा बचाया जाना ।
- ६५ भाग्य परिवर्तन ।
- ६६ शाप (क) पत्थर हा जा,
(ख) मर जा,
(ग) पक्षी हा जा या अय को ।
- ६७ वरदान (क) ऋषि या सिद्ध पुरुष द्वारा
(ख) किसी देवता (मुख्यत शिव-पावती) द्वारा ।
- ६८ वृत्त पशु पक्षी (ख) वृत्त मानव ।
- ६९ वृत्त मानव ।
- ७० नख शिख-सौन्दर्य का माभिप्राय अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन और काव्य-न्द्विगत चित्रण ।
- ७१ सतखड़ी घौराहर पर नायक नायिका के प्रथम समागम का काम-शास्त्रीय अनावस्त चित्रण (आत्मा-परमात्मा के मिलन क प्रतीक रूप म)
- ७२ सच्च त्रिया (क) यदि मैं पतिव्रता रही होऊ या मन कभी असत्यवादन न किया हो तो अमुक काय हो जाए ।
(ख) मतीव की परीक्षा ।
- ७३ सत रक्षा (क) कुटनिया (दूतियों) द्वारा नायिका का सत से डिगान की चेष्टा । नायिका अद्विग ।
(ख) पति का वेग धारण कर व्यभिचारी पुरुष का जाना । सतवती नागी छली नहीं जाती ।
- ७४ खलनायक द्वारा नायक नायिका का अस्थायी वियोग करा देना ।
- ७५ मिलन-उपाय पथिका स प्रेम पात्र (या प्रेम पात्रा) का पता पाने के निम्न—

(क) पथ पर प्रामाण बनवान

(ख) घमशाता बनवाकर सदावत्त बँटवाना एव
(ग) अय उपाय ।

७६ अपन से बडे क पास भोजना (‘ओल्डर एण् ओल्डर मोटिफ)

७७ निषेध—(क) वजित कश्य म प्रवश

(ख) वजित दिशा म गमन ।

७८ विवाह क बाद नायिका के पिता द्वारा पूरा (या आधा) राजपाट
देकर नायक को अपन देश म ही रोक लेना (अपना उत्तराधिकारी
बना देना) ।

७९ नायक को अपने दश की (माता पिता की या पूव विवाहिता पत्नी
की) अचानक मुधि आ जानी—

(क) पूव विवाहिता पत्नी का विरह-सन्देश पाकर —

(i) किमा दूत द्वारा (मानव या पवन द्वारा)

(ii) किमी मानव भाषी पक्षी द्वारा ।

(ख) माता पिता का सदश पाकर

(ग) स्वप्न म वृद्ध माना पिता को अथा या दुखी देखकर ।

८० विदाई म नायक का समुराल स हाथी घाडे स्वर्ण रत्न जवाहर
आदि का प्रभूत दहेज पाना ।

८१ ब्राह्मण वंश म आकर समुद्र का दान माँगना । नायक का लोभ म
आकर उस टाल देना फलस्वरूप समुद्र म बोहित के साध ही
उस सम्पत्ति का डूब जाना ।

८२ नायक की वापसी यात्रा म समुद्र म तूफान । उतासल तरंगों । भँवर
म पडकर जल-यान का टूट जाना । नायक-नायिका का काष्ठ-
फनका क सहार अलग जलग दिशाआ म बह जाना । प्राण रसा—
समुत् या समुद्र की बटी लक्ष्मी द्वारा ।

८३ सागर और लक्ष्मी द्वारा नायक-नायिका क पुनर्मिलन म सहायता ।

८४ नायक-नायिका का सकुण्टल अपन रण म आगमन । पूव विवाहिता
पत्नी तथा माता पिता हृषित ।

८५ सौतिया डाह (नायिका और उपनायिका म कलह) । नायक द्वारा
बीच द्विबाव करक मौना म मौमनस्य स्थापित करना ।

८६ नायक का मरुतु हान पर नायिका और उपनायिका का उमक रण
क माध घिता म चनकर मती हा जाना ।

७ प्रकृति का उद्दीपनगत चित्रण

(क) सगाप पय म छ मामा

(ख) विमोग पय म— बारहमाना ।

सूफी प्रेमाख्यानों की कथानक-रूढिया का अध्ययन

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो में जिन कथा रूढिया का प्रयोग हुआ है उनमें से कुछ की ओर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अपन हिंदी साहित्य उसका उत्थन और विकास शीपक इतिहास ग्रंथ में कदाचित्त सबप्रथम संकत किया है।^१ हिंदी साहित्य का आदिकाल में भी उन्होंने 'पदमावत में भारतीय कथा रूढियो क व्यवहार की उपयोगी चर्चा की है।^२ उमी को आधार बना कर पदमावत का काव्य सोदय में प्रो० शिवसहाय पाठक ने पदमावत' की कथानक रूढियो पर विस्तृत विचार किया।^३ डॉ० शम्भूनाथ सिंह ने भी हिंदी महाकाव्य का स्वरूप विकास में पदमावत की कथानक रूढिया का नामोल्लेख किया है। डॉ० सत्यद्वे न डी० लिट० के अपन शाध प्रबंध मध्ययुगीन हिंदी साहित्य का लाकतात्त्विक अध्ययन में पदमावत की कथानक रूढियो का उल्लेख करने के अतिरिक्त कुछ विशेष अभिप्रायो पर विस्तृत विचार भी किया है। हिंदी क सूफी प्रेमाख्यान^४ (आचार्य परशुराम चतुर्वेदी) और मध्ययुगीन प्रेमाख्यान^५ (डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय) में भी सूफी प्रेमाख्याना की कतिपय प्रमुख कथानक रूढिया का उल्लेख हुआ है।

अब तक सूफी प्रेमाख्यानों की कथानक रूढियो पर जा काय हुआ है उसमें या तो किसी एक प्रेमाख्यानक काव्य (मुख्यतः पदमावत) की कथानक-रूढियो पर विचार हुआ है या सूफी प्रेमाख्याना को समग्र रूप संलकर उनकी कुछ प्रमुख कथानक-रूढियो का उल्लेख मात्र कर दिया गया है। एक एक सूफी प्रेमाख्यान-काव्य को लेकर उसकी कथानक रूढियो का संग्रह करने और उनका वर्गीकरण करने का अभी तक कोई प्रयास नहीं हुआ है। डॉ० सावित्री सरिन ने ब्रज की लाक कथाओ के अभिप्रायो का वर्गीकरण और क्रमांकन सिटथ यामसन की अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली को अपनाकर किया है। उस काय का पुरस्सर करते हुए इस अध्याय में सूफी प्रेमाख्यानों की केवल पौराणिक कथानक रूढिया का उनकी अंतर्राष्ट्रीय विरादरी में बठान की चेष्टा यामसन प्रणाली के अनुसार की गई है।

यद्यपि हमने अपन अध्ययन क्रम में समस्त हिंदी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो की कथानक रूढियो के विश्लेषण, वर्गीकरण तथा क्रमांकन का काय पूरा कर लिया है तथापि इस अध्याय में केवल पौराणिक कथानक रूढिया (पौराणिक कथाओ में व्यवहृत रूढिया) का ही उल्लेख किया जाएगा।

१ हिंदी साहित्य उसका उदभव और विकास प्रथम संस्करण १९५५ प २६७-२६८

२ हिंदी साहित्य का आदिकाल तटीय संस्करण १९६१ ई प ८-८१

३ पदमावत का काव्य सोदय प्रो० शिवसहाय पाठक प्रथम संस्करण १९५६ प० ३५-५६

४ पृष्ठ ५६१

५ पृष्ठ २७६-२८८

६ पृष्ठ ६४

७ पृष्ठ १७१-१७४

एम	(न)	अप्राकृतिक दूरता विषयक अभिप्राय
टी	(प)	यौन (सम्भ) या विवाह और प्रेम सम्बन्धी अभिप्राय
यू	(फ)	जीवन र मृत्यु सम्बन्धी अभिप्राय
ह्वी	(ब)	घम विषयक अभिप्राय
डब्ल्यू	(भ)	चारित्रिक विशेषताओं-सम्बन्धी अभिप्राय
एक्स	(म)	विनोद (हास्य) विषयक अभिप्राय
वाई	(व)	(यू) वगैरे अभी अनिर्धारित ही है)
जड	(य)	अभिप्रायों के अन्य विविध समूह (अवर्गीकृत अभिप्राय आदि)

उपरोक्त वर्गों में से आर्य (ए) ओ (उ) यू (फ) एक्स (म) और वाई (व) वर्गों का छोड़कर शेष सभी वर्गों की कथानक रचियाँ सूर्यी कवियाँ द्वारा लिखित प्रेमाख्याना में प्राप्त हुई हैं।

आग इन काव्यों की केवल पौराणिक कथानक रचियाँ का एक वर्गीकृत कोश दिया जा रहा है जिसमें नवीन (माटिफ दृष्टकस म असम्मिलित) रचियाँ का भी निर्देश + चिह्न द्वारा कर दिया गया है। इस काश में प्रमुख ३५ प्रेमाख्यानों की कथानक रचियों का वर्गीकरण किया गया है। प्रथो क नाम क सहाय साकेतिक शब्द प्रत्येक रचि के आग द दिय गए हैं जिससे पता चल सके कि वह रचि किस किस काव्य में मिलती है।

१ जिन प्रमाख्यानों में पौराणिक कथानक रचियों का प्रयोग हुआ है, उनके नाम और उनके स्रोतों (जिनका उपयोग कथानक रचियों में किया जाएगा) उनके प्राग कोष्ठक में दिये जा रहे हैं -

(१) अदायन (५०) (२) मगावत (म) (३) पदमावत (५०) (४) विधरवा (वि०) (५) मधुमालती (मधु) (६) माधवानल-कामकदता (मा०) (७) चिन्तावली (चिन्ता) (८) ज्ञानगीत (११०) (९) कथा अदायती (अ०) (१०) कथा असावती (असा०), (११) कथा अनावती (अना०) (१२) कथा अनीहनी (नी) (१३) कथा कामलता (काम०) (१४) कथा अनावती (अ०) (१५) कथा अनीहनी (नी) (१६) कथा अनावती (अ०) (१७) कथा अनीहनी (नी) (१८) कथा अनावती (अ०) (१९) कथा अनावती (अ०) (२०) कथा अनावती (अ०) (२१) कथा अनावती (अ०) (२२) कथा अनावती (अ०) (२३) कथा अनावती (अ०) (२४) कथा अनावती (अ०) (२५) कथा अनावती (अ०) (२६) कथा अनावती (अ०) (२७) कथा अनावती (अ०) (२८) कथा अनावती (अ०) (२९) कथा अनावती (अ०) (३०) कथा अनावती (अ०) (३१) कथा अनावती (अ०) (३२) कथा अनावती (अ०) (३३) कथा अनावती (अ०) (३४) कथा अनावती (अ०) (३५) कथा अनावती (अ०)।

पौराणिक कथानक रूढि कोश

क (ए)—धमगाथात्मक अभिप्राय (Mythological Motifs)

+	क (ए) १०२ १३	दयालु शिव	प०, चित्रा ना०
+	क (ए) १०२ १३	दयालु पार्वती	प०, चित्रा०, ज्ञा० इ०
	क (ए) १२४ १	शिव	प० चित्रा० ज्ञा०
	क (ए) १८५	देवी और देवता उन नायिका की सहायता करते हैं जिनको वे चाहते हैं	प०, चित्रा० ना०
+	क (ए) १८८ १	इंद्र वायु यम आदि का घर बन जाना	नद०, नल०
+	क (ए) २६३ ३	धरुण	नद०, नल०
+	क (ए) २ ७	इंद्र	नद०, नल०
	क (ए) ४७३	लक्ष्मी	प०
+	क (ए) ४८७	यम	नद०, नल०
	क (ए) ४६३	अग्नि	नल०
	क (ए) ५२४	दयालु विक्रम	मा०
+	क (ए) ६६१	इंद्रपुरी	मा०
	क (ए) ६६१ ४	इंद्रसभा	मा०
	क (ए) ११०१ १	कलियुग	नद०, नल०
	क (ए) —	देवी देवता का स्वप्न म या साक्षात् दर्शन देना— भक्त की सहायता करना	ज्ञा०, इ०

ख (बी)—पशु पक्षी विषयक अभिप्राय

	ख (बी) १२२ ३	सवन या शास्त्रवक्ता तोता (हीरामन)	प०
	ख (बी) १३१ २	चतुर तोता	प०
	ख (बी) २११	पशु का मानव वाणी म बोलना	यू०
	ख (बी) २११ ३४	मनुष्य भाषा भाषी पक्षी, (तोता)	प० मधु०, पु०, इ०
+	ख (बी) २६१ १	हम दूत	नल०
	ख (बी) २६१ १ ६	तोता दूत	प० इ०
+	ख (बी) २६६	मन्त्री निभानेवाल पशु (पक्षी भी)	ल०
	ख (बी) ३६०	वृत्त सप	नद०, नल०
	ख (बी) ३६४ २	वृत्त सप—अग्नि से रक्षा करने क कारण	नल० नद०
	ख (बी) ३६६	वृत्त पक्षी तथा वृत्त मनुष्य हस (कद स छुड़ाने के कारण)	कला० नल०
	ख (बी) ३६६	वृत्त पक्षी—ताता (कद से छुड़ाने के कारण)	प०
	ख (बी) ४४१ १	सहायक धानर (वनमानुष)	चित्रा०
	ख (बी) ५०१ ४	शरीर की काइ वस्तु दकर सहायता करना	नद० नल०

२६२ हिन्दी सूफी वाक्य म पौराणिक आख्यान

स (बी) ५११ १३	साँप से विष रिचवाना (पूरुवरूप प्राप्त करना नद०, नल०)
स (बी) ५८२ २१	गरुड भरण्य पति्या द्वारा नायक की सहायता (राज पथी द्वारा) प० चित्रा० क० रतन०
स (बी) ५८२ २३	वर दूँडनवाला हंस नल०
ग ('सी) — बजन या निषय (Taboo) विषयक अभिप्राय	
ग (मी) ६६	मानव और परामानव (अप्सरा) म यौन-मसग निषिद्ध म० मधु० मा०, पु० र०
+ ग (सी) ११६	पत्नीवत व्यवहार का निषेध म०, मधु० क० स० पु० ल० सू०
ग (सी) ६१६ ४	विभी विशेष द्वीप म एक विशेष लक्षण-सम्पन्न स्त्रियो का होना—सिंहल द्वीप म पदिमनी स्त्री प० नद०
ग (सी) ६५२	अय लोक पहुँचना (यात्रा) मा०
ग (सी) ६६१ २	पत्थर बनना ह० (अधूरा योग छोडन के कारण योगी वीरनाथ के चेले पत्थर हो गय)
ग (सी) ६६१ २	शाप देकर अप्सरा को पत्थर बना दना मा०
ग (सी) ६६२ २	निषय भग करन के कारण व्यक्ति को दूसरे लोक म रहना ही पडेगा मा० (जीवती अप्सरा को मत्युलोक म रहन की आज्ञा इन्द्र द्वारा)
ग (सी) ६८७	शापित होना मा०
+ ग (सी) ६८६	मरना प० मा०
घ ('डी) — जादू (Magic) और रूपांतरण (Transformation) सम्बन्धी अभिप्राय	
घ (डी) १२	रूपांतरण (वश परिवर्तन स रूपांतरण नायक की परीक्षा लेन क लिए पावती और लक्ष्मी आदि दवियो का नायिका का रूप धारण कर प्रकट होना) प०, स० छी० इ०
घ (डी) ५२ १	मानव कुरूप बना नद० नल० (नल सपत्नश से कुरूप)
× घ (डी) १५२ ६	रूप परिवर्तन हो जाने पर भी पूव स्मृति का बने रहना मधु० पु०
+ घ (डी) १७३	योगी का जादू शक्ति (नायक को लाना) (नायिका का लाना) ह०

- घ (डी) १८० मनुष्य को कीड़ा बना देना मा० (जीवन्ती अप्परा माघव० को भीरा बनाकर कचुकी में छिपा लेती है और इन्द्रलोक दिखा लाती है)
- घ (डी) २३१ मानव पत्थर बने ह०
- + घ (डी) २३१ १ स्त्री पत्थर बनी मा०
- + घ (डी) ३३६ समुद्र ब्राह्मण का वेश धरकर प्रकट हुआ—प० इ०
- घ (डी) ४३६ ५ अप्सरा का नायिका (मानवी) के रूप में अवतार (जयती अप्सरा कामकदला के रूप में जमी)
- घ (डी) ४३६ ५ शिव विष्णु आदि देवताओं का मानव रूप धारण कर प्रकट होना—प०, चित्रा०, नद० नल०
- घ (डी) ५३० चमड़े का वस्त्र (साप की केंचुल) पहनने से रूप परिवर्तन नद०
- घ (डी) ५६२ स्नान करन से रूपान्तरण । यू० (देवदूत जवरल के कहन से जुलैसा ने सरोवर में स्नान किया और साठ वष की अधी बुद्धिया से चौदह वष की युवती बन गयी)
- + घ (डी) ५६६ जादू तंत्र-मंत्र का प्रयोग (विद्याधरी शक्ति से)
च०, प० मधु० चित्रा० ना० पु०, ह०
(यभिणी सिद्धि के बल पर राघवचेतन न दूज का चन्मा दिखाया प०)
- घ (डी) ६५८ १ नारी को छलन के लिए उसके पति (प्रेमी) का रूप धारण कर लेना स०
- घ (डी) ६६१ रूप परिवर्तन—दण्डस्वरूप मधु०, मा० पु०
- घ (डी) ७०० वाद में मन से जादू उतारना मधु० पु०
- घ (डी) ८११ १ देवी-वता (इंद्र, ब्रह्मा, शिव, भवानी आदि स) जादू की वस्तु उपहार में पाना । (यहा इंद्र बरुण यम शिव) प० नद०
- घ (डी) ८१२ १ साधु-तपस्वी द्वारा प्रसन्न होकर वरदान—जादू की वस्तुएं उपहार में देना रत्न० म०
- घ (डी) ८२८ १ नर्राती अप्परा का चीर चुराकर उसे अपना वशवर्ती बनाना म० ह०
- + घ (डी) ८५२ २ मंत्र से रूप-परिवर्तन मधु०, पु० (मधुमालती की माँ न मंत्र पढ़कर मधु के ऊपर जान फेंका, वह पत्नी हो गयी)
- घ (डी) ८६१ ४ १ प्रेमी द्वारा दूती (कुट्टनी) भेजी गयी प० स० इ०
- घ (डी) १००३ जादू का रक्त (रक्त बिन्दु से जीवनदान) नद०, नल०

- घ (डी) १२७३ जादू का मंत्र मधु०, क०, पु० छ०, नल०, ह०
- घ (डी) १३४६ १२ अमृत मा० न०, नल०
- घ (डी) १३४६ १२ अमृत लाकर जीवित करना (बताल द्वारा) मा०
- घ (डी) १३६१ २३ अदृश्यता—मंत्र बल से क०, न०
- घ (डी) १४२० ४ महायक का आना—पुकारन से या स्मरण करनः म च० नद० नल०
- घ (डी) १४४१ ११ वीणा वादन से पशु-पक्षी मोहित छी०
- घ (डी) १४७२ १६ घड़े या कढ़ाही में (यहाँ सिद्ध प्रदत्त चोली में) इच्छा नुसार भोजन लाभ पा०
- घ (डी) १४३२ ५ उड़नखटोला (विमान) पर बैठकर उड़ना पा०
- + घ (डी) १६४८ १ अग्नि छनी पड़ गयी पा० नद० नल०
- घ (डी) १७१२ ज्योतिषी (भविष्यवक्ता) प० चि० मधु० चित्रा०, ना० ह० आदि प्रायः सभी प्रेमार्थ्याना में ।
- घ (डी) १७१३ तपस्वी साधु या योगी की करामाती शक्ति प०, चि० चिना० ना० ह०
- घ (डी) १७१४ १ सती की करामाती शक्ति नद० नल० ह०
- घ (डी) १७१६ ३ परामानवीय जाति (अप्सरा गणव विद्याधर) की की जादू शक्ति मधु० पु० ह०
- घ (डी) १७१६ ५ परी जाति की जादुई शक्ति मधु०, पु० रु० ह०
- घ (डी) १७३३ ३ तपस्या से प्राप्त जादुई शक्ति प० ह०
- घ (डी) १७७७ ध्यान करत ही त्याग देवता (यहाँ सिद्ध पुरुष) का सहायताय प्रकट होना चि० न०
- घ (डी) १८१० ३ ३ ६ भावी पति-पत्नी का स्वप्न में दर्शन क० न० न०, नल० ह० यू०
- घ (डी) १८१० ८ ३ स्वप्न में सूचना मिलना या स्वप्न से भविष्य ज्ञान ह० यू०
(हमें न स्वप्न में माता को बिरह में अधी देखा ।
शुक्र ने ग्याह ग्रहा और रवि शशि का सिर
नवाते स्वप्न में देखा—याकूब ने बताया कि यह
राजयोग का लक्षण है) ।
- घ (डी) १८१२ ५ शकुन से भविष्य ज्ञान शकुन-अपशकुन प० मधु० ना० नल०
- + घ (डी) १८१२ ४ दायी अक्ष का फटकना (पुरुष के लिए शुभ स्त्री के लिए अशुभ) प० ह०

- + घ (डी) १८१२५ बायें अंग का फडकना (स्त्री के लिए गुम, पुरुष के लिए अगुम) प०, ह०
- + घ (डी) १८१३१ स्वप्न में जानना रतन०, ह०
- + घ (डी) १८१४३ स्वप्न में उचित माग दशन च०
- घ (डी) १९८३१ अदृश्यता—देवता के वरदान से नद०, नल०
- घ (डी) २००३१ पति का पत्नी को भूलना प०
- घ (डी) २०६१२५ सतीत्व के प्रताप से मृत्यु (व्याघ की) नद० नल०
- घ (डी) २०७४२५ प्राथना से महायक बुलाना च०
- + घ (डी) २१६३२१ युद्ध में नायक का दवी सहायता प०
- + घ (डी) २१६६ परकाय प्रवेश ना०
- + घ (डी) २१६६ प्राण डालन की शक्ति ज्ञा० (शिवजी ने कामज के घोड़े में प्राण डाल दिये) ना०

घ ('ई') मतक (पुनरुज्जीवन), भूत प्रेत आदि

- च (ई) ५२ मप डोंसे को जिलाना मत्र से न०
- च (ई) ८० जिलाना अमत से मा०
- च (ई) १०२२ जिलाना अमत छिड़ककर मा०
- च (ई) ६०१ पूवजम की याद होना (पूव योनि की बात याद रखना) मधु०, पु०
- च (ई) ६०५२ देवता मानव के रूप में अवतरित मा० (माघवानल कामदेव का अवतार)
- + च (ई) ६६३ अप्सरा का पुनजम मा०
- च (ई) ७८३ ववघ (दिना तिर के घड) का युद्ध प०

छ (एफ) चमत्कारिक (आश्चर्यजनक)

- + छ (एफ) ११ इद्रपुरी की यात्रा मा०
- छ (एफ) १७४ परामानवीय पत्नी द्वारा नायक को अय लाक (इद्र-लोक) में ल जाना मा०
- + छ (एफ) २१५ अप्सरा म० मा०, मधु० पु० ह०
- छ (एफ) २३४२५ अप्सरा मुन्त्री स्त्री के रूप में म० मधु मा०, पु० ह०
- छ (एफ) २३४३ अप्सरा वस्तु के रूप में मा० (अयन्ती अप्सरा पत्थर के रूप में)
- छ (एफ) २५२१२ इद्र अप्सराओं का राजा मा०
- छ (एफ) २५२४ अप्सरा का जप्सरा-लोक से निष्कासन मा०

- छ (एफ) २५२४१ अप्सरा दुराचरण के लिए निष्कासित मा०
 छ (एफ) २५३ अप्सराओं की असाधारण शक्ति म० मधु० ह०
 छ (एफ) २६२ परिया का उन्नाह
 छ (एफ) ३०१ अप्सरा प्रमिका म० मधु० मा० पु०
 छ (एफ) ३०२४२ अप्सरा मनुष्य के वश में—उसके पल चुरा लेने पर—
 उन्हें पुनः प्राप्त कर लेने पर वह नायक को छोड़
 जाता है म०
 छ (एफ) ३०२४२१ कपड़े चुराकर पर काढ़ पाना म० ह०
 छ (एफ) ३०२६२१ तबला (मदग) बजाकर पत्नी का प्रसन्न करके उस
 पाना (संगीत के माध्यम से प्रमिका की प्राप्ति) मा०,
 क० को छोड़ो
 (पुनः वीन बजाकर बलावता का माहित कर
 लेता है)
 छ (एफ) ३३६ परी उस जादूमी के प्रति निष्ठावान रहता है जिसके
 पाम उसका चार हाता है म० ह०
 छ (एफ) ३६६२ अत्मरा मृत्यु की सेवा करती है ह०
 छ (एफ) ३७० अप्सरा लोक (इंद्रलोक) में मानव पुत्र मा० २०
 छ (एफ) ४१६२ प्रमिका को ल उड़नेवाला दब—कै० सु०
 छ (एफ) ५३१ राक्षस या दब (विशालकाय राक्षस) मधु० पु०
 २०, सु०
 छ (एफ) ५३१२११ दब पत्नी मा (विशालकाय) मधु० पु० २०, सु०
 छ (एफ) ५७१२ अपन से अधिक बूढ़े (अपन से अधिक पानी) के पास
 भेजना २०
 छ (एफ) ५७५१ असाधारण सुंदरी सभी प्रेमाख्याना की (नायिका—
 असाधारण सुंदरी—उसका नख शिखर वगैरे)
 छ (एफ) ६०१ असाधारण माया (पुनः पुनः जान माटिक) चि०
 पु० २० का०, सु० ह०
 छ (एफ) ६२१ असाधारण शक्तिशाली—नायक चि०
 + छ (एफ) ६८० असाधारण संगीतज्ञ—नायक मा० छी०
 छ (एफ) ७६६ मिह्र द्वीप प० चि० नद०
 छ (एफ) ८६६ आकाशवाणी—मतीत्व की साक्षी बन हुए नल०
 छ (एफ) ८६६ आकाशवाणी—नायक या नायिका की कठिनाई हल
 करने के लिए नल० २०
 छ (एफ) ८६६ आकाशवाणी—नायिका की प्राप्ति का उपाय बत
 लाना इ०

छ (एफ) १०४१ १ २ २ ३	मत्यु (पत्नी या प्रेमिका की) पति (प्रेमी) की मत्यु सुनकर मा०
छ (एफ) १०४१ ३	रो रोकर अधा होना ह० तथा अ य कई प्रेमाख्यानो म नायक के मातृपिता अधे (जुलजा मसुफ क बिरह म रो रोकर अधी)
जी) दयत (राक्षस) विषयक अभिप्राय	
ज (जी) ११ ३	नर भक्षी राक्षस म० प० र० (मगावती म मनुष्य-भक्षी गरिया एक राक्षस हो है)
ज (जी) ३६६ १	राक्षस—मुद्गर राजकुमारी का प्रेमी म० मधु०, क०, पु०, र०
ज (जी) ५०० २	रक्षम की पुत्री महायक र०
एच) परीक्षाएँ	
(एच) ११	सहिदानी (पहचान या स्मृति चिह्न) मधु० चित्रा०, कला खि० ह० इ०
झ (एच) ११	सहिदानी नायिका न दूत के हाथ अपना प्रीति चिह्न (एक दर्पण) भेजा चित्रा०
झ (एच) ६४	सहिदानी मुद्रिका (अगूठी) मधु०, खि० ह०
ण (एच) ६६	पहचान सच्च निया स नद० नल०
ण (एच) ३१२	वर-कसौटी शारीरिक मानसिक योग्यता इ० मो०
ण (एच) ३२४	वर कसौटी एक-से वेश म सजे हुआ म स अपना वर चुनना नद० नद०
ण (एच) ३८१	वधू-कसौटी सहल द्वीप की पश्चिमी प० नद०
ण (एच) ४११	सन-परीक्षा च० चद्र० नद०
ण (एच) ४१३	सती गक्ति नद० नल०
ण (एच) ४५२	सन परीक्षा भेष बदलकर ह०
ण (एच) ५४१ १	पहली का उत्तर दा नहीं तो मत्यु दण्ड मिलगा मा०, छ०
ण (एच) ६०७ ३	प्रतीक म प्रेम निवेदन—नायिका द्वारा ऋ०
ण (एच) ६११	प्रतीक-सदश भेजना छ०
ण (एच) ६१७	प्रतीकात्मक स्वप्ना की व्याख्या प० यू०, ट०
ण (एच) ६८४	साधु की सहायता से काय करना ह०
ण (एच) ६८७	जादू की वस्तु की सहायता से काय करना छ०, ह०
ण (एच) ११५१	वर कसौटी—काय पूरा करना (द्विवाह) की शत छ ३०

- झ (एच) १२३३ ३ यात्र म (नायिका की) महायता—माधु द्वारा क०,
६० अनु०
- झ (एच) १२३६ २ यात्र म बीहड़ माग २०
- झ (एच) १२३६ ४ खोज म कतिन रास्ता—राक्षस रगिन २०
- झ (एच) १३८१ ३ यात्र—स्वप्नशित नायिका की ह०, २०
१०२
- झ (एच) १३८५ प्रिया की खोज म० प० मधु० चित्रा०, २० ह०
६० आदि
- झ (एच) १३८५ खोज—खापी हुई प्रमिता की च० ह०
- झ (एच) १३८५ ३ यात्र—खापी हुई पानी की च० ह०
- झ (एच) १५५२ परीक्षा—दानव्यता की प० ह०
- झ (एच) १५५६ पातिव्रत-परीक्षा (पत्नी न सतीत्व की परीक्षा) च०
प० न० च० २० २०
- झ (एच) १५५६ ४ प्रेम म मत्पता की परीक्षा प० मा० बु० २० च० ६०
- + झ (एच) १५६६ एकाग्रनिष्ठा की परीक्षा प० मा० च० ६०
- + झ (एच) १५६६ मत्पतादिता का परीक्षा च० (अष्टधातु की मूर्ति मन्वी
धातु मुनकर मोन रहनी है ओर झूठी बात मुनकर हँस
दती है)
- ट (ज') ज्ञान एव बुद्धि (बुद्धिमान तथा मूल) शिष्यक अभिप्राय
- + ट (ज) ८८२ प्रेमपीडित (विषागी) का देव प्रेम-पीडित (विषागी) का
दात्म मधु० ल०
- + ट (ज) १०७६ आत्मदया की धमकी देकर काय करवाना च० प०
- + ट (ज) ११४५ पक्षी एव पशु की महायता स (नायिका का) पता लगाना
प० ह०
- + ट (ज) ११४६ झूठे स्वयंवर के डोंग म (नायक का) पता लगाना नद०
न०
- + ट (ज) ११९० मूर्त्तिया (चित्रा) म से अपनी मनचीती मूर्त्ति (चित्र)
की पत्रडना (छाँटना) नद०
- + (ज) १६६६ प्रतीक-वचन ममभना ह० भा०
- ठ ('के') घोषे विषयक अभिप्राय
- + ठ (के) ५२० माती पानी को छोड़ बच भागना न० नल० भेष
वत्वर वचना २०
(नपन्वी न नानमिह को उसके स्वमुर से वचन के लिए
उमका जोषी रूप बना दिया)

- ठ (के) १२३७ जूए म हराना और बंद करना [देश निकाला देना] नद०, नल०
- ठ (के) १३२१७ अत पुर प्रवेश स्त्री वेश म ज्ञा०
- ठ (के) १३३५ नहाती लडकी (अप्सरा) के कपडे चुराकर उसे छलनाया रिभाना या विवाह करना म०
- + ठ (के) १३६६ परती का रूप घर व्यभिचार चेष्टा प०
- ठ (के) १५०१ पुरुष को छिपाकर रखना (नायिका द्वारा) च०
- + ठ (के) १८१७ ११ जोगी का वेश धारण करना। (कथा, भस्म, अधारी, रुद्राक्ष की माला किंगरी (सारंगी) आदि) नायिका का वियोगी और अवपक बनकर च०, म० प०, मधु० कला० रु० ज्ञा०, ह० इ०
- + ठ (के) १८२७ साधु के वेश म राक्षस (दव) रतन०
- ठ (के) १६३५ ब्याही गयी नायिका का चुराया जाना ह०
- ठ (के) १६६१ कपटी साधु च० (टाटा जोगी)
रतन० (दव साधु के वेश म)
- ठ (के) २१११ २ प्रेम निवेदन ठुकराय जाने पर झूठा अभियोग यू०
- ठ (के) २११४ नायक पर झूठा अभियोग व्यभिचार का यू०
- + ठ (के) २१२६ झूठा अभियोग चित्रा० यू०
- ठ (के) २२२२ ईर्ष्यालु सौत (सौतें) (सौतिया डाह) च० प०, ह०
- ठ (के) २२८६ खलनायक प० चित्रा० क० छी०, ह० इ०
- ड ('एल') भाग्य का पलटना
- ड (एल) १११ २ भावी नायक का किसी नाब मजूपा या शाडीम पाया जाना (यहाँ मजूपा) ना०
- ड (एल) १२३ दारिद्र नायक मा० कल०
- + ड (एल) १६१ गणिका का किसी क प्रति एकनिष्ठ प्रेम मा०
- ड ('एम') भविष्य निर्माण (निर्देशन), भविष्यवाणिया शाप आदि
- + ड (एम) १३० प्रेमिका को दूढ़ने जाने पर राह म दूसरी स्त्री (उप-नायिका) से भी विवाह च० चित्रा० ज्ञा० ह०
- + ड (एम) १५० नायक या नायिका की वापस आने की प्रतिज्ञा दु०
- + ड (एम) ३०२ भविष्यवाणी म० प० चि० मधु० चित्रा० ना० नद०, नल० सु० पु० र० छी० ह० इ०
- + ड (एम) ३१० पुत्री के विवाह की भविष्यवाणी चि० नल०
- + ड (एम) ३१० स्वामी से मिलाप की भविष्यवाणी नद० नल०

- + ड (एम) ३१० खान म मफत्रता (नायक या नायिका की प्राप्ति)
की भविष्यवाणा च० नद०, नल ह०
- न (एम) ३११ पुत्र पत्रवर्ती राजा बनेगा—भविष्यवाणी प० पा०
यू० र० ह०
- ड (एम) ३४१ १ मत्य की भविष्यवाणी शिकार खेलन म चा०
- ट (एम) ३४१ १ १ मत्य की भविष्यवाणी एक निश्चित जायु या अवधि
म या एक निश्चित यकिन द्वारा या एक निश्चित
प्रकार म चि० ८०
- + ८ (एम) ४११ इन्द्र का शाप अधरा का मा०
- + ड (एम) ४११ शाप नत्तरी बनो मा०
- + ट (एम) ४२० स्पश म शाप मुक्ति (यहाँ विवाह करन न) (शाप
शांति नायक क छून पर) मा०
- + ८ (एम) ४३० शाप पधर बना मा०
- + ८ (एम) ४३० शाप पक्षी बनो मधु० पु०
- + ड (एम) ४३० शाप मनुष्य-योनि म ज म ला मा०
- + ८ (एम) ४६० शाप गती स्त्री स बलात्कार की चप्टा म मत्यु
न० नल० (बहलिया मर गया)
- त ('एन') धवसर तथा भाग्य विषयक अभिप्राय
- त (एन) २५ जूए म हाकर राज्य देना नद० नल०
- + त (एन) २५ जूए म हारकर पत्नी दना (पत्नी का दौब पर लगा
दना) च०
- + त (एन) ३०० दुभाग्य (नायक का विपत्तिग्रस्त हाना)
च०—(नायिका का अपहरण—मपदश स मत्यु—
मुट्ट आदि)
म०—(मनुष्य भन्नी गटरिया भयकर जगल आदि स
सामना ।)
न०, नल०—जूए म राज्य हारना कई कई तिनो
तक भूखा प्यासा रहना अतिम वस्त्र
भी प ती न उडा जादि ।)
- + त (एन) ३०० दुभाग्य प्रियतमा को टुट्ट उडा त गया च०, का०
- + त (एन) ३१० पृथक हाना (नायिका म) कलिक प्रभाव स नद०
नल०
- + त (एन) ३१० पृथक हाना (नायिका स वियोग) जल दूँपन या भाजन
खानन जान पर (नायिका का अपहरण) या असुर
दशन च०

- + त (एन) ३१० आशेट करन जाना—(आधी)—रास्ता भूलना—साथियो से बिछोह चित्रा० ह०
- + त (एन) ३१० अकेला पाकर नायिका का हरण च०
 त (एन) ३१० सुन्दरी गजकुमारी का हरण दब राक्षस या राजा द्वारा मधु०, पु०, का०
- + त (एन) ३१० नायक का अपहरण म० (राक्षस द्वारा) चित्रा० (कुटीचर द्वारा) रतन० (राजपक्षी द्वारा)
 त (एन) ३१६ पृथक होना (जगल म) नद० नल०
 + त (एन) ७११ मन्दिर सरोवर वन उपवन म नायक नायिका का साक्षात्कार च० म०, प० छी०
- त (एन) ७११ १ निजन वन म एक महल—उसम एक रूपसी राजकुमारी राक्षस की कद मे—नायक स मिलाप म०, मधु० पु० र०
- त (एन) ७११ ३ नायक का नायिका स मिलाप—नायिका के उद्यान म की० का० रू० इ०
- त (एन) ७३१ मिलाप—पुत्र पिता का यू० इ०
 त (एन) ७४१ मिलाप—खोया प्रियतमा त च० मधु० पु० ह०
 + त (एन) ७६० मिलाप—सहायक या सगी साथी से पु० र० ह०
 + त (एन) ८१० सहायक—परामानवीय शक्ति (शिव विष्णु इन्द्र०, देव हनुमान) प०, चित्रा० यू०
- + त (एन) ८१० सहायक सिद्ध ऋषि या तपस्वी पजमीर गुफ का आशीर्वाद और सहायता चि०, ह० इ०, अनु०
- + त (एन) ८१२ सहायक - राक्षम-पुत्री र०
 त (एन) ८१७ सहायिका देवी- पावती लक्ष्मी वनदेवी प० चा०
- त (एन) ८२० नायिका की सहायिका—बूढ़ी धाय यू०
 + त (एन) ८२० नायिका की सहायिका—सखी च०, मधु० पु० ह०
 त (एन) ८३६ नायक (नायिका) का सहायक—किसी दश का राजा च० मा० र० पु० ल०
- त (एन) ८४३ सहायक—माधु तपस्वी कौ० क० ह० र० अनु०
- त (एन) ८४५ सहायक—पगु-मशी (तोता हंस गरुड राजपत्नी) प० चित्रा० कौ० ल०
- त (एन) ७४५ सहायक वनमानुष (न पक का महायक) चित्रा०

घ (घा) समाज विषयक अभिप्राय

- + घ (घा) १२ वरनाम न. ४२४ म रात्रा (विश्वम तथा ह. ४२१०) मा० मी० सु०
- घ (घी) १०१ विचार म वाचन रात्रा जा० (मन्दा वा नीरान)
- घ (घी) १००० वि मन्दा रात्रा का दान पम दा स्या स्यता क वरनाम म विदु मन्दा क आनीरा क परमवन्द रात्रय का उलगाधिकारी प्राण करता (नायक और नायिका अन्त माता पिता की प्राय कर्मोपी स्थान) प० पि० ना० पु० २० ह० सू० (मिग का निम्नतान वाग्नाह अन्त वत्रीर मुमुक्षु की अपना उत्तराधिकारी बना मता है सू०)
- + घ (घी) ६०० रिवाज विवाह क समय दहत्र दना प्राय सभी प्रमाण्याना म विनायन प० चित्रा० मपु० जा० पु० ह० ६० म।

ङ (ङ्) पुरस्कार तथा दण्ड विषयक प्रभाव

- ङ (ङ्) ४६ शरणागत की रक्षा (उमक लिए मुड आदि) प० मा०
- ङ (ङ्) ११० पुरस्कार—उम अम्बरा (रात्रकया) म विवाह जिस नायक न बन्धन (कद) म तुडाया या म० मपु० पु० २०
- + ङ (ङ्) ११० पुरस्कार—नायिका प्राप्ति का साधन जात होता क०
- + ङ (ङ्) ११५ पुरस्कार वर मांग लो (काड विद्या) न० नल०
- + ङ (ङ्) १४० मुप्तावस्था म दूरस्य प्रमिका क पास पहुँचाया जाना (दवा या परियो द्वारा) चित्रा० ह०
- + ङ (ङ्) १७० ध्यान करन हा दवता (विदु सहायक) उपस्थित—सहायता क निमित्त प० न० नल०
- ङ (ङ्) २१३ दण्डित काय—अपहरण चित्रा०
- ङ (ङ्) २२० दण्डित काय—दान दा म स्वार प०
- ङ (ङ्) २५५ दयतात्रा का छोड मत्य प्रेमी की पसद करनवालो स्या की दण्ड मा० न० नल०
- ङ (ङ्) २८१ दण्डित काय—अन हारना न० नल०
- ङ (ङ्) ४३१ दण्ड—निष्ठासन (दाग निकाला) प० (राघव चेतन का निष्ठासन) मा० (जयती अम्बरा इन्द्रलोक से

और माधवानल अपन दश स निकाले गय) नद०
नल०

द (कू) ४३३ दण्ड—कद किया जाना मू०, चित्रा० घू० (चित्रा
वलीम प्रेमिका नायक को बंदी बनवा लती है झूठा
अभियोग लगा कर)

द (कू) ४७२ १ दण्ड—नाक कान काटा जाना व्यभिचारिणी का
चद्र०

द (क्यू) ५५१ ३४ दण्ड—पत्थर बना दना मा० ह०

+ द (क्यू) ५६० दण्ड—वियोग (नायक नायिका का परस्पर) प०,
मधु०, पु०

(घ) धार')—अपहरण तथा रक्षा विषयक अभिप्राय

+ घ (आर) १० अपहरण—नायक का म० प० चित्रा०
घ (आर) १० १ अपहरण—नायिका का च० कें०, ह० सु०
घ (आर) १११ १४ देव (राक्षस) को भारकर उसके द्वारा बदिनी
राजकुमारी का नायक द्वारा उद्धार मधु०, पु०
+ घ (आर) २२० रक्षा—वश बदल कर र०

नर् ('एस) —अप्राकृतिक क्रूरता विषयक अभिप्राय

न (एस) ३१ क्रूर सीतले भाई यू०
+ न (एस) ७० क्रूर भाई—भाइयो (भाई) द्वारा नायक का कष्ट
नद० नल०

प ('टी) —प्रेम और विवाह (धोन)-सम्बन्धी अभिप्राय

+ प (टी) ११ प्रेमोदय—प्रत्यक्ष दशन से च०, मू०, मधु० ना०
प (टी) ११ १ प्रेमोदय— नायक या नायिका के रूप-गुण को प्रशंसा
सुनकर च० प० कला० कौ०, नद०, नल० अनु०
प (टी) ११ २ प्रेमोदय—नायक का नायिका के चित्र दशन से
चित्रा०, कें० काम० रू०, रतन० र० छी० नद०
नल०, अनु०
प (टी) ११ २।१ १ ३ प्रेमोदय—चित्र दशन और स्वप्न दशन दोनों से
काम० नद० नल० र० रू०
प (टी) ११ २ १ प्रेमोदय—मूर्ति देखन से का०
प (टी) ११ ३ प्रेमोदय— नायक का नायिका को स्वप्न में देखकर
व० काम० रू० र०, नद० नल० ह० इ०,
अनु० यू०

प (टी) १२	नामक क जमा ही ज्योतिविद्या द्वारा भविष्यवाणी— यह प्रम विद्याया बनना (यागी या गिद्ध बनना प्रम क निष्, माता विद्या से बिगुटना भ्रष्ट बनना विर मिपना) म० प० मप० चित्रा० मा० २० गु० १०
प (टी) १२ १	नामिका क जमा हा उमक विद्या विद्वेग मानि क विषय म ज्योतिविद्या की भविष्यवाणी म० नम०
प (टी) २२	पूव निषांति पति-पत्नी मपु० चि० मा० २० प०
प (टी) २२	पूव जम की प्रीति की मगति मपु० पु०
प (टी) २-२	पूव निर्धारित काना वि० मपु० मा० २० पु०
प (टी) २२ ३	पूव निर्धारित पति वि० मपु० मा २० पु०
+ प (टी) २४	द्विरह-यजन बारहमासा क माध्यमसे प० मपु० चित्रा० मा०, कना० क० गु० ह० ६० पू०
+ प (टी) २४	प्रम-यजना (मवाय पशु म) पशुमागा क माध्यम म प० २० १०
प (टी) २४ १	द्विरह पीहित होना—प्रमी का नाम रटना उपाग हा जाना हिमी काम म मान सगना च० म० प० मपु० पा० स्तन० २० ह० ६०
प (टी) ५१	प्रम का पूज प० मपु० चित्रा० पु० पा० २०
प (टी) ५२ ४	व्याह पर दृष्ट कना प्राय सभी प्रमाशाना म विशयन प० मपु० चित्रा० पा०, पु० ह० ६० म।
प (टी) ५५	प्रिय की यात्र म नगी नामिका म० प० चित्रा० न०, नम० पू०
+ प (टी) ५५	प्रिय क पाग प्रम-मदेश भजना च० प० पा० चित्रा० ६०
+ प (टी) ६६	प्रिय प्राप्ति के निमित्त तपस्या (नामिका का) १२ वय तक (पत्नी ४० वर्षों तक) पू०
प (टी) ६६	प्रिय प्राप्ति क निमित्त शिवपूजा च० प० ६०
प (टी) ६६	प्रिय प्राप्ति क निमित्त गोरी (पावती) पूजन पा०
प (टी) ६६	तक नामिका क कई प्रमी पु०
प (टी) ७१	स्त्री जिसका प्रेम ठुकराया गया हो क०, २० १० पू०

- प (टी) ७५ प्रेम वचिता/स्त्री का प्रतिशोध लेना क०, र०, इ०, यू०
- प (टी) ७५ १ २ दबता की उपस्थिति में मानव की वरनेवाली नायिका (दमघती) नद०, नल०
- प (टी) ८१ प्रेम में मृत्यु मा०, ल०, यू०
- + प (टी) ९० छिपे प्रेम में मिलने के बहाने दूढ़ना च०
- प (टी) ९१ १ राक्षस पुत्री प्रेमिका र०
- प (टी) ९१ ८ देवी का मृत्यु में प्रेम म० मा०, मघ० पु० र०
- प (टी) ९५ १ प्रेमी ने नायिका के सम्बन्धियों से पगला किया च०, प०
- + प (टी) १०४ विवाह के हेतु युद्ध प०, मा०
- प (टी) १११ मानव और परामानव का विवाह (अप्सरा से) म० मघु० मा० पु०, र०
- प (टी) १३५ १० अग्नि की परित्रमा करने विवाह मा०
- प (टी) १५१ छह माह की आन—छह मास के लिए विवाह टालना म० } नायिका प्रथम मिलन में सुरति नहीं मघु० } करती—विवाह होने तक सुरति के लिए नायक स वर्जन ।
- क०—बैलावती ने देव से कहा कि तुम दिन में भेद पास न आओ—रात को भेरे भो जाने पर भेरा मुख निरखो—स्पर्श कर दिया तो मैं प्राण दे दूंगी ।
- स०—मतवती ने मसूर से तीन दिन तक शकने की कहा ताकि वह निश्चय कर सके कि वह उसका पति है या नहीं ।
- छी०—भलाउद्दीन की दबगढ़ की देखे बिना न लौटने की आन ।
- प (टी) २१० सती (पतिव्रता) पत्नी च० प०, स०, सील०, नद०, नरा० चन्द्र०
- प (टी) २११ वियोग में (और पति के मरने पर भी) सती होना म० प० नल० ह० इ०
- प (टी) २१२ प्रेमी की मृत्यु सुनकर मृत्यु मा० ल० यू०
- प (टी) २१५ दरिद्रता में (बनबास में) साथ देनेवाली स्त्री नद० नन०

प (टी) २५७ २	गीतिका दण्ड (गीतों में दण्डों के अर्थ) प० प० ह०
+ प (ट) २५७ २ १	गीतिका दण्ड मत्त—मत्त (राजकुमारी और पुरुषों की पत्नी पर उतार दण्ड नहीं)
प (टी) ३०० १	गणारण (पाणिपत्र) की परीक्षा प० म० मी०, प० न० नम०
प (टी) ४५२	प्रम-मन्त्र-पत्रक के रूप में—गरी (दूरी) प० मपु० शा० पु० २०
प (टा) ४५२	प्रम-मन्त्र-पत्रक के रूप में गरी (तोता हूँ) प० व० अतु० (ताता) नत० (हूँ)
प (टा) ४७५ १	व्यभिचारिणी के बाप का विद्वत् पाया जाना प०
प (टी) ४८१	व्यभिचारिणी का प०
प (टी) ४८१ १	प्रमा का व्यभिचारिणी स्त्री से मुरा व्यवहार प०
+ प (टी) ५११ १	गर्भाधान माघ प्रदत्त जभीरा नीबू और तीन गन्धक गान म नद० नत०
+ प (टा) ५११ १	गर्भाधान माघ प्रदत्त गन्धक और पत्त (आम अमूर या गन्ध) रान से मु० नद० नत०
प (टी) ५११ ८	गर्भाधान तपस्वी प्रदत्त चाकन का पिण्ड (कर) रान म मप०
प (टी) ५१५	अतिप्राकृत जन्म प०
प (टी) ५६० ३	जन्म पत्र से मु० न० नत०
+ प (टी) ५४८	जन्म वरदान म (द्वयता या साधु के) चित्रा०—(शिव-कृपा से) मा०—(शिव-कृपा से) इ०—(शिव-यावती की कृपा से) ह०—(सिद्ध तपस्वी रत्नाजी सिद्ध की कृपा से)
+ प (टी) ५४८	जन्म वरदान के रूप में आकर सभाग करन म वत्ता०—(स्वप्न में एक गरी बनवायती के पास आया अत पुत्र का नाम पुरंदर)
प (टी) ५४८ १	जन्म प्रायना से पुत्र (पुत्री) प्राप्ति (भगवान की कृपा से) म० व० न०
+ प (टी) ६८०	अकाल म (दुर्दिन में) वरुणा को उनकी ननिहाल म छानना (भोजना) नद० नत०

व ('ह्वी') घम और धार्मिक अनुष्ठान विषयक अभिप्राय

व (ह्वी) ४६२ १३ दुष्ट तपस्वी का अपनी जादुई चमत्कारी शक्तियों को, जिन्हें उसने तपस्व्या से प्राप्त किया है, गलत ढंग से प्रयोग करना—च०, ह०

+ व ह्वी ५०० ससारी प्रेम झूठा—धर्माचरण के लिए ससार से विरक्त इ०

भ (डब्ल्यू) —चारित्रिक विशेषताएँ विषयक अभिप्राय

टिप्पणी—द वग से इस वग का विभेद गुण और काय' के आधार पर किया गया है। उदाहरणार्थ परापकार जब गुण रूप में है तब भ' वग के अंतगत आएगा (जिस विन्नम या हाकरशीद में) और जब कायरूप में है तब द वग के अंतगत। यह विभेद अहुत सूक्ष्म है।

+ भ (डब्ल्यू) २० परोपकार मा० वृ० (विन्नम और हाक०)

+ भ (डब्ल्यू) २० स्वामिभक्ति ह०

(मीरवहादुर में स्वामिभक्ति के गुण है।)

+ भ (डब्ल्यू) २७ कृतपता—कला० नल० (बघन में पड़े मनुष्य में जिसे पुर'दर न जगल में छुड़ाया)

+ भ (डब्ल्यू) १५० ईर्ष्यालु भाई सू०

+ भ (डब्ल्यू) १५४ ८ कृतघ्न मानव कृतज्ञ पशु प० कला० ह० (प० में राघवचेतन ह० में दौलामीर कथा कलावती में एक पुरुष और सप नद० नल० में सप)

य ('जेड') अय विविध अभिप्राय समूह

य (जेड) ४१ परम्परा क्रमबद्ध कथाएँ—एक दूसरे पर आधारित कथाओं की शृंखला— इ०

य (जेड) ६२ २ वर सूय का प्रतीक और वधू चंद्रमा की प्रतीक च० प० ह० तथा अय सूफ़ी प्रेमाख्यानो का रूढ प्रतीक।

य (जेड) ७१ ५ प्रतीकात्मक सख्या म० प० मधु० ह० इ० इत्यादि।

य (जेड) ७१ ६ प्रतीकात्मक सख्या (सात समुद्र सात वन, सात पुर सप्त खण्ड घौराहर सात लाव सात पाताल) म० प० मधु० ना० चित्रा० ह०, इ० अनु० (नायक के रास्त में सात समुद्र सात वन, सात पुर पड़ते हैं। नायिका जिस घौराहर पर रहती है वह भी सप्त खण्डी होती है और सबसे ऊपर का खण्ड कलाम

	कहलाता है। सूफी साधना के सात मुकामान तथा याग साधना में शरीरस्थ सप्त चक्रों से तात्पर्य)।
य (जुड) १७५	प्रतीक-कथन—सांकेतिक भाषा अगुलिया के संकेत से श्रावत करना मो० छ०
य (जुड) १७५ २	प्रेमिया द्वारा प्रतीकात्मक सदश (नायिका) २०
य (जुड) २१६	नायक (नायिका) का अतिप्राकृत जन्म ३०
य (जुड) २३०	नायक की असाधारण मफलताएँ—प्रयास चित्रा० काम० वी०
य (जुड) ३५७	शाप के अनूठे अपदान (शाप मुक्ति के उपाय) मा०

अवर्गीकृत कथानक रूढ़ियाँ

स्थिर धाममन महादय ने अपने मोटिफ इन्डक्स की भूमिका में नव विज्ञान के क्या रुढ़ि संग्रह कर्त्ताओं को परामर्श दिया है कि जिन कथा-रूढ़ियों का वर्गीकरण और श्रमावन के न कर पावें उनका एक बार य (जुड) वग जो विविध अभिप्रायों का वग है के अंतर्गत संकलित कर दें फिर ध्यासमय उनका उचित स्थान देने का प्रयास करें। हमारे सामने भी पौराणिक कथों की जान पड़नवाली कुछ नवीन कथानक रूढ़ियाँ के वर्गीकरण और श्रमावन का समस्या रही है जिनके विषय में हम निष्णय नहीं कर पाये हैं। ऐसी अवर्गीकृत और अश्रमावित कथानक रूढ़ियाँ निम्न लिखित हैं—

- + १ प्रायश्चित्त आत्महत्या के लिए उताव मा०
- + २ अपने पूर्व आवास का न पहचानना—इन्डक्स के कारण आवास के स्वरूप में परिवर्तन चित्रा०
- + ३ मोतिया ग्राह नहीं ना०
- + ४ नायक द्वारा नायिका का हरण क० २०
- + ५ नायक नायिका का गंधर्व विवाह क०
- ६ प्रेमादय साथ साथ शीला करत वि०
- × ७ मानमरोदक में प० तथा अय कर्ई काव्यो में मानमरोदक का ध्वनन।
- + ८ अल्पवयस में ही नायक का मव विद्या-पिण्ड हो जाना म० मधु० ना० चित्रा० आदि कर्ई प्रेमास्थानों में।
- + ९ अति सुन्दर नायक को स्व स्त्रियों का कामासक्त होना (स्पलिन होना) मा० यु०
- १० एक स्त्री के अनेक प्रेमी यु०
- ११ मन में द्विगान के प्रभावना के होना इए भी नायिका सेन पर अद्विग यु०

- १२ प्रेम भाग के बाधक—माता पिता (माता पिता के विरोध के कारण नायक नायिका के मिलने पर प्रतिबंध) ल०
 १३ अपहरणकर्त्ता से नायिका का कभी प्रेम न कर पाना का०
 १४ राजा निस्सतान—बहुत धम-पुष्य के बाद सतानात्पत्ति छो०
 १५ शतान द्वारा भले नायक को सताना न० नल०
 १६ नायक का जीवन से बराबर मद० इ०
 १७ समय देकर बाधा से विवश होकर न पहुँच पाना ह० (शब्द परी ने सात दिन में जवाहिर के पास से लौटने को कहा पर चीर अपहरित हो जान से न पहुँच सकी। हस का चिता।)
 १८ इकनौना लाडला पुत्र या लाडली कन्या च० म० प०, ह०, यू० आदि।

निष्कर्ष

हिंदी के सूफी कवियों द्वारा रचित प्रमुख ५ प्रेमाख्याना की पौराणिक स्रोत वाला कथानक रूढ़ियों की जो वर्गीकृत अनुक्रमणिका ऊपर प्रस्तुत की गयी उसके निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

कथानक रूढ़ि का	पौराणिक स्रोत की कथा रूढ़ि सख्या	नयी कथा रूढ़ियों की संख्या
१ धमगाथा अभिप्राय	१५	८
२ पशु पक्षी विषयक अभिप्राय	१६	२
३ वजन या निषेध विषयक अभिप्राय	६	५
४ जादू और रूपांतरण	५२	१४
५ मतक (पुनरुज्जीवन) भूत प्रेत आदि	७	१
६ चमकारिक (आश्चर्यजनक)	३१	४
७ दयित (राक्षस) विषयक अभिप्राय	३	—
८ परीक्षाएँ	२६	८
९ ज्ञान एक बुद्धि (बुद्धिमान तथा मूर्ख) विषयक अभिप्राय	६	६
१० घोषा विषयक अभिप्राय	१६	५
११ भाग्य का पलटना	३	१
१२ भविष्य निर्माण (निर्देशन) भविष्यवाणियों शाप आदि	१७	१४
१३ अवसर तथा भाग्य विषयक अभिप्राय	२६	१४
१४ समाज विषयक अभिप्राय	४	२
१५ पुरस्कार तथा दण्ड विषयक अभिप्राय	१४	४
१६ अपहरण तथा रक्षा विषयक अभिप्राय	४	२

१७ अप्राकृतिक क्रूरता विषयक अभिप्राय	२	१
१८ प्रेम और विवाह (योन) सम्बन्धी "	५७	१२
१९ धर्म और धार्मिक अनुष्ठान विषयक "	२	१
२० चारित्रिक विशेषताएँ विषयक अभिप्राय	५	५
२१ अन्य विविध अभिप्राय-समूह	६	—
	<hr/>	
योग	३२७	११०
	<hr/>	
अवर्गीकृत विविध अभिप्राय समूह	१८	८
	<hr/>	
कुल योग	३४५	११८
	<hr/>	

इस प्रकार प्रस्तुत कोश में कुल ३४५ कथा-रूढ़ियों का समावेश हुआ है जिनका पौराणिक स्रोत हो सकता है और ११८ रूढ़ियाँ ऐसी हैं जिनको स्थिर धारणा मानने के 'माटिफ इण्डेक्स' में भी स्थान नहीं मिल सकता है।

उपरिलिखित तालिका से पता चलता है कि सूफी प्रेम-आख्यानक काव्यों में नवाधिक पौराणिक कथानक रूढ़ियाँ—५७ प्रेम और विवाह वर्ग में सम्बन्धित हैं। इसमें यह निष्कर्ष निकलता है कि सूफी कवि प्रेम-निरूपण में भी भारतीय पौराणिक भावना से बहुत प्रभावित थे। चूँकि उन्होंने अपने काव्यों में जो कथाएँ प्रहण की वे पद्य ही लोक प्रचलित थीं इसलिए इससे यह भी सूचित होता है कि मध्यकाल के लोक जीवन में या लोक-साहित्य में पौराणिकता का प्रभाव कितनी गहराई तक पहुँचा हुआ था। आवृत्ति की दृष्टि से दूसरे और तीसरे नम्बर पर क्रमशः जादू और रूपान्तरण तथा चमत्कार (आश्चर्य) से सम्बन्धित कथानक रूढ़ियाँ आती हैं। उनकी संख्या क्रमशः ५२ और ३१ है। लोक जीवन में अदभुत का तत्त्व सदा से अपना आवरण रखता आया है। उसी का प्रतिबिम्ब इन रूढ़ियों के रूप में उभरा है।

परीक्षाओं सम्बन्धी कथा-रूढ़ियों का स्थान चौथा (२६) और अवसर तथा भाग्य विषयक कथा-रूढ़ियों का स्थान पाँचवाँ (२६ रूढ़ियाँ) है। भाग्यवाद भारतीय लोक जीवन का निर्देशक सिद्धांत है। वह मानव के प्रयास का आरम्भ और अवसान दोनों है। उसका प्रभाव कथानक रूढ़ियों के रूप में पड़ा यह स्वाभाविक ही था।

सूफी प्रेम-आख्यानक काव्यों में कथानक रूढ़ियों का यह अध्ययन अन्य प्रकार के कथा-काव्यों में इस प्रकार के काव्य की आवश्यकता प्रकट करता है ताकि भारत में जो संसार को काव्यों के रूप में प्राचीनकाल से ही म्निग्ध किरणें पहुँचाता रहा है एतदविषयक अध्ययन को बर्णानिक आधार दिया जा सके।

परिशिष्ट

- १ भारतीय पौराणिक पात्रादि के विविध प्रयोग
- २ भारतीय निजधरी आख्यानों और पात्रों आदि के प्रयोग
- ३ लोकप्रिय प्रेमाख्यानों के नायक-नायिकाओं के प्रयोग
- ४ ग्रामी पौराणिक और निजधरी आख्यानों तथा पात्रों आदि के प्रयोग
- ५ सहायक पुस्तक एवं पत्र पत्रिका सूची

३१० हिन्दी सूफ़ी काव्य में पौराणिक आभ्यास

१७ अग्राहिक क्रूरता विषयक अभिप्राय	२	१
१८ प्रेम और विवाह (यौन) सम्बन्धी	५७	१
१९ धर्म और धार्मिक अनुष्ठान विषयक	०	१
२० पारिविक विरोधार्थ विषयक अभिप्राय	५	५
२१ अन्य विविध अभिप्राय-समूह	६	—
योग	७२	११०
अवर्गीकृत विविध अभिप्राय समूह	१८	८
कुल योग	३४५	११८

इस प्रकार प्रस्तुत कोश में कुल ३४५ कथा-रूढ़ियों का समावेश हुआ है जिनका पौराणिक स्रोत हा सकता है और ११८ रूढ़ियाँ ऐसी हैं जिनको स्थित धामसन मनोऽथ वा माटिफ इण्डकम में भी ध्यान नहीं मिल सकता है।

उपरिलिखित तालिका में पता चलता है कि सूफ़ी प्रेमाख्यानक काव्या में कथा विषय पौराणिक कथानक रूढ़ियाँ—१७ प्रेम और विवाह वगैरे सम्बन्धित हैं। इसमें यह निष्कर्ष निकलता है कि सूफ़ी कवि शर्म निरूपण में भी भारतीय पौराणिक भावना से अत्यंत प्रभावित थे। खूबि उन्होंने अपने काव्यों में जो कथाएँ ग्रहण कीं वे पहाड़ में ही लोक प्रचलित थीं इसलिए इससे यह भी सूचित होता है कि मध्यकाल के लोक जीवन में या लोक-साहित्य में पौराणिकता का प्रभाव कितनी गहराई तक पहुँचा हुआ था। आवृत्ति की दृष्टि से दूमरे और तीसरे नम्बर पर क्रमशः जादू और रूपान्तरण तथा चमत्कार (आश्चर्य) में सम्बन्धित कथानक रूढ़ियाँ आती हैं। उनकी संख्या क्रमशः ५२ और ३१ है। लोक-जीवन में अदभुत का तत्त्व सदा से अपना आकर्षण रखता आया है। उसी का प्रतिबिम्ब इन रूढ़ियों के रूप में उभरा है।

परीभाओ सम्बन्धी कथा-रूढ़ियों का ध्यान चौथा (२६) और अवसर तथा भाग्य-विषयक कथा रूढ़ियों का ध्यान पाँचवाँ (२६ रूढ़ियाँ) है। भाग्यवाद भारतीय लोक जीवन का निर्देशक सिद्धांत है। वह मानव के प्रयास का आरम्भ और अवसान दोनों है। उसका प्रभाव कथानक रूढ़ियों के रूप में पड़ा यह स्वाभाविक ही था।

सूफ़ी प्रेमाख्यानक काव्यों में कथानक रूढ़ियों का यह अध्ययन अन्य प्रकार के कथा काव्या में इस प्रकार के काव्य की आवश्यकता प्रकट करता है ताकि भारत में जो समार को काव्या के रूप में प्राचीनकाल से ही स्निग्ध किरणें पहुँचाता रहा है एतद्विषयक अध्ययन को वैज्ञानिक आधार दिया जा सके।

परिशिष्ट

- १ भारतीय पौराणिक पात्रादि के विविध प्रयोग
- २ भारतीय निजघरी ब्राह्मणों और पात्रों आदि के प्रयोग
- ३ लोकप्रिय प्रेमालयानों के नायक-नायिकाओं के प्रयोग
- ४ शामी पौराणिक और निजघरी ब्राह्मणों तथा पात्रों आदि के प्रयोग
- ५ सहायक पुस्तक एवं पत्र पत्रिका सूची

भारतीय पौराणिक पात्रादि के विविध प्रयोग

हिंदी सूफी कवियों द्वारा रचित प्रेमाराधनक कवियों में पौराणिक आख्याना के प्रयोग के स्वरूप पर प्रस्तुत प्रबंध में अध्याय ७ से अध्याय १२ तक विचार किया जा चुका है। सूफी कवियों में भारतीय पौराणिक आख्यानों के अतिरिक्त भारतीय पौराणिक पात्रों आदि का प्रयोग भी प्रचुरता से किया है। पात्रों आदि का प्रतीकात्मक आलंकारिक दार्ष्टान्तिक और उल्लेखात्मक प्रयोग किया गया है। पात्रादि के वय हैं—(क) रामायण स्रोत के पात्रादि (ख) महाभारत स्रोत के पात्रादि (ग) भारतीय पौराणिक स्रोत के पात्रादि (घ) वृत्तिक और पौराणिक देवी देवता आदि, (ङ) गंधर्व यक्ष अप्सरा आदि (च) पौराणिक पक्षी वृक्ष लतादि (छ) तीर्थ स्थान (ज) पौराणिक अस्त्र शस्त्र वाहनादि, (झ) पौराणिक पशु पक्षी कीट आदि, (ञ) लाक समुद्र आदि (ट) पद्मिनी नारी। सदभ-सूची में पात्रों स्थाना घट नाओं तथा वस्तुओं आदि की आवृत्ति का योग भी दे दिया गया है। उसमें सकेताक्षरों के अर्थ हैं प्र=प्रतीक, दृ=दृष्टान्त अ=अलंकार उ=उल्लेख।

इस परिशिष्ट और परिशिष्ट २४ की पाद टिप्पणी में जहाँ जहाँ 'उल्लेख' शब्द आया है उसका तात्पर्य उल्लेख नामक अलंकार न होकर केवल यह है कि वह पात्र स्थान घटना आदि सामान्य रूप से चर्चित हुई है।

(क) रामायण स्रोत के पात्र और स्थान सदभ और प्रयोग आवृत्ति

ककेयो चदायन (भूपाल प्रति) सपा० विश्वनाथ प्र० ६१

४०।१२^१

राम चदायन २०५।२३^२ मगावती छंद ३४^३, प्र१, अ ८, दृ १
 वही ३०६।४५^४ पदमावत, १६७।५६^५ वही, १६८।४५^६, उ२=१२
 वही २८०।५^७, वही ३३३।५^८, चित्रावली ४२२।३७^९,
 आनंदीय छंद १२४^{१०} इन्द्रावती (उत्तराख) हस्त० पृ० ८२^{११},

१ दृष्टान्त २ उल्लेख ३ उल्लेख ४ उदाहरण ५ उल्लेख ६ उपमा ७ उपमा १० रूपक

११ उहाँ मित्र रावन ओ रामू इहाँ राम लक्ष्मिन सगरामू ।

उहाँ मिलाप इहाँ विद्याराजँ औपध इहाँ उहाँ है धाऊ ॥ (प्रतीक)

वही (उत्तराद्र) हस्त० पृ० १६६ १ वही पृ० १७६ १।

रावण चदायन २०५।२ ५ १ लोरकहा (मा०प्र०गु०) प्र ३ अ १६,
 ६७।४ ५ ५ चदायन १२१।५, २ वही ३८२।४ १ मगावती द ६ उ३
 छद ३४ ५ मगावती १६।२, ८ वही ३७६।दो० ६ पदमावत = ३१
 ५२।गो०३।३ १ वही १०४।२, ११ वही १६१।दो० १६।३ १२
 वही १६७।५ ६, १३ वही १६८।४ ५ १४ वही २४८।दो० २४।१०, १५
 वही २ ६।१ ७ और दोहा २५।१० ११ वही २८०।५ १० वही
 ३०४।१ १८ वही ३१८।१ २, १६ वही ३२५।६ २ वही
 ३३३।५-५, १९ वही ३८४।४ ५ २३ वही ३८७।६ ७, २३ वही
 ४०२।६ ७ २४ वही ४०४।४, २५ वही ५०६।१ २ २४ वही
 ५७६।५, २६ माघवानन कामकदला बडी प्रति हस्तलेख, २८
 चित्रावली छः ४०२।३ ७ २६ वही ५६७।४ ६ ३ ज्ञानदीप
 छद १२४ ३१ इत्यावती (उत्तराद्र) हस्त० पृ० १२ ३२ वही
 पृ० १७६ ३३ ।

लका लोरकहा (मा०प्र०गु०) ७८।१ २ २४ चदायन अ १४ उ ४
 २०५।१ २ २५ मगावती छः ३४ ३१ पदमावत २६।२ २० वही, = १८
 १५३।२ ३८ वही २८०।५ २६ वही ३२५।६ ४० वही
 ३७६।१ २ ४१ वही ३६१।३ ४ ४२ वही ४०२।६ ७ ४३ वही ५०७।५ ४४
 वही ५०८।६।७ ४५ वही ५२५।दो० ४३।१० ४४ वही ५३६।१-२ ४०

१ व्यतिरेक

२ कहीं राम औ रावन कहीं किसुन औ कस ।

कहीं भीम अरजून करन कहीं सरवर कहीं कस ॥ (दृष्टात)

३ उल्लेख ४ प्रतीक ५ उत्प्रेक्षा ६ प्रतीक ७ उल्लेख, ८ उत्प्रेक्षा
 ९ दृष्टात १० उपाहरण ११ रूपक १२ अतिशयोक्ति १३ १४ उत्प्रेक्षा,
 १५ रूपक १६ दृष्टात १७ श्लेष एव मुद्रालकार १८ रूपक १९ उपमा
 २० मृत्पालकार २१ उपमा २२ २३ दृष्टात २४ रूपक एव श्लेष २५ उल्लेख
 २६ उपाहरण २७ उत्प्रेक्षा

२८ गरव सरव दुख देत रतिपति लकापति मुए ।

कस आदि किउ रेत जुरजोधन सीमरायु जुत ॥ (दृष्टात)

२९ उपमा ३० श्लेष और उपमा ३१ रूपक ३२ प्रतीक ३३ दृष्टात
 ३४-३६ उल्लेख ३७ व्यतिरेक ३८ हेतुत्प्रेक्षा, ३९ श्लेष ४० उपमा।मुद्रा०,
 ४१ उपाहरण ४२ उत्प्रेक्षा, ४३ श्लेष।रूपक, ४४ हेतुत्प्रेक्षा ४५ अत्युक्ति
 ४६-४७ उपमा

आवृत्ति

मधुमालती १०।५, १ वही ३४।१ १ चित्रावली ४१।१-७ और
दोहा, ३ हस जवाहिर, पृ० २२५।छद ६१।५ ६ ५ ।

लका घोर पलका (दोनों एक नहीं) —चदायन (भूपाल अ १, दू ५
प्रति, सपा० वि० प्र०) ३७।४ ५ १ लोरकहा (मा०प्र०गु०), छद उ १=७
४६।४ ५ १ चदायन (प०ला०गु०), ३५।१।१ ५ ५ मगावती ६६।३६
वही १०२।३ १ पदमावत २०६।३ ४ १ वही, ३५।२।३ ३ १ ।

लका घोर विलका (दोनों एक नहीं) —क्या कँवलावती अ १ उ १
(हस्त०) पत्र ६ छद ६५ १ २ रतनावती (हस्त०) दोहा २८ के =२

१ अतिशयोक्ति, २ उपमा ३ उल्लेख ४ (रावण के गड के रूप में उल्लेख)
उपमा ।

५ 'लका छाँड़ि पलका घावउँ इस मुहाविरे का प्रयोग कुतुबन और जायसी ने
किया है—(मगावती ६६।३ और १०२।३, 'पदमावत २०६।३, ३५।३) ।
भोजपुरी क्षेत्र में यह मुहाविरा आज भी बोलचाल में प्रचलित है । निक्वटवर्ती
उपलब्धि को छोड़कर किसी दूरस्थ वस्तु के लिए प्रयास करने के प्रसंग में लोग
इसे उदाहृत करते हैं । परन्तु कुतुबन और जायसी ने असम्भव को सम्भव कर
दिखाने का साहस व्यक्त करने के अर्थ में इस मुहाविरे का प्रयोग किया है ।
ऐसा लगता है कि जिन दिनों इस मुहाविरे ने रूप धारण किया उन दिनों लका
जाना सुगम न था और पलका तो कोई ऐसी जगह थी जहाँ सामान्यतः पहुँचना
असम्भव समझा जाता था । पलका (स० पाताल लका—पायाल लका—
पायालका—पालका—पलका) नाम से ऐसा ध्वनित होता है कि लका की तरह
पलका कोई दूरवर्ती द्वीप था । हो सकता है, द्वीपांतर (हिंद एशिया) के
द्वीपसमूहों के किसी द्वीप को पलका कहते रहें हों । मलय स्थित पेनाग का भी
नाम पलका हो सकता है । किन्तु जायसी ने पलका में शिव का निवास बताया
है (पदमावत २०६।३ ४) । सम्भव है, शिव के निवास कलास को पलका कहते
रहें हों । —डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त चणायन पृ० २७६ टिप्पणी ।

मध्यकाल में पलका लका से भी दूर एक द्वीप समझा जाता था । एलौरा में
कलास मन्दिर के दोनों ओर एक एक गुफा मण्डप है उनमें से एक को लका
और दूसरे को पलका कहते हैं । —डॉ० पदमावत मून और सजावनी

व्याख्या डा० वासुदेवशरण अग्रवाल पृ० ३५५

६ ६ १० दृष्टांत ११ उल्लेख १२ रूपक और श्लेष ।

१३ चितरि चितरा भर कौं घायी हूँ सुरति मनौ सीता ल्यायो ।

जारि चत्यो चितरगड सका दुप परिहरि कै गयो विलका ॥

(उल्लेख मात्र)

काव्य गी० १^१।

लका वीर सिंहल (दाना एक नहीं) -- पदमावत २६।२^१, अ ० द १
 वनी १०७।गोहा १२।१२^२ वनी २६०।१ १^४ वही २०६।६ ५^५ उ ५=०
 वही २-६।६,^१ वनी ३६०।१ ३^० चित्रावली ४१६।१ ७^६
 हम जगहिर ११५।२ ५^६।

लक्ष्मण -- पदमावत ६०५।३^१ छीता (हस्त०) छ ३० प्र १ अ ०
 और २१^{११} इन्द्रावनी (उत्तराद्ध) हस्त० पृ० ८२^{११} - ३
 विभीषण -- चारकहा (मा०प्र०गु०) छ ७८^{१२} पदमावत द १ उ १
 २०६।६ ५^{१४}। - ०

सिंहल (सिधल) द्वीप -- मित्रगावत (दिल्लीवाली हस्त अ १ उ १०
 निम्न प्रति की अनुवृत्ति श्री उदयशकर शास्त्री क पाम) छ = ११
 २०६^{१५} पदमावत १०।गोहा ३।१^{११} वनी १४०। १^० वही
 १५६।० ४^{१६} वनी १६०।४^{१६} वही, १७८।४^{१६} वही १८३।३,^{११}
 वही २०७।५,^३ वही ३०६।५,^{३२} वही ४३।१।४^{३४} मधुमालती,
 ६६।०^{३५} चित्रावली, ६६।१ २^{३६} रतनावती (हस्त०) दाहा
 ७८^{३०}।

सीता -- मगावती ३७७।५,^{३६} पदमावत ५२।वो० ७ प्र २ अ ४
 दोहा ३।३,^{३६} वही १३१।४^३ वही, ३६१।३ ४^{३१} वही द १, उ २
 ६५।१।१ २^{३१} कथा लल मजनु (हस्त) पत्र ३१।छ ६७^{३३} = ६

१ मरव दरव हौं तोपर चारों लका कहा बिलका जारों। (अतिशयोक्ति)
 २ ध्यतिरेक, ३ उल्लेख ४ द्वितीय निदर्शना, ५ दृष्टांत ६६ उल्लेख,
 १० ध्यतिरेक।

११ सीता माइ छीता हरी, रामहि राम अवमथा परी।
 हे लयमन, हनवत से यार मेरें कौन बिना करतार ॥३०॥ (उपमा)
 जी कोऊ हूँ सम लयमन की, करी उपाव विपति लयि मन की ॥३१॥
 (यमक/उपमा)

१२ प्रतीक १ उल्लेख, १४ दृष्टांत।
 १५ सिधल द्वीप "होवे जनु आवा पदुमिनि रूप बिसल-ट भावा। (उत्प्रेक्षा)
 १६ २७ उल्लेख २८ दृष्टांत २६ सीता का 'रामा' क रूप म उल्लेख और उनका
 जम अयोध्या म बताना। -- उपमा।उत्पाहरण ३० प्रतीक ३१ उत्प्रेक्षा
 ३२ प्रतीक।

३३ मजनु की हितुर सीताराम जग रामा की लहै नाम। (उल्लेख)

भावति

छीता, छद ३०^१ नल दमन १६५।८,^२ अनुराग वासुरी, ४।२^३ ।

हनुमान—चदायन (प०ला०गु०), ३५१।८, ४,^४ पदमावत अ ६, दृ १
 २४८।दो० २४।१०,^५ वही ४६१।५^६ वही, ५२०।१३,^७ वही = १०
 ६११।१२,^८ वही, ६१२।१,^९ वही ६४१।७,^१ छीता (हस्त०)
 छद ३० और ३१^{११} ।

योग=	प्र ७
	अ ६१
	द १७
	उ २६
	११४

(ख) महाभारत स्रोत के पात्र एवं घटना सबभ और प्रयोग

धृजुन (पाथ धनजय)—लारकहा (मा०प्र०गु०) प्र २, अ १२
 १३।३ ५^{१२} चदायन १३।४ ५^{१३} मिरगावत (हस्त०) दिल्ली द १ उ १
 वाली प्रति (अनुकृति जल्यशकर शास्त्रा के पास) छद २१२,^{१४} = १६
 मगावती ३७७।१^{१५} पदमावत ४४२।४^{१६} वही ६११।१ और ४^{१७}
 चिनावली, ३८६।७^{१८} नानदीप छद १०८^{१९} वही पृ० ६२

१ उपमा ।

२ तिहि क रूप चित्र एक थीता, वहै राम क जानै मीता । (रूपक)

उल्लेख ४ दष्टात, ५ रूपक ६ उपमा ७ उपमा।उदाहरण,

८ उपमा ९ उदाहरण १० रूपक ।

११ ह लपमन हनवत न थार मर कौन बिना करतार । छद ३० (उपमा)

× × ×

हनुमान सौं जो सग होइ, हनुमान रिप सब सुख होइ । (उपमा)

ल भाव वह जीवन मूर पुगि आवहि दुय घाव सपूर ।

एमौ बलु मो दलु में नाहि जो चलि दिल्ली सन को नाहि ॥ छद ३१

(रूपक)

१२ उदाहरण।उपमा १३ उत्प्रेक्षा, १४ रूपक, १५ उल्लेख, १६ यनिरक

१७ उपमा १८ प्रतीक ।

१९ तव देवजानी मन अकुनानी क्वनि आस ऐन नर प्राणी ।

ध्यान सतक हम तनिक जा दय छुट ताप जीवन कर तेष ॥

टरत सभु कर अस्थिर आसन पारथ कर सा तजत मरामन ।

मोहन ब्रभ पुरदर डालत मटरमून ।

नकु रूप मम दपि क कहि न हात जिव मून ॥१०८॥ (अत्यक्ति)

छन्द १७३ ' वही पृ० १०६ छन्द २६८ ' कथा कवलावती (हस्त०) पत्र ३ छन्द १८ ' वही पत्र ७, छन्द ४४ ' सुभटराष्ट्र (हस्त०) पत्र २ छन्द ४५ इन्द्रावता (उत्तराष्ट्र) हस्त० पृ० ६४ ' यती (उत्तराष्ट्र) हस्त०, पृ० १७६ ' अनुराग बाँसुरा १६। ६८ ।

कण - मगावती ८।४ ६ वही २०।२ ' पद्मावत १७।२ ' अ ७ दू १ वही १४५।७ ' वही ६११।१ ओर ५ ' मधुमालती १३।३ ' चित्रावली ८०।२ ' ज्ञानतीव छन्द १६५ ' ।

कीरव—मगावती ३७६।१०हा ' पद्मावत ६२५।४ ' अ १ दू २ = ३ रत्नावता छन्द १७३ ' ।

दुर्योधन—माधवानल कामवदला (बटा हस्त० प्रति) ' दू १

द्वीपदी—मगावती ३७७।२ ' पद्मावत ८३।१ ' अ १ द १ = २

परोक्षित—ज्ञानतीव छन्द १२४ ' अ १

- १ तस्य वन भुजा भीम कं बाना महा बानरत परथ ममाना । (उपमा)
- २ भीम भुजा अरजुन वन बाँहा पुत्र मोर मुनिअत सभ कहा । (उपमा)
- ३ धनप लय चूक नहीं पषहि वसेपत बान । (व्यतिरेक)
- ४ भीह धनुष त्योरी सो लानी जिन निरपी सा ह दो विनानी ।
अति अचूक सनमुप भय भारत, अरजुन हूँ दपित तो हारत ॥ (व्यतिरेक)
- ५ भीम भुजा उपया कुवर मारत अरजुन बान ।
चूकत नाहि न हद फनें जीतत है चोगान ॥ (उपमा)
- ६ वह जित फिर देह मो कस काइला बीच धननज जस । (उदाहरण)
- ७ कह राम औ रावन वहाँ किमुन औ कस ।
वहाँ भीम अरजुन करन वहाँ सरवर कह हस ॥ (दृष्टांत)
- ८ प्रतीक ९ व्यतिरेक १० उपमा ११ व्यतिरेक १२ दृष्टांत १३ उपमा,
१४ १६ व्यतिरेक १७ दृष्टांत १८ अतिशयोक्ति ।
- १९ अमर भई माहन की बात नित नित का जग ना ठहरात ।
× × ×
कित बल धन वहाँ कतार करी पाडी चल अपार ॥ (दृष्टांत)
- २० २१ दृष्टांत २२ उपमा
- २३ छाडि ध्यान धन कर दुग मुन धाइ धरा वीरज दस गुन ।
× × ×
हाइ सुगाव वासि हठि बाधो चक्रा परछोत कि छाती घाधो ॥

आवृत्ति

पाण्डव—मिरगावत (हस्त०, दिल्लीवाली प्रति) छंद २१२,^१ अ २, दू ४
मगावती (प०ला०गु०) २३२।१,^२ वही, ३७६।दाहा,^३ पदमावत, उ १=७
५५६।६^४ वही, ६३५।४,^५ नानदीप छंद ३०४,^६ रतनावती,
छन्द १७३^७ ।

पाण्डु—नानदीप, छंद ३०४^८ दू १

भीम—अदायन २०।१२^९ वही २६३।२३,^१ पदमावत प्र २, अ ११
६१४।^२ चित्रावली, ४६८।५,^३ वही ५००।६^४ नानदीप, दू १, उ १
छन्द १७३^५ वही छंद २६४,^६ वही छंद ८४०,^७ क्याकवलावती
(हस्त०) पत्र ३ छंद १८^८ पुट्टप बगिया पत्र १३ छंद ८३^९
क्या सुभटराइ पत्र २ छन्द ४,^{१०} इन्द्रावती (उत्तराद्ध) हस्त०
पृ० १७६^{११} अनुराग-बांसुरी १६।१ ६^{१२} ।

महाभारत का युद्ध (क्रुष्ण के युद्ध)—पदमावत प्र ११ अ २,
२४२।दाहा २४।६^{२३} वही, २६४।०^{२४} वही २६४।दोहा २५।८,^{२५} = २३
वही, ६३२।दोहा ५३।१२,^{२६} नानदीप, छंद २६६^{२६} क्या कवला

- १ जहिया हनवत लक गड ढाहा यहै घनुक राषी पहुँ अहा ।
जो पाडी कौरो दन जता यहै घनुक अजुन कर लेता ॥ (रूपक)
- २ उल्लेख ३४ दृष्टात, ५ अतिशयोक्ति, ६ ८ दृष्टात, ९ उल्लेख, १० उपमा,
११ उदाहरण
- १२ बाजौ आजु भीम की नाइ, मारौ जो जय दइ गोसाइ । (उपमा)
- १३ मानुप अस बल कर न पारा निज यह पुहुँमि भीम औतारा । (उपमा)
- १४ पछी जाइ कहा धौ पाव चल सरण कहै पुहुँमि मिलाव ।
तस बल भुजा भीम क वाना महा बानइत परय समाना ॥ (उपमा)
- १५ भीम भुजा अरजुन बल बाँहा, पुत्र मार सुनिअत सम कहा । (उपमा)
- १६ अगसर जूझे भीम सी, जो अरजुन सम हाइ ।
जबाँह जाहु घर आपन, जो आएहु मति पाइ ॥ (प्रतीकाउपमा)
- १७ रम करिव कौ काहूँ हैं बल कौ भीम समान । (उपमा)
- १८ परयो दव ऐस आकार, भौव अझार मनहु पहार । (उल्लेख)
- १९ उपमा २० दृष्टात, २१ उदाहरण/प्रतीक २२ उपमा/प्रतीक, २३ २५
प्रतीक ।
- २३ महाभारत युद्ध का रूपक (द्वयानी का शृंगार सखिया द्वारा)—
विवि सरवन विवि पुटिल विरान, घरम सुत अत्र काम कर साज ।
तरिवन तुरन आनि पहिरावा, मानो करम रय पहिया लावा ॥

प्रुव- पदमायन १६।८^१ वन १०१।५^२ वही, १०६। अ ५
दाहा १०।११^३ वही २८०।५^४ चित्रावती पृ० १८ छ ४४
दोना ।^५

नल-पन्मावत ४१७।७^१ माधवानल कामकदना (हि० प्र १ अ २=
प्र० गा० वा० म०) पृ० २१८ पविन १४^२ हम-जवाहिर
५८२।२^३ ।

नारद- नारक्या (मा० प्र० गु०) छ ६० चौ० ४^६ उ २
कथा नल दमपनी पत्र १^२ छ ५५^१ ।

पवत ऋषि- कथा नल दमपता पत्र १३ छ ५५^{११} उ १

परशुराम-पन्मावत ६११।१ और २^{१२} क द्रावती (उत्त अ २
राड) इत्न० पृ० १६६^{१३}

बलि-गगावती ४।४^{१४} पन्मावत १७।-^{१५} वही अ १० दू १
६१४।६^{१६} वही ६१४।दाहा ५२।२^{१७} माधवानल काम = ११
+२२ पृ० १६५ पविन ८^{१८} चित्रावती १४।४ ५^{१९} वही
२०।१ ४^२ वनी ४०।२^{२०} वहा ४२।१ २^{२१} चित्रावती

१ रूपक २ उत्प्रेक्षा ३ हनूप्रेक्षा ४ उपमा

५ एहिक सत्त जस घुब अचल, तुम पति मारगपानि ।

परमन होवहु इछ एहि बेगि पुरावहु आनि ॥ (उपमा)

६ उपाहरण, ७ प्रतीक ८ उपमा

६ प्रज्ञाइ लइ कर नारद आवहु चाद मार प आज जियावहु । (उल्लख)

१० नारद पवत दोरे दा कछी इद्र क नर हाइ । (उल्लख)

११ उल्लख १२ उपमा

१३ लोग भौह कह घानुक बाचहि राम जी प्रसराम न खाचहि । (पतिरक)

१४ १५ व्यतिरेक १६ उपाहरण १७ अतिशयोक्ति १८ उपमा

१६ जहा तहा परमट मव तमा बानि चरण चौहै जहि ससा ।

हठ जाइ बलि वासुकि चापा ऊपर डरि मुरपति पुनि कापा ॥

(अतिशयोक्ति)

२० एकहि वर एक वहे दई दूमरि पर न कोऊ लेई ।

पिरधी बली होत जो आजू मागत दखि दान कर साजू ॥ (व्यतिरेक)

१ दान निसान चहै खड बाजा, करम कुत्रक वनु बलि लाजा । (व्यतिरेक)

२२ तपह कहा तै घम सेंगीता सत हरिचद दान बलि जीता । (व्यतिरेक)

४२२।३ ७ ^१ कथा रतनावती छंद १७३ ^१ ।	आवृत्ति
भगीरथ—चत्वार्यन (५० ला० गु०), २४५।१ ^३ ।	अ १
शाकण्डव ^५ —पद्मावत, ६११।१ और ३ ^५ ।	अ १
मातलि (इंद्र का सारथी—नल-दमन, ३३३।५ ६ ^१ ।	अ १
मुष्टिक—पद्मावत, ६११।चौ० १ और ३ ^७ ।	अ १
राधा—पद्मावत ४२८ १ ^८ , वही ४२६।४ ^६ , कथा	प्र १, अ १,
कवसावती पत्र ३२ छंद २०० । ^१	द १=३
श्याम—पद्मावत ७६।७ ^{११} , वही ४४६।२ ^{१२} इन्द्रावती	अ १
(उत्तराद्र) हस्त० ५० ८१ ^{१३} ।	
श्रेणु राजा—पद्मावत १६०।१ ^{१४} माघवानल-कामकदला	अ २ द १=३
(हि० प्र० गा० का० स०) ५० १६५, पवित १८ ^{१५} कथा रतना	
वना, छन्द १७३ ^{१६} ।	
शालिहोत्र ^{१७} —नल दमन, ३३३।५ ६ ^{१८} ।	अ १
सहस्रबाहु (सहस्रार्जुन)—चत्वार्यन (५० ला० गु०) १२१।५ ^{१९}	अ २

१ सामाजिक स्थिति चित्रण के सदभ म—

दक्षिण परवत उत्तर गंगा सोई चल जेहि पौरुष सगा ।
 पहिनाहि जो नहि कर विचारा बीचाहि भारि लहि बटमारा ॥
 जहा तहाँ देखहि परिवर डका राम जूधि जस रावन लका ।
 जा पुत्रुभी बलि दरवन राता तहा जात कोउ पूछ न वाता ॥
 आपुहि आप जनावहि जाई, जो बोहि मारग देइ बताई ।

(विरोधाभास—द्रव्य का विरोध किया स)

- २ कित बल वेन कहा कसार करौ पाडी चने अपार । (दृष्टांत)
- ३ उदाहरण, ४ माकण्ड्य एक ऋषिकुमार थे जिन्हान शिव की आराधना दक्ष-
 प्रत हाकर की जीर उनके अनुग्रह स अपन को यम बधन स मुक्त किया (दे०
 पद्मावत—सजीवनी व्याख्या, (वा० श० अ०) टिप्पणी, ५० ८१६) । ५ उपमा
- ६ क मा सालोत्तर जिन कहा क मातलि इंदर पक्ष अहा । (सद्वहालकार)
- ७ उपमा ८ (स० राधिका—प्रा० राट्टिया—अप० 'राही') उदाहरण
- ८ दृष्टांत
- ९ नक ऊडयो ऊहा त पपी आयो जहा तहाँ हरनपी ।
 बठी ही बहु दुप की जारी भरमी राधा देखि मुरारी ॥ (प्रतीक)
- १० १३ उदाहरण, १४ १५ उपमा १६ दृष्टांत, १७ शालिहोत्र एक ऋषि
 थे जिन्हाने इंद्र को अश्वत्थान विद्या सिखायी थी । १८ मन्त्र
- १९ (मम अरान का अर्थ सहस्रार्जुन है जिसका रावण म युद्ध हुआ था) उत्प्रेक्षा

पदमावत, १०२।५^१ ।

सावित्री—इन्द्रावती (पूर्वाह्न) पृ० १०६ मानिक गन्धर्व प्र ३
दोहा ६६^२ वही, (उत्तराह्न) हस्त० प० २९६^३, वही
(उत्तराह्न) हस्त० प० ३०१^४ ।

सुधर्मा—कथा कौशावती पत्र ३ छंद १८^५ । अ १

हरिश्चन्द्र—ममावती ३७६ । दाहा^६ पदमावत अ ४ द २
१६०।१^७, मधुमानती ११।८^८, वही १३।४^९ विशावती उ १ = ७
४०।१२^{१०} वही ४३।६७^{११} नानाप छंद ६३^{१२} ।

हिरण्यकश्यपु—विशावती २४५।६७^{१३} द १

प्र ११

अ ४५

दू १२

उ ६

== ७४

(घ) बहिक घोर पौराणिक देवी-देवता आदि सद्म घोर प्रयोग

शिवनोकुमार—कथा कौशावती पत्र ३ छंद १५^{१४} । अ १

इन्द्र—(सहस्राक्ष, सुरपति मधुमावती यष्टि का देवता)—

व्यायन २०।२४^{१५} वही २५।५^{१६} ममावती ५।४^{१७} अ ४२
वही २८०।दाहा^{१८} पदमावत १४।८५^{१९} वही ५३।१।२० उ २ ८६

१ रूप

२ सावित्री का पाप तर है प्रकट अनुर जा मव सो पाव राँक हाँ का भूय । (प्रनाह)

३ तुम जिन्नाय जायन कापा घन सावित्री जें तनि जाय । (प्रतीक)

४ यानम की सावित्री राय वान रवन आसू मा घाय । (प्रनाह)

५ मम तिन अमा गभा वनाव जन सुपरमा का छरि पाय । (उपमा)

६ अस्मान ७६ उमा १० व्यनिरत ११ अस्मान,

१० राजनि कथा सुनत मन योग हस्त पश्यत बहूत तुम शीर ।

मै अन्त नर जा बाई वरि त पायन तिया विनाई ॥

नर हाँ मा पाय पात्र अस्मि हरिश्चन्द्र राजा भात्र । (श्लोक)

१२ नानय वीणा मय ममार मारय मा मनु हाँ पयारा ।

नानय मी वर वर नारा मारय मा मयन कुम घरा । (दूतावत)

१६ मय मय वरही कथा कति अयो मयो त याम मयि त ।

वद दत ते न विभी समनिहवार मय शी वी ॥ (धार्मिक)

१५ मय मय १६ उमा १७ अस्मिनाति १८ अस्मान १९ अ सुवि

जावति

३१^१ वही, ६५।५^२, वही, १०८।६^३ वही, १७६।दाहा १६।५^४
 वही २१८।४^५, वही २४१।५^६ वही, २६५।३^७, वही, ४२१।
 दाहा३४।२८^८, वही ४२२।१,६ वही ४६५।२^९ वही, ५०५।१^{१०}
 वही ५०६।३ ५^{११}, वही, ५१५।ची० २ जोर ४^{१२} वही
 ५२१।६^{१३}, वही ६२६।३^{१४}, वही, ६२६।४^{१५}, वही ६३०।५^{१६}
 मधुमालती, १०।१ २, १^{१७} वही, १५६।५^{१८}, वही, १८७।दोहा,^{१९} वही
 २१८।दाहा^{२०} चिगावली, १४।४ ५^{२१} वही, ७६।दाहा^{२२} वही,
 १६१।३ ४^{२३} वही, ५१०।दोहा,^{२४} वही ५१६।१ ४^{२५} वही
 ५४२।६^{२६} वही ६०८।१ २^{२७} ज्ञानदीप, छंद १०८^{२८}, वही,
 छंद १६५^{२९} माधवानल कामकदला प० १८४ प० ११^{३०} वही,
 प० १८४ प० १३^{३१} वही, प० १२६ प० १५^{३२} वही प० १६४
 प० ८^{३३} कथा कंवलावती पत्र ३ छंद १८^{३४} कथा नल दमयती
 पत्र ३३ छंद ५५^{३५}, कथा पुत्रप बरिपा पत्र ४ छंद २५^{३६} हंस
 जवाहिर, १४७।दोहा^{३७} नल दमय ६।८^{३८} वही ४५।७^{३९}, वही
 ७६।३^{४०} वही, ११७।दोहा^{४१} वही २४६।६ ७,^{४२} वही १८१।

- १ रूपक २ उपमा ३ ८ अत्युक्ति, ६ उपमा १० १२ अतिशयोक्ति,
 १३ १४ उपमा, १५ अतिशयोक्ति, १६ उपमा, १७ २० अतिशयोक्ति
 २१ उल्लेख
 २२ जहा तहाँ परगट सब देसा बाजि' चरन कीन्हँ अहि सेसा ।
 इत जाइ वलि वासुकि चापा ऊपर डरि सुरपति पुनि कापा ॥ (अतिशयोक्ति)
 २३ व्यतिरेक २४ रूपक, २५ उत्प्रेक्षा
 २६ बठैउकु अर सिंह-आसना कह नर अहै पावसासना ।
 वह भयवा परतच्छ देखावा, तजि सुरभीन छर कहँ आवा ॥ (रूपक)
 २७ मा उर निकट बठि अब साइ, भजहु राजा इन्द्र की नाइ । (उपमा)
 २८ गऊ नारि दौऊ दिसि लसी, इ = साथ रभा उरबसी । (उत्प्रेक्षा)
 २९ मात्त ब्रभ पुरादर डोलत मदरमूल ।
 नकु रूप मम देपि क, केहि न होत जिव मूल ॥ग्राहा १०८॥ (अत्युक्ति)
 ३० राज कर लाग्य एह राजा, दिन दिन मानहुँ इन्द्र होद गाजा । (उत्प्रेक्षा)
 ३१ ३३ अतिशयोक्ति ३४ उत्प्रेक्षा
 ३५ ग्यान पुज पडित डिगु बस, वनि स इन्द्र पास सुर जस । (उपमा)
 ३६ नाग पवत दौर गी कसौ इन्द्र क नरें हाइ । (उल्लेख)
 ३७ ३८ अतिशयोक्ति ३९ उल्लेख ४० उत्प्रेक्षा ४१ अतिशयोक्ति
 ४२ व्यतिरेक, ४३ उल्लेख

३२६ हिन्दी सूफी काव्य में पौराणिक आख्यान

दोहा, यही २३२।५ ६^१।

कमला (पद्या रमा लक्ष्मी)—पदमावत ५३।६^२ कथा प्र १ अ ३-४
लीता, छ ५^३, यूगुफ जुमेया (रि० प्र० गा० वा० स०) प०
३६० पंक्ति १२ १३^४ (रमा), अनुगग बांगुरी ५।३।^१

कामदेव (रतिपति मदन मया मनोज मकरध्वज प्र १ अ ६,
ममय)—पदमावत ११७।६^३ माधवानन कामनदना वरी ३^३ द १ उ १-१२
निगिन प्रति वही (रि० प्र० गा० स०) प० १८२ प० १३^६
वही पृष्ठ १६७ प० ११^१ माननीय छ १६४^{११} वही
छ ३७^{१२} विशादनी ५३६।६ ७^{१३} कथा रतनावता छ
१^{२०} (दोहा १२६ क वा की नौगाई ३^{१४}) कथा नन दमयती
पत्र ३ छ १७^{१४} वही पत्र १३ छ ६३^{१५} यूगुफ जुमेया
(रि० प्र० गा० वा० स०), प० ३६० पंक्ति १२ १^२ (मनोज)।^{१६}

१ दम किय वह ना मिल जो लग लगन न होइ ।

दम मिल तो इन्द्र सा दम्भी और न कोइ ॥ (उपमा)

२ क मा मातातर जिन कहा क मातलि इबर पह अहा ।

क उजन राजा नल होई, क सो इद्र पचवा नहि को ॥

(म देह)

३ (लक्ष्मी) प्रतीक ४ उत्प्रेक्षा, ५ ६ व्यतिरेक ७ उत्प्रेक्षा

८ गरव सरव दुख देत रतिपति लकापति मुए ।

कम आदि किउ रेत जुरजोधन सासरायु मुन ॥ (दृष्टांत)

६ उत्प्रेक्षा १० व्यतिरेक ११ उल्लस

१२ तीनि पहर एह रनि मह करिय जो करना हा ॥

तव निचित बठेउ एक टाइ मागहुँ रति रतिपति की नाई ॥ (उत्प्रेक्षा)

१३ अप्रस्तुत प्रज्ञसा (साध्य निव घना)

१४ भति अकदार मिल रति धन मन उमग प उमहत लन ।

(प्रतीक/उत्प्रेक्षा)

१५ निपटही छीन लक जाव न निसन डिठ मेर जान कटि तरी रानी मन भूप की ।

(उत्प्रेक्षा)

१६ कनक सन में रति मदन दमयती नलराइ ।

कीता लीला करत हैं मानत हैं रस चाइ ॥ (रूपक)

१७ व्यतिरेक/अतिशयोक्ति

भावति

गणेश—ज्ञानदीप छद ३०^१ वही, छद ३०४^२ अ १, द १=२

चंद्रमा और राहु—नारकहा (मा० प्र० गुप्त) ४०।१ २^३, प्र ३,

पदमावत, ६१।३^४ वही, ३०४।५^५ वही, ३३२।७^६, वही ३४८।

३^७ वही ३६३।५^८, वही, ४२४।६^९, वही, ४४०।७^{१०} वही,

४४१।६७^{११} वही, ४४८।७^{१२} वही, ४७२।५^{१३}, वही, ५२२।दोहा

४३।७^{१४}, चित्रावली, ४३८।६^{१५}, वही, ५३६।६७^{१६}, नानदीप,

छ ३३५^{१७}, हस जगहिर, १२५।चौ० ४ और ६^{१८}, वही,

१८४।६७^{१९} वही, २१७।७४^{२०}, वही २५८।दाहा^{२१} वही

२६४।दोहा^{२२} ।

चंद्रमा-सुय और राहु—पदमावत ३०८।४५^{२३} वही, अ ५

३७०।१ २, २^{२४} वही ६०६।दाहा ५१।३^{२५}, वही, ६१०।७^{२६} हस

जवाहिर १२५।४ और ६^{२७} ।

ततोस कोटि देवता—पदमावत, २६४।४७, दोहा = १^{२८} उ १

धवतरि- चिगरखा, पृ० ६२।दाहा १^{२९} माधवानन प्र ३ अ १=४

कामकदला (हि० प्रे० मा० का० म०) पृ० २२२।पक्ति १८^३

चित्रावली, ३०८।४^{३१} ।

नौ अवतार (विष्णु क)—चित्रावली, ४७६।५७^{३२} उ १

पार्वती—चित्रावली, ३६७।७^{३३} अनुराग-वासुरी, ५०१।३६, अ १ उ १=२

छद ४ चौ० २^{३४} ।

१ हौं गुन गुनी गनेस ज्यों हौं जोग जुग ब्रह्म ।
जोग सिपहु तुम चित्त धरि कर विदवा आरम्भ ॥ (उपमा)

२ मुए काह जेड कहा की मही मुए राम नहि नीता रही ।
मुए पडु अम पाडव मुए कीरो मुए जो गवहि छुए ॥
मुए रिपेश्वर मुए महमू गनपति मुए, मुए पुनि सेमू ।
पमही पुहमी भरहि न अता पमहि मूर साएर भसमता ॥
उडइ सुमर पा सम तूला तुम पडित भन वति गुनि भूला । (उपमा)

३ रूपक, ४ उत्प्रेषा ५ उदाहरण ६ व्यतिरेक, ७ विरोधाभास ८ अति-
शयोक्ति ९ प्रतीक १० रूपक ११ प्रतीक, १२ प्रतीक । रूपवाचिशयोक्ति,
१३ उत्प्रेषा १४ उपमा १५ अप्रस्तुतप्रशमा (साहचर्य निवर्धना) १६
अप्रस्तुत प्रशमा १७ रूपक १८ व्यतिरेक १९ उदाहरण । अप्रस्तुत प्रशमा
२० अप्रस्तुत प्रशमा (साहचर्य निवर्धना) २१ अयाक्ति २२ उपमा
२३ उपमा २४ २६ अप्रस्तुत प्रशमा २७ व्यतिरेक २८ उपमा २९ ३०
प्रतीक, ३१ प्रतीकाउपमा, ३२ उपमा ३३ उदाहरण, ३४ उत्प्रेषा

ब्रह्मा - लोररहा ४०।४^१ वदायन ६३।दोहा^३, वही, अ७, उ१=८
 २६६।नाग^३ पदमावत ५४।ना० २।।^४ वही १०८।६^५ वनी
 २६५।४^६, चानदीपक छ ३०^७ वही छ १०८।^८

ब्रह्मा का दिन—नर दमन २१२।६६ । अ ८

रति—धियावली १८।५^१ चानदीप छ १६८^{११} प्र१ अ४=५
 कथा नत त्मयती, पत्र ३ छ १७^{१२} वहा पत्र १३ छ
 ६३^{१३} कथा रतनावती छ १३० चौ० ३^{१४}, अनुराग
 वागुरी ६।३^{१५} ।

राहु—मधुमावती ६१।तोहा^{१६} वही ३१३।१^{१७} वी अ३ उ१=४
 २८५।दाग^{१८}, हस जवाहिर २६६।नाग^{१९} ।

राहु केतु—लारकहा, ४०।१^{२०} वदायन ३।५^{२१} वही अ६ उ२=८
 ६७।नाग^{२२} वही ३३४।१^{२३} पदमावत ३६३।५^{२४}, यूसुफ जुलुवा
 (हि० प्र० गा० का० म०) प० ३५६ पविन ४^{२५} वहा प०
 ३६८, प० १^{२६} वनी प० ३६८ प० १० ११^{२७} ।

विश्वकर्मा—पदमावत २८६।३^{२८} मधुमावती ६२।१^{२९} अ ६
 वही ६३।१ यूसुफ जुलुवा (हि० प्र० गा० का० म०) प०
 ३५६ प० २^{३०} वही ६० प० ७^{३१} वही प० ३६१ प०
 २६^{३२} ।

विष्णु (उपेन्द्र)—चदायन ६३।तोहा^{३३} अ १

ब्रह्मपति—माधवानल कामकदला (हि प्रे गा का म) अ २
 प० १८५ प० १३^{३४} कथा कबलावती पत्र ३, छ १५^{३५} ।

गिर (त्रिनयन गिरिजापति, महेश)—पदमावत अ१ द१ उ१=३

१ उल्लख २६ अतिशयावित ७ उपमा ८ अतिशयावित (दे० इद्र),

६ १० उपमा ११ उत्प्रेक्षा (दक्षिण कामदव ११)

१२ उ प्रेक्षा (दे० कामदव १५)

१३ १४ रूपक (दे० कामदव १६)

१५ प्रतीक १६ पत्रोत्प्रेक्षा १७ उल्लख १८ २० रूपक २१ २२ उल्लख,

२३ रूपक २४ अतिशयावित २५ २६ उत्प्रेक्षा २७ उपमा २८ ३१ उत्प्रेक्षा,

२२ अतिरक ३३ उपमा, ३४ अत्युक्ति ३५ उत्प्रेक्षा

३६ नगर महा बडडौ कथा कहिय आयो गयो न वामे नहिय ।

ताम अन्त वसतु हैं प्रोक्त शभ त्रिहसपति ही सम सोहत ॥ (उपमा)

आवृत्ति

२१२।५^१ नानदीप, छद, ३०४^२, इद्रावती (उत्तराद्ध) हस्त०,
प० २२७^३ ।

सूय (रवि)—नानदीप छद १२०^४ ।

अ१

योग=

प्र ६

अ ११३

द ३

उ ११

१३६

(इ) गधव, यक्ष और अम्परा आदि सबन तथा प्रयाग

इत्र की छप्पन अम्पराएँ—हम जवाहिर, १२५।दाहा^६, अ ३ उ१=४
इद्रावता (उत्तराद्ध) हस्त० प० ६^६, वही हस्त० प० १०^७
भगावती, ३८२।दोहा^८

उवणी—कथा कौतूनी पत्र ३, छद २^९ चिप्रावती अ५ उ१=६
६०८।१२^१, यूमुफ-जुनेला (हि प्रे गा वा स) पृ० ३६० प०
१२ १३^{११} अनुराग-वासुरी १।४ ५^{१३} वही १३।५ ६^{१२}, वही
७१।६^{१४} ।

कुबेर—पदमावत, २६५।५^{१५} वही ३८७।६ ७ (घन अ ४ द१=५

१ उल्लस २ दृष्टांत

३ जागी कहिये जागी सोई भोगी कहिये भागी होई ।

जाग देखि प्रियन बलाना, भाग देखिक बिग्न लजाना ॥ (व्यतिरेक)

४ आपन हाथ कीह निरदोषा समुद्र जात बिन जनु रवि पोषा । (उत्प्रेक्षा)

५ व्यतिरेक,

६ चना मखिन सग प्रेमी नाहा चला जनु अछरिन माहा । (उत्प्रेक्षा)

७ मंदिर मा मुख सज बिछावा तापर राग का बंठाया ।

ना नइ अपहर चहुँ पामा धाच इन् बढा कविलाया ॥

(रूपवातागमोक्ति)

८ उल्लस ९ मनकी कि मनका मुखसी ऊबगी रभ क ती प्रियताची
क तिलात्तमा क मोन है । (मन्त्र)

१० आया जगन्नाथ दरवारा ममिहर निय सग दुई ताग ।

नाऊ नाहि टोक दिमि लमी, इत्र साय रभा चरवती । (उत्प्रेक्षा)

११ व्यतिरेक १२ उल्लस, १३ यमक और रूपक, १४ उल्लस १५ अनुक्ति,

सचय के कारण उमका विनाश) १ मधुमालनी २१८। गोहा^३,
माधवानन कामकला (हि० प्र० गा० का० स०) प० १८४ प०
१३^३ चित्रायली ४०।३^४ ।

प्रिताची—पानदीप छ० ३७१^५, कथा कौतूहनी अ ३ उ १
पत्र ३ छ० २^६ कथा नल दमयती पत्र ३ छ० १७^७ कथा
छीता छ० ५^८ = ४

समजा—पानदीप छ० ३७१^६ उ १

तिलोत्तमा—पानदीप छ० ३७१^७ छीता छ० २^९ अ ६ उ १ = ७
कथा कौतूहनी, पत्र ३ छ० २^{१०}, कथा नल दमयती पत्र
३ छ० १७^{११}, इन्द्रावती (पूवाद्) पृ० १४१ छ० ६०।१^{१२}
वही इन्द्रावती (उत्तराद्) हस्त० पृ० ७६^{१३} अनुगम बाँसुरी
पृ० १२६ हस्त० ४ ची० ३^{१४}

पल्लोमजा—पानदीप, छ० ३७१^{१५} कथा नल दमयती अ १, उ १ = २
पत्र ३ छ० १७^{१६}

मेनका—छीता छ० ५^{१७} कथा कौतूहनी पत्र ३, अ ५
छ० २^{१८} कथा नल दमयती पत्र ३ छ० १७^{१९} इन्द्रावती

१ दृष्टांत २३ अतिशयोक्ति ४ व्यतिरेक ५ उल्लेख ६ सङ्घ

७ नननि मेनका प्रिताची छवि घेरो किया लटकी जु नट लजू है चिबुन भूप की ।

(उपमा)

८ राजा के घर तनिया जाई मनुष रूप धरि कवला आई ।

कोऊ अस करत विचार भयो अपछरा को अवतार ॥

रच सुकसी की उनीहार क माक प्रिताची नार । (सङ्घ/उत्प्रेक्षा)

९ १० उल्लेख

११ क तिलोत्तमा आप है, बाहूत बाण बाहि ।

निधो निकारी रूप है किधौं माहिनी आहि ॥ (सङ्घ)

१२ सङ्घ १३ इस सुकसी निवास तिल तिलोत्तमा वाग ।

लौम म पल्लोमजा है रभ प्राति रूप की ॥ (यमक/उत्प्रेक्षा)

१४ मुख पर अधिक स्याम तिरा साण गति तिलोत्तमा को मन मोहा । (अभ्युक्ति)

१५ है रति की है गोरी की तिलोत्तमा नप, यह जगदर कविलास वा,

आण परी परणश । (सङ्घ)

१६ यतिरेक, १७ उल्लेख १८ यमक

१९ सङ्घ (दि० प्रिताची ८) २० सङ्घ (दि० उक्ता ८) २१ उपमा (स०
प्रिताची ७)

भावति

(उत्तराद्र) हस्त० पृ० ११^१, वही, पृ० १६^२ ।

मनकी—कथा कौतूहली पत्र २, छद २ ।^३

अ १

मोहिनी—कथा छीता छद ५ ।^४

अ १

रभा—चित्रावली, ३१८।५^५ वही, ६०८।१२^६

अ १४

नानदीप द्र ३७१^७, कथा रतनावती, छद ८८।चौ० १^८ कथा

उ २=१६

कामलता (हिन्दुस्तानी, पृ० १२७ दोहा १० के बाद चौपा^९

१ ३^९) कथा नल दमयती पत्र ३ छद १७^१ कथा कौतूहली

पत्र ३, छद २^{११}, माघवानल कामकदला (हि० प्रे० गा० का० स०)

पृ० १६० प० ३^{१२} यूसुफ-जुलेखा (हि० प्रे० गा० का० म०) पृ०

३६० प० १२ १^{१३}, इन्द्रावती (पूर्वाद्र) स्वप्नखड छद ३।दोहा^{१४}

वही पुनवारी खड छद ४०।२^{१५} वही, मानिक खट छद

७५।दोहा^{१६} इन्द्रावती (उत्तराद्र) हस्त०, पृ० ७३^{१७} अनुराग

१ जो तेरो छवि मैनका, देख रहै लजाय । ता मन सोव मूरत वस,

जन महै प्रीत न जाय ॥ (व्यतिरेक)

२ चितवन सबी मनका भेखा धन मुख ऊपर घूषट दखा ।

(उपमा)

३ सन्नेह (द० उवशी ६), ४ सन्नेह (द० तिनीत्तमा १०)

५ खेलहि निया सर्बाहि विलम्हाड, रति क रूप रम की जाई ।

(उपमा)

६ यामो जगनाथ दरवारा नसिहर लिय मग दुइ तारा ।

दोऊ नारि दोऊ दिसि लसी इ द्र साथ रभा उरवमी ॥

(उप्रेक्षा)

७ उल्लेख,

८ रतनावति है मानहु चद सखा सुक गुर मगल मद ।

जल रभा सो लागत नारी, किधौ चदत चीर निकारी ॥

(स दउ)

९ नाम बुड ग्लधूत विराज, क जल बेसी भौरी छाज ।

×

×

×

जाय कहै कि रभा पभ रूप अनूप वि रभ अचभ । (सन्नेह)

१० उपमा (३० तिनीत्तमा और पलोमजा) ११ सन्नेह (द० उवशी, मैनका),

१२ १३ व्यतिरेक, १४ इन्द्रावति है पदुमिनी, रभा तुल न ताहि ।

एक जीभ सो कित मी नाको मका सराहि ॥ (व्यतिरेक)

१५ कहां गयी वह दीप सिखा-सी जावा स रभा की दामो । (व्यतिरेक)

१६ मूधर मुन्दर विमल तन विमन सहज है गहि ।

तहि का पूछ चाहिए रभा चेरी जाहि ॥ (व्यतिरेक)

१७ तहि पातुर को रभा नाऊ रभा गनु उतरी वह ठाऊ । (उप्रेक्षा)

	श्रावति
बाँसुरी, पृ० ६३ छंद ५ चौ० ३ ^१ वही ८१ ^२ वही ७१।६ ^३ ।	
विद्याधर—माधवानन-कामकला (हि० प्र० गा० का० स०) पृ० १६६ प० १७ ^४ रत्नमञ्जरी पत्र १० छ० ८२ ^५ ।	अ १ उ १=२
विद्याधरी—द्रावनी (पूर्वाङ्क) प० ८५ छ० ११।१ ^६	उ २
गचा (इन्द्राणी) जाननीप छ० ३७१ ^७ अनुराग बासुरी, ६८।३ ^८ वही ८।३६।	अ ०
सङ्गा—कथा छाता छ० ५ ^१ कथा नलमयती पत्र ३ छ० १७ ^{११} कथा कीतूङ्गी पत्र ३ छ० २। ^{१२}	अ
हाहा (इन्द्र की मभा का एक गायक गधव)— चिप्रावन ७६।दाहा ^{१३} कथा पुष्प बरिपा पत्र ४, छ० २२। ^{१४} कथा रत्नमञ्जरी, पत्र १० छंद ८ ^{१५} ।	अ ० उ १=०
हूहू (इन्द्र की मभा का एक गायक गधव)—चिना वला ७६।दाहा ^{१६} , का। पुष्प बरिपा पत्र ४ छ० २५। ^{१७} कथा रत्नमञ्जरी पत्र १२ छ० ८०। ^{१८} ।	अ ० उ १=२
	योग
	अ ५ ^१
	द १
	उ १३
	=६७

(ब) भारतीय पौराणिक पत्रत, वक्ष, लता आदि

धमरवलि—पद्मावत ४३।। ^{१९}	उ १
अमृत—जाननीप छंद २ ^२	अ १
आकाश गंगा—पद्मावत ६००।दाहा १०।२ ^३	अ १
कल्पतरु—पद्मावत ६३।६ ^{२४}	अ १
छप्पन कोटि अग्निधा—पद्मावत २०४।४ (दाहा ८ ^{२५}	अ १

१२ अनिरक ३ उल्लस ४ उपमा

५^३ द्रावनि विद्याधरी विद्याधरी जाप अवतरा। (रूपक)

६७ उल्लस ८६ व्यनिरक १० उपमा ११ यमक/उपमा १२ मन्ह

१^२ अतिशयाक्ति/व्यनिरक १४ त्रिगयोक्ति १५ उल्लस १६ अनुक्ति।

व्यनिरक १७ अतिशयाक्ति १८ १९ उल्लस

२० छपा छपाकर छीपा कीह अमा छपाइ छप कहें दाह। (अनुपाम)

२१ २० उपमा २३ उल्लस

जावति

छिदानवे कोटि मेघ—पदमावत २६४।४ उदोहा ८^१ उ १
मदराचल—पदमावत, १४२।६^२ वही २६५।५^३, जान अ ३
नीप छद १०८^४ ।

सवा लाख पवत—पदमावत २६४।४ उ नीर दोहा^५ । उ १
सुमेरु—पदमावत २४२।६^६ वही २६८।५^७ वही प्र १ ज १^८
२६८।६^९ वही २८२।५^{१०} वही, ४६५।२^{११} वही, २२६।दोहा द १=१
५३।६^{१२}, वही ६३७।३^{१३} मधुमालती, १५६।५^{१४} वही २१८।
दोहा^{१५} चिन्नावली २०।१४^{१६} वही ४४।७^{१७}, नानदीप छद
३०४।^{१८} वहां छद १२^{१९} ।

याग

प्र १
ज १७
उ ४
=२२

(छ) तीर्थ स्थान आदि

असठ तीर्थ—नलदमन ४०।६ उ^{१६}, अ १
गिरनार—चिन्नावली, ४१२।दोहा^{१७}, उ १
ठाकुरद्वारा—इद्रावनी (उत्तराद्र) हरत० पृ० २६६^{१९} । अ १

- १ उल्लस २ उपमा, ३ ४ अतिशयोक्ति, (द० ब्रह्मा इद्र) ५ उल्लस
६ रूप ७ उ उपमा १० अतिशयोक्ति ११ उपमा १२ १५ अतिशयोक्ति
१६ वादि भरजिजा समुद्र घेसाइ वादिहि लागि रतनगिरि जाइ ।
वादि सुमेरु लागि जग घाव वस न द्वार जहेंगीर के आव ॥
(व्यतिरेक।अतिशयोक्ति)
१७ तब हसि गिरिजा हरमुख हरा कहसि सुमेरु सत एहिकेरा । (उपमा)
१८ उटत सुमेरु पाल सम तूना तुम पडित भल पडि गुन भूता । (रुष्टांत)
१९ बिरन रूप राज जगमाही राजा राय सो पाए तराही ।
अग्य त पाव जहां धावहि सापहि समुद्र सुमेरु नवावहि ॥ (प्रतीक)
२० बाउ बिपानी पुरुष सजाया कोऊ जान व साज बियोगी ।
निनकर दरमन जाइ जिन पाया जनु घटगठ तीरथ ह्व आया ॥ (उपमा)
२१ जहि इच्छा वसु जिय रहै आगित जनम विचार ।
करवट लज पराय महें बाग परहि गिरनार ॥ (उल्लस)
२२ पायउ तामु गुनी सब मारा बजनाय घी ठाकुरद्वारा ।
वनि मूरत का मुनत बगावु, पानसर बबहारा नजान ॥ (व्यतिरेक)

		भावति
प्रयाग—(प्रयाग में जाकर करवत लना) चित्रावली		उ १
४१२।१।१।		
स्यानगर—रत्नावली (उत्तराखण्ड) हस्त० पृ० २६६।		अ १
	याग	अ ३
		उ २
		==५
(ज) पौराणिक अस्त्र गस्त्र बाहन		
धनुन का धनुष (गाण्डाव)—चत्वारण (५० सा० गु०)	प्र १ अ५=६	
७८।३ १ ^३ बही २६०।५ (मनगरीफ प्रति १४७ अ) ^३ मगावनी		
३।१।१ ^५ पदमावत १००।५ ^१ वहा ४७३।५ ^३ नलदमन, ६०।८ ६ ^५		
धनुन का बाण—पद्मावन १६७।५ ७ ^६ अनुराग-वामुरी	अ ०	
१४।२ ^१ ।		
घट्ट (माह तीन) वज्र ^{११} —मगावती २४६।६।१। ^{१२} पद्मा	अ १ उ१=२	
वन ५०।८।१।१।२०। ^{१३} बनी ५१८।१। ^{१४} वही ५२६।१।१।१। ^{१५} ।		
कृष्ण का धनुष—पद्मावत, १०२।३ ४ ^{१६} ।	अ १	
चद्रमा का रथ—पदमावत ८१।१। ^{१७}	अ १	

१ उल्लस २ व्यतिरेक व्यतिरेक ४ उदाहरण ५ उपमा ६ रूपक
 ७ प्रतीक ८ उपदेश ९ उदाहरण १० रूपक
 ११ 'अन्धो वज्र (साडे तीन वज्र)

टा० वामुन्व शरण अग्रवाल ने पद्मावन सजीवनी व्याख्या द्वितीय स० पृ० ६५६ पर इसमें विषय में यह टिप्पणी दी है 'कौपीतिकी ब्राह्मण (१२।२) के अनुसार वज्र के तीन रूप थे जब सरस्वती और पंचदश भ्रूचाएँ। इन्हीं वज्ररूपों में देवा ने असुरों को इन लाका से भगा दिया। 'घतपथ ब्राह्मण' (१।२। ४।१) में इसी का एक नाम प्रचलित रूप दिया है 'इन्द्र ने वज्र पर वज्र चलाया। उसमें चार टुकड़े हो गये। एक तिहाई में तलवार (स्फय) एक तिहाई में सूत और एक तिहाई में रथ बन गया। वज्र चलाने से ना एक चिप्पी गिरी, वही बाण हुआ। महर्षि पुराण के अनुसार विश्वकर्मा ने मूय को खराद पर चलाया। उसमें तज की जो छीलन उत्तरी उसमें विष्णु का चक्र शिव का त्रिशूल और द्रुद्र का वज्र बना। इसी में बही इतना और है कि मसार में जितना कुछ विनाशकारी तत्त्व है वह सब तपने चूने में बन गया।

१२ उल्लस १३ उपदेश १४ १५ उपमा १६ रूपक १७ अतिशयोक्ति

	भावति
परशुराम का धनुष बाण—मिरगावत (दिल्ली वाली प्रति अनुकृति श्री उदयशंकर शास्त्री के पास) छंद २१२ ^१ मगावती, ३३।१।१ ^१ , पदमावत, १०२।५ ^३ ।	अ ३
सूय का रथ—पद्मावत ४१।१ ^४	अ १
	<hr/>
योग	प्र १
	अ १४
	उ १
	<hr/>
	= १६

(स) पौराणिक पशु पत्नी एव कीट

उच्च श्रवा—चित्रावली २६१।७^५ कथा कवलावती, पत्र ३, छन्द १६^१ अ २

ऐरावत—पदमावत, १०६।५^{१०} कथा कवलावती, पत्र ३, अ २ छन्द १६^५ ।

कूम (कच्छप कमठ)—पदमावत ४०।१ २^६ वही अ ८
 ४१।१।१^१ वही, २४१।७^{११}, वही, २६५।६^{१२} वही, ४६७।
 दोहा ४२।६^{१३} वही, ५१४।७^{१४}, चित्रावली, ३५४।१^{१५}, नल दमन
 १४।४^{१६} ।

गरुड—पद्मावत, २६४।दाहा २५।८^{१७} अ १

तक्षक—यूसुफ जुलखा (हि० प्र० गा० का० स०) पृ०
 ३५६। पक्ति १२^{१८} अ १

- १ उपमा २३ रूप ४ अत्युक्ति
- ५ उच्चश्रवा मूर सघ ली ह, छित मह पुन्मि सहस ससि की हे । (रूपकातिशयोक्ति)
- ६ मुतुति अमुनि कमै कीज, कौन आन पटतर ऊन दीज ।
 उच्चइन्द्रवाक कहत मुरपति कै बुरी लगै भाग इन गति क ॥ (व्यतिरक)
- ७ अनिशयोक्ति
- ८ ऐरावति सम गज सभै, रथ सभ मनहु विमान ।
 भाति मिली अति दहन की रूपगइ मरतवान ॥ (उपमा)
- ९ १० अतिशयोक्ति
- ११ माहिल सन साजि दल चला कमठ कसमसा, अहि खलवला । (अतिशयोक्ति,)
- १२ १७ अतिशयोक्ति,
- १८ कस मास का कर दखाना तक्षक दखि सो ताहि लजाना । (व्यतिरक)

आवृत्ति

नागवास—पद्मावत ६७।४^१।
 नागो क अष्ट महाकव^२—पद्मावत ६६।१।हा १०।१^३
 वासकि (फणी द्व)—चदायन (प० ला० गु०) १३।१ २^४
 वही १००।तोडा^५ वही ११६।१^६ मगावती ५।४ ५^७ वही
 १०६।चौ० ५, दोहा^८, वही २५४।५^९ वही ३८२।दाहा^{१०}
 पद्मावत १४।४ ५^{११} वही ४०।१ २^{१२} वही ६६।१ २^{१३} वहा
 १७६।दोहा १६।५^{१४} वही २४१।५^{१५} वही ३०२।५^{१६} वही
 ४२१।दोग ३४।२८^{१७} वही ५०५।१^{१८} वही ६३०।४^{१९} मधु
 मालती २१८।दोहा^{२०}, माघवानल कामकदला (हि० प्र० गा० का०
 स०) पृ० १८४, प० ११^{२१} वही पृ० १८४ प० १३^{२२} वहा
 पृ० २१७ प० १२^{२३} चिनावती १४।४ ५^{२४} नल दमन १४।५^{२५}
 मूसुफ जुनखा (हि० प्र० गा० का० स०) प० ३५८ प० १७^{२६}
 वही पृ० ३६३ प० १० ११^{२७}।

नागनाग—पद्मावत ८५।दा० २।२१^{२८} वही २६५।३^{२९} अ १७
 वही ४६५।२^{३०} वही ४६७।दा० ८२।६^{३१} वही ६२६।४^{३२} वही
 ६३७।६^{३३} चित्ररेखा पृ० ८२ चौ० १ ४^{३४} मधुमानता १४६।५^{३५}
 वही १७०।दोहा^{३६} वही ४३१।१ २^{३७} माघवानल कामकदला
 (हि० प्र० गा० का० स०) पृ० १८८ प० ६^{३८} वही पृ० २२६
 प० १५^{३९} वही पृ० २४० प० २^{४०} चिनावती ४।६^{४१} वही
 ३५४।१^{४२} ज्ञानदीप, छ^{४३} ३००^{४३} वना काकावती, पत्र ७ छ^{४४}

१ उत्तम

२ नागा के अष्ट महाकुल वासुकि तनक कुाक तवाक पद्म, शखचूड म
 पद्म धनजय (प० पद्मावत मनीवती व्याख्या पृ० ६७)

४ अन तो वासुकि पद्मा महापद्मा रत्नक ।

कुलीर कवट गसाहाष्टी नागा प्रकीर्तित ॥ (शब्दकल्पद्रुम २।८४६)

४ उत्प्रेक्षा ५६ जयवित्त ७ हेतु प्रेक्षा ८ अतिशयोक्ति ९ निदर्शन

१० अत्युक्ति ११ उत्तम १२ १६ अत्युक्ति १७ यतिरेक

१८ २२ अतिशयोक्ति, २३ उत्प्रेक्षा २४ २७ अत्युक्ति

२८ ३१ अतिशयोक्ति ३२ रूपक, ३३ अतिशयोक्ति ३४ उपमा

२५ ४० अतिशयोक्ति

८१ गंगा तथा परगट मत्र सा याति चरन चौ ^३ अहिंससा । (अतिशयोक्ति)

४२ अतिशयोक्ति

४२ मुण रिपम्बर मुण महमू, गतपनि मुण मुण पुनि सेसू । (दृष्टान्त)

आवृत्त

५१, कथा कामलता (हिन्दुस्तानी पत्रिका, पृ० १२८)
दाहा १६^१।

याग=	अ ५४
	द १
	उ २
	५७

(ज) लोक—समुद्र आदि

अमरावती—कथा अनावती पत्र ३ छ १५^३ अ १
अष्ट ब्रह्माण्ड—पद्मावत १४।६^४, वही ५०६।३^५। अ ३
इन्द्रलोक (इन्द्रपुरी देवलोक सुरभवन)—पद्मावत २८।६^६ प्र १
वही, ४०।१२^७, वही ५१५।२ नीर ४^८, वही, ५५३।३^९ वही,
५५४।१^१ वही ५६०।६-७^{११} चित्ररत्ना, पृ० ७८ चौ० ३^{१२},
कथा रत्नावती दोहा ३ क बाद चौ० ६^{१३} नल दमन १४।६ ७^{१४},
वही २७२।६^{१५}।

इन्द्रसमा—(इन्द्र का अथाहा) लोकरत्ना (मा० प्र० गु०) अ ६
६५।५^{१६}, चदायन (प० त्रि० गु०), २६६।३ ६^१, वही ३७८।५^{१८}
पद्मावत, ४७।१^{१९} वही ११८।६^{२०} चित्ररत्ना पृ० १०३।चौ०
५ ६^{२१} मधुमालती १५६।५^२ माधवानल-कामकदना (हि० प्र०
गा० का० स०) पृ० १६४ प० ८^{२२}, नल दमन २८।३^{२३}।

१ हीं जगपति जगत सभ जानें तू मक्का जा जान न भान ।

× × ×

काह हाद मधुपुर ज्या मारुं मेस भय नायनू छारुं ॥ (उपमा)

२ जा ही रमना सेय प करिहो मागि बपान ।

छवि अन्तुनि कवि 'जान कहि गिहै मेय निगान ॥ (उपमा)

३ मनहुं अंन अमरावती, स्मराइ की गाव ।

पपी जन पपी प्रान औ सखन बह ठाव ॥ (उत्प्रेक्षा)

४ अत्युक्ति ५ अत्युक्ति (दरुं सप्तसद पृथ्वी के एक अणु का ब्रह्माण्ड कहा गया है।)

६ उपमा, ७ प्रतीक ८ उपमा ९ उपमा १० उपमा

११ उपमा, १२ उपमा,

१३ लियो गीनतावान रिसान, इन्द्रपुरी तब तैं धरताड । (अतिशयोक्ति)

१४ अनिगमोक्ति, १५ १६ उपमा, १७ प्रमाणकार, १८ २० उपमा,

२१ २२ अतिशयोक्ति, २३ उपमा, २४ उपमा ।

इन्द्रासन—बलायत, ११६।१ २^१, मधुमातली १५६।५^१
 माघवानल-बामकाला (हि० प्र० गा० बा० स०) पृ० १८५
 प० ११^१ वही पृ० १६४ प० ८^१ चित्रावली ५११।१।हा^१
 नन-मन ६।८^१ ।

अ ५ उ १=६

बलिदान (बनाम)—पद्मावत ४ १४^१ वही ४६।१^१
 चित्ररत्ना प० १०७ चौ० ४^१ मधुमातली ८४।१^१, नमःमा
 २६६।६७^१ चित्रावली, ४१६।१।०^१, इन्द्रावता (उत्तराद)
 हस्त० पृ० १०^१ वही पृ० ७६^१ ।

अ ५ उ ३-८

चौदह भूषण (गण)—पद्मावत १।५^१ वही, उ ४
 ४०८।१^१ वही, ६६।१।० ६।५^१, चित्ररत्ना, पृ० ६५ चौ०
 १०^१ ।

उ ४

चौदह कुण्ड (नाक)—हम प्रवाण १२५।१।हा^१ ।

अ १

जम्बु दीप—पद्मावत १७६।६७^१ वही २६८।^१, उ ८
 वही २७२।५^१, वही २८७।५^१ वही ३६४।चौ० ६७, गहा
 ३१।६^१ वही ८२।१।८^१ मधुमातली २६७।२^१ इन्द्रावता
 (उत्तराद) हस्त० प० ८^१ चित्रावली ४१६।१।०^१ ।

उ ८

तीन लोक—पद्मावत ६६।१।० ६।५^१, मधुमातली, ८१।१^१ । अ १, उ १=२

१३ अतिशयाकित ४ उग्रगा

५ दसों सोच हस्ता बड़ा नहि जानी कहि काज ।

पुन्मी आव इन्द्र जनु तजि इन्द्रासन राज ॥ ५११ दाहा ॥ (उत्प्रेक्षा)

६ उल्लस ७ उपमा ८ उग्रगा ९ उन्नत १० उत्प्रेक्षा ११ १२ उल्लस,

१३ मन्त्रि म मुम्न सज बिछावा तापर राजा का बन्टावा ।

ठाठ भई अपहर चहुँ पासा बीच इन्द्र बठा बलितासा ॥ (स्पृष्टातिशयोक्ति)

१४ है रति की है गौरा, की निलासमा नम ।

मह अपहर बलितास का आ परी यह दम ॥ (सन्तुह)

१५ १८ उल्लेख १६ छपन अप्परा इन्द्र का छिप जगत की रान ।

काउ नहि चौदा कुण्ड मा वटि क म्प समान ॥

(अतिशयाकित)

२० २७ उल्लेख

२८ जहाँ न मानुम मचर निरजन जान मरम् ।

जम्बु दीप क मान भरत खड ओषम् ॥ (उल्लेख)

२९ उल्लेख ३० अतिशयाकित ।

	मावति	
नव खण्ड पृथ्वी—चदायन (भोपाल प्रति, स० विश्वनाथ प्रमाद) ८५।५ ^१ चदायन (५० ला० गु०), २५०।दोहा ^२ , वही ३२२।४ ^३ , वही, ३६३।४ ^४ , पदमावत ४६८।दो० ४२।१० ^५ मधुमालती १०।३ ^६ , वही, ११।४ ^७ , वही, ११।दोहा ^८ वही, १३।दोहा ^९ वही ४४।३ ^१ , वही, ६०।दोहा ^{११} वही ६२।२ ^{१२} , वही ८१।१ ^३ वही, १८६।दोहा ^{१४} , वही, ४१४।२ ^{१५} ।	अ ५, उ ६=१४	
नव निधि—पदमावत, ३७।१ ^{१६} ।	उ १	
पाताल—पदमावत, १४।४ ५ ^{१७} , वही, ४३।४ ^{१८} ।	अ १	
वर्णाश्रम—मधुमालती, १८६।दोहा ^{१९} ।	अ २	
भग्नखण्ड—मधुमालती ३६७ ३ ४ ^{२०} , चित्रावली, ४१६।-दोहा ^{२१} ।		
मधुपुर (मयूरा)—कथा कनकावती, पत्र ७, छद ५१ ^{२२} ।	व १	
शबलोक—पदमावत ५०।दो० ३।१ ^{२३} , वही, ५३।दोहा ३।४ ^{२४} वही ७५।१ ^{२५} ।	प्र १, अ १, उ १ =३	
पटखण्ड—पदमावत १४।४ ^{२६} ।	अ १	
सप्त खण्ड पृथ्वी—लोककहा (मा० प्र० गु०) ४६।दोहा ^{२७} , पदमावत ५०६।३ ^{२८} ।	अ १, उ १ =२	
सप्त द्वीप—पदमावत, २५।१ ७ ^{२९} वही २७२।५ ^३ वही ४६८।दो० ४२।१० ^{३१} वही ५०६।३ ^{३२} , मधुमालती १०।३ ^{३३} वही, १३।दो० ^{३४} , वही ४४।३ ^{३५} , वही, ६०।दोहा ^{३६} , वही, ६२।२ ^{३७} , हस-जवाहिर, ११३।४ ^{३८} वही, पृ० ४२, प० १८ २७ तक, (छद ११५) ^{३९} वही, १२५।७ ^४ ।	अ ७ उ ५=१२	
१ नव खण्ड प्रियमी सुना न काऊ, ऐस दान को देइ बताऊ। (उल्लेख)		
२३ उल्लेख, ४ अतिशयोक्ति ५६ उल्लेख, १० १३ अतिशयोक्ति, १४-१६ उल्लेख, १७ १८ अतिशयोक्ति, १६ उल्लेख २० उल्लेख		
२१ उपमा (दो० शेषनाग) २२ उल्लेख, २३ रूपक		
२४ प्रतीक (शिवलोक गमन मत्यु का प्रतीक) २५ अतिशयोक्ति		
२६ उल्लेख, २७ अत्युक्ति,		
२६ द्वीपा के नाम दिया द्वीप सरन द्वीप जम्बू द्वीप, लकाद्वीप कुश-स्थल द्वीप, महस्थल द्वीप सिंहल द्वीप (भेदकाशियोक्ति)		
३० ३१ उल्लेख, ३२ अतिशयोक्ति, ३३ ३४ उल्लेख, ३५ ३८ अतिशयोक्ति, ३६ उल्लेख (कासिमशाह न हस जवाहिर' (छद११५) म इन सप्त द्वीपो के नाम गिनाये हैं महाद्वीप, द्वीप कम अस्य दिया द्वीप, कनक द्वीप, सिंहल द्वीप, जम्बू द्वीप, सरा द्वीप।) ४० अत्युक्ति।		

	आवृत्ति
सप्त पाताल—पदमावत ४०।४ ^१	अ १
सप्त समुद्र (उदधि) ^२ —पदमावत १४१।दोहा १३।२ ^३ वही, १४२।६ ^४ वही १५०।दो० १५।१ ^५ , वही १५३।१ २ ^६ , वही ५२२।२ ^७ ।	अ ३ उ२=५
सप्त स्वर्ग (बकुण्ठ)—लोककथा (मा०प्र०गु०) ४६।दो० ^८ वही ४६।५ ^९ पदमावत ४६।दो० २।२४ ^१ वही ५०।६।३ ^{११} ।	अ २ उ२=४
स्वर्ग नरक—पदमावत ४३।४ ^{१२} वही १७६।दा० १६।५ ^{१३} चित्ररेखा, प० १०१ चौ० ५ ^{१४} मधुमालती, १५७।दो० ^{१५} , हरिचन्द्र की पुरी ^{१६} —पदमावत ५०।६।३ ६ ^{१७} चित्रावली, ४३।६ ७ ^{१८} वही २६७।३ ^{१९} ।	अ ३, उ१=४ अ २ उ१=३

योग

प्र २

अ ६६

उ ४०

१०८

१ अयुक्ति ।

२ जायसी ने पदमावत १४१।दो० १३।२ में सात समुद्रों के नाम गिनाए हैं ।
६ समुद्रों के नाम तो उन्हीं स्पष्ट लिये हैं जो य हैं—खार खीर (क्षार),
दधि उदधि सुरा और किलकिला । परंतु सातवें समुद्र का ज्ञान कहा है ।
उमरा अथ मानसराजक लगाना चाहिए । मानसरोवरक सिंहल द्वीप में माना
गया है—सतए समुद्र मानसर जाए (पदमावत १५६।१) । (७० पदमावत
मतीबना याग्या द्वि० म० पृ० १६२) ।

३ उल्लस ४ उदाहरण ५ उल्लस ६ अतिशयोक्ति।तेतूअक्षा,

७ (जायसी ने उदधि समुद्र को जलना हुई आग के समुद्र के रूप में माना है ।
दखिए सुलमान का यात्रा विवरण काशी पृ० ३२ । जायसी उदधि समुद्र से
उदधि समुद्र का भिन्न मानत था ।) (उत्प्रेक्षा)

८ ८ उल्लस १० उपमा ११ १३ जत्युक्ति १४ उल्लस, १५ अनिशयोक्ति,
१६ अथाध्या के राजा हरिचंद्र अपनी भव प्रजापति के साथ स्वर्ग लोक चले गये थे ।
वहाँ उनको निवास के लिए एक अलग पुरी की कल्पना की गई है ।

१७ उत्प्रेक्षा

१८ कौबि-पूत एक दस बखाना सत्य पूत चारों खंड जाना ।

निहचय सत्य अमर की मुरी प्रगट दक्षिण हरिचंद्र-मुरी ॥

(उल्लस)

१९ घाण्डे दखि रही घर का सी गई अथ हरिचंद्र पुरी सी ।

(उपमा)

आवृत्ति

(ट) पद्मिनी नारी का उल्लेख

पद्मिनी नारी^१—चंदायन (प० ला० गु०), ३३।४^३, मगा वती, ७६।२^३, पदमावत, १८४।५ ६^५, वही, १६०।४^५ नल-दमन, ३१।१०^६, कथा रतनावती, दाहा ८२ के बाद, चौ० १^०, इन्द्रावती (पूर्वाद्ध) मुद्रित स्वप्न खड पृ० १६, छद ३३।दोहा^८ ।

रजद्वीप की पद्मिनी—इन्द्रावती (पूर्वाद्ध) मुद्रित, मालिन खड पृ० ५१, छद ३० चौ० १-४^६, वही, फुलवारी खड, छद १, चौ० १ और ३^{१०}, वही नहान खड पृ० ६०, छद १, चौ० २^{११}, वही, (उत्तराद्ध) हस्त०, पृ० ८^{१२} ।

सिंहल की पद्मिनी—मिरगावत (दिल्ली वाली हस्त० प्रति, अनुवृत्ति श्री उदयशंकर शास्त्री के पास), पृ० २०४^{१३}, पदमावत, १८३।२^{१४}, वही ४३१।४^{१५}, वही, २०८।३^{१६}, चिनावली, ४१६। चौ० ७ और दो०^{१७} जानदीप छद ४४६^{१८} नल दमन ३१।७ ० और दो०^{१९} वही ३२।४^{२०} ।

योग =

४३

उ १६

१६

१ साधन माला (खड १) भूमिका भाग श्री विनयतोप भट्टाचार्य गायकवाड ओरियंटल सिरीज म मुद्रित । सबप्रथम 'साधन माला' म ही उल्लेख हुआ है कि सिंहल म पद्मिनी जाति की स्त्रिया मिलती हैं दे० एनसाइक्लोपीडिया त्रिटानिका का धीमन प्रभाग ।

२ ६ उल्लेख

७ रतनावती की सुनि के नाम, मुसकानी परमिनी अभिराम । (उल्लेख)

८ ११ उल्लेख

१२ श्री हेंमि कहेनि कुवर की ओरा जम्बू दीप जनम भा तोरा ।

जहा काम तिमना श्री माया, तहि तजि इहाँ विरल कोउ आया ॥

जाग पाव को बल तुम पाएहु तेहि तनि राजदीप मो आएहु । (उल्लेख)

१३ सिंहल दीप व्हवे जनु जावा पदुमिनि रूप विससह भवा । (उत्प्रेक्षा)

१४ उल्लेख १५ १६ उपमा

१७ सिंहल दीप दीप उजियारा जो रेखा सो मनि मनिभारा ।

नर नारी मुदर सब बसगित जनु कबिलास ।

ऊच नीच घर पदुमिनि मानहि भोग विलास ॥४१६॥ (उल्लेख)

१८ भरि सुपपाल महस दुइ चेरी सभ पदुमिनी सिंहल केरी । (उल्लेख)

१९ २० उल्लेख ।

परिशिष्ट—२

भारतीय निजधरी आख्यानों और पात्रों आदि के प्रयोग

सूफी कविया द्वारा अपन प्रेमाख्यानक काव्यो म भारतीय पौराणिक आख्यानों क अतिरिक्त कुछ निजधरी आख्यानों तथा पात्रों का भी प्रयोग किया गया है। इनका आन्तकारिक दार्ष्टान्तिक तथा उल्लेखात्मक प्रयोग ता हुआ है किन्तु प्रतीकात्मक नहीं। नाथपथ से प्रभावित होन के कारण हिन्दी सूफी कवियो ने नाथपथी योगियों जैसे भक्त्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ और जालधरनाथ के नामों का भी उपयोग किया है। इनके प्रतीकात्मक प्रयोग भी हुए हैं। निजधरी आख्यानों तथा पात्रों क प्रयोग का स्वरूप निम्नांकित सदभ सूची से जात हुआ जाएगा

भारतीय निजधरी आख्यान

भावति

गोपीचन्द राजा को कजरी वन ले जाना जालधरनाथ योगी द्वारा

पदमावत ३४१।३ ३^१, वही १६३।६^२ वही १३०।६ ७^३ अ ३ २१—४

भागी गोपीचन्द भागा म फँसे थे। जोगी जालधरनाथ उह लकर वन मे चले गये। नागमती कहती है कि इसी तरह हीरामन सुग्गा मेरे प्रियतम को हर ले गया।

चित्रावली ४१६।१ ओर ४^३ गिरनार म आकर कुंवर सुजान सोचता है कि सेना और स्त्री को साथ म लाकर उसन ठीक

१ उदाहरण, २ उदाहरण ३ उदाहरण (द० पदमावत सजीवनी व्याख्या द्वि० स० पृ० १४८ पर गोपीचन्द और कजरी वन सम्बन्धी टिप्पणियाँ)।

४ प्रेम पथ अक्सर पग दीजे एहिजा कोऊ सग न लीजे।

×

×

×

कुंवर कटक ल डूगन चाला सग सकल माया जजाला।

जो सेना गोनत एहि पथा गोपिचन्द नहि पहिरन कया ॥

अगसर होइ जो परयो अघावा कुंवरहि डूढि बेगि ल आवा।

(दृष्टात)

भावति

नहीं किया, क्योंकि यदि इही चीजों के साथ रखने से लक्ष्य प्राप्ति होती, तो राजा गोपीचंद ने क्या न पहती होती ।

बताल (अगिया बैताल)—माघवानल-कामकदला, हस्त०, नागरी उ १ प्र० सभा की प्रति, पृ० ३५^१ ।

भक्त हरि का रानी पिंगला के वियोग में जोगी बनना—
फजरी बन जाना

अ ७ द २ उ १
= १०

मगावती, छंद ३५^३ राजा न कुंवर के लिए सरोवर-तट पर एक महल बनवा दिया जिसकी दीवारों पर पिंगला के वियोग में भक्त हरि के वन जाने का चित्र भी बना था ।

मगावती, ६६।दोहा^३ वही, ६७।२^५ राजकुंवर मगावती व चले जाने पर वियोग-कातर होकर भक्त हरि के जोगी बन जाने के मध्ययुगीन आख्यान का स्मरण करता है ।

पदमावत, १६३।६-७^५ सखी द्वारा पद्मावती को योगी रतनसेन के विषय में बताना और भक्त हरि से उसकी तुलना करना ।

वही २०८।३^६ रतनसेन शिव से कहता है कि जैसे भक्त हरि के लिए पिंगला थी, वैसे ही मरे लिए सिंहल की पद्मिनी है ।

माघवानल-कामकदला (हि० प्रे० गा० का० स०), पृ० २०६ प० २०^७ वियोगी की दृष्टि से माघवानल और भक्त हरि की तुलना ।

वही पृ० २०८ प० १८^८ माघवानल मंदिर में यह लिखकर रख आता है कि वियोगी ही वियोगी के दुःख को समझ सकता है । भक्त हरि होत तो समझते ।

वही पृ० २१७ प० १२^९ पिंगला ने जमे प्राण दे दिये थे वैसे ही माघवानल के मरने (भूठ मूठ) की खबर सुनकर कामकदला ने प्राण त्याग दिये ।

वही पृ० २३१ प० ६^१ माघवानल-कामकदला वने ही मिले जैसे भक्त हरि और पिंगला मिले थे ।

१ कहे बताल सुनो बलवीरा मैं ल्याऊँ जीवन को नीरा ।

वेगहि गयो वीर बैताला सुधा-कुंड जहाँ हतो पताला ॥

भर घट लियो न बिलम लगावा तुरत वार अबत ले आवा ।

(उल्लेख)

२ उल्लेख, ३ उदाहरण ४ उपमा ५ उदाहरण ६ ७ उपमा ८ दृष्टांत

९ उदाहरण १० उपमा ।

आवृत्ति

क्रम की सेवा प्रगिया बताल द्वारा
मगावती, २२७।दाहा^१

अ १	
योग	अ १४
- १	दृ ४
।	उ ३
२१	

भारतीय निजधरो पात्र सदभ और प्रयोग

कालिदास—नानदीप, छंद ७३।^२

उ १

गापीचंद राजा^३—पदमावत, १३०।६ ७^४, वही, १६०।२^५,
वही १६०।६^६, वही, ३६२।१ २^७, नानदीप, छंद २८०^८, इन्द्रावती,
(पुत्राद) प० ४६, छंद २३।७ और दोहा।^९

जगदेव^१—पदमावत, ६११।चौ० १ और ३^{११}, अ १ द १=२

१ उदाहरण

२ पंडित अगम छमीछा सूभ, अरथनि अरथ रच महें सूभ ।

वाथ्य करं ससकीरत भाषा, कालिदास कवि उपमा राषा ॥ (उल्लख)

३ गोपीचंद बगाल के राजा माणिकच २ के और उनकी रानी मनावती क पुत्र थे ।
मनावती न जो भक्त हरि की बहिन थी, योगी गुरु जालधरनाथ म लाला दिलरा
कर (जालधरनाथ का नाम 'हाडपा भी था) योग भाग म प्रवृत्त किया । हिन्दी
म लखनदास द्वारा रचित एक गोपीचंद गान है ।—(२० पदमावत मजीवनी
ध्याख्या द्वि० म० पृष्ठ १४८ ।)

४ उदाहरण ५ व्यतिरेक ६ सदन ७ उदाहरण,

८ जोगी मीष जानि मत्र घाण, राएमान मोई आपु मा आण ।

बहनि बहौ सों आणहु गापीव^१ अठ मात्र ॥

गारुनाथ की भरथरी की ही जगि मगात्र । (संश्लेषकार)

९ तनीय मुख्ययोगिता

१० धार के परमार राजा उदाहरण की अर्थ। ग ॥ २० गुण का नाम अरथ म ।
जगत् अपनी विमाता के आण म, उपके पुत्र अरथ म ॥ २१ गारुनाथ म
का माग निरपटव करन क अिध अरथी अर्थ के २ ॥ २२, म, ग अरथी म १ २ २ २
पादन म महाराज गिद्धराज जगदीश क मही (श्रीवा) ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥
यथा तिया । जगत् म गिद्धराज की अर्थ म ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥
(त्रिपद टिप्पण 'पदमावत मजीवनी ध्याख्या, द्वि० म०, पृष्ठ १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००)। ११ उदा।

वही, ६३४।४^१ ।

आज^१—पदमावत ६११।वी० १ और ३^१ वही, अ १, ६१=२
६३४।४^४ ।

पिंगला—मृगावती २३२।२^४ २३६।४ ५^१ पदमावत अ ३
१६३।६-७^१ ।

बतास (अग्न्या बतास)—वदायन (प० ता० गु०) अ १ उ२=३
२०५।४^४ माघवान-वामकदना हस्त० वही प्रति^६, वही (हि०
प्रे० गा० स०) प० २२० प० १० १५^१ ।

भक्त हरि—मृगावती २३२।२^१ पदमावत १६०।२^१ अ ८ दूर=१०
वही १६३।६ ७^१ वही २०८।३^१ वही ५६५।तोहा ४६।१^१ ५
पानपीप छ ६३^१ वही छ १६०^१ वही छ २८०^१
वही, छ १७६^१, इन्द्रावती (पूषाढ), २३।वी० ७ और
दोहा^१ ।

१ दृष्टांत २ उपमा ३ अष्टांत

४ आज रणधम्भीर के राजा हम्भीर का अत्यन्त विन्वासपात्र और प्रधान वीर
था। यन् अत्यन्त स्वामिभक्त था। हम्भीर अलाउद्दीन के साथ युद्ध करते हुए
आज को ही अपना दुःख मीनकर स्वयं निवृत्त हुए। आज न दो दिन तक बही
वीरता से दुःख को रम्य करने का वीरगति पायी। (दे० पदमावत मजीबनी
व्याख्या द्वि० स० प० ८१६)

५ उदाहरण ८ उल्लेख,

६ सात बरम की बटथो मान, पाँच बरम पट्टि भयो बतास। (पाण्डित्य का प्रतीक)

१० उल्लेख ११ उदाहरण १२ व्यतिरेक १३ सन्देह १४ उदाहरण,
१५ दृष्टांत, १६ दृष्टांत (‘हरिचन्द्र’)

१७ एहि दुप मा अति चमकत माया जागि तो जोगि मछिअर नाथा।

जौ भोगी तो राजा को भरपरि नाहीं दूमर हो ॥ (उपमा)

१८ सन्देह (दे० गोपीचन्द्र ६)

१९ राजा बड्ड सुजात सरेपा विक्रम भय भोज कर लपा।

कहेसि मीचु अब प्रछौ ताही एहि विधि कही कहाँ निज जाही ॥

(तृतीय तुल्ययोगिता)

२० जोपी भेल न सकउँ मराही गोपीचन्द्र दूमरो आही।

होत जियत को भरपरि ताको बेला हात।

आइ बसा फुनबारी, गुनहु खोल मन स्रोत ॥६॥२३॥

(व्यतिरेक)

आवृत्ति

भीम (दगव भीम)^१—मगावती, १००।५^१, पदमावत, अ ४
३६१।१ २^३, वही, ६२६।६^५, वही, ६३५।दोहा ५३^५।

भरोनद—(यह सयाना, चतुर समझा जाता था, परंतु अ १
इसे भी पछताना पडा)—मूगावती, २३०।४ ५^१।

भोज—चदायन (प० ला० गु०) २६३।२ ३^०, मगावती, अ २२, द ७
२२१।५^५ वही २३०।४ ५^६, वही २२०।१ २^{१०} वही ३७७।३^{११} उ १=३०
पदमावत ७३।दो० ६।१^{१२}, वही ६१।दो० ८।६^{१३}, वही
११७।३^{१४} वही २१२।६^{१५}, वही २७१।४^{१६}, वही ४४८।दोहा
३८।३^{१७} वही ५३५।१ २^{१८} मधुमालती १३।३^{१९}, वही, १३।५^{२०},
माधवानल-नामकदला (हि० प्र० गा० का० स०) पृ० १६५ प०
८^{२१} चित्रावली, २६१।७ और लोहा^{२२} वही ५०६।१ २^{२३} वही

१ दगव भीम सम्भवत यह गुजरात का चालुक्य राजा भीम द्वितीय था। यह 'भोलो भीम' के नाम से प्रसिद्ध है। उसने कई बार मुहम्मद गोरी की सेनाओं को हराया था। (विशेष दे० 'पदमावत स० व्याख्या द्वि० म० प० ४४१ ४२)

२ उदाहरण, ६५ उपमा ६ उदाहरण ७८ उपमा ६ उदाहरण

१० उल्लेख ११ दृष्टांत, १२ उदाहरण (तृतीय तुल्ययोगिता भी)

१३ व्यतिरेक (तृतीय तुल्ययोगिता भी)

हारे वररुचि भोज लाकव्या के अनुसार वररुचि न घर बठे भोज के राजकुमार और सिंह भालू के वत्तात को जान लिया था। बस ही रतनसेन ने सुग्गे की बात जान ली। यो वररुचि से बढ गया। भोज जस भानुमती पर अनुरक्त था बस ही रतनसेन पद्मावती पर इस प्रकार वह भाज से भी बढ गया।

१४ १५ उपमा, १६ १७ दृष्टांत, १८ व्यतिरेक (तृतीय तुल्ययोगिता भी)

१९ २० व्यतिरेक (तृतीय तुल्ययोगिता भी)

२१ दृष्टांत (वन करन बल विक्रम भय घाफ भोज लछि जिन लिये।

ये सब गुण भीचु के मारे रीझि प्रान उहि दिए पियार ॥)

(श्री उदयशंकर शास्त्रो क पास थाली प्रति म)

२२ वित्रम नन पुहुमि सब आंटी भरी जाइ मरघट की माटी।

कहाँ सो वित्रम सकबैधी वहाँ सो राता भोज।

हम हम वरत हेराइ मे मिला न खोज खोज ॥२६१दाहा॥ (दृष्टांत)

२३ कहिसि कि सदा सोहागिनि रानी तुम समान पडित औ ज्ञानी।

मैं यह सुफल सुजा सो खोजा, चीहह होइ सो राजा भोजा ॥ (उपमा)

५०७।गोत्र और ५०८।१' मातृगी, छ १८^१, यती, छ २१^१ यती छ ६०^१ वही छ १७६^२ यती छ १६०^१ वया छ १६५^१ यती छ २८०^५ वया त्रैलोक्यायी, पत्र १।११ १८^१, वया पत्र ३।११ २६^१ वया रत्ननागती छ १७३^१, ह्रम जवाहिर, ५०८।५^१, वया ५८३।१ २^१ ।

वररुचि- मृगायती २५०।१ २^१ परमावन, ६१।१।१ अ १, उ१=२ ८।६^१ ।

विश्रम (विश्रमालिख्य) चणयन(१० ना०गु०) ७।२^१ अ १८ १ ५, मगायती २००।१ ५^१ वही ७३।१^१ परमावत, १७।२^१ वया, उ १=२८ ७३।१।६।१^१, यती १६०।१^१ वया २१२।६^१ वी, २७।१।४^१ वही, २६०।गोत्रा २५।२१^१ वहा ४६१।६^१, यती

- १ गुरु माइ जिन बरी हना, मांजिन अम वरियार ।
जबू तप नरग मोर निरमल जाति पंवार ॥५०७॥
गुरु जम विश्रम राजा भाजा मै विश्रमरति कहू बर गाजा । (उपमा)
- २ राय मिरामनि जिनमनि जगा तपत मिलागन ऊपर बया ।
अतिकुल ऊच मुकुल जप भानी विश्रम भाज मरम रजधानी ॥ (उपमा)
गुरु का विधि यह तिया गिराग गुरु मपरारु कि दुप अवताग ।
प ह्रम गनित नहै निजु आव विश्रम भोज मरिग मप पाव ॥ (उपमा)
- ६ दृष्टान (श्रे० हरिश्चन्द्र) ५ ततीय तुल्ययोगिता (श्रे० भक्त हरि १६)
- ६ कवनहै फर की ह एह भयु गारुपताय की मभु मपपु ।
करु पाज एह भोज ना ताय चाज मनोज निरारन जागे ॥ (सन्ह)
- ७ उदाहरण, म गुरु ।
- ६ गुरु की कह करन कहाव ग्यान भोज गी पटनर पाव । (उपमा)
- १० गुरु मानस बग पटायी उदाहरण को निप्र मगायी ।
त उन चित्रति व गग आया दवि चित्रग राग लता यी ॥
गुरु कह्यो क्या मन पाग कचन क द्विगु वाच न लाग ।
कम कहै गुरु काऊ मागी क्या भोज कहा तबी गांगी ॥ (अप्रस्तुत प्रथमा)
- ११ अमर मई माटन की बात, नित नित को जगु ना टहरात ।
बिन बिनाम कीन जिन गुरु भोज कर्ना गावापन जाव ॥ (दृष्टान)
- १२ मन्हट, १२ उपमा १८ उल्लव १५ व्यतिरेक (ततीय तुल्ययोगिता भी)
१६ उल्लव १७ उदाहरण १८ दृष्टात १६ व्यतिरेक, २० ११ उदाहरण,
२२ उपमा २३ दृष्टात २४ मरण अलकार २५ उपमा

आवृत्ति

५३५।१२^१, मधुमालती, १३।३^२, वही, १३।५^३ माधवानल-
कामकदला (हि० प्र० गा० का० स०), प० १६५, प० ६७,^४
वही प० १६५ प० ८^५, चित्रावली २६१।७ और दाहा^६
वही, ५०८।१^७, नानदीप, छ० १८^८ वही, छ० २१^९, वही
छ० १७६^{१०} वही, छ० १६५^{११}, कथा रत्नावली, छ० १७३^{१२}
हंस जवाहिर, ५५८^{१३} वही ५८३।१२^{१४}।

लघोर देव^{१५}—पदमावत, ६३५।५^{१६}

उ १

लोना चमारिन (कामरूप देश का जादू-टोना जाननेवाली)^{१७}—अ० उ१=३

पदमावत, ३६६।३^{१८} वही ४४८।६^{१९}, वही, ५८५।२^{२०}।

योग	अ ६८
	दृ १६
	उ ८

६२

१३ व्यतिरेक (तृतीय तुल्ययोगिता भी) ४ उपमा, ५६ दृष्टांत ७ १०

उपमा ११ व्यतिरेक, १२ दृष्टांत (दे० भोज), १३ सदेह १४ उगमा।

१५ आशय रामचंद्र शुक्ल के मतानुसार। लघोर देव नामक एक कल्पित हिंदू
राजा था जिसे जमीर नामका नौनकर अपना मित्र बनाया था। अमीर हमजा
के दास्तान में यह बड़े डील-डौल का और बड़ा भारी वीर कहा गया है। परंतु
१० वासुदेवशरण अग्रवाल का मत इस सम्बन्ध में यह है कि जायसी ने हिंदू
राजा के लिए देव शब्द का प्रयोग बराबर किया है। वारंगल (प्राचीन एक
शिवा) के काकतीय राजा प्रताप रुद्रदेव (१२६६-१३२३ई०) का अमीर सुसू-
चरनी एवं अशय मुसलमान इतिहासकारों ने 'लुद्दरदेव' लिखा है। रुद्रदेव का नाम
का यह अपभ्रंश रूप था। यही लुद्दरदेव लिखतूर देव का रूप में 'किम्म अमीर
हमजा में शामिल कर लिया गया। रुद्रदेव अत्यन्त शक्तिशाली और गुणा राजा
थे। (दे०—पदमावत सजीवनी व्याख्या डा० वा० श० अ०, द्वि० स०, पृ०
८५५)।

१६ उत्पत्त

१७ मध्यकाल में प्रसिद्धि थी कि कामरूप (असमप्रदेश) में लोना चमारी तत्र मंत्र की
जाननेवाली थी।

१८ अर्थात् शिवायुक्त। उत्पत्त २० अग्रहरण।

नामपथी एय अय योगी तप्य साधना स्यल

कजरी वन^१—पदमावत १००।६ ७^३ वही, १६३।६ ७^३, अ ४
वही ४६३।६^३ वही, २०६।१०६ ४२।२१^२ ।

गोरखनाथ - मगावती ४८।५ और १००।३^३ वही, १६०।३^३, प्र २ अ ६
वही ३०३।१०० २७।१३^६ पदमावत ३०३ दो० २७।१३^६, मधु उ १=१२
मावती १७२।१०६^३ वहा, २६१।५^३ माषवानल कामकदला
(हि० प्र० गा० का० म०) प० २०५ प० १६^३ पानदीप
छन्द १६०^३ वही छन्द २८०^३ वही छन्द २६२^३ ग्रावती
(पूर्वादि) मुद्रित, पृ० ४३ मानिन मण्ड, ६।२ ३^३ ।

गोरखपथ—उदाहरण (प० ला० गु०) १७४।१२^३ प्र २ उ १=३
मगावती ४८।५ दाहा^३ वही १०४।५ और दोहा^३ ।

गोरखभेष चनायन (प० ला० गु०) १७४।१२^३ मधु प्र २, उ १=३
मालती १७२।१०६^३ वहा २६१।५^३ ।

१ कजरी वन—एक वन जहाँ सिद्धा का निवास है। ऋषिकेश से बदरिकाथम तक का वन प्रदेश महाभारत (वन पर्व अ० १४६।७५ ७६) में कदली वन कहा गया है। यह भी कहा गया है कि वहाँ केवल सिद्धा की गति होती थी। (बिना सिद्धगति वीरगनिरथ न विद्यते)। कदलावन का ही लोक में कजरी वन ही गया। (द० पदमावत सजीवनी व्याख्या द्वि० स०, १४८ और ६२५)।

२ उदाहरण ३ उत्प्रेक्षा। उदाहरण, ४५ उदाहरण, ६ रूपक, ७ उल्लेख ८ ६ रूपकातिशयोक्ति, १० प्रतीक। उपमा, ११ प्रतीक, १२ उपमा।

१३ एहि रुप मा अति चमकत माथा जोगि ती जोगि मछिन्दरनाथा ।
जो भोगी ती राजा कोइ भरपरि नाही दूसर होइ ।
कवनेहूँ फर कीन्ह एह भेषू, गोरपनाथ की सभु सपेपु ।
करहु पीज यह भाज सो नाग चोज मनाज निहारत जाग ॥

(मञ्जूपा से राजकुंवर जब बाहर निकाला गया तब उसके रूप का वर्णन)
(उपमा/सदेह)

१४ स देह (द० गोपीचन्द) १५ व्यतिरेक

१६ जोग मोर औ गुरु तुम्हारा जाइहि भूल जासि ठग मारा ।

जाकी चितावन भय बहाया नाथ मुछन्दर गोरखनाथा ॥ (अत्युक्ति)

१ प्रतीक २८ उल्लेख, १६ प्रतीक, २० उल्लेख, २१ २२ प्रतीक ।

	आवृत्ति
चौरासी सिद्ध ^१ —२६४।दोहा २५।८ ^२	उ १
जानधर नाथ—पदमावत, ३६१।६ ^३	अ १
नी नाथ—पदमावत, २६४।दो० २५।८ ^४	उ १
मत्स्येन्द्रनाथ—पदमावत, १६०।३ ^५ वही, २३८।४ ^६ , अ १, उ २=३	
इन्द्रावती (पूर्वाद्ध) मुद्रित प० ४३, मालिन खड, ४।२ ३ ^७ ।	

योग	प्र ६
	अ १५
	उ ७
	२८

१ चौरासी सिद्ध सिद्ध सम्प्रदाय के चौरासी गुह । 'सुधाकर चंद्रिका , प० ६०२ पर एक सूची दी हुई है जिसमें चौरासी सिद्धा के नाम चौरासी आसन मुद्रा में हैं । देखिए— नाथ सम्प्रदाय ह० प्र० द्वि०, प० २४ २७ ।

२ उल्लेख, ३ उदाहरण

नाथ सम्प्रदाय के नी प्रमुख आचार्य । इनके नामों की कई सूचियाँ मिलती हैं (दे० श्री शशिभूषणदास गुप्त 'आन्सकवार रितीजस कल्लस प० २३६-२४१, द० 'नाथ-सम्प्रदाय डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, प० २७ ३७) । नवा नाथों की सूची में आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ जालधरनाथ गोरखनाथ के नाम तो सर्वसम्मत हैं । चौरासीनाथ कृष्णपादनाथ, गार्हिनीनाथ चपटनाथ, निवृत्तिनाथ आदि नाम भी हैं । (दे० 'पदमावत सजीवनी व्याख्या , द्वि० स०, पृ० ३०२) ।

४ ६ उल्लेख, ७ अत्युक्ति (द० गोरखनाथ) ।

लोकप्रिय प्रेमख्यानो के नायक- नायिकाओं के प्रयोग

हिन्दी सूफी कवियों ने मध्यकाल में लोकप्रिय कई प्रेमखानों के नायक-नायिकाओं का तथा 'पंचनख' कथा मरिक्तागर में वर्णित एक नोन प्रचलित कथाओं का भी प्रतीक अलंकार दृष्टांत तथा उल्लेख के रूप में प्रयोग किया। उनमें सभ और प्रयोग-स्वरूप यहाँ दिये जा रहे हैं

इन्दुवदन कंवलावती—कथा कीर्तनी हस्त० पद्य १५ दृ १
छन्द सवया ६^१।

छिताई^२—पदमावत ४६२।१^३ कही ४६३।७^४ कही उ ३
५००।७^५।

परमरूप—कनकावती^६—कथा कीर्तनी हस्त० पद्य १५ दृ १
छन्द सवया ६^७।

१ स्वरूप नद इन्दुवदन कहात जाना कन दुप नपिहर जा कवलावती।
कहा कहा कीनी मधुकर मधुमालती क कहा कहा कीनी घों कुवर अगावती ॥
कती दुप दप्पी पुरावर कलावत पाज कस क परमरूप पाइ कनकावती।
कवन तें कुदन न जाला की वरफ महीं सह बिन दुप ताऊलत न भावती ॥

(दृष्टांत)

२ छिताई दरगिरि क राजा का कथा थी। दिल्ली में बालशाह अलाउद्दीन ने दरगिरि पर चढ़ाई की। राजा गद्दाऊकर भाग गया। अलाउद्दीन उसकी रानी और नडकी छिताई का अपन साथ दिल्ली ल गया। छिताई क सम्बन्ध में अन्धरी में 'छिताई वार्ता' काव्य लिखा गया है। जान कवि ने भी 'कथा छिताई' में इसी कथा को लिया है।

३ ५ उल्लेख

४ जान कवि ने कथा कनकावती में इसी कथा का लिया है।

५ दृष्टांत।

भावति

पुरंदर—कलावती^१—मदभ वही^२—।

द १।

वमत—सेऊ—पदमावत, ७३।दोहा ६।१,^३ हस जवाहिर

अ २

पं १६५ छंद ३६८।७^४ ।

मधुकर मधुमालती—माधवानल-कामवदना (हिं प्रे० गा०

प्र १, अ ५,

का० म०) पृ० २०८।प० २०-२१^५, वही, प० २१८, प० १८-१९^६

द १=७

कथा कौतूहली, पत्र १५, मवया ६^७ वही पत्र ४, चौ० २०^८,

कथा लल मजनू हस्त० पत्र ३१, छं ६७^९ कथा मुभटराइ, पत्र

४ छंद १७^{१०} अनुराम बासुरी प० १४७^{११} छंद २४।४।

मनोहर मधुमालती^{१२}—पदमावत २ ३।६^{१२}, चित्रावली,

अ २ द १

पृ० १^२ छंद ३०।५ ७^{१३}, हस जवाहिर पृ० ११७ छंद

=३

३२२।३ ५^{१४} ।

१ जान कवि ने कथा कलावती म इसी प्रेमाख्यान को आधार बनाया है ।

२ दृष्टान्त ३ उपमा,

४ योगी अभी न काहू दखा लख्यो सा वह बावर लेखा ।

जहि बिधि सउ बसन्त जो खोवा तस तोय खोय चहल पुनि रोवा ॥ (उदाहरण)

५ उदाहरण ६ अप्रस्तुत प्रशंसा, ७ दृष्टान्त,

८ जबहि चन ऊज्यो चिन कुवर, बहुरि मालती ताकी भँवर । (प्रतीक)

↓ ↓
(मधुमालती) (मधुकर)

९ लल मजनू जग में अमर निबह्यो हितु ज्या मालति भवर । (उदाहरण)

१० रूप भेषि कै रोभ्यो कँवर जसै मालति ऊपर भँवर । (उदाहरण)

११ उदाहरण

१२ कथा के लिए देखिए मयनकृत मधुमालती (स० डॉ० माताप्रसाद गुप्त), 'मधु-

मालती पर श्री ब्रजरदनदास का लेख, हिंदुस्तानी, अप्रैल १९३८ पृ० २६२,

'मयन कृत मधुमालती' श्री चंद्रबली पाठे का लेख, 'नागरी प्रचारिणी

पत्रिका' कात्तिक १९६५, पृ० २५१-२६४ । डा० मानाप्रसाद गुप्त का 'मधु-

मालती मन्व-धी लेख भी देखिए—'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' हीरक जयती

अंक । प्रस्तुत प्रबंध का अध्याय २ भी देखिए, ३१ दृष्टान्त,

१४ मगावती मय रूप बसेरा राजकुवर भयो प्रेम अहेरा ।

मिहन पदुमावति मो रूपा प्रेम क्रिया है चितउर गुपा ।

मधुमालति हो रूप देखावा प्रेम मनोहर होइ तह आवा । (रूपक)

१५ पूरव दश के योगिन देवा कहा मनोहर मालत लखा ।

दखन दश के आउ भिलारी शीश घुना जो बिरह बिचारी ॥

भई य कला मनोहर ताहीं, परी रूप दसा कहि ठाहा । (उदाहरण)

आवृत्ति

माधवानल कामकदला—मिरगावत (हस्तलिखित, दिल्ली वाली प्रति प्रतिलिपि श्री उपयन्कर शास्त्री के पास) छ २ ५^१, मृगावती (५० ला० गु०) १७१।१२ (उपयुक्त का पाठांतर मात्र), वही २३२।२^३ पदमावत, २००।६७^३, जानदीप छद १६४^४ ।

रतनसेन पदमावती—माधवानल कामकदला (हि० प्रे० ग्रा० का० सं०) पृ० ८ छ १६^५, चित्रावती पृ० १३, छ ३०।६^६ वही पृ० १६५^७ ।

राजकुंवर मृगावती—पदमावत २२३।२^८, चित्रावती पृ० १३ छ ३०।५^९, क्या कौतूहली हस्त० पत्र १५ छ सवया ६^१ ।

राजकुंवर रूपमावती—अनुराग बीसुरी पृ० १४७ छद २४।५^{११} । अ १ रूपकला (दिया द्वीप की रानी) और राजा (सरनदीप का राजा) हस जवाहिर पृ० ६६ छद २७२।५^{१२} ।

विक्रम-स्वप्नावती^{१३}—पदमावत २३३।३^{१४} ।

- १ मिरगावत मुनि जिउ रहगाई कांमा जन माधवानल पाई ।
बिहसा नाउं मुनत मिरगावत नल जन भेंटी कामावत ॥
कहसि जाउ अब नगर मझारो मकहूँ चाहु कोउ कहै हमारी । (उत्प्रेक्षा)
- २ ३ उदाहरण
- ४ कामकदला पाइय माधो जब राधा नदलालहि साधो । (उदाहरण)
- ५ राजा रतनसेनि नहि भयऊ, पदमावति लागि भिषल गयऊ । (उदाहरण)
- ६ रूपक (दे० इसी परिशिष्ट में मनोहर मालती कथा ।
- ७ मुनत बंन चित्रावति जागो देखि परेवा के पौ लागो ।
कहिसि कि ऐ हीरामन सूधरा, रतन लागि कस कौतुक हुआ ॥ (अप्रस्तुतप्रशसा)
- ८ दृष्टात ६ रूपक (देखिए इसी परिशिष्ट की मनोहर-मालती कथा ।)
- ९ दृष्टात (देखिए इसी परिशिष्ट की इन्दुवदन-कवलावती कथा),
- ११ कुंवर होइ कोऊ बरागो एहि रूपान्ति कुंवरि के लागो । (रूपक)
- १२ दिया दीप रानी रूपकला सरनदीप कहै कह नप मिला । (दृष्टात)
- १३ सिंहासन बत्तीसी में पाचवी पुतली लीलावती के द्वारा विक्रमादित्य और स्वप्नावती की कथा कही गयी है । वह कती है कि सिंहावती की प्राप्ति के लिए विक्रम ने बहुत कष्ट सहा । सिंहावती का पाठ यहा स्वप्नावती (पाठांतर चम्पावती भी) मिलता है । राजा विक्रमाजीत और सपनावत की कथा लाक में अब भी प्रचलित है । (दे० पदमावत की एक अप्रान्त लोककथा—सपनावती श्री अगारबन्द नाहुटा सम्मलन-पत्रिका भाग ४३ सं० २ चत्र २०१३, पृ० ८० ८६, १४ दृष्टात,

भावृत्ति

सदयवच्छ मुग्धावती^१—पदमावत, २३३।४^२ ।

दृ १

सरसुर-प्रेमावती^३—पदमावत, २३३।७^४ ।

दृ १

योग

प्र १

अ १८

दृ ११

उ ३

३३

‘पचतत्र’, ‘कथासरित्सागर’ तथा लोक की कुछ कथाओं का प्रयोग

राजकुमारी का राजकुमार से विवाह और बदर द्वारा द २
योगी को काटना^५—पदमावत २२०।दाहा २३।४^६, ज्ञानदीप *

व्याघ्र का अपनी परछाईं देखकर कूर्पे में पडना (पचतत्र द १
की कथा)—इन्द्रावती (उत्तराढ़) हस्त०, प० ११२^८ ।

सत्तर सिर तीन सौ मन और एक सौ पाँचवाला उ १
बौन ?—इन्द्रावती (पूर्वाढ़) मुद्रित मालिन खण्ड, प० ४४, छंद
७।दोहा^९ ।

१ सुदयवच्छ की कहानी कभी अत्यंत लोकप्रिय थी । ‘सदेश रासक (अहहमाण)

में इसका उल्लेख आया है (कहवा ठाई सुदयवच्छ कथ व नल चरिउ, ४३) ।

सुदयवच्छ और रानी सावलिगा की कहानी आज भी भोजपुरी प्रदेश बिहार

और गुजरात के गाँवों में कही-सुनी जाती है । यह सारगा-सदावज’ की कहानी

के नाम से प्रसिद्ध है । सुदयवच्छ-सावलिगा की कथा के लिए देखिए श्री

अगरचंद नाहटा का लेख—‘राजस्थान भारती’ अप्रैल १९५० ।—२ दृष्टात ।

३ सरसुर और प्रेमावती की कथा का पता अभी तक नहीं चल पाया है । (दे०

हिंदी प्रेमगाथा और मलिक मुहम्मद जायसी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग

१७ अंक १ पृ० ६१ पर प्रकाशित, श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी का लेख ।)

४ दृष्टात,

५ कथा सरित्सागर, लंबक ३, तरंग १ श्लोक ३० ५३ में यह कथा आयी है ।

और भी देखिए—पदमावत सजीवनी व्याख्या, द्वि० स०, प० २५२ ३,

६ दृष्टात

७ जोगिंहि जातिहिं काटयो बदर, लज्जित गोरखनाथ मुछदर । (दृष्टात)

८ गव सो व्याघ्र आपनो छाहीं परा दखि व कूर्पे मही ।

रावन गयउ गव सा मारा सका एसा हुनिवत जारा । (दृष्टात)

९ सत्तर-सिर-मन-तीन-स-पाँच-एक-म-जाहि ।

प्रेमी को दुख देत सो, प्रेम अर्थ यह आहि ॥ दोहा ६।७॥ १

	मावति
सिंह का मजूरा (पिंजड़) में बंद हो जाना—पदमावत	अ २
५६१७ ^१ वही ५७६१४ ^२ ।	
मुग्धा (गुह) को मारकर राजा का पछताना—मगाजना,	अ १
३०१३ ^१ ।	
हाथी का बहेलिए क घघन में पड़ना—चूहों द्वारा उसका	द १
टकारा ^२ पदमावत, ६२११४ ^१ ।	
होला घनजारे की कथा जिसकी पत्नी उसे मारकर घपने	अ १
पार के साथ भाग गयी—हम जवाहर प० १५६ छ ४ ६३७/ '५'।	
	योग
	अ ४
	द ४
	उ १
	६

१ तुलना कीजिए—मूरसागर द्वितीय स्कंध पद २६ पंक्ति ५ स। उसमें भी इस कथा का संकेत।

एक ब्राह्मण ने दया करके एक सिंह का जो शिकारियों द्वारा पिंजरे में बंद कर दिया गया था निकाल दिया। सिंह उस खान दोड़ा। ब्राह्मण ने पूछा—'क्या भलाई का बदला बुराई है?' सिंह ने कहा—'अपने भय को नहीं छोड़ना चाहिए।' नियंत्रण करने के लिए उन्होंने पंच नियुक्त किया। अंत में एक गीदड़ पंच हुआ। उसने कहा कि तुम दानो जिस दशा में थे उमी दशा में हो जाओ, तो मैं तुम्हारे मामल को ठीक में समझूँ। सिंह पिंजड़ में चला गया। गीदड़ के संकेत पर ब्राह्मण ने पिंजरे का दरवाजा बंद कर दिया। इस प्रकार सिंह को छल के बदले छल मिला और दुवारा पिंजरे में बंद होना पड़ा।

२ उदाहरण

५ यह कथा पंचतंत्र की एक कथा पर आधारित है। किसी प्रदेश में बहुत-से चूहे बिल बनाकर रहते थे। वहाँ से हाथिया का एक झुंड ताल पर पानी पीने के लिए निकला। बहुत से चूहे उनके परों में कुचल गए। जो बचे उन्होंने एक उपाय सोचा और जाकर हाथिया के राजा से कहा—'आप हम पर दया कीजिए ता हम भी किसी दिन आपकी सेवा करेंगे। तब पर जान के लिए कोई दूसरा मांग चुन लें। हाथिया के राजा ने यह बात मान ली। एक राजा ने उन्हीं दिनों अपने बहेलियों की हाथी पकान का आदेश दे रखा था। उन लोगों ने हाथियों के राजा को उमक झुंड के साथ पकड़ लिया और मोट रस्सा से जकड़ कर पेड़ में बांध दिया। हाथिया के राजा ने चूहों के पास सनस भेजकर उन्हें बुलवाया और बघन में मुक्ति पायी। (द० पदमावत मजीवनी व्याख्या, पृ० ६७६)। ६ दृष्टांत ७ उदाहरण।

परिशिष्ट ४

शामी पौराणिक और निजधरी आख्यानों तथा पात्रों आदि के प्रयोग

हिन्दी सूफ़ी कवियों ने जिनमें से नल-दमन के रचयिता मूरदास लखनवी के अतिरिक्त सभी कवि मुसलमान थे अपने प्रेमार्थ्यात्मक काव्यों में भारतीय पौराणिक तथा निजधरी आख्यानाएँ एवं पात्रों आदि का ही अधिक प्रयोग किया। शामी पौराणिक तथा निजधरी आख्यानों एवं पात्रों का प्रयोग उन्होंने अपेक्षाकृत बहुत कम किया। यहाँ तक कि 'यूसुफ-जुलेखा-जसी' शामी पौराणिक कहानी के आधार पर काव्य रचना करनेवाले शेर निसार ने शामी पौराणिक तथा निजधरी आख्यानाएँ एवं पात्रों का प्रयोग बिल्कुल नहीं किया। या तो उस कवि ने भारतीय पौराणिक तथा निजधरी आख्यानाओं का प्रयोग भी न के बराबर किया फिर भी उसने 'विश्वकर्मा' और 'राहु वतु का अलंकार के रूप में ३३ बार, 'वासुकि' का अलंकार के रूप में २ बार 'मनोज रमा उवशी', 'रम्भा' और 'तप्तक' का अलंकार के रूप में १-१ बार प्रयोग किया है।

शामी पौराणिक आख्यानों तथा पात्रों का प्रयोग कम करने और भारतीय पौराणिक आख्याना तथा पात्रों का प्रयोग अधिक करने के पीछे सूफ़ी कवियों की प्रवृत्ति हिन्दू लोक भावना का समादर करने की तो थी ही परन्तु लोक प्रचलित आख्याना तथा पात्रों के प्रयोग द्वारा अपनी बात को अधिक बोधगम्य तथा ग्राह्य बनाने की भी थी। काव्य रुढ़ि के पालन का अपग्रह भी एक कारण रहा होगा।

शामी पौराणिक तथा निजधरी आख्यानाएँ एवं पात्रों आदि के प्रयोग की एक सारिणी यहाँ दी जा रही है

शामी पौराणिक एवं निजधरी आख्यानाएँ

(१) अजम का देण, जो तपस्वी के शाप के कारण उजड़ गया—

हृष त्रवाहिर, ४२६।३४—नगरमेर के राजा मन्दीपति ४१

१ तपसी शाप बरस कर मीरा गयो हिराय न काहू हीरा ।

तपसी शाप अजम कर देणू, रहा न कोउ तहँ शाह नरेशू ॥ (दृष्टांत)

राज्य द्वारा हंस और उमक साधिया को बंदी बना लाने पर यागोनाथ महंत आकर उस समयात्ता है कि इन तरस्विया को छाड़ दे, अन्यथा इनके शोध से तेरा नाश हो जाएगा ।

(२) इसकन्दर (सिक्न्दर) का अमृत के लिए कजरी (कदली) बन जाना—न पाना अग्नि के पवत में उसका जल भरना^१—

पदमावत ४८७। गहा ४१। २१^३—राघव चेतन द्वारा अ ३ द १=४

अलाउद्दीन से पद्यावती के सौन्दर्य-वर्णन के प्रसंग में यह उल्लेख करना कि जिन रत्नों को समुद्र से उमकन्दर (सिक्न्दर) भी न प्राप्त कर सका उन पांच रत्नों (हंस अमृतवाला रत्न पारस शादू सशावक और श्यन) को गतनसेन ने समुद्र से प्राप्त कर लिया ।

१ इसकन्दर=सिक्न्दर । मिस्र देश के थीब्स नगर का देवता अमन पहल कृपि-सम्पत्ति का अधिष्ठाता था । मय उसका वाहन था । ईसा-पूर्व दो हजार वर्ष पहल, वही मिस्र का राष्ट्रीय देवता सूर्य का प्रतिरूप अमन रा हो गया । सीवा नामक स्थान में उसका बड़ा मन्दिर था । चौथी शती ई० पू० में सिक्न्दर ने वहाँ जाकर उसके दर्शन किये । कहा जाता है कि मन्दिर के घम-मुखा ने सिक्न्दर को अमन-पुत्र कहकर उमका स्वागत किया । तब से सिक्न्दर के मस्तक पर मेष शृंग का अलकरण बनाया जाने लगा जसा उसके सिक्को पर और मथुरा में प्राप्त कुपाणकालीन कुट्ट मस्तकों में दिखाया गया है । (दे० पदमावत सजीवनी व्याख्या द्वि० स० टिप्पणी पृ० १४) ।

कथा है कि सिक्न्दर अमृत की खोज में था । उसकी मित्रता ख्वाजा बिज्र से हो गई । ख्वाजा उसे जल्मात नामक अधकार के लोक में ले गया । उसी को यहाँ जायसी न कन्नी वन या कजरी वन कहा है । वहाँ जीवन के जल का साता बताया जाता था किंतु सिक्न्दर उसका पान न कर सका । जायसी के अनुसार वही अग्नि के पहाड़ में जनकर उमन प्राण दे दिया । (दे० शिरेफ़तुत जायसी के पदमावत का अंग्रेजी अनुवाद १।१३।३ प० १० पर टिप्पणी ३१) ।

यहाँ कवि ने सिक्न्दर की कथा के अधकार लोक से कजली वन को मिला दिया है । महाभारत के वनपर्व के अनुसार हरिद्वार में बद्रीनाथ तक का हिमालय प्रदेश कदलीवन कहलाता था । जे. सिन्धी, ए. नित्याम-म्यल, ए. ए. योन्सनाथ, गणेशचन्द्र आदि मिथिल-साधकों के लिए वह आदर्श स्थान माना जाना लगा था । कहते हैं कि अधकार लोक जिमकी समता कदली वन से की गयी है । म पहुँचने के लिए सिक्न्दर ने अपने प्राण दे दिए और वह शव के रूप में लवाया जाता हुआ चला गया । (दे० पदमावत सजीवनी टीका द्वि० स०, पृ० ६२५) ।

आवृत्ति

वही, ४६३।१-६^१—अलाउद्दीन का दूत सरजा जब पद्मिनी का दन की बात रतनसेन से कहता है तब रतनसेन मिर्कदर का उदाहरण देकर उसे उत्तर देता है ।

वही, ५०६।दाहा, ४२।२१^३, इन्द्रावती (उत्तराखण्ड), हस्त०, पृ० १८३^३—अलाउद्दीन की सेना के प्रयाण के समय उठी धूल की तुलना मिर्कदर के कदली वन जाने और वहाँ के अंधकार से ।

(३) इसकदर (सिकदर) का नौशाबा के हाथों से छूट निकलना—^४

पद्मावत, ६२।१२ ३^५—बादल और गीरा राजा रतनसेन अ १ को छुड़ाने का उपाय सोचने लगे । वे पछताय कि अलाउद्दीन हाथ में आकर निकल गया । अलाउद्दीन ने अपने को इसकदर-मरि (सिकन्दर के समान) प्रसिद्ध किया था । अतः यहाँ पद्मिनी के हाथ से उसके छूट निकलने की तुलना नौशाबा के हाथ से मिर्कदर के छूट निकलने से की गयी है ।

(४) खलील पगम्बर को काफिरों द्वारा चिता में फेंक देना—
खुदा की मेहर से जलती घाग का फूलवारी हो जाना—^५

चित्रावली, ३०।१।४^६—कूबर मुजान जब अघा हो गया द २ तब वह भगवान से उसी तरह प्रार्थना करने लगा जिस तरह पगम्बर खलील ने की थी ।

हम जवाहिर ११।४^६—कवि कासिमशाह दरियावादी

१ दृष्टात २ उपमा

३ हौ मैं इसकन्दर नरनाहा चले निडर अधियारी माहीं । (रूपकाउपमा)

४ नौशाबा परियों की रानी थी । इसकदर (सिकदर) उसके वश में आ गया था । फारसी के सूफी कवि निजामी कृत मिर्कदरनामा के अनुसार नौशाबा बुद देश की अविवाहिता रानी थी जिसके यहाँ सिकन्दर भेष, बदलकर दूत के रूप में गया था । रानी ने मिर्कदर का पञ्चान कर भी छोड़ दिया । बाद में सिकदर ने उसे अपना अधीन मित्र बनाया (दे० पद्मावत सजीवनी व्याख्या द्वि० स० पृ० ८३०) ।

५ उदाहरण।उपमा

६ हदीस में लिखा है कि खलील पगम्बर को काफिरों ने चिता में फूँक दिया था परंतु खुदा ने उनके लिए चिता को बाग और अगारों को फूल बना दिया था ।

७ अग्नि जलत जे तही सँभारा

किए ताहि फुलवारि अँगरा । - (दृष्टात)

८ जो खलील पुनि शरन तुम्हारी -जलत बाग कीनी फुलवारी । - (दृष्टात)

द्वारा हम-जवाहिर काव्य के आरम्भ में ईश्वर-स्तुति और उस प्रसंग में खलीज का दृष्टांत देना ।

(५) दिलाराम के कारण मेहरंगाह का वियोगी होकर योगी बनना—

हम-जवाहिर २०८।२ ५^१—पपीहा पत्नी का हम का जवाहिर के प्रम-मय पर एकाग्रचित्त होकर चरन के लिए उपदेश ।

(६) नूह के द्वारा महाप्रलय के समय समुद्र को पार करत के लिए नाव बनाना—

हम जवाहिर ११।२ ३^१—कवि वामिन्गाह द्वारा ईश्वर स्तुति ।

(७) मसूर (मसूर हल्लाज) का मूली पर चढ़ना^३—

पन्नावत १२४।४^५—हीरामन तोन द्वारा राजा रतन से सन का प्रम निष्ठा का उपदेश ।

वही, २६०।६^५—रतनमन को मारन के लिए तुरही बड़ी । वह मसूर की तरह मूला को खेकर हम पत्नी । मसूर शहादत का प्रतीक बन गया है ।

इश्रावती (पूर्वाद्ध) मुद्रित पृ० १५८, मोती खण्ड ३।१ २^३—शुबर जब माती निकालन चना तब दशकान गुम कामना की कि इस सच्चे प्रेमी को मोती अवश्य मिल जाय ।

१ जिन सतपथ प्रेम वह खेला सो जग छाह के भयो अकला ।
लति काज जस भजनू कीना नन मन खोय प्रान तहि दीना ॥
औ फरिहाद जो परबत काटा शीरा काज सो दी ह लनाटा ।
महरशाह जो भयो बियोगी दिलाराम के कारन यागी ॥ (दृष्टांत)

२ तुम जल ऊपर देश बसावा तुमही ऊपर शम्ठ ठठावा ।
नोह बनी जो बाहित पयरा, तुम खेवक परलो तब फेरा ॥ (दृष्टांत)

३ मसूर—प्रसिद्ध सूफी सत जे अनसहक (साझ) का उपदेश करन के कारण मूली पर चढ़ा लिया गया था ।

४५ प्रतीक,

६ जाकों प्रीत मित्र की पूरी भा मनसूर चना वह सूरी ।
प्रीतम जाको चीरा हीया दीम्हा जोत हिया भा दीया ॥ (उपमा)

आवृत्ति

(८) मूसा^१ द्वारा तूर पर्वत पर ईश्वर का दर्शन—

चित्रायली २६०।५ ६^३—चित्रायली न दूत परेवा के हाथ दू २
शुबर मुजान व पाम अपनी सहिदानी के रूप म एक दपण भजा ।

हस-जवाहिर पृ० ५ छंद ११।६^३—कवि द्वारा ईश्वर की
स्तुति ।

(९) यूसुफ का मछली के मुह में जा पडना—भगवान की कृपा से
वहाँ भी सुखी होना—

हस जवाहिर, प० ५, छंद ११।५^४—कवि द्वारा ईश्वर
स्तुति के प्रसंग म यूसुफ का स्मरण । द १

(१०) यूसुफ को उसके भाइयों द्वारा कएँ से फँकना—ईश्वर-कृपा
से उसका उसमें से निकलना—उसके अथ बाप को पुन
नेत्र ज्योति प्राप्त होना—^४

चित्रायली, ३०१।१ ३^१, इद्रावती (पूर्वाद्ध), पं० १५६ द २

१ मूसक—मूसा । हजरत मूसा (माजेज) । यह यहूदियों के एक पैगम्बर थे, जिन्हें
तूर पर्वत पर ईश्वर के दर्शन हुए थे ।

२ दरपन धपु ठहराइहि तोरा, विगसि देखु तब दरसन मोरा ।
एकहि बार जो सनमुख देखा होइ तूर पर मूसक लेखा ॥ (दृष्टात)

३ मूसा पय नेर मुख दीना पार भया सो तुम कहँ पहिना । (दृष्टात)

४ यूसुफ पड मीन मुख माह् तोरे भजन भयो सुख ताहा । (दृष्टात)

५ यूसुफ को उसके भाइयों ने कुएँ म डाल दिया था और अपने बाप से जाकर कह
निया था कि यूसुफ को भेड़िया खा गया । उनका बाप शोक मे अथा हा गया ।
यूसुफ को एक बारबा व सरदार ने कुएँ म से निकलवाया और मिस्र म ले
जाकर वच दिया । वहाँ भाग्यवश यूसुफ राजा हो गया । बनान भ अकाल पडने
पर उसके भाई मिस्र गए । वहाँ यूसुफ ने अन्न देकर उनकी प्राण-रक्षा की ।
चलते समय अपना एक वस्त्र उनको दिया और कहा कि इसे अपने बाप को दे
सेना । भाइयों ने जब कपडा अपने अथ बाप को दिया तब वह उस कपडे को
भुह पर डालने ही पुन देखने लगा । (विशेष द्रष्टव्य—इस प्रबंथ के अध्याय
५ म यूसुफ जुलेखा की कथा ।)

६ मैं जब ही जिय सौरा तोही तही मया करि काडे मोही ।

कूप माहि जे सुमिरत साजा, काडि दिये तै देस के राजा ॥

प्रेम बिछोह अथ जेहि कीहे बहुरि मिलाइ जोति तेहि दीन्ह । (दृष्टात)

द्वारा हम जवाहिर काव्य के आरम्भ में ईश्वर-श्रुति धीरे-धीरे प्रथम में गवाच का दृष्टान्त बना।

(५) बिलाराम के कारण महरशाह का बियागी होकर घागी बनना —
हम-जवाहिर २०८।२५^१—पराग पभा का हृत् का जवा ६ १
हिर के प्रेम-पथ पर एकापरित हाकर बनन के विण उपगण।

(६) नूह के द्वारा महाप्रलय के समय समुद्र को पार करने के लिए नाव बनाना—

हम जवाहिर ११।२३^२—कवि कानिगाह द्वारा ईश्वर ६ १
स्तुति।

(७) मसूर (मसूर हल्लाज) का मूला पर चढ़ना^३—

पन्नावत, १२६।४^४—हीगमन तान द्वारा राजा रतन प्र २ अ १ = ३
सन का प्रम निष्ठा का उपगण।

वही २६०।६^५—रतनमन की मारन के लिए टुरही बड़ी।
वह मसूर की तरह मूला को गवकर हम पहा। मसूर शहादन
का प्रतीक बन गया है।

पन्नावती (पूर्वाह) मुद्रित पृ० १५८ मोती शब्द,
३।१२^६—कबूतर जब मागी निकालन चला तब दगकान गुम
कामना की कि इस सच्च प्रेमी को मोती अवश्य मिल जाय।

१ जिन सतपथ प्रम वह खेला सा जग छोड के भयो जकला।
लैनि काज जस भजनु कीना तन मन खोय प्रान तहि दीना ॥
ओ परिहाड जो परबत काटा शीरा काज सा दी हु लनाटा।
महरशाह जो भयो बियागी बिलाराम के कारण योमी ॥ (दृष्टात)

२ तुम जल ऊपर दश बसावा तुमही ऊपर शर उठावा।
नोह बनी जो बाहिन पयरा तुम खक परलो तब फेरा ॥ (दृष्टात)

३ मसूर—प्रसिद्ध सूफी सत जो अनलहक (माझ) का उपदेश करन के कारण
मूला पर चड़ा लिया गया था।

४५ प्रतीक

६ जाकों प्रीत मित्र की पूरी भा मनसूर चला वह सूरी।
प्रीतम जाको चीरा हीया दीहा जोत हिया भा दीया ॥ (उपमा)

आवृत्ति

(८) मूसा^१ द्वारा तूर पर्वत पर ईश्वर का दशन—

चित्रावली २६०।५ ६^१—चित्रावली ने दूत परेवा के हाथ द २
कृवर मुजान क पाम अपनी सहिदानी के रूप म एउ दर्पण भेजा ।

हम-जवाहिर, पृ० ५ छन्द ११।६^२—कवि द्वारा ईश्वर की
स्तुति ।

(९) यूसुफ का मटली के मुह में जा पडना—जगवान की कृपा से
वहाँ भी सुखी होना—

हम जवाहिर, प० ५, छन्द ११।५^३—कवि द्वारा ईश्वर-
स्तुति के प्रसंग म यूसुफ का स्मरण । द १

(१०) यूसुफ को उसके भाइयों द्वारा कए मे फँकना—ईश्वर-कृपा
से उसका जखमे से निकलना—उसके अघे बाप को पुन
नेत्र-ज्योति प्राप्त होना—^४

चित्रावली, ३०१।१ ३^४, इद्रावती (पूवाड) प० १५८ द २

१ मूसक—मूसा । हजरत मूसा (माजेज) । यह यहूदियों के एक पैगम्बर थे जिन्हें
तूर पर्वत पर ईश्वर के दशन हुए थे ।

२ तरपन कपु ठहराइहि तोरा, विगसि देखु तब दरसन मारा ।
एकहि वार जो सनमुख देखा हाइ तूर पर मूसक लेखा ॥ (दृष्टांत)

३ मूसा पय नेर मुख दीना पार भया मो तुम कहुँ पहिना । (दृष्टांत)

४ यूसुफ पड मीन मुख माहा तोरे भजन भयो मुख ताहा । (दृष्टांत)

५ यूसुफ का उसके भाइया न कुएँ मे डाल दिया था और अपने बाप स जाकर कह
गिया था कि यूसुफ को मेडिया खा गया । उनका बाप शोक मे अथा हा गया ।
यूसुफ को एक कारवा क सरदार ने कुएँ म स निकलवाया और मिस्र मे ले
जाकर बंध दिया । वहा भाग्यवश यूसुफ राजा हो गया । जनान म अकाल पडन
पर उसके भाई मिस्र गए । वहाँ यूसुफ न अन्न देकर उनकी प्राण रक्षा की ।
चलते समय अपना एक बस्त्र उनकी दिया और कहा कि इसे अपन बाप को दे
देना । भाइया न जब कपडा अपने अघे बाप को दिया तब वह उस कपडे को
मुह पर डालते ही पुन देखन लगा । (विशेष द्रष्टव्य—इम प्रबन्ध के अध्याय
५ म यूसुफ-जुलसा की कथा ।)

६ मैं जब हीं जिय सौरा तोहीं तहीं मया करि काने मोही ।
कूप माहि जे सुमिरन साजा, काड़ि दिये तै देम के राजा ॥
प्रेम बिछोह अघ जेहि कीहे बहुरि मिलाइ जोति तेहि दीन्ह । (दृष्टांत)

मोती स्रष्ट ३।शोहा १८।७^१—बुधर मुजान जब अघा हा गया,
तव वह भगवान से प्रायना करने लगा ।

(११) यूसुफ का बंदलाने में पड़ना—ईश्वर-रूपा से उसका मिय
का मुलतान होना—

हम जवाहिर पृ० ५ छंद ११।७^१—कवि कामिमशाह पृ १
द्वारा ईश्वर-स्तुति के प्रसंग में यूसुफ और उमक पिता का दृष्टान्त
कथन करना ।

(१२) सला मजनु का प्रगाढ़ प्रेम—सला के चले जाने पर मजनु
का बौराना—सला के लिए मजनु का प्राण देना—

नर दमन १३।८।७^१—नल का दमयन्ती के प्रति प्रेम प्र २ अ १
इतना तीव्र था कि उसने दमयन्ती के हृत्पत्र में भी प्रेम की आग पृ २=५
सुलगा दी । नला प्रेमिका का प्रतीक और मजनु प्रेमी का
प्रतीक ।

हस-जवाहिर, पृ० १६६, छंद ५४।८।७^१—जवाहिर को
समुद्र के मध्य में हर लिया गया । जागने पर हम धराकुल हुआ
और जवाहिर के विषाग में पागल मा हो गया । उसकी स्थिति का
तुलना मजनु की स्थिति से ।

वही पृ० ७६ छंद २०।२।२ ३^५—पपीहा पपी द्वारा हस
से कहना कि तुम मजनु की भाँति जवाहिर के प्रेम में एकाग्रचित्त
बनो ।

(१३) सुलेमान की अगूठी^१ जिसके प्रभाव से जिनों का उसके वश में होना—

- १ जो चाहै सोई कर बरता जाका नाउँ, चारि कूप मो अत कह देइ सिघासन ठाउँ ।
(दृष्टात)
- २ यूसुफ पडे कोन अधियारे तुमही मिसर क पाट बठार । (दृष्टात)
- ३ नन दृष्टा जा रक्त चगावा वही मजनु क ननहि आवा । (दृष्टात।प्रताक)
- ४ बाबर भा जानो विष छाई, नना गई मजनु बौराई । (प्रतीकाउ-प्रक्षा अलकार)
- ५ दृष्टान (दे० दिलाराम के कारण महरणाह का योगी बनना)
- ६ सुलेमान की अगूठी कई रत्ना क मेत में बनी हुई थी और ईश्वर का महिमा
वाचक मन्त्र उम पर उत्कीर्ण था । उम आदुई अगूठी के प्रभाव से सुलेमान ने
जिनों को अपने वश में कर रखा था । वही से उसे अतुल धन और शक्ति प्राप्त
हुई थी (दे० पदमावत सजीवनी टीका द्वि० म० पृ० १४) । सुलेमान के पास
जो तिलस्मी अंगूठी थी उसमें चार रत्न जड़े थे जा वायु पानी पृथिवी और

आवति

पदमावत, १३।६^१—कवि जायसी द्वारा शाहेवक्त शेरशाह अ १

की प्रशंसा करना ।

(१५) सुलेमान द्वारा सत्य जिन पर चढाई करके उसे अपनी सेवा मे ले लेना—

पदमावत ४६४।३^२—रतनसेन के यहा से दूत के लौट प्र १ अ १

आने पर अलाउद्दीन का कथन ।

द १=३

वही, ५६६।४^३—अलाउद्दीन का कथन रतनसेन से चितौड

गढ़ म ।

वही, ५७७।१^४—रतनसेन के अलाउद्दीन क बघन म पड

जाने से उसके सहायक राजाजा का साहस टूट गया ।

(१५) शीरों के लिए फरहाद का पहाड काटना—

हस जवाहिर पृ० ७६, छन्द २०८।२ ४^५—पपीहा पक्षी द १

द्वारा हस को जवाहिर के प्रेम-पथ पर एकाग्र चित्त होकर चलन का उपदेश ।

(१६) हसन हुसन की रक्षा—कुएँ में मकड़ी का जाला तनने से

इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्तलिखित पृ० १०७^६—महाबली द १

के पिता प्रेमसिंह न जब हसराज से महाबली की रक्षा के लिए वहा तब हसराज ने हसन-हुसन की रक्षा मकड़ी के जाले के कारण होनेवाली बात कही ।

जीवों के प्रतिनिधि थे । उन पर क्रमशः य मत्र खुद थे—(१) ईश्वर की ही महिमा और शक्ति है, (२) सारा ससार उस ईश्वर की ही प्रशंसा करता है, (३) स्वर्ग और पृथिवी ईश्वर के वश मे हैं (४) ईश्वर एक है । इस अगूठी के प्रभाव से वह जिनो (देवो) को तावे के गोल कुम्हड़ों म बन्द कर नेता था । उसने सब जिनो या देवो को अपने वश म कर लिया था । सख्त नाम का जिन उमका विरोधी हो गया । सुलेमान ने उस व दी बना लिया । इसी जिन न सुलेमान का शेवा देश की बिलकिस नाम की रानी का राज्य प्राप्त कराया । यह रानी सुय की पूजा करती थी । सुलेमान न उम जीतकर अपनी स्त्री बना लिया । (पदमावत के शिरेफ कून अंग्रेजी अनुवाद में सुयमान की अगूठी क विषय म यह कथा दी हुई है । देखिए—पदमावत सजीवनी व्याख्या द्वि०, स० पृ० ७४६ ५०) ।

१ अत्युक्ति २ दृष्टांत, ३ अभावित ४ प्रतीक,

५ दृष्टांत (दे० इसी परिशिष्ट म सला मजनु की कथा)

६ हस वहा रखक है सोई जाकर सिरजा है सब कोई ।

रिपु सो कूवा बीच बचाव, क्षासा मकरी भेजि तनाव ॥ (दृष्टांत)

(१७) हातिमताई^१ की दानगीलतापद्मावत १४५।७^२— राजा रतनसन का उड़ीसाधिपति द १गणपति में सवा^३ । प्रम और दान की महिमा का वर्णन ।

योग	=	प्र ५ अ ८ द १८
		३१

शामी पौराणिक तथा निजधरी आख्यायिका का प्रयोग-वर्णन—
एक दृष्टि में

प्र=प्रतीक अ=अलंकार, द=दृष्टान्त उ=उल्लेख
कथा में क्या—इसी परिशिष्ट में शामी आख्यायिका का किया गया है ।

कथा सत्या	प्रेमाख्यायिका काव्य में प्रयोग	योग प्रतीक—अलंकार दृष्टान्त—उल्लेख	आवृत्ति
१	हंस जवाहिर (द १)	द १	१
२	पद्मावत (अ २ द १) इन्द्रावती (अ १)	अ ३ द १	४
३	पद्मावत (अ १)	अ १	१
४	चित्रावली (द १) हंस-जवाहिर (द १)	द २	२
५	हंस जवाहिर (अ १ द १)	अ १, द १	२
६	हंस जवाहिर (दृ १)	द १	१
७	पद्मावत (प्र १)	प्र १	१
८	चित्रावती (द १) हंस-जवाहिर (द १)	द २	२
९	हंस-जवाहिर (द १)	दृ १	१
१०	चित्रावती (द १) इन्द्रावती (द १)	द २	२
११	हंस जवाहिर (द १)	द १	१
१२	नल-दमन (प्र १ द १), हंस-जवाहिर (प्र २)	प्र ३, दृ १	४

१ मुमलमानी धर्म-भाषा के अनुसार हातिम यमन देश का एक वार और दानी या जिमन अनेक कष्ट सहकर मित्र के हितार्थ सात प्राना का समाधान किया था ।

२ दृष्टान्त ।

कथा सख्या	प्रेमाख्यानक काव्यो मे प्रयोग	आवृत्ति	
		योग	प्रतीक—अलंकार दाटात—उल्लेख
१३	पदमावत (अ १)	अ १	१
१४	पदमावत (प्र १, अ १, द १)	प्र १ अ १, द १	३
१५	हस जवाहिर (द १)	द १	१
१६	इन्द्रावती (द १)	द १	१
१७	पदमावत (द १)	द १	१
			प्र ५, अ ७, द १७
			२६

शामी पौराणिक एव निजधरी पात्र तथा पर्वत

अयूब ^१ —पदमावत, ६३५।३ ^२ ।	अ १
अली ^२ —पदमावत, ६३५।१ २ ^४ ।	उ १
इसकदर (सिक्-दर) जुलकरनन (जुलकरीं)—पदमावत, १३।५-६, ^५ वही, ४८७।दोहा ४१।२१ ^६ वही, ४६३।१ २, ^७ इन्द्रा वती (उत्तराद्ध) हस्त०, पृ० १८३, ^८ वही पृ० १८४ ^९ ।	अ ५
उमर ^{१०} —पदमावत, १५।३ ^{११} ।	अ-१

१ अयूब—बाइबिल म इहें जाँव कहा गया है (हिब्रू म ईयूब') । ये अत्यंत धर्मात्मा थे । शतान ने सभेह किया और उस इनकी परीक्षा लेने की अनुमति मिली । हजरत अयूब पर अनेक विपत्तियाँ आईं उनकी सारी सम्पत्ति नष्ट हो गयी, शरीर भी व्याधिग्रस्त हो गया, परंतु उन्होंने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव न छोड़ा । अंत म उनके दिन फिरे । अयूब साधुता और धर्म परायणता के साथ कष्ट सहन के उपमान हैं । (दे० 'पदमावत सजीवनी व्याख्या', द्वि० स०, पृ० ८५५) ।

२ व्यतिरेक

३ अली पगम्बर मुहम्मद साहब के चचेरे भाई और दामाद थे । वे मुसलमाना के चौथे खलीफा भी थे (६५६-६६१ हिजरी) । वे वीरता के उपमान बन गए हैं ।

४ उल्लेख ५ तृतीय तुल्ययोगिता, ६ व्यतिरेक, ७ उपमा, ८ रूपक

९ है मा से इसकदर नाऊं, सनमुख गोद देहि मोहि ठाऊं । (उपमा)

१० मुहम्मद साहब के बाद हुए चार खलीफाओं म से एक । य अपन थाय के लिए प्रतिद्वेषी । (प्रसंग रूपमती के दपण का उसके कर्षे से कथन)

११ उपमा ।

(१७) हातिमताई^१ की दानगीततापद्मावत १४५।७^२— राजा रतनमन का उनीगाधिपति द १गणपति म सवा^३ । प्रम और नान की महिमा का वणन ।

योग	=	प्र ५
		अ ८
		दृ १८
		३१

गामा पौराणिक तथा निजधरी आम्बाना का प्रयाग-स्वम्प—
एक दृष्टि मे

प्र=प्रतीक अ=अनकार दृ-दृष्टात उ=उल्लस
क्या म स्या—स्त्री परिनिष्ठ म गामा आम्बानों का िया गया प्रम ।

क्या सस्या	प्रमाएपानक काव्यों मे प्रयोग	योग प्रतीक—अनकार दृष्टान्त—उल्लस	धावति
१	हस जवाहिर (द १)	दृ १	१
२	पदमावत (अ २ द १) चित्रावती (अ १)	अ ३ द १	४
३	पदमावत (अ १)	अ १	१
४	चित्रावती (द १) हस-जवाहिर (द १)	दृ २	२
५	हम जवाहिर (अ १ द १)	अ १ द १	२
६	हम जवाहिर (दृ १)	दृ १	१
७	पदमावत (प्र १)	प्र १	१
८	चित्रावती (दृ १) हम-जवाहिर (द १)	दृ २	२
९	हम जवाहिर (द १)	दृ १	१
१०	चित्रावती (द १) इन्द्रावती (द १)	दृ २	२
११	हम जवाहिर (द १)	दृ १	१
१२	नल दमन (प्र १ द १) हम-जवाहिर (प्र २)	प्र ३ दृ १	४

१ मुसलमानी धम-भाषा क अनुसार हातिम यमन देश का एक वीर और दानी था जिसन अनेक कष्ट सहकर मित्र के हिताय सात प्रदना का समाधान किया था ।

२ दृष्टान्त ।

भावति

कथा	प्रेमाख्यानक काव्यों में प्रयोग	योग	प्रतीक—अनकार
			दृष्टीत—उल्लेख
१३	पदमावत (अ १)	अ १	१
१४	पदमावत (प्र १, अ १, द १)	प्र १, अ १, द १	२
१५	हम-जवाहिर (दू १)	दू १	१
१६	कावली (द १)	दू १	१
१७	पदमावत (द १)	द १	१
			७६
			प्र ५, अ ७, दू १७

गामी पौराणिक एवं निजधरो पात्र तथा पर्वत

अयूब^१—पदमावत, ६३५।३^१ । अ १

अली^२—पदमावत, ६३५।१२^२ । उ १

इसकबर (सिक्न्दर) जुलकरनन (जुलकरी)—पदमावत अ ५

१३।५ ६, ^३ वही, ४८।७।दोहा ४१।२१^१ वही, ४६३।१२, ^२ इन्द्रा
वती (उत्तराद्र) हस्त०, पृ० १८३^५ वही पृ० १८५^६ ।

उमर^३—पदमावत, १५।३^१ । अ १

१ अयूब—बाइबिल में इह जौब कहा गया है (हिब्रू में 'ईयोब') । ये अत्यन्त धर्मात्मा थे । शतान ने सन्तुष्ट किया और उसे इनकी परीक्षा लेने की अनुमति मिली । हजरत अयूब पर अनेक विपत्तियाँ आईं उनकी सारी सम्पत्ति नष्ट हो गयी, शरीर भी व्याधिग्रस्त हो गया, परन्तु उन्होंने ईश्वर के प्रति वृत्तनता का भाव न छोड़ा । अतः उनके दिन फिर । अयूब साधुता और धर्म परायणता के साथ कष्ट सहन के उपमान हैं । (दि० पदमावत सजीवनी व्याख्या, हि० स०, पृ० ८५५) ।

२ व्यतिरेक

३ अली पगम्बर मुहम्मद साहब के चचेरे भाई और दामाद थे । वे मुसलमानों के चौथे खलीफा भी थे (६५६-६६१ हिजरी) । वे वीरता के उपमान बन गए हैं ।

४ उल्लेख ५ तृतीय तुल्ययोगिता ६ व्यतिरेक, ७ उपमा, ८ रूपक

९ है मो से इसकबर नाऊँ, सनमुग गोद दाहि मोहि ठाऊँ । (उपमा)

१० मुहम्मद साहब के बाद हुए चार खलीफाओं में से एक । य अपने 'पाप' के लिए प्रसिद्ध थे । (प्रसंग रूपमती के दण का उसके कथे से कथन)

११ उपमा ।

	भावृत्ति
ककुवाड—हम जवाहिर पृ० १८१ छ० ३८७। गेहा ^१ ।	दृ १
जुलकरनन (जुलकरी) ^२ —हम जवाहिर, २८७। दाहा ^३	अ १ दृ १ = २
वही पृ० २१८, छ० ६०१। ७ ^४ ।	
तूर पवत—चित्रावली २६०। ५ ^५ ।	द १
नोशरवा ^६ —पदमावत १५। २ ^७ ।	अ १
मीर हमजा—पदमावत ६३५। २६ ^८ ।	उ १
मेहर और माह (प्रमी युगल)—हम-जवाहिर पृ० ११७	द १
छ० २२। ६७ ^९ ।	
मुलेमान—पदमावत, ४६४। ३ ^{१०} क्या पुहुप बरिया हस्त०	[प्र २

- १ ककुवाड औ जुलकरनन चड न मक् दल जोर ।
तहै बिचार हा कहा चडा चहूँ तेहि खोर ॥ (दृष्टांत)
- २ जुलकरी का फारसी रूप जूल-न करनन अर्थात् दो सींगों वाला, यह सिकन्दर की उपाधि थी ।
- ३ दृष्टांत
- ४ जैसे ज्वाल करन बग भयऊ औसर गाठि ब्याह करि लयऊ । (उदाहरण)
- ५ दृष्टांत (दक्षिण मूमा द्वारा तूर पवत पर ईश्वर-दशन)
- ६ नोशरवा—प्रसिद्ध ईरानी सम्राट (५३१-५७५ हि०) । वह अत्यन्त यायकारी था । इसी से उसका विरुद् आदिल (यायकारी) हुआ ।
- ७ व्यतिरेक (तृतीय तुल्यमागिता भी)
- ८ मीर (अमीर) हमजा मुहम्मद साहब के चाचा थे जिनकी वीरता की बहुत-सी कल्पित कहानियाँ पीछे से जोड़ी गयी । सोलहवीं शती में दाम्तान अमीर हमजा की बहुत प्रसिद्धि थी । अकबर ने उस पर आधारित चौदह सौ चित्र कपड़े पर बनवाये थे जिनमें से सौ स कुछ ऊपर अभी तक बच गए हैं । इन चित्रों का बनना हमायू के समय से ही शुरू हो गया था । इससे ज्ञात होता है कि शेरशाह के समय अमीर हमजा का हिस्सा खूब प्रचलित था । दे० 'आखिरी कलाम (जायसी) ८।४ ('बल हमजा कर जस सभारा जा बरियार उठा तहि मारा ।)
९० 'पदमावत सजीवनी व्याख्या' डि० स० पृ० ८५४)
- ९ उल्लेख
- १० आय पटुव दश के योगी देख विरह न अधिक वियोगी ।
कहा कि को यह दर्ई नाना, मेहर भयो लखि माह मुलाना ॥ (दृष्टांत)
- ११ प्रतीक

आवृत्ति

१५१ छद ८८१ ।

हातिमताई—पदमावत, १७।२^१, वही, १४५।७^३, अ ३, द १=४
१३।३,^२ नल-दमन, १७।६ और दोहा^५ ।

योग	प्र २
	अ १२
	द ५
	उ २
	२१

- १ मात कहत कर सुता बपान, मारघी देव कीं न गति हानि ।
असौ और न माता जायो, कहा सुलभा फिरि जगु आयी ॥
(प्रसंग पुरुषोत्तम कुंवर की बडाई) सुनेमान वीरता का प्रतीक । (प्रतीक)
- २ व्यतिरेक ३ दृष्टात ४ व्यतिरेक (तृतीय तुल्ययोगिता भी)
- ५ जिन दानन हातिम जग जाना, दीह साह मगन ते दाना ।
साहजही दातार डर, घर पतार दुराइ ।
दधि मुक्ता तऊ ना बच, देइ कडाइ लुटाइ ॥दो० १७॥ (व्यतिरेक)

सहायक पुस्तक एव पत्र-पत्रिका-सूची

- १ अनुराग बाँसुरी मपाक—प० चम्बरी पाण्डेय और आचार्य रामचन्द्र
गुप्त प्रका०—हिंदी साहित्य-सम्मेलन प्रयाग, द्वितीय न०,
१९५० ई० ।
- २ अपभ्रंश वाक्य परम्परा और विद्यापति डा० अम्बान्न पंत (शोध प्रबंध
टिप्पणी) ।
- ३ अपभ्रंश साहित्य डा०—हरिवंश कोठार प्रका० भारती साहित्य मंदिर
दिल्ली प्र० स० १९५६ ई० ।
- ४ अष्टादश पुराण-क्षण प० ज्वानाप्रसाद मिश्र प्रका० श्री वैकुण्ठेश्वर प्रस
वम्बई ।
- ५ इन्द्रावती (पूर्वाद्ध मुद्रित) सप्तिका०—बाबू श्यामसुंदर दास प्रका० नागरी
प्रचारिणी मभा काशी प्र० स०, १९०६ ई० ।
- इन्द्रावती (उत्तराद्ध-हस्तलिखित) नरमुहम्मद प्राप्ति स्थान—आय भाषा
पुस्तकालय ना० प्र० मभा काशी ।
- ६ इस्लामी बंगला साहित्य डा० सुकुमार सन ।
- ७ ईरान के सूफी कवि श्री बाँबविहारी तथा कहेयालाल प्रका०—भारती
भंडार लीडर प्रेस इलाहाबाद प्र० स० १९६६ ।
- ८ उत्तरी भारत की सत परम्परा आ० परशुराम चतुर्वेदी, प्र० स०, २००८ ।
- ९ ओल्ड टस्टामट (पुगनी बाँबिल) ।
- १० कथा कनकावती (जान कवि) हस्तलिखित प्राप्ति स्थान—हिंदुस्तानी
एकडमी, प्रयाग ।
- ११ कथा कलंदर की (जान कवि) हस्तलिखित ' '
- १२ कथा कनावती (जान कवि) हस्तलिखित ' '
- १३ कथा कवलावती (जान कवि) " " "
- १४ कथा कामरानी व पातमदास (जान कवि) ' ' "

- ३८ नल चम्पू त्रिविधम भट्ट निणय मागर प्रम बम्बई तृतीय सम्स्करण १९२१।
- ३९ नरत्नमन मूरदास रत्नवती सपा० टा० वामुदवशरण अग्रवाल और श्री दीनतराम जुयान प्रका० व० मु० सि० ती तथा भाषा विद्या विद्या पीठ आगरा विश्वविद्यालय आगरा।
- ४० नन दमयती (जान कवि) हस्तलिखित प्राप्ति स्थान हिन्दुस्तानी एकेडेमी।
- ४१ नाथ मप्रदाय डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी।
- ४२ निरमल दे (जान कवि) हस्तलिखित प्राप्ति-स्थान हिन्दुस्तानी एकेडेमी।
- ४३ नपथीय चरितम (श्री २५) टीकाकार— प० शिवदत्त शर्मा निणय मागर प्रम बम्बई सप्तम सम्स्करण १९३३ ई०।
- ४४ पद्मावत का काव्य मौन्दय श्री शिवमहाय पाठक हिंदी प्रय रत्नाकर कायालय बम्बई ४ प्र० स० मितम्बर १९५६।
- ४५ पद्मावत मल और सजीवनी व्याख्या डा० वामुदवशरण अग्रवाल, साहित्य मदन चिरगाव (झाना) प्र० स० स० २०१२ और द्वि० म० २००१ वि०।
- ४६ पुराण दिग्दर्शन प० माधवाचार्य शास्त्री (श्री विद्याविबद्धन पुस्तकालय, नवलगढ़ (राजस्थान) स प्राप्त।
- ४७ पुराण कथा-कौमुद्या प० रघुनाथदत्त वधु नशनन पत्रिशिम हाउस दिल्ली, प्रथम सम्स्करण, १९६२ ई०।
- ४८ पुराण वम श्री कालूराम शास्त्री प्रका०—श्री कृष्ण प्रम अमराषा वानपुर द्वितीय सम्स्करण १९८६ वि०।
- ४९ पुनपवर्गिया (जान कवि) हस्तलिखित प्राप्ति स्थान हिन्दुस्तानी एकेडेमी।
- ५० पृथ्वाराज रासो (पद्मावती समय) महाकवि चंद म० हरिहरनाथ टंडन यूनिवर्सिटी बुक डिपो कॉन्ज राउट आगरा।
- ५१ पृथ्वीराज रामा म कथानक रचियाँ श्री ब्रजविनाय श्रीवामन्तव राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम स० १९८१ ई०।
- ५२ पौराणिकता का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव (शोध प्रबंध टंकित प्रति) डा० इन्द्रावती सिन्हा आगरा विश्वविद्यालय पुस्तकालय में सुरक्षित।
- ५३ फारसी साहित्य का इतिहास डा० जती अमगर हिकमत
- ५४ बलूकिया विरही (जान कवि) हस्तलिखित प्राप्ति स्थान हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग
- ५५ बादीनामा (जान कवि) हस्तलिखित
- ५६ बुधियागर या मधुकर मालती (जान कवि) हस्तलिखित
- ५७ ब्रज की लोक कथाओं का अभिप्राय का अध्ययन डा० मानिनी सरौन (शोध प्रबंध) अप्रकाशित कानकता विश्वविद्यालय पुस्तकालय में सुरक्षित।

- ५८ ब्रजलाक-साहित्य का अध्ययन डा० सत्यव्रत प्रका० साहित्य रत्न भंडार,
आगरा, तृतीय सम्करण १९६० ई० ।
- ५९ भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा प० परगुराम चतुर्वेदी राजकमल प्रका०
दिल्ली प्रथम सं० १९५२ ई० ।
- ६० भारतीय प्रेमाख्यानक काव्य (स० १००० १९०२ तक) डा० हरिकान्त
श्रीरामन्तव हिन्दी प्रचारक, पुस्तकालय, वाराणसी प्र० सं०
नवम्बर १९५५ ई० ।
- ६१ भोजपुरी तोन-कथा डा० सत्यव्रत मिह्रा प्रका० हिन्दुस्तानी एक्डेमी
प्रयाग, प्र० सं०, १९५२ ई० ।
- ६२ मध्यकालीन प्रेम-साधना प० परगुराम चतुर्वेदी साहित्य भवन लि० प्रयाग,
प्र० सं० १९५० ई० ।
- ६३ मध्ययुगीन प्रेमाख्यान डा० श्याममनोहर पांडेय, मित्र प्रकाशन प्रा० लि०
दिल्ली-वादा प्र० सं० सन् १९६३ ।
- ६४ मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोकतात्त्विक अध्ययन डा० सत्यव्रत प्रका०
त्रिनोद पुस्तक मंदिर आगरा प्र० सं० १९६२ ई० ।
- ६५ मधुमालती (मनिक मयन) सपा० डा० माताप्रसाद गुप्त मित्र प्रकाशन
प्रा० लि० इलाहाबाद राज सम्करण १९८० ई० ।
- ६६ मधुमालती (मयनकृत) सपा०—डा० शिवगोपाल मिश्र हिन्दी प्रचारक
पुस्तकालय काशी प्र० सं० ।
- ६७ मलिन मुहम्मद जायसी डॉ० कमलकुलश्रेष्ठ इंडियन प्रेम, प्रयाग, १९४७ ।
- ६८ माधवानल कामकदला (शेख आलम) सपादक श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी और
डॉ० गुनाबराय हिन्दुस्तानी एक्डेमी प्रयाग ।
- ६९ माधवानल-कामकदला—(छोटा प्रति हस्तलिखित नागरी प्रचारिणी सभा,
काशी में प्राप्त ।
- ७० माधवानल कामकदला (बन्नी प्रति) श्री उदयशंकर शास्त्री से प्राप्त ।
- ७१ माधवानल-कामकदला चउपई (कृष्ण नाम) ।
- ७२ माधवानल कामकदला प्रबंध (गणपति) गायकवाट आरियटन मिरीज,
वहौला ।
- ७३ मुनतगात्र अल-नवारीख (भाग १) अटुर्कादिर बदायूनी सम्पा० मौलवी
अहमद जरी अग्नेजी अनु० जाज एम० ए० रकिंग, बिब्लिया
ग्रामिनी मिरीज, १८९७ ई० ।
- ७४ मगावती (कुतुबन) सम्पा० डा० शिवगोपाल मिश्र, प्रका० हिन्दी सा० सं०,
प्रयाग प्र० सं० शाक १८८५ ।
- ७५ मगावती (कुतुबन) दिल्ली वाली प्रति प्रतिलिपि श्री उदयशंकर शास्त्री
के पास उपलब्ध ।
- ७ मोहिनी (जान कवि) हस्तलिखित प्राप्त-स्थान, हिन्दुस्तानी एक्डेमी ।

२७२ हिन्दी सूफी कवियों के पौराणिक आभ्यास

- ७७ यूसुफ-जुलखा (शेख निहार) सम्पा० श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी और डॉ० मुताब राय (हिन्दी प्रमगाथा काव्य मग्न म सवन्त) प्रका० हि दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।
- ७८ रतनमजरी (जान कवि) हस्त० हि दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग म प्राप्त ।
- ७९ रतनावती (जान कवि) (हस्तलिखित) ”
- ८० राजस्थान म हि दी क हस्तलिखित ग्रन्थों का साज (भाग १) सम्पा० डा० मोतीलाल मनारिया हिन्दी विद्यापीठ उज्जैन प्र० स० १९८२ ।
- ८१ (भाग २) सम्पा० श्री अमरचन्द्र नाट्टा प्रथम संस्करण १९८७ ।
- ८२ राजस्थानी भाषा और साहित्य (१५०० १६५० वि०) डॉ० हीरालाल माहेश्वरी आधुनिक पुस्तक भंडार कलकत्ता ७, प्र०स० १९६० ई० ।
- ८३ रामचरित्रा (भाग १ २) स० लाला भगवान दीन रामनारायणलाल पतिशर और बुकमपर म० २००६ या १९५२ ई० ।
- ८४ रामचरित मानस (गोस्वामी तुलसीदास) प्रका० गीताप्रेस गारखपुर ।
- ८५ रामचरित मानस की अन्तकथाओं का आलाचना मक अध्ययन डा० धामीश चत पाठ्य टंकित प्रति आगरा विश्वविद्यालय पुस्तकालय म सुरक्षित ।
- ८६ रूपमजरी (जान कवि) हस्तलिखित प्राप्ति-स्थान हि० एकेडेमी प्रयाग ।
- ८७ लोक साहित्य विज्ञान डा० मत्यद्र प्रका० शिवानंद अग्रवाल एड कम्पनी प्रा० लि० आगरा प्र० स० १९६२ ई० ।
- ८८ लोरकहा (मुल्ला दाऊद) सम्पा०— डा० मानाप्रसाद गुप्त क० मु० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ आगरा, प्रथम संस्करण १९६१ ।
- ८९ विद्यापति की पदावली स० श्री रामवक्ष वनीपुरी प्रका० पुस्तक भंडार लहरिया सराय, पटना द्वितीय संस्करण ।
- ९० कथा सतवती (जान कवि) हस्त० प्राप्ति स्थान हि दुस्तानी एकेडेमी ।
- ९१ संक्षिप्त अलंकार मजरी सठ कहेयालाल पोद्दार हि० सा० स० प्रयाग मप्तम स० सम्बन् २०१२ ।
- ९२ सीलवती (जान कवि) हस्त० प्राप्ति स्थान हि दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग ।
- ९३ सुभटराज (जान कवि) हस्तलिखित
- ९४ सूफीज्म एन एकाउट आब दि मिस्टिफस आब वरलाम ए० जे० आरवरी पत्रिकास जाज एसन एण्ड अनविन लि० रसिबन हाउस म्यूजियम स्ट्रीट लदन प्र० स० १९५० ई० ।
- ९५ सूफी काव्य विमर्श डा० इयाममनोहर पाटय विन ट पुस्तक मंदिर आगरा ।
- ९६ सूफी काव्य संग्रह सम्पा० प० परगुराम चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग प्र० स० १९५१ ई० ।

- ६७ सूफीमत और हिन्दी साहित्य डा० विमलकुमार जन आत्माराम एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली ६ प्र० स०, १९५५ ई०।
- ६८ सूफीमत साधना और साहित्य श्री रामपूजन तिवारी चानमडल लि०, बनारस प्र० स० सम्बत २०१३।
- ६९ मूफ़ी महाकवि जायसी डॉ० जयन्त प्रका० भारत प्रकाशन मंदिर अली गढ़, प्र० स० १९५७ ई०।
- १०० सूर और उनका साहित्य डॉ० हरवश लाल शमा भारत प्रकाशन मंदिर, जलौगढ़ द्वि० स० सम्बत २०१५।
- १०१ सूर सागर (भाग १) सम्पा० आ० नन्ददुलारे वाजपयी नागरी प्रचारिणी सभा काशी प्र० स० सवत २००५ वि०।
- १०२ सूरसागर (भाग २) सम्पा० आ० नन्ददुलारे वाजपयी ना० प्र० सभा काशी द्वि० स० २०१२ वि०।
- १०३ हम-जवाहिर (कवि कासिमशाह) प्रका०—राजा रामकुमार प्रेस बुकडिपल लखनऊ, १९५२ ई०।
- १०४ हिन्दी काव्य में अयोक्ति डॉ० सारचन्द्र राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्र० स०, १९६० ई०।
- १०५ हिन्दी काव्य धारा में प्रेम प्रवाह प० परगुगम चतुर्वेदी।
- १०६ हिन्दी की काव्य शलिया का विकास डॉ० हरदब बाहरी भारती प्रेस प्रका०, प्रयाग प्र० स० १९५७।
- १०७ हिन्दी पर फारसी का प्रभाव प० अम्बिकापसाद वाजपयी प्र० स०।
- १०८ हिन्दी प्रेम-भाषा काव्य-में ग्रह सम्पा०—श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी और डॉ० गुलाबराय हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग द्वि० स० शोधित संस्करण।
- १०९ हिन्दी प्रेमसाहित्य काव्य डा० कमल कुलश्रेष्ठ, प्र० स०, १९५३ ई०।
- ११० हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास डॉ० शम्भुनाथ सिंह हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी प्रथमावृत्ति नवम्बर १९५६ ई०।
- १११ हिन्दी साहित्य उसका उदभव और विकास डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, अतरचंद कपूर एण्ड सन्स दिल्ली प्र० स०, १९५५ ई०।
- ११२ हिन्दी साहित्य का आदिकाल डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् पटना ६ त० स० १९६१ ई०।
- ११३ हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (स० ७५० १७००) डॉ० रामकुमार वर्मा प्रथम स० १९३८ ई०।
- ११४ हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र गुकन नागरी प्रचारिणी सभा काशी परिवर्द्धित एवं सशोधित संस्करण स० १९६६।
- ११५ हिन्दी साहित्य का बहूत इतिहास (प्रथम भाग) हिन्दी साहित्य की पीठिका सम्पा०—डॉ० राजवली पाण्डेय नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्र० स० २०१४ वि०।

३७४ हिन्दी सुधा काव्य में पौराणिक आख्यायिकाएँ

- ११६ हिन्दी साहित्य का अष्टम इतिहास (पाठ्य भाग) मद्रास - महापण्डित
राजेश्वर प्रसाद और श्री ० कृष्ण चन्द्र प्रसाद द्वारा प्र. म. ० ।
- ११७ हिन्दी साहित्य का अष्टम इतिहास (अन्य भाग) हिन्दी प्र. म. ० ।
- ११८ हिन्दी साहित्य का अष्टम इतिहास (अन्य भाग) हिन्दी प्र. म. ० ।
- ११९ हिन्दी साहित्य का अष्टम इतिहास (अन्य भाग) हिन्दी प्र. म. ० ।
- १२० पाननाथ (श्याम नदी) म. ० श्री उदयचन्द्र शास्त्री (मनस्य) । डॉ. व्यास
मनाथ द्वारा प्र. म. ० ।

सहायक पत्र पत्रिकाएँ

नागरी प्रचारिणी पत्रिका (काशी)

- आख्यानक काव्य श्री सत्यजीवन वर्मा भाग ० अंक ० म. ० १९८० प. ० २०७ ।
- आनन्द जीव जीवन ममय श्री सिन्धुनाथप्रसाद मिश्र अंक ५० म. ० २००२ ।
- आनन्द की उन्नति श्री सिन्धुनाथप्रसाद मिश्र अंक ५० म. ० २००४ प. ० १०६ ।
- कवि श्याम निगारकृत मदनवी सुमुख नृत्या श्री सत्यजीवन वर्मा भाग ११ म. ०
१९८७ प. ० ४४५ ।
- कवि सुखागकृत नन्द दत्त काव्य डॉ. मातीचन्द्र अंक ४३ म. ० १९६५ प. ० १०१ ।
- जायसी का जीवन वृत्त प. ० चन्द्रवती पाण्डेय भाग १४ म. ० १९६० प. ० ३८२ ।
- तमबुद्ध अथवा सुफीमत का प्रसिद्ध विकास प. ० चन्द्रवती पाण्डेय भाग १६ म. ०
१९६२ प. ० ४४३ ।
- तमबुद्ध का प्रभाव और दवलदमा प. ० चन्द्रवती पाण्डेय भाग १८ म. ० १९६४ ।
- नई जायसी प्रथावली तथा पन्मावत का लिपि और रचना का श्री चाल्म नविन्दर
अंक ५७ म. ० २००६, प. ० २३१ ।
- पन्मावत की कहानी और जायसी का अध्यात्मवाद श्री पाताम्बरदत्त बटवाल
द्विवेदी अ. ० प्र. ० ना. ० प्र. ० काशी, १९६० वि. ० ।
- पद्मावत की लिपि तथा रचना का प. ० चन्द्रवती पाण्डेय भाग १२ म. ० १९८८ ।
- पद्मावत का लिपि तथा रचना का प. ० चन्द्रवती पाण्डेय भाग १ म. ० १९८६ ।
- पद्मावत का सिंहल द्वीप म. ० म. ० गीरीश्वर हीराचन्द जाया भाग १३ म. ०
१९८६ ।
- प्रमत्त चित्तगारी श्री अन्तरिम न निजामी अंक ५७ म. ० २००६, प. ० ४० ।
- मदनकृत मधुमालती प. ० चन्द्रवती पाण्डेय अंक ४३ म. ० १९६५ प. ० २५५ ।
- मलिक मदन और उनकी मधुमालती श्री गोपालचन्द्र सिंह अंक ५० अंक १२
म. ० २००२

मलिक मुहम्मद जायसी का जीवत चरित श्री सयद जाले मुहम्मद महर जायसी
वष ४५ स० १९६७, प० ४३।

सूफियो की आस्था तथा साधन प० चन्द्रबली पाण्डेय भाग १७ स० १९६३।

हिन्दी में प्रेमगाथा साहित्य और मलिक मुहम्मद जायसी श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी
भाग १४, स० १९६० पृ० ४७७।

हिन्दी साहित्य का पूर्वमध्यकाल श्री रामचन्द्रगुप्त भाग ६, स० १९८५ पृ० २०६।

हिन्दी प्रेमसाहित्यक काव्य में जालोचना और अनुसंधान श्री गणपाल राय वष ६४
प० २०१६ अक ३८।

सम्मेलन पत्रिका (प्रयाग)

जायसी का प्रेम पथ डा० माताप्रसाद गुप्त भाग ३४ २००४ वि०।

मधुमालती के पूर्व हिंदा का सूफी प्रेमसाहित्य श्री श्याममनोहर पाण्डेय,
भाग ४६ स० १ पौष फाल्गुन १८८० शक स० १।

मौलाना दाउदकृत च दायन डा० परमेश्वरीलाल गुप्त भाग ४८, अक १ पौष
फाल्गुन १८८० शक स० ५० इ १३।

वारहमासाकी परपरा और पन्मावत डा० श्याममनोहर पाण्डेय भाग ४७, अक १
पौष फाल्गुन १८८२ शक स० १ प० ३७ ४३।

हिन्दुस्तानी' (प्रयाग)

जायसी और प्रेम नत्क प० परगुगम चतुर्वेदी भाग ४, अक ३ जुलाई १९३४।

मचनकृत मधुमालती श्री ब्रजरत्नदास भाग ८, अक २ अप्रैल १९३८।

कवि जान श्री कमल कुलश्रुत जनवरी माघ १९४५ पृ० १७ २३।

मचन के गुरु शेख मुहम्मद गीस श्री श्याममनोहर पाण्डेय भाग २०, अक ३,
जुलाई सितम्बर १९५६ ई०।

जायसी की प्रेम साधना श्री श्याममनोहर पाण्डेय भाग २०, अक २, अप्रैल जून,
१९५६।

कविवर जान का सबसे बड़ा ग्रन्थ—बुद्धिसागर श्री अगरचंद नाहटा वष १६,
अक १, १९४६।

जान कवि और उनकी रचनाएँ श्री रामकिशोर मीश भाग २४, अक ८, अक्टूबर
दिसम्बर १९६२।

त्रिपयगा (लखनऊ)

मचन का जीवन-वृत्त श्री श्याममनोहर पाण्डेय जुनाइ १९५६।

राजस्थान भारती (बीकानेर)

कविवर जान और उनकी ग्रन्थ श्री अगरचंद नाहटा वष १ अक १।

समालोचक (सौदमशास्त्र विभागांक) आगरा

सफी कविवो की सौदर्यानुभूति श्री उदयशंकर शास्त्री जुलाई अगस्त, १९५८।

३०४ हिन्दी मूफ़ी काव्य में पौराणिक आख्यान

- ११६ हिन्दी साहित्य का अष्टम इतिहास (प्राथम्य भाग) मधुमा० - महापट्टिन
गान्धर्व साहित्यालय श्री १० कृष्ण चतुर्थी १९६० म० ।
- ११७ हिन्दी साहित्य की भूमिका डॉ० अरविप्रसाद द्विवेदी हिन्दी प्रेस द्वारा
१९६० म० १९६० म० ।
- ११८ हिन्दी काव्य प्रमाणात् १० परशुराम चतुर्वेदी प्रसा० हिन्दी प्रेस द्वारा
१९६० म० १९६० म० ।
- ११९ हिन्दी साहित्यालय का इतिहास (मधुमा १) क मु हिन्दी प्रेस द्वारा
दिल्ली प्रकाशित आगरा ।
- १२० गान्धर्व (मधुमा नवी) म० श्री १० कृष्ण चतुर्थी (पत्रिका) । डॉ० व्यास
मनाचर पत्रिका का मोज़ायक म अथवा नवीन प्राप्ता ।

सहायक पत्र पत्रिकाएँ

नागरी प्रचारिणी पत्रिका (काशा)

आख्यानक काव्य श्री मधुमाजीवन वमा भाग १ अथ २ म० १९६० प० २०७ ।

आत्म और उन्नत मधुमा श्री विद्यानाथप्रसाद मिश्र वप ५० म० २००० ।

आत्म की उन्नति श्री विद्यानाथप्रसाद मिश्र वप ५० म० २००४ प० १०८ ।

कवि मधुमा निगारक मधुमा मधुमा श्री मधुमाजीवन वमा भाग ११ म०
१९६७ प० ४४५ ।

कवि मधुमाजीवन नर मधुमा वमा डॉ० मतीचन्द्र वप ६३ म० १९६५ प० १११ ।

जायसी का जीवन वप प० चन्द्रवती पाण्डेय भाग १४ म० १९६० प० ३८ ।

तमब्रह्म अथवा मधुमा का प्रथम विकास प० चन्द्रवती पाण्डेय भाग १६ म०
१९६० प० ४४२ ।

तमब्रह्म का प्रभाव और दलितवा प० चन्द्रवती पाण्डेय भाग १८, म० १९६४ ।

नर जायसी ग्रन्थालय तथा पत्रमाचन की निधि और रचना काव्य श्री चाल्म निधि
वप ५७, म० २००६ प० ३१ ।

पत्रमाचन की कहानी और जायसी का अध्यात्मवा श्री पाताम्बरदत्त वप
द्विवेदी अथ १० म० काशा १९६० वि० ।

पत्रमाचन की निधि तथा रचना-काल प० चन्द्रवती पाण्डेय भाग १२ म० १९६० ।

पत्रमाचन की निधि तथा रचना-काल प० चन्द्रवती पाण्डेय, भाग १३ म० १९६६ ।

पत्रमाचन का मिहल द्वेष म० म० गौरीगकर द्वारा वप जाया भाग १३ म०
१९६६ ।

प्रम चिनगारी श्री अन्तर मधुमा निजामी वप ५७ म० २००६ प० ४० ।

मधुमाजीवन मधुमाजीवन श्री चन्द्रवती पाण्डेय वप ६२ म० १९६५ प० २५५ ।

मलिक मधुमा और उनकी मधुमाजीवन श्री गणपतिचन्द्र मिहल वप ५० अथ १२
म० २००२

मलिक मुहम्मद जायसी का जीवत चरित श्री सयद जाल मुहम्मद मेहर जायसी
वष ४५, स० १९९७ प० ४३।

मूफिया की आस्था तथा साधन प० चन्द्रबली पाण्डेय भाग १७ स० १९९३।

हिन्दी में प्रेमगाथा साहित्य और मलिक मुहम्मद जायसी श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी
भाग १४, स० १९९० पृ० ४७^२।

हिन्दी साहित्य का पूर्वमध्यकाल श्री रामचन्द्र गुप्त भाग ९ स० १९८५ पृ० २०९।

हिन्दी प्रेमसाह्यायक काव्य में जालोचना और अनुसंधान श्री भापाल राय वष ६४,
म० २०१६ अंक ३४।

सम्मेलन पत्रिका (प्रयाग)

जायसी का प्रेम पथ डॉ० माताप्रसाद गुप्त भाग ३४ २००४ वि०।

मधुमालती के पूर्व हिन्दी का सूफी प्राम्थानक साहित्य श्री श्याममनोहर पाण्डेय
भाग ४६ स० १ पौष फाल्गुन १८८१ शक स० १।

मीलाना दाउददुत च दामन डा० परमस्वरीलाल गुप्त भाग ४८ अंक १ पौष
फाल्गुन १८८२ शक स० १ प० ३१^२।

वारहमामा की परपरा और पदमावत डा० श्याममनोहर पाण्डेय भाग ४७, अंक १,
पौष फाल्गुन १८८२ शक स० १ प० ३७ ४३।

हिन्दुस्तानी (प्रयाग)

जायसी और प्रेम नृत्य प० परशुराम चतुर्वेदी भाग ४, अंक ३ जुलाई १९३४।

मचनहन मधुमालती श्री बजरत्नदास भाग ८ अंक २ अप्रैल १८३८।

कवि जान श्री कमल कुन्धरथ जनवरी मास, १९८५ पृ० १७ २३।

मचन के गुरु शेख मुहम्मद मौस श्री श्याममनोहर पाण्डेय भाग २०, अंक ३
जुलाई सितम्बर, १९५९ ई० १।

जायसी की प्रेम साधना श्री श्याममनोहर पाण्डेय भाग २०, अंक २, अप्रैल जून
१९५९।

कविवर जान का सबसे बड़ा ग्रन्थ—बुद्धिसागर श्री अजरचन्द नाहटा वष १६,
अंक १, १९४६।

जान कवि और उनकी रचनाएँ श्री रामकिशोर मौय भाग २८ अंक ८ अक्टूबर
दिसम्बर, १९६०।

त्रिपयगा (लखनऊ)

मचन का जीवन-वृत्त श्री श्याममनोहर पाण्डेय जुना १८५९।

राजस्थान भारती (बीकानेर)

कविवर जान और उनके ग्रन्थ श्री अजरचन्द नाहटा वष १ अंक १।

समासाचक (सौन्दर्याशास्त्र विनोदाक) आगरा

सफा कविता की सौन्दर्यानुभूति श्री सूर्यनाथ शर्मा १९५९।

३७६ हिन्दी सूफ़ी काव्य में पौराणिक आख्यान

धालीचना (दिल्ली)

पद्मावत का पाठ और आई ए अकबरी डॉ० माताप्रसाद गुप्त जुलाई ५६।

मया-पद्य (सत्यनंद)

लोक-अध्यात्मक प्रमाख्याना का विकास श्री निगवान् दिगम्बर जनवरी १९५६ ५७।

मई घारा (पटना)

सूफ़ियों का रहस्यवाद् श्री रामपूजन तिवारी नवम्बर, १९५०।

हिन्दी धनुषीसन (इलाहाबाद)

सूफ़ियों की अलंकार-योजना डॉ० ओमप्रकाश वय ३ अक २ १९५० २०।

पद्मावत का रचना-काल श्री गोपाल राय वय ११ अक २, १९५८।

जायसी में सम्बद्ध तिथियों का पुनर्वरीक्षण श्री गोपाल राय जुलाई मितम्बर १९५८।

साहित्य (पटना)

सूफ़ी काव्य की परम्परा और सामाज्य विशेषताएँ श्री गोपाल राय अग्रत १९५८।

सूफ़ी कवि तथा उनका काव्य निर्माण-सम्बन्धी तिथियाँ का अध्ययन श्री गोपाल राय अक्टूबर १९५६।

साहित्य-सादेश (भागलपुर)

प्रेम-परगास (बरकतुल्लाह प्रेम) श्री हरिशंकर शर्मा मई १९६५।

आदि पद्मावती श्री नशरफ शर्मा दिसम्बर १९५१।

सूफ़ीमत में सत साहित्य के तत्त्व श्री रामपूजन तिवारी (सत साहित्य विशेषज्ञ) जुलाई अगस्त १९५८।

पद्मावत की सजीवनी टीका श्री जम्बाप्रसाद सुमन अक्टूबर १९५५।

पद्मावत-परिशीलन डा नगद्व जून १९५६।

सूफ़ी काव्य प्रथा की परम्परा-समानता श्री देवद्व दीपक नवम्बर १९५७।

पद्मावत में फारसीयन और भारतीयता का समावय श्री शिवनन्दनप्रसाद जून, १९५८।

सूफ़ीमत और प्रमाख्यानक काव्य-परम्परा श्री चन्द्रशंकर प्रसाद नवम्बर १९६३।

परिपद पत्रिका (पटना)

सूफ़ी प्रमाख्यानों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ प० परशुराम चतुर्वेदी वय १ अक ५

जनवरी १९६२।

